CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौखम्बा-साहित्य

संख्या ७६]

[सन् १९६६

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजतरङ्गिणी-कोश

डॉ० रामकुमार राय

कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का यह कोश हिन्दी में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें राजतरङ्गिणी में आये सभी नामों और विषयों की ससन्दर्भ व्याख्या प्रस्तुत की गई है। साथ ही लेखक ने एक विस्तृत भूमिका में कल्हण के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन करते हुये विभिन्न विषयों, जैसे राजनीति, समाजशास्त्र, धर्म, और नीति आदि से सम्बद्ध उनके विचारों को प्रस्तुत किया है। राजतरङ्गिणी में आये विभिन्न राजाओं की वंशावलियों तथा कलिक्रमागत तालिकाओं का भी भूमिका के अन्तर्गत समावेश किया गया है।

कल्हण की जटिलशैली और पग-पग पर विना विशेष विवरण के ही नित्य नूतन नामों के समावेश के कारण राजतरङ्गिणी को समझने तथा इतिहास-विषयक शोध के लिये सामग्री एकत्र करने में बहुधा जिस कठिनाई का अनुभव किया जाता रहा है उसका अब इस कोश से निराकरण हो जायगा।

इन विशेषताओं के कारण इतिहासकारों तथा साहित्यकारों सभी के लिये यह कोश एक अपूर्व आकर ग्रन्थ सिद्ध होगा। शीघ्र प्राप्त होगा

महाभारत-कोश

डॉ० रामकुमार राय

यह ग्रन्थ महाभारत के नामों और विषयों की सुविस्तृत, वैज्ञानिक और व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका है। सोरेन्सन की अनुक्रमणिका सर्वथा दुष्प्राप्य होने के अतिरिक्त आज के लिए उपयोगी भी नहीं है, क्योंकि उसमें सन्दर्भ-संकेत पर्वगत संख्या से किया गया है। यद्यपि उस कोश के आरम्भ में एक कॉन्कॉर्डेन्स है, किन्तु उन्होंने जिन संस्करणों का उपयोग किया है वह न तो आज उपलब्ध हैं और न उन्हें प्रामाणिक ही कहा जा सकता है। प्रस्तुत कोश में उक्त दोषों का सर्वथा निराकरण करने के साथ ही अनेक नवीन नामों और विषयों के सन्दर्भों का भी समावेश कर लिया गया है। शब्दों को नागरी अकारादि क्रम से व्यवस्थित किया गया है तथा समस्त उद्धरण और व्याख्यायें नागरी लिपि में ही हैं। अपने इन गुणों के कारण प्रस्तुत संस्करण महाभारत का सर्वाधिक उपयोगी तथा सर्वाधिक वृहत् कोश सिद्ध होगा। ग्रन्थ बड़े साईज के लगभग २००० पृष्ठों के तीन भागों में सम्पूर्ण होगा। प्रथम भाग (अ-क) मूल्य २०-००

द्वितीय भाग (ख-द) मूल्य २०-००

प्राप्तिस्थानम्—**चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Phone No. 3145] Estd. 1892. [फोन नं० ३१४५

Catalogue No. 76

The

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

POST BOX 8. VARANASI-1 (INDIA)

चौखम्बा-साहित्य

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

भारतीय संस्कृति के प्रकाशक-विक्रेता

के ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन

पो० बा० नं० ८, वाराणसी-१

१९६६] [1966

आर्डर देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ७६ का उल्लेख अवश्य करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ आवश्यक निवेदन ❀

(१) कृपया अपने प्रत्येक पत्र व्यवहार में—'चौखम्बा साहित्य' संख्या ७६, का उल्लेख अवश्य करें।

(२) पुस्तकें भेजते समय प्रकाशकों के परिवर्तित मूल्य के अनुसार मूल्य चार्ज किए जाते हैं।

किसी भी अवसर पर काशी में पधारते समय

चौखम्बा विद्याभवन

चित्रा सिनेमा के सामने, चौक, वाराणसी

में अवश्य पधारने की कृपा करें।

हमारे विभिन्न सूचीपत्र

(१) 'भारतीय संस्कृति और साहित्य'

[देश-विदेश में छपी संस्कृत, हिन्दी, अँगरेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं की लगभग १२००० पुस्तकों का विवरण]

(२) 'हिन्दी साहित्य और वाङ्मय'

[राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्व-प्रकाशित तथा अन्य प्रकाशित ९००० पुस्तकों का विवरण]

(३) 'चिकित्सा साहित्य'

[आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक, होमियोपैथिक आदि लगभग २००० पुस्तकों का विवरण]

मँगवाकर अवलोकन करें।

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

ORIENTAL BOOK-SELLERS & PUBLISHERS

Post Box No. 8. Varanasi-1 (India) Phone : 3145

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

OUR DIFFERENT BRANCHES OF PUBLICATION

1. SANSKRIT PUBLICATION
2. ENGLISH PUBLICATION
3. HINDI PUBLICATION
4. MEDICINE (Indian & Western) PUBLICATION
5. MAITHILI PUBLICATION

FOR DIFFERENT BRANCHES CONSULT DETAILS OF FROM OUR FOLLOWING DIFFERENT SERIES

1. CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES.
2. CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES.
3. BANARAS SANSKRIT SERIES.
4. KASHI SANSKRIT SERIES.
5. HARIDAS SANSKRIT SERIES.
6. VIDYABHAWAN SANSKRIT SERIES.
7. VIDYABHAWAN AYURVEDA SERIES.
8. VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA SERIES.
9. VIDYA VILAS GRANTHAMALA.
10. CHOWKHAMBA STOTRA GRANTHAMALA.
11. SRI KRISHNA GRANTHAMALA.
12. MITHILA GRANTHAMALA.

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

PUBLISHERS

Post Box 8, Varanasi-1 India. Phone :-3145

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन ग्रन्थों की रक्षा भारतीय संस्कृति की रक्षा है

आदरणीय संस्कृत साहित्यसेवी विद्वानों की सेवा में :—

गंगातट पर इस पुनीत काशीपुरी में विक्रम संवत् १९४८ [ई० सन् १८९२] में गोलोकवासी श्रेष्ठिप्रवर श्री हरिदासजी गुप्त द्वारा स्थापित विश्वविख्यात इस कार्यालय द्वारा निम्नाङ्कित प्राचीन से प्राचीन एवं अर्वाचीन १२ ग्रन्थमालायें प्रकाशित हो रही हैं। यथा—

(१) चौखम्बा-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(२) CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES

(३) बनारस-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(४) काशी-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(५) हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(६) विद्याभवन-संस्कृत-ग्रन्थमाला

(७) विद्याभवन-आयुर्वेद-ग्रन्थमाला

(८) विद्याभवन-राष्ट्रभाषा-ग्रन्थमाला

(९) विद्याविलास-ग्रन्थमाला

(१०) चौखम्बा-स्तोत्र-ग्रन्थमाला

(११) श्रीकृष्ण-ग्रन्थमाला

(१२) मिथिला-ग्रन्थमाला

इन ग्रन्थमालाओं में वेद-व्याकरणादि संस्कृत साहित्य एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा आयुर्वेद प्रभृति सभी शास्त्रों के १००० से भी अधिक उत्तमोत्तम ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है तथा निरन्तर हो भी रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस कार्यालय की ख्याति अपने कार्यों से भारत में ही नहीं अपितु चीन-जापान-इङ्गलैण्ड-रूस-अमेरिका-जर्मनी-प्रभृति संपूर्ण विश्व के देशों में भी है। इस कार्यालय ने भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करते हुए संस्कृत वाङ्मय का जो सेवारूपी प्रकाशन कार्य किया है उससे प्रसन्न होकर देश विदेश के महामान्य—

म. म. श्रीगंगाधरशास्त्रीजी सी. आई. ई.	श्री यस. राधाकृष्णन् जी
" श्रीबापूदेवशास्त्रीजी, सी. आई. ई.	" कन्हैयालाल माणिकलालजी मुंशी
" श्रीशिवकुमारशास्त्रीजी	" श्रीप्रकाशजी
" श्रीलक्ष्मणशास्त्रीजी द्रविड	" आदित्यनाथ झा जी
" श्रीनित्यानन्दपन्तजी पर्वतीय	" संपूर्णानन्दजी
" श्रीवामाचरणजी भट्टाचार्य	" कमलापतिजी त्रिपाठी
" श्रीसुधाकरजी द्विवेदी	" आनन्द शकरजी ध्रुव
" श्रीहरिहरकृपालुजी द्विवेदी	" रायबहादुर के. वी. रंगस्वामी अयंगर
" श्रीहरप्रसादजी शास्त्री सी. आई. ई.	" बाबा राघवदासजी
" श्रीगंगानाथजी झा	" ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती शास्त्रीजी
" श्रीगोपीनाथजी कविराज	" सुरेन्द्रनाथ दासजी गुप्त
" श्रीगिरिधरशर्माजी चतुर्वेदी	" ब्रजविहारीजी चौबे
" श्रीनारायणशास्त्रीजी खिस्ते	" डा० हरमन जेकोबी (जर्मनी)
आचार्यप्रवर गोस्वामी दामोदरशास्त्रीजी	" डा० यफ० के० ली० (चीन)
पण्डितराज श्रीराजेश्वरशास्त्रीजी द्रविड़	" डा० टुची (जापान)

प्रभृति अनेक उद्भट विद्वानों ने पूर्ण सहयोग दिया एवं भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

यह कार्यालय अपने उन सभी भारतीय एवं विदेशी शिक्षाविशारदों, विश्वविद्यालयों, शिक्षणसंस्थाओं, सार्वजनिक तथा राजकीय पुस्तकालयों, धर्माचार्यों, धनी-मानी गृहस्थों, अध्यापकों एवं छात्रगणों तथा व्यापारी वर्ग का—जिन्होंने इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को अपनाकर हमें सम्मानित तथा साहित्यसेवा के लिए प्रेरित किया है—चिरऋणी है, तथा भविष्य में भी ऐसी ही कृपाकांक्षा के लिये आशान्वित है।

संस्कृत-साहित्य के सेवक—

जयकृष्णदास हरिदासगुप्तः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

GOVERNOR

सत्यमेव जयते

UTTAR PRADESH

GOVERNOR'S CAMP,
UTTAR PRADESH.

Lucknow,

April 12, 1962.

I have great pleasure in testifying to the excellence of the work of publication of Sanskrit series which the famous '*Chowkhamba*' of Varanasi has been doing during the last seventy years. Many eminent scholars of Sanskrit and Indology in India and abroad have commended this noble endeavour in glowing terms. This selfless venture, motivated by pure love of the heritage of Sanskrit learning in the country, was undertaken by *Shri Haridas Gupta* as long ago as 1892 and is being carried on with devotion and enthusiasm by his son *Shri Jaya Krishna Das Gupta*. The Series has over a thousand publications in Sanskrit, Hindi and English to its credit, and recently it has undertaken the stupendous work of publishing **'Sabda Kalpadruma'** and the **Vachaspatyam,** both Sanskrit lexicons, which are invaluable additions to any library or centre of learning and culture.

All this noble work has so far been carried on by the family without any assistance from Government. But under present condition, it is difficult to carry on this work without public patronage and Government assistance. There is absolutely no doubt about the value of these publications for the preservation and promotion of Indian culture and learning. I hope the Publishers of this Series will receive every encouragement at the hands of the public as also of the State and Central Governments. I wish the Series every success.

B. Ramakrishna Rao

(B. Ramakrishna Rao)
Governor of Uttar Pradesh.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानाभाव से अनेक सम्मतियों में से केवल एक सम्मति दिग्दर्शन मात्र के लिये प्रकाशित की जा रही है।

'चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला कार्यालय' के संस्थापक स्वर्गीय **बाबू हरिदासजी गुप्त** तथा वर्तमान संचालक **बा० जयकृष्णदासजी गुप्त** एक साधारण पारिवारिक गृहस्थ होते हुए भी आज पचासों वर्ष से प्राचीन से प्राचीन दुष्प्राप्य संस्कृत ग्रन्थों का उद्धारकार्यरूपी प्रकाशन करते चले आ रहे हैं यह सभी विद्यानुरागी सज्जनों को विदित है और इसके लिये इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

यों तो स्कूली पुस्तक व्यवसायियों की सभी जगह भरमार है परन्तु प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ जो किसी भी परीक्षा आदि में निर्धारित न हों और न जिनके प्रकाशन से अधिक लाभ की कोई संभावना ही हो उन ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य इनके ही द्वारा अथवा भारतवर्ष की इनी-गिनी राजसंस्थाओं तथा गवर्नमेंट द्वारा होता है। मगर इनमें भी **'गुप्त'** महोदय की जैसी सच्ची लगन के साथ अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुये प्रकाशन कार्य को निरन्तर चलानेवाला किसी को नहीं पाया। काशी की **'पंडित'** तथा **'विजयनगर'** ग्रन्थमाला इन्हीं कारणों से अल्प समय में स्थगित हो गई।

गुप्त महोदय के निस्वार्थ प्रेम तथा अटूट परिश्रम के फलस्वरूप ही हम लोगों को संस्कृत साहित्य, दर्शन आदि विविध विषयों के सैकड़ों ग्रन्थ जो लुप्तप्राय थे, देखने को मिल रहे हैं। इनके कार्य की प्रशंसा के लिये इनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ ही पर्याप्त प्रमाण है।

मगर इतनी बात तो माननी ही होगी कि इस संस्था को जिस प्रकार की सहानुभूति मिलनी चाहिये, नहीं मिली, यह अत्यन्त खेद का विषय है। अस्तु, संस्कृतानुरागी सभी आचार्यों, साधु-महन्तों, विद्वानों तथा राजा-महाराजा एवं धनीमानी दानी सज्जनों, अध्यापकों तथा सभी गवर्नमेंट व सार्वजनिक संस्थाओं का पूर्ण कर्तव्य है कि वे अब भी इनके द्वारा-प्रकाशित ग्रन्थों को अधिकाधिक मात्रा में खरीद कर तथा अन्य प्रकार से भी इनकी सहायता करें जिससे ये और भी उत्साह तथा प्रेम के साथ अधिक से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर सुरभारती की सेवा करते रहें।

म० म० पण्डित गोपीनाथ कविराज,
एम० ए० डी० लिट्०,
सुपरिंटेण्डेण्ट आफ संस्कृत स्टडीज़, उत्तरप्रदेश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'शब्दकल्पद्रुम' नाम महाभिधानग्रन्थ-समर्पणसमारोहः

चौखम्बाप्रकाशनस्यामरकृतिभूतं महाभिधानग्रन्थरत्नस्येदं
परमोपकारकारि प्रकाशनं दृष्ट्वा नितरां मुदमावहे'
राष्ट्रपति, डा० एस० राधाकृष्णन् महोदयाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Presentation Ceremony Of VACHASPATYAM

Dr. S. Radhakrishnan, *President of India remarked that it is a remarkable achievement of the publishers. It is a monumental and appreciable work and such works were needed for the propagation of Sanskrit. President further appreciated the bold step taken by the publishers and appreciated the work done by the 'Chowkhamba Series' during the past 70 years. He advised 'Chowkhamba' to publish more and more books in Sanskrit to enrich the literature.*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९४)

तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथ भट्टाचार्येण संकलितं

वाचस्पत्यम्

(बृहत् संस्कृताभिधानग्रन्थः)

आकार-डिमाई चौपेजी, पृष्ठ संख्या ५५००,
संपूर्ण ग्रन्थ कपड़े की पक्की ६ जिल्दों में

रियायती मूल्य २७५–००

डा० राजेन्द्र प्रसाद जी, प्रथम राष्ट्रपति, भारतीय गणतन्त्र :

यह जानकर वास्तव में बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'शब्दकल्पद्रुम' तथा 'वाचस्पत्यम्' दोनों ग्रन्थ संपूर्ण 'चौखम्बा सीरीज' में प्रकाशित हो गए। इससे निश्चय ही संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ है। ऐसे शुभ कार्य के लिए आपको मेरे हार्दिक धन्यवाद !'

डा० एस-राधाकृष्णन्, वर्तमान राष्ट्रपति, भारतीय गणतन्त्र :

प्रकाशक का यह कार्य अद्भुत एवं साहसपूर्ण है। संस्कृत की उन्नति के लिए ऐसे ही प्रशंसनीय तथा स्मरणीय कार्यों की आवश्यकता थी। राष्ट्रपति ने इस ठोस प्रयास की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि इस साहसिक कार्य से उनकी उत्तरोत्तर प्रसिद्धि ही होगी। उन्होंने गत ७५ वर्षों से 'चौखम्बा' द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा करते हुए सलाह दी कि वे साहित्य को समृद्ध करने के लिये अधिक से अधिक संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित करें।

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९३)

राजा राधाकान्तदेव विरचितः

शब्दकल्पद्रुमः

(बृहत् संस्कृताभिधानग्रन्थः)

संपूर्ण ग्रन्थ १–५ भाग द्वितीय संस्करण यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९९)

ऋग्वेद संहिता

सायणभाष्य सहित

सम्पादक : **भट्ट मोक्ष मूलर**

साईज डिमाई ४ पेजी पृष्ठ संख्या ३६०० भाग १–४ मूल्य १४०–००

ऋग्वेद का प्रस्तुत संस्करण अब तक के छपे अन्य संस्करणों की अपेक्षा सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है। इसके प्रख्यात सम्पादक ने अपने जीवन का अधिकांश समय इसे पूर्ण करने में ही व्यतीत किया जिसके कारण यह संस्करण आज भी अद्वितीय माना जाता है। इसके बाद छपे सभी अन्य संस्करण प्रायः पूर्णतया इसी पर आधारित हैं। इधर अनेक वर्षों से यह सर्वथा दुष्प्राप्य था। अतः चार भागों में छपे मूल संस्करण के आधार पर फोटो आफ सेट पद्धति से इसका नवीन संस्करण अत्युत्तम विदेशी (जर्मनी) टिकाऊ कागज पर मुद्रित कराकर इस संस्था द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जिससे इसकी दुष्प्राप्यता दूर होकर प्रत्येक वैदिक विद्वान् इसे सुलभ मूल्य में प्राप्त कर अपनी आकांक्षा पूर्ण कर सके।

(चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्कः ९६)

श्रीशुक्लयजुर्वेदे

शतपथब्राह्मणम्

श्रीमत्सायणाचार्यहरिस्वामिद्विवेदगङ्गकृत-
भाष्येभ्यः सारमुद्धृत्य

डा० अल्बेर्तेन वेबेरेण शोधितम्

संपूर्ण ग्रन्थ **मूल्य रु० १००–००**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

THE HŪṆAS IN INDIA

By

Dr. Upendra Thakur,

Reader in Ancient Indian and Asian Studies,

Magadh University, Gaya.

There is no aspect of human history which is more baffling than that of the Hūṇas whose great upsurge literally knocked the two great continents of Asia and Europe out of their bottom and paralysed the peaceful and cultured life of the millions of the people for a pretty long time. Like meteors they brilliantly shot up into the sky for a while and soon vanished into nothingness. But, inspite of their short duration in the sub-continent of India, they constituted the terror of the world and lived with glory during more than two thousand years. Their history in India is infact the history of a nation almost ignored which established powerful monarchies in Asia, Europe and-Africa at different times.

The coming of the Hūṇas in India was closely connected with their invasion of Persia and the conquest of the Oxus region. It was a remarkable coincidence that the Ephthalite kingdom in India came to an obscure and ignominious end after the destruction of the parent Ephthalite kingdom in Bactria. For sometime thereafter we hear of the existence of small Ephthalite groups in the extreme north-western portion of India but they were eventually absorbed by the surrounding population-a tragic but fascinating tale of a brave race who came and saw but was ultimately conquered like many other foreign races and finally absorbed in the vast bulk of Hinduism.

To this day there is not a single authoritative work on the history of the Hūṇas in India. Here is, for the first time, an illuminating book, written by a renowned historian, which has this subject as the topic of its sutdy and tackles it from every conceivable angle. In the first chapter, a brilliant account of the Hūṇas in world history has been portrayed;in the

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

second, their origin and early settlements have been traced in history, both remote and recent; in the third, their first phase of invasion of India resulting in their fierce clash with Skandagupta, the last great imperial Gupta monarch, and their ultimate rout has been discussed threadbare; in the fourth, their second phase of invasion under Toramāṇa, the great Hūṇa general and conqueror, has been graphically described; in the fifth, their third and final phase of the invasion of India under Mihirakula, the terror of the Indian princes, and the conquest of India right up to Pāṭaliputra, have been discussed in detail; in the sixth chapter, the last phase of their struggles with the various Indian kings and their final rout and absorption into the vast bulk of the Hindu Society have been beautifully outlined, and in the seventh chapter, their contributions to Indian culture in the sphere of literature, religion, coinage, social and economic convulsions etc. have been enumerated on the basis of literary and archaeological evidences bearing on their history and culture, which were hitherto ignored and unknown.

A thoroughly original and documented work, the account is so graphic and scintillating and the style so penetrating that at times the reader would feel that he is reading a book on literature rather than on history. A very difficult task has been accomplished with quite ease and candour and it may rightly be said that hardly a book on Indian history has so far been written which is so interesting and absorbing.

In the Press

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. XIII)

ENGLISH–SANSKRIT DICTIONARY

By

Monier Williams

Sturdy & Cloth-bound-Big Size, Double Demy octavo pp. 850.

Price Library Edition Rs. 75–00. Cheap Edition. Rs. 32–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES.

I. **ABHINAVAGUPTA** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 40-00

II. **COMPARATIVE ÆSTHETICS.** Vol. I. **INDIAN ÆSTHETICS** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 25-00

IV. **COMPARATIVE ÆSTHETICS.** Vol II. **WESTERN ÆSTHETICS** : By Dr. Kanti Chandra Pandey. 25-00

III. **YUGANADDHA** : By Dr. H. V. Guenther. Shortly

V. **VEDANTA DESIKA** : By Dr. Satya Vrata Singh. 20-00

VI. **LIGHTS ON VEDANTA** : By Dr. V. P. Upadhyaya. 15-00

VII. **THE FALL OF THE MOGUL EMPIRE** : By Sidney J. Owen. 8-00

VIII. **HISTORY OF INDIAN LITERATURE** : By A. Weber. 25-00

IX. **MEGHADUTA** : By H. H. Wilson. 7-50

X. **SARVA-DARSHANA SAMGRAHA** : Translated by E. B. Cowell and A. E. Gough. 15-00

XI. **GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE** : By H.H. Wilson. 20-00

XII. **SAKUNTALA** : Text with English translation by Monier Williams. 15-00

XIII. **ENGLISH-SANSKRIT DICTIONARY** By M. Monier Williams. 32-00

XIV. **LAWS & PRACTICE OF SANSKRIT DRAMA** : By Professor S. N. Sastri, M. A., D. Phil, LL. B. Vol. I. 25-00

XV. **HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE** : By F. Max Muller. 25-00

XVI. **THE SIX SYSTEMS OF INDIAN PHILOSOPHY** : By F. Max Muller. 15-00 Library Edition. 20-00

XVII. **EPISTEMOLOGY OF THE BHATTA SCHOOL OF PURVA MIMANSA** : By G. P. Bhatta. 20-00

XVIII. **DRAMAS** : By H. H. Wilson. 4-00

XIX. **THE PURANA TEXT OF THE DYNASTIES OF THE KALI AGE** : By F. E. Pargiter. 20-00

XX. **ATHARVA-VEDA PRATISAKHYA** : By W. D. Whitney. 20-00

XXI. **A PRACTICAL GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE** : By M. Williams. 20-00

XXII. **VAISESHIKA PHILOSOPHY** : By F. W. Thomas. 16-00

XXIII. **HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS** : By Dr. Rajabali Pandeya. 15-00

XXIV. **VISNUDHVAJA or QUTB MANAR** : By Dr. D. S. Triveda. 5-00

XXV. **RELIGIONS OF INDIA** : By Rev. J. Wood. 15-00

XXVI. **BUDDHIST PHILOSOPHY IN INDIA AND CEYLON** : By A. B. Keith. 15-00

XXVII. **MYTHOLOGY OF THE ARYAN NATIONS** : By Sir George W. Cox. 30-00

XXVIII. **SAMAVEDA** : Translated into English with a popular commentary by Ralph T. H. Griffith. 20-00

XXIX. **VALMIKI RAMAYANA** : English translation by Griffith. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

XXX. **SUSHRUTA SAMHITA** : English Translation and Notes by Kaviraj Kunja Lal Bhishagratna. 3 Vols. 60-00

XXXI. **UNIVERSAL HISTORY OF MUSIC** : By Raja S. M. Tagore. 20-00

XXXII. **STUDIES IN VEDIC INTERPRETATION** (On The Lines of Sri Aurobindo) : By A. B. Purani. 20-00

XXXIII. **ON THE ORIGIN OF THE INDIAN BRAHMA ALPHABET** : By George Buhler. With three Plates. 10-00

XXXIV. **SANKHYA APHORISMS OF KAPILA** : Eng. Tr. : by J. R. Ballantyne. 20-00

XXXV. **ṚGVEDA** : Translated into English By R. T. H. Griffith 2 Vols. 40-00

XXXVI. **INDIAN WISDOM** : By Monier Williams. 30-00

XXXVII. **A FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS** : Swami Agehananda Bharati. 15-00

XXXVIII. **VRĀTYAS IN ANCIENT INDIA** By Prof. Radha Krishna Choudhary. 15-00

XXXIX. **SOCIO-RELIGIOUS CONDITION OF NORTH INDIA** : By Dr. Vasudeva Upadhyaya. 25-00

XL. **SURGICAL ETHICS IN AYURVEDA** : By Dr. G. D. Singhal. and Pt. Damodar Sharma Gaur. 5-00

XLI. **STUDIES IN DEVELOPMENT OF ORNAMENTS** : By Dr. Rai Govind Chandra. 75-00

XLII. **AGNI-PURANA** : A Study By S. D. Gyani. 25-00

XLIII. **STUDIES IN JAINISM AND BUDDHISM IN MITHILA** : By Dr. Upendra Thakur. 15-00

XLIV. **WOMEN IN ANCIENT INDIA** : By M. E. R. Martin. 20-00

XLV. **BUDDHISM** : By Monier Williams. 35-00

XLVI. **AN INTRODUCTION TO BUDDHIST ESOTERISM** : By Dr. B. Bhattacharya. 30-00

XLVII. **CONCEPT OF POETIC BLEMISHES IN SANSKRIT POETICS** : By Dr. Bechan Jha. 15-00

XLVIII. **PANINI** : His Place in Sanskrit Literature by Theodore Goldstucker. 16-00

XLIX. **HINDU MUSIC FROM VARIOUS AUTHORS** : By Sourindro Mohun Tagore. 25-00

L. **TRIPURA RAHASYA** (Jnanakhand) Translated by A.U. Vasavada 15-00

LI. **INDO-ARYAN LETERATURE AND CULTURE (ORIGINS)** : By Nagendranath Ghose. 20-00

LII. **THE BHAKTI CULT IN ANCIENT INDIA** : By Dr. Bhagabat Kumar Goswami. 25-00

LIII. **NALOPAKHYANAM** : By Monier Williams. 25-00

Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे सन् १९६५-६६ के नवीन प्रकाशन :—

1 Indo-Aryan Leterature and Culture (Origins) :
By Nagendranath Ghose (P. 170) 20--00
2 Nalopakhyanam by Monier Williams. (P. 88) 25--00
3 The Bhakti Cult in Ancient India : By M. M. Dr. Bhagabat Kumar Goswami Shastri (P. 170) 25—00
४ **आश्चर्यचूडामणिः**। 'रमा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सिहत (पृ. ११०) ४–५०
५ **ऋग्वेद संहिता**। सायणभाष्य सहित। डॉ० मैक्समूलर सम्पादित। १–४ भाग संपूर्ण (पृ० १४०) १४०—००
६ **ऋतम्भरा**। सं० डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय (पृ० ७४) ०—२५
७ **काव्येन्दुप्रकाशः**। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री (पृ० १७९) ३—००
८ **कृष्णभक्ति-काव्य में सखीभाव** (पृ०) २५—००
९ **चतुर्वेदीय संस्कृत रचनावली**। (म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी विरचित निबन्धों का संग्रह) प्रथम भाग (पृ० ८३) २०—००
१० **त्रिदोष-विज्ञानम्**। कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास (चतुर्थ संस्करण) ४—००
११ **ध्वन्यालोक**। संस्कृत हिन्दी व्याख्यासहित। १–२ उद्योत (पृ० ८७) ३—००
१२ **चन्द्रालोक-पञ्चममयूखः**। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित (पृ० ८३) १—५०
१३ **जैनन्यायखण्डखाद्यम्**। विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित (पृ० १७३) ८—००
१४ **नन्दिकेश्वरकाशिका**। उपमन्यु कृत टीका सहित (पृ० ३) ०—२५
१५ **नलोपाख्यानम्** (महाभा० वनपर्व) 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित (पृ. ८८) २—५०
१६ **परमतत्त्वमीमांसा**। (मतिप्रतिक्षशास्त्रम्) श्रीकृष्ण जोशी (पृ० ३६) ४—५०
१७ **रसकौमुदी**। ज्ञानचन्द्र शर्मा विरचित। हिन्दी टीका सहित (पृ० २१३) १—५०
१८ **हिन्दी रसगङ्गाधर**। 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित। अतिशयोक्त्यलङ्कारादि समाप्ति पर्यन्त तृतीय भाग (पृ० ९६) २०—००
१९ **लघुसिद्धान्तकौमुदी**। 'माहेश्वरी' नामक हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार : महेशसिंह कुशवाहा। प्रथम भाग (पृ० ११) १२—५०
२० **लोहसर्वस्वम्**। सुरेश्वर विरचित। हिन्दी टीका सहित (पृ० २१४) २—००
२१ **शिवमहिम्नस्तोत्र**। हिन्दीपद्यानुवाद सहित, (पृ० १७८) ०—७५
२२ **शुक्लयजुर्वेद संहिता**। सं० श्री दौलतराम गौड़, गुटका (पृ० १४५) ३—००
२३ **संस्कृत सौरभम्** (सचित्र : कक्षा ८ के लिये प्रस्तुत) पं० करुणापति त्रिपाठी–डॉ० सुभाषचन्द्र तनेजा (पृ० १०४) १—२५
२४ **अपराध और दण्डशास्त्र**। श्री कौशलकुमार राय (पृ० १२२) ८—००
२५ **कविवर डा० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य**। (पृ० १४८) ३—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ **कायचिकित्सा।** रामरक्ष पाठक। द्वितीय भाग ज्वरचिकित्सा (पृ० २०८) १२—५०
२७ **सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान**—विश्वनाथ द्विवेदी (पृ० २०९) १२—००
२८ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज।** (पृ० १५०) २५—००
२९ **नगरीय समाजशास्त्र।** श्री कौशलकुमार राय (पृ० १८१) ८—००
३० **पदार्थविज्ञानम्।** श्री वागीश्वर शुक्ल (पृ० २११) ८—००
३१ **पुरुषार्थ।** भारतरत्न, डा० भगवान्दास (पृ० १५१) १२—५०
३२ **प्रत्यक्षशारीरम्।** गणनाथ सेन कृत। १–२ भाग। हिन्दी (पृ० २११) ३०—००
३३ **प्राकृत-प्रवोध।** डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री (पृ० ६) ८—००
३४ **बार्हस्पत्य राज्य व्यवस्था।** डा० राघवेन्द्र वाजपेयी (पृ० १२५) १०—००
३५ **भारतीय प्रज्ञा।** (मॉनियर विलियम्स कृत इण्डियन विज़डम का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक : डॉ० रामकुमार राय (पृ० १५५) २५—००
३६ **भारतीय इतिहास के स्रोत सिक्के।** रामकुमार राय (पृ० १५४) १२—००
३७ **भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार।** डॉ० भोलाशंकर व्यास। प्रथम भाग (पृ० १५६) ८—००
३८ **मत्तविलासप्रहसनम्।** महेन्द्र विक्रमवर्म विरचित हिन्दी टीका सहित १—२५
३९ **मंत्र और मातृकाओं का रहस्य।** (पृ० १३४) १६—००
४० **राजमार्तण्ड।** भोजराज विरचित। हिन्दी टीका सहित २—५०
४१ **वंदनीय भारतीय।** श्री व्यथित हृदय (पृ० १८४) २—८५
४२ **वरदपुत्र।** श्री व्यथित हृदय (पृ० १८४) २—१५
४३ **विविधार्थ।** भारतरत्न, डॉ० भगवानदास (पृ० १६०) ६—००
४४ **विज्ञप्ति मातृता सिद्धि विंशति कारिकावृत्तिश्च।** (पृ० १७३) ६—००
४५ **वैदिक साहित्य की रूपरेखा।** प्रो० हंसराज अग्रवाल (पृ० १६०) २—००
४६ **साहित्यशास्त्रसार।** प्रो० हंसराज अग्रवाल (पृ० १६७) ४—५०
४७ **स्मृतियाँ और कृतियाँ।** शान्तिप्रिय द्विवेदी (पृ० १६७) ४—००
४८ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** प्रो० हंसराज अग्रवाल (पृ० १६३) ७—५०
४९ **संस्कृत साहित्य में मौलिकता एवं अनुहरण।** (पृ० १६६) ८—००
५० **सोमेश्वर कृत मानसोल्लास : एक सांस्कृतिक अध्ययन।** (पृ० १६७) २५—००
५१ **सिद्धान्त निदानम्।** गणनाथ सेन कृत। संस्कृत। १–२ भाग (पृ० २१५) १४—००
५२ **हिन्दी निबन्धादर्श।** आचार्य रमाशंकर तिवारी (पृ० १८६) २—२५
५३ **हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका।** डा० शम्भुनाथ सिंह (पृ० १६८) ७—५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौखम्बा साहित्य एवं प्रचारित पुस्तकों की

विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाः
१ व्याकरण-ग्रन्थाः	१
२ मीमांसा-ग्रन्थाः	२२
३ न्याय-ग्रन्थाः	२३
४ वैशेषिक-ग्रन्थाः	२९
५ सांख्य-ग्रन्थाः	३०
६ योग-ग्रन्थाः	३१
७ दर्शन-ग्रन्थाः	३२
८ वेदान्त-उपनिषद्-पुराण-इतिहास-ग्रन्थाः	३४
९ वेदान्त–शुद्धाद्वैत-ग्रन्थाः	४६
१० वेदान्त–विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः	४७
११ स्वामि भगवदाचार्य-श्रीरामानन्द-संप्रदाय-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः	४८
१२ वेदान्त–द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः	५०
१३ स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ	५०
१४ ज्यौतिष-ग्रन्थाः	५१
१५ धर्मशास्त्र–कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः	६३
१६ छन्दः काव्य-अलङ्कार–चम्पू-ग्रन्थाः	७२
१७ नाट्य–नाटक-ग्रन्थाः	१०८
१८ संगीत–ग्रन्थाः	११९
१९ नीति–अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः	१२२
२० कोश-ग्रन्थाः	१२७
२१ कामशास्त्र-ग्रन्थाः	१३०
२२ तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः	१३१
23 Works by Sir John Woodroffe (Arthur Avalon)	137
२४ वैदिक-ग्रन्थाः	१३८
२५ पाकशास्त्र-ग्रन्थाः	१४७
२६ समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः	१४७
२७ बौद्ध-ग्रन्थाः	१७२
२८ जैनदर्शन तथा भारतीय ज्ञानपीठ की पुस्तकें	१७३
२९ स्तोत्र–माहात्म्य-व्रत-ग्रन्थाः	१७६
३० प्रकीर्ण-ग्रन्थाः	१७९
३१ कतिपय अत्यावश्यक उपयोगी पुस्तकें	१८६
३२ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रकाशन	१८९
३३ हिन्दी साहित्य कुटीर की पुस्तकें	१९२
३४ वाराणसेय सं. वि. विद्यालय परीक्षोपयोगी पुस्तकें	१९३
३५ कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकें	१९६
३६ हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षा की पाठ्य-पुस्तकें	१९८
३७ मिथिलाग्रन्थमाला-ग्रन्थाः	२०२
३८ चिकित्सा-ग्रन्थाः	२०७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापित संवत् १९४८] ॥ श्रीः ॥ [स्थापित सन् १८९२

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

द्वारा

प्रकाशित तथा प्रचारित ग्रन्थों का सूचीपत्र

व्याकरण-ग्रन्था:

१ **अनुवाद-चन्द्रिका** (नवम संस्करण) लोकमणि जोशी । यह पुस्तक संस्कृत तथा अंग्रेजी छात्रों को संस्कृत-हिन्दी-अनुवाद सिखलाने के लिए बहुत ही सरल पद्धति से लिखी गई है । १-२५

२ **अनुवादप्रभा** (अष्टम संस्करण) पं० गौरीशंकर शास्त्री । आज तक जितनी भी इस विषय की पुस्तकें निकली हैं उन सब में यह उत्तम है । इससे साधारण छात्र भी अल्प समय में ही सरलता से संस्कृत में सुन्दर अनुवाद करना सीख सकते हैं । सुलभ संस्करण १-२५
उत्तम संस्करण १-५०

३ **अभिनव निबन्धावली ।** श्री श्यामलाकान्त वर्मा वाराणसी की शास्त्री प्रथम-द्वितीय खण्ड में स्वीकृत । इसमें लगभग १०० परीक्षोपयोगी हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है । छात्रों के लिये इसी प्रकार के वर्गीकरण की आवश्यकता थी। भाषा, शैली, कौशल आदि सभी दृष्टियों से इसकी उत्तमता स्वीकृत की गई है । ४-५०

४ **आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन ।** डा० नेमिचन्द्र शास्त्री । प्रस्तुत ग्रन्थ एक प्रकार से संस्कृत व्याकरण शास्त्र का तुलनात्मक इतिहास है जिसमें शब्दानुशासन सम्बन्धी हेम की विशेषताओं, उपलब्धियों और अभावों पर प्रकाश डाला गया है तथा पाणिनि एवं पाणिनि से भिन्न अन्य अनेक वैयाकरणों के साथ अनेक दृष्टियों से उनकी तुलना करते हुए विशद् आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । हैम के साथ-साथ अन्य शब्दानुशासनों का भी विवेचन यथास्थान होता चला है । १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः** । श्रीमत्पाणिनिमुनिविरचितः [ह. ६३] ०-७५

*६ **आगरा यूनिवर्सिटी बी० ए० संस्कृत प्रश्नोत्तर** । १-२ भाग १०-५०

*7 ENGLISH IDIOMS, PHRASES, PROVERVES, ALLUSIONS AND QUOTATIONS WITH THEIR EXPLANATIONS FOR INDIAN STUDENTS by M. MACMILLAN AND A. BARRETT. 6—00

8 INTRODUCTION TO THE GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE by H. H. Wilson (Chow. Sans. Studies Vol. XI) 20–00

९ **उत्तरपक्षावली** । सपरिष्कृता [ह. १६] ०-२५

१० **उपसर्गवृत्तिः** । [चौ. पु.] ०-१०

११ **ऋजुपाणिनीयम्** । गोपालशास्त्री दर्शनकेशरी । वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत ०—५०

12 COMPARATIVE GRAMMAR OF THE GAUDIAN LANGUAGES by A. F. Rudolf Hoernle. Shortly

13 COMPARATIVE GRAMMAR OF THE MODERN ARYAN LANGUAGES OF INDIA by John Beams. Three Vols. Shortly

14 COMPARATIVE GRAMMAR OF THE SANSKRIT, ZEND, GREEK, LATIN, LITHUANIAN, GOTHIC, GERMAN AND SELVONIC LANGUAGES: By Prof. Bopp. Translated from the German by Edward B. Eastwick. 3 Vols. Shortly

१५ **कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी** । प्रो० रामशरण शास्त्री । इस ग्रंथ में व्याकरण और साहित्य का अपूर्व समन्वय है। सुबोध एवं रोचक गद्य-कथानकों में सिद्धान्त-कौमुदी के 'इको यणचि' सूत्र से लेकर उत्तर कृदन्त के अन्तिम सूत्र तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की एक नवीन विधि का यह अनूठा प्रयोग है। इसके पढ़ लेने पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न कथाशैलियाँ एवं उनमें अनुप्राणित आर्यावर्त की सांस्कृतिक परम्परा तथा सामन्तयुगीन शक्ति का एक चित्रण उपस्थित हो जाता है। ग्रंथ के अन्त में छपा हुआ संस्कृत-हिंदी कोश इसे और भी उपयोगी बना देता है ८-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१६ **काशकृत्स्न-धातुव्याख्यानम्।** (चन्नवीर कवि कृत संस्कृत रूपान्तर) संपादक–युधिष्ठिर मीमांसक ६–२५

१७ **काशिकावृत्तिः।** विद्वद्वर श्रीवामनजयादित्य विनिर्मिता। प्रस्तावना-लेखक—श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु। विषमस्थल टिप्पणी से अलङ्कृत विशुद्ध तृतीय संस्करण। १२–००

१८ **देववाणी प्रवेशिका।** कक्षा १-२ के बालक-बालिकाओं के लिये। रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित। सम्पादक—अनसूयाप्रसाद भट्ट (भाग ३–५ शीघ्र प्रकाशित होंगे) प्रथम भाग १–००, द्वितीय भाग १–००

१९ **धातुपाठः।** 'धात्वर्थप्रकाशिका' टिप्पणी सहितः [चौ. पु.] समाप्त

*२० **धातुरूपचन्द्रिका।** । धातुपाठ सहित ६–००

२१ **धातुरूपावली।** पं० गोपालशास्त्री नेने परिष्कृत [चौ. पु.] ०–५०

२२ **नन्दिकेश्वरकाशिका।** उपमन्यु कृत टीका सहित। संशोधित संस्करण ०–२५

२३ **निबन्धप्रकाशः।** ले० कृष्णकुमार अवस्थी। वाराणसी की पूर्वमध्यमा द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र में संस्कृत निबन्ध के लिए स्वीकृत २–००

२४ **निबन्ध-सौरभ।** (प्रथम परीक्षोपयोगी) ले. श्री बाबूलालमिश्र। इसमें प्रथम परीक्षोपयोगी लघुकाय हिन्दी निबन्ध अत्यन्त सरल भाषा और ऋजु शैली में लिखे गए हैं। इनसे निबन्ध के विषय में छात्रों का मार्ग अधिक प्रशस्त होगा १–२५

२५ **न्यासकल्पलता अर्थात् पाणिनिसूत्रन्यासशास्त्रार्थः।** श्रीशिवकुमारशास्त्री आदि विद्वानों के न्यास-शास्त्रार्थ भी इसमें हैं। ००–१

२६ **पदार्थदीपिका।** म० म० कौण्डभट्ट विरचिता [चौ. पु.] ०–५०

२७ **परमलघुमञ्जूषा।** 'अर्थदीपिका' टीका टिप्पणी सहिता म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीय संपादित परीक्षोपयोगी संस्करण समाप्त

२८ **परमलघुकृत्** (परमलघुमञ्जूषा-प्रश्नोत्तरी) [ह. १७६] १–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२९ **परिभाषेन्दुशेखरः** । 'बृहच्छास्त्रार्थकला' टीकासहितः ।
परीक्षोपयुक्त 'प्रश्नोत्तरी' समेतः [का. १३७] ३-००

३० **परिभाषेन्दुशेखरः** । भैरवी-तत्त्वप्रकाशिका टीका यन्त्रस्थ

३१ **परिभाषेन्दु-प्रश्नपञ्जिका** (परिभाषेन्दुशेखरप्रश्नोत्तरी) २५ वर्षों से अधिक परीक्षोपयोगी प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे गये हैं [का. १३८] ०-६५

३२ **परिष्कारदर्पणम्** । 'शास्त्रार्थकला' सहितम् ।
परिष्कार वनाने की नवीन शैलियां एवं सैकड़ों पाणिनीय सूत्रों के शाब्दवोध अति सरल रीति से लिखे गये हैं [ह. ३५] २-००

३३ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** । (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।
इस ग्रंथ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है । अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है । ऐसे लगभग ३००० शब्दों की अकारादि-क्रम-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है । १५-००

३४ **पाणिनीयशिक्षा** । 'प्रदीप' व्याख्या सहिता ।
पाणिनीय शिक्षा के साथ-साथ स्वरवैदिकप्रक्रिया के फक्किकाविवरण जो किसी संस्करण में नहीं हैं, इसमें आपको प्राप्त होंगे । [ह. सी. ५९] ०-४०

३५ **पाणिनीयशिक्षा** । पञ्जिकाभाष्य सहिता । [ह. १०] समाप्त

३६ **पाणिनीयव्याकरणे वादरत्नम्** । श्रीसूर्यनारायणशुक्लविरचितम् ।
प्रथमभाग में न्यास प्रकरण और द्वितीय भाग में परिष्कार प्रकरण है । न्यास-परिष्कार का इससे उत्तम ग्रन्थ आज तक नहीं छपा [का. सी. ८०]
प्रथम भाग २-५० द्वितीय भाग २-५०, १-२ भाग ५-००

37 **PANINI : His Place in Sanskrit Literature. An Investigation, Literary and Chronological Questions which may be settled by A Study of His Works by Theodor Goldstucker.** (Chow. Sans. Studies Vol. XLVIII) 16-00

*३८ **पालिप्राकृतव्याकरणम्** । मथुराप्रसाद दीक्षितकृतम् १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९ **पूर्वपक्षावली** । सपरिष्कृता ०–२५

४० **प्रथमा-शब्द-धातुरूपसंग्रहः** । (वाराणसी की प्रथमा परीक्षा-पाठ्य स्वीकृत शब्द-धातुरूपों का संग्रह) सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा ०–५०

४१ **प्रयोगशास्त्रार्थकला** । श्री वेणीमाधव शुक्ल रचित [ह. ७०] ०–२५

४२ **प्राकृतव्याकरणवृत्तिः** (ससूत्रा) श्री त्रिविक्रमदेवनिर्मिता । भूमिका, सूची आदि से अलंकृत सजिल्द अभिनव संस्करण ७–५०

४३ **प्रबन्ध-पारिजातः** (परिवर्धित संस्करण) प्रो० रामचन्द्र मिश्र । वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथम खण्ड परीक्षा स्वीकृत । काशी, बिहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में आने योग्य निबन्धों के उत्तर इस तरह सरल और संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं कि अभ्यास कर लेने पर विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस परिवर्धित संस्करण में (१) 'पत्र–लेखन प्रकार' (चिट्ठी–पत्री, आवेदन-पत्र आदि का उल्लेख), (२) प्रसङ्गोपयुक्त 'सुभाषित गद्यावली', (३) 'सुभाषितपद्यांशावली' और (४) 'लौकिक न्यायमाला' आदि विषयों का भी समावेश किया गया है। १–७५

४४ **प्रबन्धामृतम्** । (व्याकरणाचार्योपयोगी निबन्ध ग्रन्थ) संस्कृत व्याकरण के महत्त्वपूर्ण एवं विवादग्रस्त १२ विषयों पर विचारपूर्वक लिखे गये ये परमविद्वत्तापूर्ण निबन्ध विषयशैली तथा कौशल आदि सभी रचनात्मक दृष्टिकोणों से उत्कृष्ट है। [ह. १५७] १–५०

४५ **प्रस्तावतरङ्गिणी** । वाराणसी की उत्तरमध्यमा द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत । ले० श्री चारुदेव शास्त्री । काशी, बिहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में निर्धारित अपने ढङ्ग का यह सर्वोच्च निबन्ध ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्राचीन आचार–विचार के निरूपण के साथ-साथ आधुनिक विचारधाराओं के सारगर्भित विषयस्वरूप, प्रबन्ध–रचना–चातुरी तथा विचार–वैशारदी सहज ही प्राप्त हो जाती है ४–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६ **प्रबन्ध-रत्नाकरः** । डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल ।

शास्त्री, आचार्य, बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षोपयोगी शताधिक महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह किया गया है। शीघ्र प्राप्त होगा

४७ **प्राकृत-प्रबोध** । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री ।

हिन्दी माध्यम से प्राकृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सर्वांगपूर्ण यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है। अनुवाद और निबन्ध के लिए यह ग्रन्थ सर्वोत्तम है। ८-००

४८ **प्राकृतप्रकाशः** । भामहकृत 'मनोरमा' तथा म. म. मथुराप्रसाद दीक्षितकृत 'चन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहितः ।

भाषा, भाव आदि सभी दृष्टि से हिन्दी का प्रवाह ग्रन्थाशय के पूर्ण अनुकूल है इसकी भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की आलोचना एवं वररुचि का प्रामाणिक इतिवृत्त भी वर्णित है। अन्त में अपभ्रंश-शब्द-विचार-शब्द-कोश आदि से भी ग्रन्थ के दुरूहांशों को आधुनिक ढंग से खुलासा कर दिया गया है। ५-००

४९ **प्राकृत व्याकरण (हिन्दी)** । श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र ।

विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से विद्वान् लेखक ने इसमें महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, पैशाची, अपभ्रंश आदि प्राकृत के सभी अवान्तर भेदों का अत्यंत सुबोध रूप से प्रतिपादन करके एक बहुत बड़ी कमी को पूर्ण किया है। पाद टिप्पणियाँ तथा तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री प्रस्तुत करने एवं ग्रंथान्त में परिशिष्ट के दे देने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है। ५-००

50 PRACTICAL GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE—by Monier Williams. (Chow. Sans. Studies Vol. XXI.) 20-00

५१ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न—भैरवी—भावप्रकाश—सरलाटीकोपेता ।

पं० बालंभट्ट पायगुण्डेकृत भावप्रकाश टीका के साथ काशी के उद्भट विद्वान् व्या० आ० गोपालशास्त्री नेने कृत सरला टीका भी प्रकाशित हो जाने से यह संस्करण विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय तथा परीक्षोपयोगी सिद्ध हो गया है। [का. सी. १२५] अव्ययीभावान्त १४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५२ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न-ज्योत्स्ना-कुचमर्दिनी-प्रभा-विभोपेता ।
[ह. सी. २३] प्रथम भाग समाप्त
अजन्तपुंल्लिङ्गादि स्त्रीप्रत्ययान्त द्वितीय भाग २-००
अव्ययीभावान्त तृतीय भाग २-००

५३ **प्रौढमनोरमा ।** शब्दरत्न-भैरवी व्याख्या म. म. पं. श्री माधव शास्त्री भाण्डारी कृत प्रभा-टिप्पणी सहित । अव्ययीभावान्त समाप्त

५४ **प्रौढमनोरमा ।** 'शब्दरत्न' सहित तत्पुरुषादि सन्नन्तप्रक्रियान्त १०-००

+५५ **प्रौढमनोरमा ।** 'शब्दरत्न' सहिता । उत्तरार्ध । प्राचीन जीर्ण संस्करण २५-००

+५६ **प्रौढमनोरमाखण्डनम् ।** श्री चक्रपाणिदत्त विरचितम् २-००

५७ **प्रौढमनोरमाशब्दरत्नप्रश्नोत्तरावली** तथा **व्याकरणशास्त्रिप्रश्नावली**
[ह. ५४] १-३ खण्ड १-५०

५८ **फक्किकाप्रकाशः ।** (पङ्क्तिव्याख्यानम्) बृहद् टिप्पणीसहितः १-५०

५९ **फक्किकारत्नमञ्जूषा** (") द्वि. भाग समाप्त । प्रथम भाग २-००

६० **फक्किका-प्रश्नोत्तरी** (परीक्षोपयुक्तपंक्तिव्याख्यानरूपो ग्रन्थः)
[ह. १४०] १-५०

६१ **फक्किकासरलार्थः** (तृतीय संस्करण) ।
व्यर्थ विस्तार और काठिन्य ये दोनों दोष छोड़ कर फक्किकाएँ इस प्रकार लिखी गई हैं जिससे मध्यमा के विद्यार्थियों की सभी कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं । [ह. सी. २१] १-००

६२ **बनारस-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली ।**
इस संस्करण में नवीन निर्धारित साधारण प्रश्नपत्रों के साथ पिछले ३२ वर्षों के लघुकौमुदी में आये हुए प्रश्नों के उत्तर भी प्रकरण के अनुसार अत्यन्त संक्षेप में लिखे गये हैं । २-५०

६३ **बिहार-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली ।**
लगभग ३० वर्षों के प्रश्नों के उत्तर लघुकौमुदी के प्रकरणानुसार इस अभिनव संस्करण में आधुनिक ढंग से संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं । २-००

*६४ **बालसंस्कृतप्रभा** (बालोपयोगी) नेट ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६५ **बृहत् संस्कृतशिक्षा-वाटिका।** प्रथम भाग यन्त्रस्थ द्वितीय भाग ०-६५ तृतीय भाग ०-६५ चतुर्थ भाग ०-७५ [ह. ४९] २-४ भाग २-००

*६६ **भागवृत्तिः।** भर्तृहरि (विमलमति) विरचित अष्टाध्यायी प्राचीनवृत्ति- युधिष्ठिर मीमांसक संकलित ३-००

६७ **मध्यकौमुदीरहस्यम्** (प्रश्नोत्तरी, संशोधित द्वि० संस्करण) इस मध्यकौमुदी-प्रश्नोत्तरी में परीक्षा में आए हुए ३२ वर्षों के प्रश्नों के उत्तर अति सरल, सुबोध तथा फक्किकांश रहित लिखे गए हैं। २-५०

६८ **मध्यसिद्धान्तकौमुदी**-'सुधा' 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स, प्रश्नोत्तर लेखनप्रकारादि सहित।

इसकी 'सुधा' संस्कृत टीका में प्रत्येक प्रयोग तथा धातुरूप की परीक्षोपयोगी साधनिका तथा सूत्रार्थों की अति सरल व्याख्या की गई है। इसकी 'इन्दुमती' नामक हिन्दी टीका में टीका के साथ 'नोट्स' देकर संस्कृत व्याकरण का भी सरल रूप से ज्ञान कराया गया है जो आज तक के किसी भी संस्करण में नहीं है। ५-००

६९ **मानक हिन्दी व्याकरण।** वाराणसी तथा बिहार की पूर्वमध्यमा-परीक्षा स्वीकृत। ले० आचार्य रामचन्द्र वर्मा

इसमें अनेक शब्दभेदों की बिलकुल नई प्रकार की व्याख्या दी गई है; और विषय-विभाजन भी बहुत कुछ नये ढंग से किया गया है। अध्यापक तथा विद्यार्थी इसे अन्यान्य अनेक व्याकरणों की तुलना में अधिक महत्त्व की दृष्टि से देखेंगे और इससे अधिक लाभ उठावेंगे। २-००

७० **माधवीयधातुवृत्तिः।** सायणाचार्य विरचिता, सम्पादक-श्री अनन्त शास्त्री फड़के, प्राध्यापक-वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी।

यह ग्रन्थ पाणिनीय धातुपाठ की सर्वांगपूर्ण व्याख्या है। धातु-कोश या धातुरूपों के अनुसन्धित्सुओं के लिए यह बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है। (का० १०३) १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७१ **मध्यमा-व्याकरण-सोत्तरा-प्रश्नावली** (परिवर्द्धित संस्करण)
संपादक, पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य ।

इस संस्करण में सिद्धान्तकौमुदी के प्रकरणानुसार फक्किकांशवर्जित आधुनिक प्रश्नोत्तर लिखे गये हैं। अव यह प्रश्नोत्तरी सि० कौमुदी की परीक्षोपयोगी संक्षिप्त टीका ही हो गयी है। ३२ वर्षों के प्रश्नों के उत्तर इसमें आपको मिलेंगे। प्रथम खण्ड १–७५ द्वि० खण्ड १–७५ तृ० खण्ड २–२५ चतुर्थ खण्ड २–७५, १–४ खण्ड ८–५०

७२ **राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण।** वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा स्वीकृत। ले० केदारनाथ शर्मा।

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो जाने से शुद्ध हिन्दी में बोलना और लिखना छात्रों के लिये दुरूह हो गया था क्योंकि प्राचीन हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में ५० प्रतिशत उर्दू शब्दों का ही संमिश्रण है। अतएव यह पुस्तक राष्ट्रभाषा के प्रतीक तथा 'आज' पत्रिका के भू० पू० सम्पादक बाबूराव विष्णुपराड़कर, बाबू सम्पूर्णानन्दजी आदि धुरन्धर हिन्दी वेत्ताओं के मतों से अलंकृत तथा हिन्दी के महारथी पं० रामनारायण मिश्र, विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि विद्वानों की सम्मतियों से सुसज्जित होकर नवीन रूप में प्रकाशित हुई है। १–२५

७३ **रूपचन्द्रिका** (परिवर्धित संस्करण) पं० रामचन्द्र झा

इस संस्करण की विशेषता—

(लघुकौमुदी में आये हुए तथा उनके समान और भी शब्दों तथा धातुओं के अर्थ सहित रूपावली)। इस संस्करण में दशगणी धातुरूपों को सुपरिष्कृत करके ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म, कर्मकर्तृ आदि सभी प्रकरणों के सुविस्तृत सम्पूर्ण धातुरूपसंमिलित कर दिये गये हैं तथा ग्रन्थ के अन्त में अनुवादोपयोगी विविध परिशिष्ट तथा धातु सूची भी दी गई है। २–५०

७४ **लघुजूटिका** अर्थात् **अभिनवपरिभाषेन्दुशेखरपरिष्कृतिनिर्मितिः**
(शास्त्रीपरीक्षोपयोगी) [का. १९] ०–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७५ **लघुशब्देन्दुकला** (लघुशब्देन्दुशेखर-प्रश्नोत्तरी)।
'प्रबन्धलेख' परिशिष्ट सहिता [ह. १७२] १-२५

७६ **लघुशब्देन्दुशेखरः** । म. म. श्रीनित्यानन्दपन्त पर्वतीयकृत-
'शेखरदीपक'टीका सहितः। अव्ययीभावान्तः १०-००

७७ **लघुशब्देन्दुशेखरः**। भैरवी (चन्द्रकला) टीकासहितः। समाप्त

७८ **लघुशब्देन्दुशेखरः**। नागेशोक्तिप्रकाशटीकासहितः [का. १२८] २-५०

*७९ **लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या सदाशिवभट्टी** ३-००

८० **लघुकौमुदी-सोत्तरा-प्रयोगसूची** । प्रयोगार्थ सहित-
परीक्षोपयोगी 'इन्दुमती' टिप्पणी विभूषिता [ह. ४८] ०-६५

८१ **लघुकौमुदी-प्रयोगसूची** । अमृता टिप्पणी विभूषिता ०-३५

८२ **लघुकौमुदी-सोत्तरा प्रश्नावली**। २-००

८३ **लघुसिद्धान्तकौमुदी**। 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स,
प्रथमपरीक्षोपयोगी विविध परिशिष्टादि सहित। सं० रामचन्द्र झा

इस संस्करण की विशेषता—

इस अभिनव संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस टीका के आधार पर विद्यार्थी को पढ़ाया जाय तो व्यर्थ में उनका अधिक समय नष्ट न होगा। बालकों को परीक्षा के लिये लेख रटाने या लिखाने-पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। ग्रन्थ के भावों का दिग्दर्शन मात्र कराने पर ही विद्यार्थी 'इन्दुमती' टीका के आलोक में सभी बातें संक्षेप में समझ जायेंगे। ३२ वर्षों के प्रश्नोत्तर भी इस टीका में यथास्थान दिये गये हैं तथा सर्वत्र हिन्दी नोटस में सन्धि, कारक, समास, तद्धित, तिङन्त, लकारार्थ, कृदन्त आदि की सरल समीक्षा भी इस तरह की गई है कि विद्यार्थी को तत्क्षण ही उस विषय का पूरा ज्ञान हो जायगा। प्रायः सभी अनुवादोपयोगी विषय वृहत् परिशिष्ट में दिये गये हैं। २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८४ **लघुसिद्धान्तकौमुदी** । व्याख्याकार : महेशसिंह कुशवाहा एम.ए.

(नवीन शिक्षण-पद्धति पर आधारित वैज्ञानिक, विवेचनात्मक एवं विशद 'माहेश्वरी' नामक हिन्दी व्याख्या सहित)

पुस्तक की व्याख्या बहुत ही सुबोध और आधुनिक शैली में प्रस्तुत की गई है। कहीं भी पुरानी पण्डिताऊ शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस व्याख्या में वृत्ति का अर्थ न देकर सूत्र का अर्थ दिया गया है। प्रत्येक सूत्र का विभक्ति-निर्देश कर पहले शब्दार्थ दिया गया है और फिर अनुवृत्ति देकर उसका भावार्थ। अन्त में उपयुक्त उदाहरण देकर उस अर्थ को पुष्ट किया गया है। सूत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों और प्रत्याहारों को भी स्पष्ट और प्रचलित शब्दों में प्रकट किया गया है। अनेकों आलोचनात्मक और विवेचनात्मक टिप्पणियाँ दी गई हैं जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को भी स्पष्ट कर देती हैं। व्याख्या सरल होने के साथ ही प्रामाणिक भी है, क्योंकि उसका आधार वृत्ति न होकर महाभाष्य, काशिका आदि आर्षग्रन्थ हैं।

रूप-सिद्धि खण्ड भी अनूठा है। इसमें शब्दों को अकारादि क्रम से दिया गया है। रूप-सिद्धि करते समय प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को तत्सम्बन्धी सूत्रों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया गया है। विषय का इतना वैज्ञानिक और विस्तृत प्रतिपादन अन्यत्र नहीं मिलेगा। आरंभ में एक शोधपूर्ण विशद भूमिका दी गई है जिसमें व्याकरण के महत्त्व और इतिहास, अष्टाध्यायी और लघुसिद्धान्त-कौमुदी के तुलनात्मक विवेचन तथा व्याख्या और रूप सिद्धि की प्रक्रिया पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट-रूप से प्रत्याहार, पारिभाषिक शब्द, गणपाठ और सूत्रानुक्रमणिका आदि विषय दे दिये गये हैं। इस प्रकार यह संस्करण सर्वांगीण और आज तक प्रकाशित सभी संस्करणों से विलक्षण और श्रेष्ठ है। इसकी सहायता से मन्द से मन्द विद्यार्थी भी बिना अध्यापक के व्याकरण जैसे दुरूह विषय का ज्ञान सुगमता से प्राप्त कर सकता है। अध्यापकों और अन्य संस्कृत प्रेमियों के लिये यह पुस्तक समान रूप से उपयोगी है।

संज्ञाप्रकरणादि विसर्गसन्ध्यन्त (सन्धि प्रकरण) भूमिकादि सहित ३–००
संपूर्ण ग्रन्थ आलोचनात्मक भूमिकादि सहित नामक प्रथम भाग १२–५०
रूप-सिद्धि खण्ड नामक द्वितीय भाग शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८५ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** 'सुधा' टीका, प्रश्नोत्तरलेखन सहित।
इसकी सुधा टीका में सूत्रों का सरलार्थ, प्रत्येक शब्द तथा धातुरूप की ससूत्र साधनिका, सरलार्थ, स्थल-स्थल पर शब्दरूपावली, समासचक्र आदि विषय दिये गये हैं। ग्रन्थ के अन्त में उदाहरणों एवं धातुओं के हिन्दी अर्थ तथा प्रयोगलेखनप्रकार आदि बहुत से परीक्षोपयोगी विषय दिये गये हैं। [ह. ११९] अजिल्द ३-०० सजिल्द ३-७।

८६ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** 'बालबोधिनी' टीका सहित।
इस टीका में मूल की छोटी छोटी पङ्क्तियों व कठिन सूत्रार्थों को अल्पमति बालकों के लिए सरल शब्दों में लिखा गया है जिससे मूल पाठ करते समय भी उसका अर्थ तुरन्त समझ में आ जाता है। ०-७।

८७ **लघुसारस्वतव्याकरणम्।** (दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय 'प्रवेशिका' परीक्षा पाठ्यपुस्तक)
विद्वान् लेखक ने बड़े कौशल से इस पुस्तक का सम्पादन किया है। बीच-बीच में उपयोगी ज्ञातव्य सामग्री हिन्दी में भी दी गई है। ०-५।

८८ **लघुसिद्धान्तचन्द्रिका।** (दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय 'प्रवेशिका' परीक्षा पाठ्यपुस्तक)
संस्कृत भाषा के तिङन्त भाग के व्याकरण का ज्ञान अल्पवयस्क बालकों को बहुत थोड़े परिश्रम से ही हो जाय यही प्रस्तुत पुस्तक के संकलन का उद्देश्य है। ०-५।

*८९ **लिङ्गवचनविचारः।** दीनबन्धुकृतः ४-०।

*९० **लिङ्गानुशासनम्।** वामन कृत। स्वोपज्ञ वृत्ति सहित २-०।

९१ **लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला** तथा **कूटशास्त्रार्थकला** [ह. १००] ०-७।

९२ **वाक्यपदीयम्।** 'भावप्रदीप' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।
आचार्य सूर्यनारायण जी शुक्ल विरचित 'भावप्रदीप' नामक संस्कृत व्याख्या सर्वांगपूर्ण है। फिर भी इस द्वितीय संस्करण में संस्कृत व्याख्या का भी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या होने से छात्रों तथा अध्यापकों के लिए भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुगम हो गया है। **ब्रह्मकाण्ड** ४-५।

९३ **वाक्यपदीयम्।** द्वितीय काण्ड समा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९४ **वाक्यपदीयम्** । तृतीयकाण्ड, हेलाराजटीकासहित ४-८ खण्ड । कालसमुद्देशतो वृत्तिसमुद्देशपर्यन्तम् [ब. ७] ७-५०

९५ **विभक्त्यर्थनिर्णयः** । म० म० गिरिधरोपाध्याय विरचितः २०-००

९६ **वै० भूषणनिबन्धसंग्रहनाम तिङर्थवादसार** तथा **भूषणव्याख्या** ०-२५

९७ **वैयाकरणभूषणसारः** । 'सरला'-'सुबोधिनी' व्याख्याद्वयोपेतः श्री पं० गोपालशास्त्री नेने संपादित तथा परिवर्धित यह सुलभ संस्करण नवीन शिक्षार्थियों के लिए सरल और उपादेय है । २-००

९८ **वैयाकरणभूषणसारः** । परीक्षोपयोगी दर्पण–भैरवी–(परीक्षा) टीकाद्वय सहितः [का. १३३] १५-००

९९ **वैयाकरणभूषणसारः** । 'प्रभा' 'दर्पण' व्याख्याद्वयोपेतः । महामनीषी श्रीसभापतिशर्मोपाध्यायजी ने अपनी 'प्रभा' नाम्नी टीका का योग देकर इस ग्रंथ विषय को स्पष्ट परिलक्षित कर दिया है । यन्त्रस्थं

१०० **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा** । श्री सभापति शर्मोपाध्याय कृत रत्नप्रभा व्याख्या सहित । तात्पर्यनिरूपणान्तो भागः १२-००

१०१ **वै. सि. लघुमञ्जूषा-रहस्यम्** (वै. सि. लघुमञ्जूषा–प्रश्नोत्तरी) इसमें ग्रंथ के दुरूहांशों को ऐसे सरल शब्दों में लिखा गया है कि विद्यार्थियों को ग्रंथ का आशय शीघ्र ही समझ में आ जायगा और वे परीक्षा के प्रश्नोत्तर भी संक्षेप में लिख सकेंगे । १-००

१०२ **हिन्दी वैदिक व्याकरण** । श्री उमेश चन्द्र पाण्डेय । बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नव निर्मित इस ग्रंथ में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रिया रूपों का एक लघु कोश भी प्रकाशित किया गया है । २-००

१०३ **व्यवहार्यशब्दसरोवर** । प्रथम परीक्षोपयोगी नेट ०-६२

*१०४ **व्याकरण-महाभाष्यम्** । (आह्निक १–६, हिन्दी अनुवाद) मूल, हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी टिप्पणी सहित । इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसके भाषानुवाद की गति मूल का शब्दशः अनुकरण करती है, भाषा अत्यन्त प्राञ्जल, सुस्पष्ट एवं विषयानुकूल है । २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१०५ **व्याकरण-महाभाष्यम्।** सप्रदीप हिन्दीव्याख्योपेतम् महाभाष्य सरल संस्कृत भाषा का सर्वोच्च निदर्शन होते हुये भी आशय की दृष्टि से गंभीर ग्रन्थ है। प्रस्तुत संस्करण में भाषान्तर करते हुये भी भाष्याशय को सुस्पष्ट करने का सर्वत्र प्रयास किया गया है। पूर्वापर-संगति तथा भाष्यकार के अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिये प्रदीप (कैयट) संस्कृत व्याख्या सहित महाभाष्य की विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या की गई है। क्लिष्ट पदों का सुविस्तृत अर्थनिर्देश तथा विग्रह भी दिया गया है। अतः यह संस्करण विशेष रूप से उपयोगी है। ग्रन्थगत कोई भी अभिप्राय अविदित नहीं रह जाता। संस्कृत व्याकरण के छात्रों तथा अध्यापकों के हित की दृष्टि से महाभाष्य १-९ आह्निक का यह संस्करण सर्वोत्तम है। **प्रथम आह्निक (पस्पशाह्निक)** २-००

१-४ आह्निक ८-००

तथा ५-९ आह्निक के पृथक्-पृथक् भाग भी शीघ्र प्राप्त होंगे।

१०६ **व्याकरणमहाभाष्यम्।** (नवाह्निकम्) प्रदीप-उद्योत-तत्त्वालोक टीकात्रयोपेतम्। महामहोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा संपादित भूमिकादि विभूषित प्रदीप-उद्द्योत तथा 'तत्त्वालोक' नाम की टीकात्रय से विभूषित महाभाष्य का यह अभिनव संस्करण प्रथम ही प्रकाशित हुआ है। इस 'तत्त्वालोक' के आलोक में 'छायादि' सभी टीकायें गतार्थ हो गयी हैं। सजिल्द संस्करण। १५-००

*१०७ **व्याकरणमहाभाष्यम्।** प्रदीप-उद्योत टीका द्वयोपेतम्।

प्रथमाध्याय प्रथमपाद नवाह्निकम् १५-००

प्रथमाध्याय द्वितीयादि चतुर्थपाद ८-००

द्वितीयाध्याय	७-००	षष्ठाध्याय	९-००
तृतीयाध्याय	८-००	सप्तमाध्याय	७-००
चतुर्थाध्याय	७-००	अष्टमाध्याय	७-००
पंचमाध्याय	७-००		

सम्पूर्ण १-८ अध्याय अजिल्द ७५-०० ; सजिल्द ८०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०८ **व्या० महाभाष्यप्रकाशः**–(महाभाष्य–प्रश्नोत्तरी)
आज तक के परीक्षा में आये हुये सभी प्रश्नपत्र इसमें गतार्थ हो गये हैं। ऐसी सुविस्तृत सरल प्रश्नोत्तरी प्रथम ही प्रकाशित हुई है ०–७५

१०९ **व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास।** लेखकः श्रीरमाकान्तमिश्र
वैदिक काल से लेकर व्याकरण शास्त्र का इतिहास क्रमशः पूर्व-पाणिनि-काल, त्रिमुनि-काल, व्याख्या-काल और प्रक्रिया-काल के क्रम से सुव्यवस्थित रूप में वर्णित है। प्रायः सभी सम्प्रदायों का वर्णन इसके अन्तर्गत हो गया है। अत्युपयोगी संस्करण है। शीघ्र प्राप्त होगा

११० **व्युत्पत्तिप्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम्** (तृतीय संस्करण)
ले० महादेव उपाध्याय, अध्यापक, वाराणसेय सं. विश्वविद्यालय
इस संस्करण के परिशिष्ट में गूढाशुद्धिप्रदर्शन भी दिया गया है जो परीक्षार्थियों के लिये महत्त्व का विषय है। अब परीक्षार्थियों को दोनों विषय एक ही साथ मिलने से अशुद्धवाक्यशोधन के लिए परीक्षा में सरलता से सफलता मिलेगी। ०–५०

*१११ **व्याकरणमहाभाष्य।** कैयटकृत प्रदीप, अन्नंभट्टकृत प्रदीपोद्योतन व्याख्या सहित (१–२ भाग नवाह्निक) २०–७५

११२ **व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः।** विश्वेश्वरसूरिविरचितः। पाणिनीय-अष्टाध्याय्या भाष्यव्याख्यानरूपः [चौ. ४५] २२–५०

११३ **शब्दकौस्तुभः।** श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीतः। महाभाष्यस्थानामंशानां युक्तिप्रयुक्तिभिः साधनाय प्रणीतोऽतिविस्तृतोऽयं ग्रन्थः [चौ० २] २४–००

११४ **शब्दकौस्तुभः।** नवाह्निकमात्रम् [चौ. २] ८–००

११५ **शब्दरूपावली।** (विद्याविलासीय) एकाक्षरीकोश सहित [ह. ३] ०–३५

*११६ **शिक्षासूत्राणि।** आपिशलि-पाणिनि-चन्द्रगोमि विरचितानि। नेट ०–४०

*११७ **संस्कृत एम. ए. प्रश्नपत्र।** ३–५०

*११८ **संस्कृत बालादर्श।** ०–९०

*११९ **संस्कृत प्रथमादर्शः।** १-१५ द्वितीयादर्शः १–२५
तृतीयादर्शः १–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२० **संस्कृतपाठमाला** । महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ।

सुगमतापूर्वक संस्कृत भाषा को अधिकृत करने के लिये विद्वान् लेखक ने बालक-बालिकाओं के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए पाँच भागों में इस पुस्तक की रचना की है।

प्रथम भाग यन्त्रस्थ द्वितीय भाग ०-७५ तृतीय भाग ०-७५
चतुर्थ भाग ०-७५ पंचम भाग ०-९० २-५ भाग ३-१५

१२१ **संस्कृत व्याकरणोदयः** । डॉ० जयमन्त मिश्र ।

बिहार के विश्वविद्यालयों की विभिन्न परीक्षाओं में स्वीकृत। परिष्कृत परिवर्द्धित नवीन संस्करण। ४-५०

१२२ **संस्कृत-व्याकरणम्** । पं. रामचन्द्र झा । (रचनानुवाद खण्ड, निबन्ध खण्ड सहित परिवर्धित संस्करण) वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की पूर्वमध्यमा प्रथम खण्ड परीक्षा में अनुवाद के लिए स्वीकृत अनुवाद, निबन्धोपयोगी ग्रन्थ। प्रा० ले० आचार्य बदरीनाथ शुक्ल तथा आचार्य रामकुबेर मालवीय, प्राध्यापक—संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

व्याकरण, अनुवाद तथा परीक्षोपयोगी सरल संक्षिप्त संस्कृत निबन्ध के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है। इसमें प्रसंगानुसार, विमर्श, टिप्पणी उदाहरणमाला, अभ्यासार्थ प्रश्न, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शन आदि सामग्री द्रष्टव्य है। हरिकारिका के आधार पर प्रकरणानुसार व्याकरण के सर्वांश का सार इस अभिनव संस्करण में इस कौशल से कारिकाबद्ध कर दिया गया है कि केवल इस पुस्तक के ही अभ्यास से संस्कृत व्याकरण के सब अङ्गों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त हो जायगा। इसके परीक्षोपयोगी लगभग ४० अचूक निबन्धों का संग्रह भी परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है। इसी उपयोगिता को देखकर दरभंगा तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालयों ने भी इसे अपने यहाँ पाठ्य में स्वीकृत कर मान्यता प्रदान की है। ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२३ **संस्कृत प्रकाश ।** श्री कुबेरनाथ द्विवेदी ।

प्रस्तुत पुस्तक इलाहाबाद बोर्ड द्वारा हाइस्कूल एवं इंटर परीक्षा में निर्धारित संस्कृत व्याकरण का अत्यन्त सरल, सुबोध एवं परीक्षोपयोगी पाठ्य ग्रंथ है। इसकी समझाने की शैली अत्यन्त सुलझी हुई और आधुनिक पाठ्यप्रणाली के अनुकूल है २-५०

१२४ **संस्कृत-रचना ।** 'Students' Guide to Sanskrit Composition' श्री आप्टे रचित का हिन्दी रूपान्तर। अनुवादक—श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय

शुद्ध एवं मुहावरेदार संस्कृत बोलने और लिखने की क्षमता अनायास प्राप्त करने में यह पुस्तक बेजोड़ है। संस्कृत रचना के क्षेत्र में इसके समान अन्य कोई पुस्तक नहीं है। ४-००

१२५ **संस्कृत-प्रथमपाठ**—SANSKRIT FIRST LESSONS : By Dr. J. R. Ballantyne, हिन्दी अनुवाद सहित। अनु०—श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय ।

मूल अङ्गरेजी के साथ सरल हिन्दी अनुवाद युक्त यह संस्करण संस्कृत में प्रवेश चाहने वालों के लिए अतीव उपयोगी है। संस्कृत व्याकरण और रचना का प्रारम्भिक ज्ञान इसमें सुविचारित वैज्ञानिक विधि से गुम्फित है। ३-००

१२६ **संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः** । वाराणसेय तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा स्वीकृत। ले० आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि ।

इसमें अनुवाद करने के नियम सरल रूप में समझाए गये हैं और तदनुसार अनुवादार्थ अभ्यास भी दिए गये हैं। अभ्यासार्थ वाक्यों में आए हुए प्रत्येक कठिन शब्द का संस्कृत से हिन्दी तथा हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करने के नियम और रूपादि पुस्तक के अन्त में दे दिये गए हैं और संधि आदि का ज्ञान कराने का सुगम पथ भी प्रदर्शित कर दिया गया है। २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२७ **संस्कृत-स्वयं-शिक्षकप्रभा** (बालकोपयोगी अभिनव ग्रन्थ)
प्रारम्भिक हिन्दी स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की कठिनाई को दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। ०–७०

१२८ **संस्कृत-रचना-प्रकाश।** वाराणसी तथा बिहार की मध्यमा परीक्षा निर्धारित संस्कृतानुवाद के लिए पाठ्य ग्रन्थ। ले० प्रो० श्री रमाकान्त द्विवेदी।
संस्कृत मध्यमा एवं अंग्रेजी हाई स्कूल की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत यह ग्रन्थ संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद के लिये आधुनिक सरल पद्धति का बहुत ही सुन्दर प्रकाशित हुआ है। इसमें प्रत्येक पाठ के अन्त में जो 'अभ्यास' दिये गये हैं वह इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है। १–९५

१२९ **संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका।** ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। घर बैठे सरल रूप में संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अद्वितीय है। १–२५

१३० **संस्कृत-व्याकरण कौमुदी।** वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री प्रथम खण्ड परीक्षा निर्धारित अनुवाद के लिए तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में स्वीकृत, पाठ्य ग्रन्थ। ले० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।
अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। सांगोपांग संस्कृत रचनानुवाद के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है। १–४ भाग ८–०१

१३१ **संस्कृत-व्याकरण-प्रबोध** (१-२ भाग)
इसमें प्रथमा तथा मध्यमा के छात्रों को सरल रूपेण संस्कृत भाषा का ज्ञान कराया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से विद्यार्थियों को संस्कृत अनुवाद, निबन्ध-रचना, तथा पत्रादि लेखन-कलाओं का पूर्ण ज्ञान हो जायगा।
प्रथमा परीक्षोपयोगी प्रथम भाग २–०
मध्यमा परीक्षोपयोगी द्वितीय भाग ३–५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३२ **संस्कृत व्याकरण में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि ।** डॉ० कपिलदेव ।
इस निबन्ध-ग्रंथ में विद्वान् लेखक ने पाणिनीय और पाणिनीयेतर समस्त गणपाठों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है जो आज तक की संसार की किसी भी भाषा में प्राप्त नहीं है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में यह कार्य सर्वथा नवीन है। ८-००

*१३३ **संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास ।** युधिष्ठिर मीमांसक
प्रस्तुत ग्रंथ में व्याकरण शास्त्र के अंगभूत धातुपाठ, गणपाठ, उणादि सूत्र, लिङ्गानुशासन, परिभाषा-पाठ, फिट्सूत्र, दार्शनिक ग्रन्थकार, वैदिक प्रातिशाख्य, व्याकरणप्रधान काव्यशास्त्रों के प्रवक्ता, लेखक और व्याख्याता आचार्यों के विस्तार आदि का विस्तृत परिचय दिया गया है। द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण । १-२ भाग २७-००
प्रथम भाग १५-०० द्वितीय भाग १२-००

१३४ **सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुमः ।** धर्माधिकारी कृष्णपण्डित विरचितः
[चौ. ७०] १-५०

१३५ **संस्कृतालोकः ।** पंडित रामबालक शास्त्री ।
पंडित रामबालक शास्त्री की रचना-शैली अनोखी है। बालकों का मानसिक स्तर, उनका पाठ्यक्रम आदि न जाने कितनी बातों का ध्यान रख कर आपने बालकों को संस्कृत भाषा का ज्ञान कराने के हेतु संस्कृतालोक की ३ किरणों को मूर्त रूप दिया है। प्रथम किरण ०-४०, द्वितीय किरण ०-५०, तृतीय किरण ०-६५, १-३ किरण १-५५

१३६ **सन्धि-चन्द्रिका ।** सम्पादक, पं. रामचन्द्र झा ।
इस पुस्तक में सन्धि, कारक, समास, तिङन्त (धातु), कृदन्त, तद्धित आदि को अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दी भाषा में समझाया गया है और परिशिष्ट में वाक्यविन्यास का प्रकार भी संक्षेप में बतलाया गया है। अल्पवयस्क बालकों के लिए यह बिल्कुल नयी पुस्तक है। १-००

१३७ **समासचक्रम् ।** ब्रह्मदत्तशुक्लकृत टिप्पणी सहितम् [चौ. पु.] ०-२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३८ **सादृश्यशास्त्रार्थकला** तथा **लः कर्मशास्त्रार्थकला** [ह. ७२] ०-२०

१३९ **सारस्वतव्याकरणम्** । बालबोधिनी-इन्दुमतीसहितम् ।
परीक्षोपयोगी **'बालबोधिनी'** संस्कृत टीका के साथ **'इन्दुमती'** हिन्दी टीका विभूषित होने से यह संस्करण अधिक उपादेय हो गया है। परीक्षोपयोगी विषय हिन्दी नोट्स में दिये गये हैं जिनका अभ्यास करने से विद्यार्थी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है पूर्वार्द्ध १-००

१४० **सारस्वतव्याकरणम्**। चन्द्रकीर्त्तिटीका-प्रसादटीका-परीक्षोपयोगी मनोरमा विवृति तथा सटीक लिंगानुशासन प्रकरण सहित [का. १११] (पूर्वार्द्ध यन्त्रस्थ) उत्तरार्द्ध ५-००

१४१ **सिद्धान्तकौमुदी** (मूल, जेबी गुटका तृतीय संस्करण)
पं० गोपालशास्त्रीनेने सम्पादित सूत्राङ्क-धात्वङ्क-सूच्यादि सहित ३-५०

१४२ **सिद्धान्तकौमुदीपंक्तिपदार्थविवरणरूपा भावबोधिनी नाम्नी विस्तृतटीका।** [चौ. पु.] २-००

*१४३ **सिद्धान्तकमुदी-परिशिष्टसंग्रहः।** ०-५०

१४४ **सिद्धान्तकौमुदी-बालमनोरमा**। परीक्षोपयोगी-रूपलेखन-प्रकार-पङ्क्तिलेखनप्रकार आदि परिशिष्टों से सुसज्जित ।
'बालमनोरमा' टीका सहित सिद्धान्तकौमुदी के इस संस्करण में हमारे योग्य सम्पादक व्याकरणाचार्य पं० गोपालशास्त्री नेने ने तत्त्वबोधिन्यादि टीकाओं की समालोचना करके प्राच्य-नव्य मत से विवादग्रस्त परीक्षोपयोगी एवं जटिल अंश को प्रयोगसाधन-पंक्तिलेखनशैली के रूप में लिख दिया है जिससे 'एक पन्थ दो काज' अर्थात् परीक्षा की लेखनशैली को भी विद्यार्थी जान जाँयगे और केवल कण्ठस्थ करके भी परीक्षा-महार्णव को अनायास पार कर लेंगे । [का. १३६] कारकान्त प्रथम भाग ३-५०, समासादि द्विरुक्तान्त द्वितीय भाग ३-५०, भ्वाद्यादि चुराद्यन्त तृ० भाग ३-००, ण्यन्तादि समाप्त्यन्त चतुर्थ भाग ३-५०, पूर्वार्द्ध ७-००, उत्तरार्द्ध ६-५०, सम्पूर्ण १३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४५ **सिद्धान्तकौमुदी** । श्रीगोपालशास्त्रीनेनेकृत परीक्षोपयोगी 'सरला'टीका सहित स्त्रीप्रत्ययान्त भाग [का. ११९] समाप्त

१४६ **सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्** । हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार-**श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय** । इसमें काशिका के आधार पर सूत्रों की हिन्दी-व्याख्या, पदकृत्य, व्युत्पत्ति और प्रयोगों की साधनिका भी आधुनिक सरल सुबोध हिन्दी भाषा में दी गई है । १-५०

१४७ **सिद्धान्तकौमुदी-वैदिकीप्रक्रिया** । हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार-**श्री उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'** । व्याख्या में समास-विग्रह, व्युत्पत्ति, प्रयोगों की साधनिका तथा परीक्षोपयोगी विवरण भी दिये गए हैं । ४-००

१४८ **सि० कौमुदीशैषिकादि द्विरुक्तान्त तद्धित प्रयोगसूची** ०-२०

१४९ " **भ्वाद्यादि चुरादिगणान्त प्रयोगसूची** [ह. ८१] ०-६५

१५० **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा प्रयोगसूची** ।
पंक्तिलेखनप्रकारात्मक 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित (१) कारकान्त ०-६५
(२) कारकादि शैषिकान्त १-०० (३) विकारार्थकादि चुराद्यन्त १-१५
(४) ण्यन्तादि उत्तर कृदन्तान्त १-२५ १-४ भाग ४-००

१५१ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा स्वरवैदिक-प्रयोग सूची** ।
उणादिकोश सहित लिङ्गानुशासन प्रकरणान्त ०-९०

१५२ **सिद्धान्तकौमुदी-स्वरवैदिकप्रक्रिया-प्रश्नोत्तरी** । १-२५

१५३ **सिद्धान्तचन्द्रिका** । सुबोधिनी-तत्त्वदीपिका टीका, बृहत् चक्रधरा टिप्पणी, अव्ययार्थमाला, लिंगानुशासन, उणादिकोष सहित [का. ६१] पूर्वार्द्ध ६-०० उत्तरार्द्ध ६-०० सम्पूर्ण १२-००

१५४ **सिद्धान्तचन्द्रिका** । 'बालबोधिनी' टीकासहित ।
[ह. १७] पूर्वार्द्ध १-५० उत्तरार्द्ध २-०० सम्पूर्ण ३-५०

१५५ **सोत्तरा-सिद्धान्तकौमुदीरूपलता** (३६७ शब्दों की बृहत्तम शब्दरूपावली) [ह. १५५] १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

156 STUDENT'S GUIDE TO SANSKRIT COMPOSITION: A Treatise on Sanskrit Syntax for the use of Schools and Colleges. By V. S. Apte. 4-75

*१५७ स्फोटवादः । नागेशकृतः । सटीक । नेट १०-००

मीमांसा-ग्रन्थाः

१ अधिकरणकौमुदी । श्रीदेवनाथठक्कुरकृता [का. ५०] १-५०

२ अर्थसंग्रहः । 'दीपिका' हिन्दी टीका सहितः ।

इस टीका की प्रमुख विशेषता यह है कि टीकाकार ने छात्रों को सरल शब्दों में अनेक प्रकार से ग्रन्थ को समझाने का भगीरथ प्रयत्न किया है, शास्त्री के परीक्षार्थी इस सरल टीका के आधार पर अब स्वयं भी अर्थसंग्रह का अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। १-२५

3 EPISTEMOLOGY OF THE BHATTA SCHOOL OF PURVA MIMANSA: By Dr. G. P. Bhatt. (Chow. San. Studies Vol. XVII) 20-00

* ४ कल्पकलिका (शाबरभाष्यव्याख्या तर्कपादान्त) म० म० हरिहरकृपालु द्विवेदी विरचिता ४-००

५ जैमिनीयन्यायमाला । श्रीमन्माधवाचार्यविरचिता, तद्विरचितेन विस्तरेण विभूषिता [का. १२६] तृतीयाध्यायान्ता ५-००

* ६ तन्त्रसिद्धान्तरत्नावली । म० म० चिन्नस्वामि शास्त्रिविरचिता ४-००

७ न्यायरत्नमाला । श्रीमत्पार्थसारथिमिश्रविनिर्मिता [चौ. ७] समाप्त

८ न्यायसुधा । (तन्त्रवार्तिकव्याख्या) श्रीमद्भट्टसोमेश्वरकृता ३२-००

९ पूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी। रामकृष्णभट्टाचार्यविरचिता २-५०

*१० प्रकरणपञ्चिका । शालिकनाथ मिश्र कृत । जयपुरी नारायणभट्ट कृत व्याख्या सहित २५-००

११ बृहती । प्रभाकरमिश्रविरचिता (शाबरभाष्यव्याख्या), म० म० मिश्रशालिकनाथकृत 'ऋजुविमला' व्याख्याद्वययुता [चौ. ६९] ४-५०

१२ भाट्टचिन्तामणिः । म० म० श्रीगागाभट्ट विरचितः । [चौ. ६] ७-५०

१३ भाट्टभाषाप्रकाशः । श्रीनारायणतीर्थमुनिविरचितः [चौ. पु.] ०-६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१४ **मीमांसाऽभ्युदयः** । श्रीशैलताताचार्यशिरोमणि विरचितः । नेट १-२५

१५ **मीमांसाकौस्तुभः** । (मीमांसासूत्रोपरि काचन विस्तृत टीका) श्रीखण्डदेवविरचितः [चौ. ५८] ३०-००

*१६ **मीमांसादर्शन** । (मीमांसाशास्त्र का इतिहास) हिन्दी ५-००

*१७ **मीमांसादर्शन** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

१८ **मीमांसानुक्रमणिका** । श्रीमण्डनमिश्रकृता । महामहोपाध्याय गङ्गानाथ झा रचित 'मीमांसामण्डन' मण्डिता [चौ. ६८] १२-५०

१९ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । मूलमात्रम् [चौ. पु.] ०-५०

२० **मीमांसान्यायप्रकाशः** । श्री अनन्तदेवविरचित 'भाट्टालङ्कार' व्याख्यासहितः [चौ. ५३] ५-००

२१ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । म० म० श्रीचिन्नस्वामि शास्त्रिविरचित 'सारविवेचिनी' व्याख्या सहितः । परिवर्द्धित द्वि० संस्करण [का. २५] ५-००

२२ **मीमांसाबालप्रकाशः** । श्रीभट्टशङ्करविरचितः [चौ. १६] ५-००

२३ **मीमांसा परिभाषा** । म० म० श्रीनित्यानन्दपन्त कृत टिप्पणी तथा हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

*२४ **मीमांसार्थप्रकाशः** । लौगाक्षिभास्करप्रणीतः । १-५०

२५ **मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम्** । 'न्यायरत्नाकर' व्याख्यासहितम् ७-५०

*२६ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः** । म० म० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः । नेट ४-००

*२७ **वाक्यार्थरत्नम्** । अहोबलसूरिविरचित 'सुवर्णमुद्रिका' व्याख्यासहितं १-२५

२८ **विधिरसायनम्** । श्रीमदप्पय्यदीक्षितविरचितम् [चौ. १३] ५-००

+२९ **विधिरसायनदूषणम्** । श्रीशङ्करभट्टप्रणीतम् । १-५०

३० **वेदप्रकाशः** । श्रीसत्यज्ञानानन्दतीर्थेन विरचितः [चौ. ७७] २-५०

३१ **शास्त्रदीपिका** । श्रीपार्थसारथिमिश्रप्रणीता । पण्डितप्रवर रामकृष्ण-विरचित 'युक्तिस्नेहप्रपूरणी' व्याख्या सहिता । तर्कपादः [चौ. ४३] समाप्त

न्याय-ग्रन्थाः

१ **आत्मतत्त्वविवेकः**—(बौद्धन्यायखण्डनं) श्रीमदुदयनाचार्यविरचितः । श्रीरामतर्कालङ्कारभट्टाचार्यकृत टिप्पण्या, तार्किकशिरोमणि श्रीरघुनाथकृत दीधितिरिति प्रसिद्धया विवृत्या, श्रीशङ्करमिश्रविरचित आत्मतत्त्वविवेक-कल्पलतया च विभूषितः । १-६ खण्डाः । [चौ. ६३] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

२ **आत्मतत्त्वविवेकः**—उदयनाचार्यविरचितः । श्रीनारायणाचार्यनिर्मित 'आत्मतत्त्व'व्याख्या (नारायणी) सहितः [चौ. ८४] १२-५०

३ **आरम्भवादः** । ले० आचार्य बदरीनाथ शुक्ल ।
सृष्टि के विषय में न्याय-वैशेषिक दर्शन के दृष्टिकोण की व्याख्या करने वाला सर्वाङ्गसम्पन्न अभिनव मौलिक ग्रन्थ । २-००

४ **कारकचक्रम्** । माधवी टीका-प्रदीपटिप्पणीसहितम् [ह. १५४] १-२५

५ **कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्री सहिता**
इस संस्करण में पण्डितराज श्रीमान् राजेश्वरशास्त्री जी के तत्त्वावधान में अत्यन्त प्राचीन दुष्प्राप्य रामरुद्री के आधार पर समस्त रामरुद्री पुनः परिष्कृत की गयी है। संपूर्ण रामरुद्री के सहित 'कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी' का यही एक संस्करण आजतक प्राप्त होता है [का. ६] ९-००

६ **कारिकावली-मुक्तावली**-'न्यायचन्द्रिका' टीका सहिता । परीक्षोपयोगी टिप्पणी सहिता च [का. १६] १-२५

७ **कारिकावली-मुक्तावली** । वाराणसी की उत्तर मध्यमा के अनिवार्य विषय में व्याकरण के छात्रों के लिए पाठ्य स्वीकृत । 'मयूख' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहित । व्याख्याकार-श्रीसूर्यनारायण शुक्ल । प्रत्यक्षखण्डान्त १-२५
संपूर्ण २-५०

८ **कारिकावली-मुक्तावली** । श्रीसूर्यनारायणशुक्लविरचित 'मयूख' संस्कृत हिन्दीटीका सहिता [ह. १५] शब्दखण्डमात्र ०-५०

९ **का० मुक्तावलीतत्त्वालोकः** (मुक्तावली-प्रश्नोत्तरी) । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक श्री रुद्रधर झा जी ने पं० बचा झा जी के असुद्रित 'तत्त्वालोक' के आधार पर १०० प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे हैं । [ह. २८०] १-२५

१० **क्रोडपत्रसंग्रहः** । श्री कालीशङ्करप्रणीतानि अनुमानजागदीशी-अनुमान-गादाधरी-क्रोडपत्राणि । सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः । १-८ खण्डाः [चौ. २५]
जागदीशी-क्रोडपत्र यन्त्रस्थ **गादाधरी-क्रोडपत्र** १०-००

११ **गादाधरी** । अनुमानचिन्तामणिव्याख्या शिरोमणिकृतदीधित्या सहिता सुप्रसिद्धोऽयं ग्रन्थः [चौ. ४२] संपूर्ण शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२ **गादाधरी–सामान्यनिरुक्तिः–गूढार्थतत्त्वालोकः** । श्री धर्मदत्त [श्रीबचा झा] शर्मविरचितः [का. ११२] २–५०

*१३ **चतुर्दशलक्षणी** । गदाधरकृत । कृष्णभट्ट–रघुनाथ–पट्टाभिरामकृत व्याख्या सहित । प्रथम भाग १०–००

१४ **जागदीशी** । अनुमानचिन्तामणिव्याख्या । शिरोमणिकृत दीधित्या सहितः १–१३ खण्डाः । संपूर्ण ग्रन्थ यन्त्रस्थ । फुटकर खण्ड ३–००

१५ **जा० व्यधिकरणम्** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहितम् [का. ८९] यन्त्रस्थ

*१६ **जा० व्यधिकरणम्** । स्वामि रामप्रपन्नाचार्य कृत दीपिका टीकोपेतम् ४–५०

१७ **जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहितः [का. ९४] २–५०

१८ **जा० पक्षता** । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहित [का. ११३] ४–००

१९ **जा० पञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणयोश्च क्रोडपत्रम्** [चौ. पु.] ०–२०

२० **जा० सिद्धान्तलक्षणस्य क्रोडपत्रम्** [चौ. पु.] ०–६५

२१ **जा० व्यधिकरणधर्मावच्छिन्नाभावस्य कालीशङ्करी** । ०–५०

+२२ **जा० सामान्यलक्षणाप्रकरणम्** । काशिकानन्दीव्याख्यासहितम् ४–५०

२३ **तर्कभाषा** । केशवमिश्र प्रणीता । मूलमात्रम् [ह. २२५] ०–६५

२४ **तर्कभाषा** (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य ग्रंथ) 'तत्त्वालोक' संस्कृत–हिन्दी टीका सहित ।

'तत्त्वालोक' के सुप्रसिद्ध निर्माता पं० श्री बचा झा जी के शिष्योपशिष्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक पं० श्री रुद्रधर झा विरचित इसकी संस्कृत-हिन्दी टीका में मूल ग्रन्थ के प्रतिपद की व्याख्या करके ग्रन्थ के दुरूहांशों का प्रश्नोत्तर के रूपमें विशद विवेचन किया गया है १–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५ **हिन्दी तर्कभाषा**–(वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य स्वीकृत) ले० आचार्य विश्वेश्वर।

पं० केशवमिश्र प्रणीत यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बड़ा सारगर्भित और दुरूह है। इसलिए इसके रहस्य को हृदयंगम कराने के लिए आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ने २६४ पृष्ठों में इसकी व्याख्या पूरी की है। इसके साथ ही ४६ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका है जिसमें न्यायशास्त्र, प्राचीन न्याय, मध्य न्याय, बौद्ध न्याय, जैन न्याय और नव्यन्याय आदि सभी शाखाओं का सुन्दर ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। सरकार द्वारा पुरस्कृत होकर यह संस्करण अधिक लोकप्रिय हो चुका है। ६–००

२६ **तर्कभाषारहस्यम्**–(परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)।

परीक्षा में आने वाले सभी प्रश्नों के उत्तर बहुत ही विस्तार से इसमें लिखे गए हैं। ऐसा कोई भी स्थल नहीं छूटा है जिसकी व्याख्या और प्रश्नोत्तर इसमें न हो। ०–४०

२७ **तर्कसंग्रहः।** वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत। लक्षण–टिप्पणी सहित। ०–२५

२८ **तर्कसंग्रहः। पदकृत्य सहितः** (वाराणसी की पूर्व-मध्यमा अनिवार्य विषय में व्याकरण के छात्रों के लिए तथा उत्तरमध्यमा ऐच्छिक 'क' वर्ग–साहित्य प्रथम खण्ड के लिए स्वीकृत पाठ्य ग्रन्थ)

'पदकृत्य' टीका के साथ 'इन्दुमती' नामक हिन्दी व्याख्या तथा लक्षण-टिप्पणी हो जाने से यह संस्करण परीक्षार्थी छात्रों के लिये अधिक उपादेय है। पुस्तक के अन्त में अनेक वर्षों के प्रश्नपत्र भी दे दिये गये हैं। ०–५०

२९ **तर्कसंग्रहः।** 'दीपिका' तथा लक्षण-टिप्पणी सहित इन्दुमती हिन्दी टीका विभूषित। सर्वोत्तम संस्करण ०–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३० **तर्कसंग्रहः ।** न्यायबोधिनी-पदकृत्य-विरला-इन्दुमती सहित

न्यायबोधिनी के बिना जैसे मूल तर्कसंग्रह का परिपक्व ज्ञान नहीं हो सकता उसी प्रकार 'विरला' टीका के बिना न्यायबोधिनी का ज्ञान भी विद्यार्थी को नहीं हो सकता। इसीलिए 'न्यायबोधिनी' के साथ 'विरला' तथा 'इन्दुमती' नाम की आधुनिक सुविस्तृत प्रांजल हिन्दी टीका होने से परीक्षार्थी छात्रों के लिये यह संस्करण सबसे अधिक उपादेय हो गया है। १-००

३१ **तर्कसंग्रह-रहस्यम् ।** (तर्कसंग्रह-प्रश्नोत्तरी)

इस पुस्तिका में 'न्यायबोधिनी' 'पदकृत्य' तथा 'दीपिका' आदि के प्रश्नोत्तर लिखे गए हैं। परीक्षा की दृष्टि से आनेवाले प्रश्नोत्तरों पर विशेष ध्यान दिया गया है। ०-७५

३२ **तर्कमकरन्दः**-(दीपिका-प्रश्नोत्तरी) परीक्षोपयोगी संस्करण [ह. ६२] यन्त्रस्थ

३३ **तर्कामृतम्** (वाराणसी की उत्तर मध्यमा साहित्य प्रथम खण्ड परीक्षा स्वीकृत पाठ्य ग्रंथ) 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र

इस पुस्तक की ऐसी सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या की गई है कि छात्र स्वयं इसका अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेंगे। हिंन्दी में नोट्स और 'परीक्षासेतु' नामक परिशिष्ट हो जाने से तो इसकी उपादेयता और भी बढ़ गयी है। ०-७५

+३४ **न्यायलीलावती ।** मूलमात्रम् १-००

३५ **न्यायलीलावती ।** श्रीभगीरथठक्कुरकृत 'विवृति' सनाथेन श्रीवर्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाशेन' समुद्भासिता, श्रीशङ्करमिश्ररचित 'कण्ठाभरणेन' च समन्विता। [चौ. ६४] २२-५०

३६ **न्यायकुसुमाञ्जलिः ।** श्रीमद् उदयनाचार्यप्रणीतः। मेघठक्कुर विरचित 'प्रकाशिका (जलद)' रुचिदत्तोपाध्यायकृत 'मकरन्द' वर्द्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाश' वरदराजकृत 'बोधिनी' व्याख्या चतुष्टयोपेतः। सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पं० बच्चा झा निर्मित टिप्पणी विभूषितश्च। १८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ **हिन्दी न्यायकुसुमाञ्जलि** । (हरिदासी टीका सहित)

व्याख्याकारः—आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ।

विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श में इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या हिन्दी में न्यायकुसुमांजलि की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना बन गई है । ९-००

३८ **न्याय (सूत्रपाठः) दर्शनम्** । श्री गौतममहामुनिप्रणीत [चौ. पु.] ०-२०

३९ **न्यायदर्शनम्** । वात्स्यायनभाष्य सहितम् [का. ४३] यन्त्रस्थ

४० **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनभाष्यसहितम् । म० म० गङ्गानाथ झा प्रणीतेन खद्योतेन, नैयायिकचूडामणिरघूत्तमविरचितेन भाष्यचन्द्रेण च समन्वितम् । म० म० श्रीमदम्बादासशास्त्रि कृतया भाष्यचन्द्रानुगामिन्या टिप्पण्या च समेतम् । [चौ. ५५] १५-००

४१ **हिन्दी न्यायदर्शन** । (वात्स्यायनभाष्य सहित)

व्याख्याकार—पण्डितराज श्री ढुण्ढिराज शास्त्री

इस ग्रंथ में सरल हिन्दी भाषा में मूल ग्रंथ तथा भाष्य की जो व्याख्या की गई है उससे न्याय दर्शन में प्रथम बार ही इतनी सरलता आ सकी है । यन्त्रस्थ

*४२ **न्यायदर्शन** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

४३ **न्यायबिन्दुः** । बौद्धाचार्यश्रीधर्मकीर्तिप्रणीतः । संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद विस्तृत भूमिकादि सहित [का. २२] ५-००

४४ **न्यायमञ्जरी** । जयन्तभट्टकृत टिप्पण्या समेता [का. १०६] १५-००

*४५ **न्यायरत्नम्** । मणिकण्ठमिश्रकृतम् । नृसिंहयज्वकृतद्युतिमालिकाटीका १०-००

*४६ **न्यायसिद्धान्त मुक्तावली कुञ्जिका** । देवदत्त शास्त्रीकृत ०-७५

*४७ **पदार्थशास्त्र** (हिन्दी) लेखक—श्री आनन्द झा न्यायाचार्य २-५०

४८ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—सिंहव्याघ्रलक्षण सहिता । मूलमात्रम् ०-२५

४९ **मथुरानाथीयव्याप्तिपञ्चकटीकायाः क्रोडपत्रम्** [चौ.पु.] ०-२०

५० **माथुरीव्याप्तिपञ्चकरहस्यं, सिंहव्याघ्रलक्षणरहस्यं** श्रीशिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गानिर्झरिणी' व्याख्यासहितम् [का. ६४] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५१ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—श्री उमानाथाज्योलकृतव्याख्यासहिता तथा **माथुरी सिंहव्याघ्रलक्षणम्** श्रीहरिरामशुक्ल विरचित व्याख्या सहित तथा हरिहर शास्त्री सङ्कलित **माथुरीपञ्चलक्षणीक्रोडपत्राणि** च [का. ७८] ०-५०

५२ **माथुरी तर्कप्रकरणम्** । न्यायाचार्य वामाचरण भट्टाचार्यविरचित 'विवृति' सहितम् [का. १४०] १-००

५३ **मुक्तिवादः** । चन्द्रिकाख्यविवृत्या समलंकृतः [चौ. पु.] ०-५०

५४ **वादवारिधिः** । श्रीगदाधरभट्टाचार्यादिविपश्चिद्वरैर्विरचितः प्रत्यक्षानुमानशब्दपरिशिष्टाख्यकल्लोलचतुष्टयात्मकः । १-३ खण्ड [चौ. ७५] ७-५०

५५ **विषयतावादः** । श्रीढुण्ढिराजशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितः [का. १३४] ०-२५

५६ **व्युत्पत्तिवादः** । पण्डितराज श्रीवेणीमाधवशास्त्रिरचित (शास्त्रार्थोपयोगी परीक्षोपयोगी च) 'शास्त्रार्थकला' टीकासहितः [का. ११५] समाप्त

५७ **व्युत्पत्तिवादतरणिः** (व्युत्पत्तिवाद प्रश्नोत्तरी) श्री उग्रानन्द झा कृत ०-८७

५८ **शक्तिवादः** । कृष्णभट्टकृतया 'मञ्जूषा'—माधवभट्टाचार्यनिर्मितया विवृत्या गोस्वामि दामोदरशास्त्रिरचितया 'विनोदिन्या' च समेतः ४-००

५९ **शक्तिवादः** । पण्डितप्रवर श्री हरिनाथतर्कसिद्धान्तभट्टाचार्यविरचित 'विवृति' (हरिनाथीटीका) सहितः । [का. ७७] ४-००

६० **शब्दशक्तिप्रकाशिका** । श्रीजगदीशतर्कालङ्कारविनिर्मिता । श्रीकृष्णकान्तविद्यावागीश कृत 'कृष्णकान्ति'टीकया श्रीमद्रामभद्रसिद्धान्तवागीशविरचितया 'रामभद्री' टीकया च समलङ्कृता । सटिप्पण [का. १०९] यन्त्रस्थ

वैशेषिक-ग्रन्थाः

*१ **न्यायसिद्धान्ततत्त्वामृतम्** । श्रीनिवासकृतम् २-५०

२ **प्रशस्तपादभाष्यटीकासंग्रहः**—'कणादरहस्यं' शङ्करमिश्रकृतं प्रशस्तपादभाष्यसमालोचनं कैलाशचन्द्रशिरोमणिकृता तर्कालङ्कारभाष्यपरीक्षा च [चौ. ४८] ५-००

+३ **वैशेषिकदर्शनम्** । 'किरणावली' टीका सहितम् [ब. १०] समाप्त

*४ **वैशेषिकदर्शन** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ **हिन्दी वैशेषिकदर्शन** । (प्रशस्तपादभाष्य सहित)
व्याख्याकार, पण्डितराज श्री ढुण्ढिराज शास्त्री
इस संस्करण में मूलग्रन्थ तथा भाष्य के प्रतिपद का विभागशः अति-सरल अनुवाद तथा विशद हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है । हिन्दी जगत् में इस व्याख्या का यह सर्वथा प्रथम अवतार है । छात्रों तथा अध्यापकों को अवश्य ही इससे यथेष्ट लाभ होगा । १३-५०

६ **वैशेषिकदर्शन** । उपस्कार तथा हिन्दी अनुवाद सहित ।
व्याख्याकारः पण्डितराज श्रीढुण्ढिराजशास्त्री ।
परम प्रामाणिक एवं प्राचीन संस्कृत टीका के साथ वैशेषिक दर्शन के प्रतिपद के हिन्दी अनुवाद सहित यह सर्वप्रथम छात्रोपयोगी संस्करण है । यन्त्रस्थ

७ **वैशेषिकदर्शन-प्रशस्तपादभाष्यम्** । जगदीशतर्कालङ्कारविरचितया 'सूक्तिटीकया' म० म० पद्मनाभमिश्रकृतया 'सेतुव्याख्यया' विद्वच्चूडामणि-व्योमशिवाचार्यनिर्मितया 'व्योमवत्या' च समन्वितम् [चौ. ६१] समाप्त

८ **वैशेषिकदर्शनम्** । दर्शनानन्द सरस्वतीकृत भाषाटीका सहित ४-००

9 **VAISESHIKA PHILOSOPHY** : According to the Dasa-padartha-Sastra : Chinese Text with Introduction, Translation and Notes by H. U I. Professor in the Sotoshu College Tokyo. Edited by F. W. Thomas. (Chow. Sans. Studies Vol. XXII.) 16-00

सांख्य-ग्रन्थाः

१ **सांख्यकारिका** । माठराचार्य विरचित वृत्ति सहित [चौ० ५६] यन्त्रस्थ

२ **सांख्यकारिका [गौडपादभाष्य]** (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत ग्रन्थ)
श्रीगौडपादकृतभाष्य, आचार्य ढुण्डिराजशास्त्रि विरचित टिप्पणी हिन्दी भाषानुवाद सहित [ह. १२०] द्वि० संस्करण १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ **सांख्यकारिका। [चन्द्रिकाव्याख्या]** (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा स्वीकृत ग्रन्थ ।)
श्रीनारायणतीर्थकृतचन्द्रिकाटीका पं० ढुण्डिराजशास्त्रि-कृतटिप्पणी, 'हिन्दीभाषानुवाद' सहित [ह. १३२] द्वितीय संस्करण १-००

*४ **सांख्यतत्त्वकौमुदी।** सटिप्पण 'विद्वत्तोषिणी' व्याख्या सहित । स्वामी बालराम उदासीन विरचित सरल संस्कृत व्याख्या तथा टिप्पणियों द्वारा सांख्यतत्त्वकौमुदी की समस्त दुरूहता सचमुच विलुप्त हो गई है । ४-००

*५ **सांख्यतत्त्वकौमुदी।** 'प्रभा' हिन्दीव्याख्या सहित ६-००

*६ **सांख्यदर्शन।** श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

*७ **सांख्यदर्शनम्।** दर्शनानन्दकृत हिन्दी व्याख्या सहितम् २-००

*८ **सांख्यदर्शन का इतिहास।** लेखक–उदयवीर शास्त्री । नेट ३०-००

९ **सांख्यसंग्रहः।** अत्र १ षिमानन्द [क्षेमेन्द्र] विरचितं 'सांख्यतत्त्व-विवेचनम्' । २ भावागणेशकृतं तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् । ३ संक्षिप्तकपिल-सूत्रवृत्तिः सर्वोपकारिणी । ४ सांख्यसूत्रविवरणम् । ५ तत्त्वसमाससूत्र-वृत्तिः । ६ भट्टकेशवविरचिता–सांख्यतत्त्वप्रदीपिका । ७ वैकुण्ठयति-शिष्यकविराजयतिविरचितः 'सांख्यतत्त्वप्रदीपः' । ८ कृष्णमित्रमिश्र-विरचिता सांख्यमीमांसा । ९ सांख्यपरिभाषा इत्यादयो ग्रन्थाः संगृहीता वर्तन्त इति सर्वे एते समाससूत्रानुसारिणा निबन्धाः [चौ. ५०] समाप्त

*१० **सांख्यसिद्धान्त।** लेखक—उदयवीर शास्त्री १६-००

11 SANKHYA APHORISMS OF KAPILA with Illustrative Extracts from the Commentaries. Translated By James R. Ballantyne, LL. D., (Chow. Sans. Studies Vol. XXXIV) 20–00

योग–ग्रन्थाः

१ **पातञ्जलयोगदर्शनम्।** व्यासभाष्य-भोजवृत्तिसहितम् । श्री कीर्त्यानन्द झा न्यायवेदान्ताचार्य कृत व्यासभाष्य की 'सुबोधिनी' तथा भोजवृत्ति की सविमर्श शब्दार्थ-भावार्थ हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

*२ **पातञ्जलयोगदर्शनम्।** 'तत्त्ववैशारदी' संवलित व्यासभाष्यसमेत १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३ **पातञ्जलयोगदर्शनम्** । भोजवृत्ति सहित २-००

*४ **पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरणम्** । शङ्कर भगवत्पाद प्रणीतम् नेट १२-७५

*५ **पूर्णताप्रत्यभिज्ञा** । म० म० श्री गोपीनाथ कविराज द्वारा प्रशंसित । ले० सर्वतन्त्रस्वतन्त्र योगिराज श्री रामेश्वर झा । ५-००

*६ **योगदर्शन** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

७ **योगसूत्रम्** । 'योगसूत्रप्रदीपिका' व्याख्या सहितं सटिप्पणं [का. ८५] १-००

८ **योगसारसंग्रहः** । श्रीविज्ञानभिक्षुविरचितः । [चौ. पु.] ०-५०

९ **योग(सूत्रपाठः)दर्शनम्** । श्रीपतञ्जलिमुनिविरचितम् [चौ. पु.] ०-१०

दर्शन-ग्रन्थाः

1 ABHINAVAGUPTA. An Historical and Philosophical Study by Dr. Kanti Chandra Pandeya. (Chow. Sans. Studies. Vol. I.) Revised and Enlarged Second Edition. 40—00

2 INDIAN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry. (Chow. Sans. Studies. Vol. II.) Revised Second Edition. 25-00

3 WESTERN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry (Chow. Sans. Studies Vol. IV.) 25—00

4 SARVA-DARŚANA SAMGRAHA or Review of the Defferent Systems of Hindu Philosophy by Madhava Ācharya. Translated by E. B. Cowell, M. A., and A. Gough, M. A. (Chow. Sans. Studies Vol. X) 15-00

*5 Natural Theosophy by Prof. Ernest Wood. Nett. 4-00

६ **षड्दर्शनसमुच्चयः** । जैनश्रीहरिभद्रसूरिरचितः । मणिभद्रकृतलघुवृत्तिसमाख्यव्याख्यासहितः सम्पूर्णः । [चौ. २७] २-५०

*७ **षड्दर्शन रहस्य** (हिन्दी) रङ्गनाथ पाठक ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८ **हिन्दी सर्वदर्शनसंग्रह** । श्री उमाशंकर शर्मा ऋषि

इस संस्करण की विशेषताएँ—

१. मूल का अनुसरण करते हुए सरल साहित्यिक हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा विस्तृत व्याख्या।
२. शास्त्रार्थ-स्थलों पर समस्याओं की पृष्ठ-भूमि दिखाकर उनकी सर्वाङ्गपूर्ण विवेचना तथा बीच-बीच में सारांश-कथन।
३. ऐतिहासिक टिप्पणियाँ।
४. प्रत्येक दर्शन का विषयानुसार अनुच्छेदों में विभाजन।
५. हिन्दी भूमिका में लेखक के समयादि पर विचार और सभी दर्शनों का संक्षिप्त पर्यालोचन।
६. अंग्रेजी भूमिका में दर्शनों के तारतम्य का, ग्रन्थ की शैली का तथा दर्शनों की विषयवस्तु का विवेचन।
७. परिशिष्टों में दर्शन-सम्बन्धी अत्युपयोगी शोधपूर्ण सामग्री का संकलन

सजिल्द सुन्दर संस्करण २५-००

९ **चार्वाकदर्शन की शास्त्रीय समीक्षा** । डॉ० सर्वानन्द पाठक

चार्वाकदर्शन पर यह सर्वप्रथम अनुसंधानात्मक ग्रन्थ है जो प्रत्येक विश्वविद्यालय के एम. ए. परीक्षार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। १२-५०

*१० **दर्शनोदयः** । सकलदर्शनमूलसारसंग्रहरूपः नेठ १०-००

*११ **दर्शनसंग्रह** (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-५०

*१२ **पश्चिमीदर्शन** (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-००

13 A FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS by Swami A. Bharati. (Chow. Sans. Studies Vol. XXXVII) 15-00

*१४ **भारतीयदर्शन** (हिन्दी) डा० उमेश मिश्र ८-००

*१५ **भारतीयदर्शन** (हिन्दी) पं० बलदेव उपाध्याय १६-००

*१६ **भारतीयदर्शन** । वाचस्पति गैरोला १०-००

*१७ **यूरोपीयदर्शन** (हिन्दी) पं० रामावतार शर्मा ३-२५

३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१८ **राजनीति और दर्शन** (हिन्दी) विश्वनाथप्रसाद शर्मा १४-०

१९ **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार ।** आचार्य हरिशङ्कर जोशी (सांख्यदर्शन का पाण्डित्यपूर्ण सुविशद विवेचनात्मक अनुशीलन) वर्षों के गहन चिन्तन के परिणामभूत इस ग्रन्थ में आदिकाल से लेकर विज्ञानभिक्षु के काल तक सभी आचार्यों तथा उल्लिखित ग्रन्थों का समालोचनपूर्ण इतिहास, दर्शनों के मूलस्रोत का विशद विवेचन, पुराण-स्मृत्यादि साहित्य तथा वर्तमान दर्शनों में सांख्य दर्शन का प्रभाव, सृष्टिप्रवाह की पूर्ण झाँकी तथा ज्ञानोत्पत्ति प्रकार आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रामाणिक, तर्कपूर्ण एवं अश्रुतपूर्व विचार देखने को मिलेंगे। लेखक का दावा ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट है । १५-०

20 THE SIX SYSTEMS OF INDIAN PHILOSOPHY : By F. Max Muller (Chow. Sans. Studies Vol. XVI.) 15-00

वेदान्त-उपनिषत्-पुराणेतिहास-ग्रन्थाः

1 LIGHTS ON VEDANTA. A Comparative Study of the Various Views of Post Sankarites, with Special Emphasis on Sures'wara's Doctrines by Dr. Veeramani Prasad Upadhyaya. (Chow. Sans. Studies Vol. VI) 15—0

2 ON THE ORIGIN OF THE INDIAN BRAHMA ALPHABET. By G. Buhler. (Chow. Sans. Studies Vol. XXXIII) 10-0

३ **अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः ।** श्रीसदानन्दव्यासप्रणीतः । तत्कृत-व्याख्यायुक्तश्च सम्पूर्णः । [चौ. १८] ७-५

४ **अमृत-मन्थन** अथवा **जीवन का दिव्य पक्ष ।** डा० मङ्गलदेव शास्त्री, भू. पू. उपकुलपति, सं० वि० वाराणसी हिन्दी अनुवाद के साथ रोचक छंदों में निर्मित । छात्र, अध्यापक, गृहस्थ, साधु, सबके लिये उपयोगी । ४-५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*५ **आर्षम् भारतम्** (**वैयासिकम्** दश–साहस्री संहिता) मूल वचनैः। श्री गोविन्दनाथ गुह प्रोक्तम् (पूर्व–उत्तरभागः) नेट ८–००

६ **काथबोधः**। साजनीकृतटीकोपेतः। दत्तात्रेयसम्प्रदायाऽनुगतः [का. ५२] समाप्त

*७ **काशीतिहासः**। स्व० पं० भाऊशास्त्री वझे कृतः। नेट १–५०

८ **खण्डनपरिशिष्टम्**। पण्डित श्रीताराचरणशर्मणा विरचितम् ०–५०

९ **खण्डनखण्डखाद्यम्**। चित्सुखाचार्यकृत 'खण्डनभावप्रकाशिका', शङ्करमिश्रकृत 'शाङ्करी,' रघुनाथभट्टाचार्य प्रणीत 'खण्डनभूषामणि,' प्रगल्भमिश्रकृत 'खण्डनदर्पण,' सूर्यनारायण शुक्लप्रणीत 'खण्डनरत्नमालिका' सहित व्याख्यापंचकोपेतम् खण्ड १–२ [चौ. ८२] ४–००

१० **खण्डनखण्डखाद्यम्**। आनन्दपूरचितया र्णखण्डन-फक्किका विभजनाख्यया विद्यासागरीटीकासमेतन्। यन्त्रस्थ

११ **जीवनदर्शन**। डा० मुंशीराम शर्मा। (परिवर्द्धित संस्करण) जीवन क्या है? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। ३–००

१२ **तत्त्वदीपनम्**। श्री अखण्डानन्दमुनिकृतं (पञ्चपादिकाविवरणस्य व्याख्यानम्) [ब. १७] १५–००

*१३ **तत्त्वप्रदीपिका–चित्सुखी**। नयनप्रसादिनी संस्कृत व्याख्या हिन्दी अनुवाद सहित। १२–००

*१४ **त्रिदण्डिमतविभेदिनी**। श्रीशङ्कराश्रमस्वामिप्रणीता ३–००

१५ **त्रिपुरारहस्य-माहात्म्यखण्डम्**-भूमिकाध्यायानुक्रमणिकाभ्यां च सहितम्। [का. ६२] १०–००

१६ **त्रिपुरारहस्य-ज्ञानखण्डम्**। स्वामी सनातनदेवजी कृत हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

17 **TRIPURA-RAHASYA.** (Jnanakhanda) English Translation and a Comparative Study of the Process of Individuation by A. U. Vasavada (Chow. Sans. Studies. Vol. L) 15–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

18 THREE LECTURES ON THE VEDANTA PHILOSOPHY by Max Muller 8-50

१९ **दिव्य जीवन दर्शन** । ले० पथिक ।

ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का समन्वय जिसके जीवन में हुआ हो ऐसे ज्ञानी भक्तयोगी द्वारा सरल, मौलिक शब्दों में कपिल के सांख्य, भगवान श्रीकृष्ण की गीता तथा विविध शास्त्रों के सिद्धान्तों का सारभूत सदुपदेश इस पुस्तिका में निहित है। ०-५०

*२० **नैष्कर्म्यसिद्धिः** । श्रीज्ञानोत्तममिश्रकृत 'चन्द्रिका' व्याख्यासहिता तथा ब्रह्मामृतम् । [ब. १२] १-५०

२१ **न्यायभास्करखण्डनम्–मध्वचन्द्रिकाखण्डनम्** । म० म० श्रीरामसुब्रह्मण्यशास्त्रिविरचितम् । [चौ. पु.] ३-००

२२ **न्यायमकरन्दः** । आनन्दबोधभट्टारकाचार्यसंगृहीतः । आचार्यचित्सुखमुनिकृतव्याख्योपेतः तथा 'प्रमाणमाला' 'न्यायदीपावली' च [चौ. ११] यन्त्रस्थ

*23 Philosophy of Bhedābheda by P. N. Srinivasacharya 9-00

*२४ **पञ्चपादिका** । व्याख्या द्वयोपेता तथा **पञ्चपादिकाविवरणं** च व्याख्या द्वयोपेतम् २८-००

२५ **परमतत्त्वमीमांसा (मतिप्रतिक्षशास्त्रम्)**

ले० विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी ।

पाश्चात्य तत्त्वज्ञानियों के मत में परमतत्त्व का स्वरूप क्या है यह बतलाने के लिये विद्वान लेखक ने आरंभक्रम से पाश्चात्त्य दार्शनिकों का इतिहास प्रस्तुत करते हुए उनकी प्रमुख विचार धाराएँ भी उपन्यस्त की हैं। पाश्चात्त्य आध्यात्मिक दर्शन तथा दार्शनिकों का एकत्र क्रमबद्ध वर्णन प्राप्त करने के लिये संस्कृत में लिखा यह अकेला ही सर्वप्रथम तथा सर्वथा नवीन ग्रंथ है। ४-००

२६ **प्रणवकल्पः** । (श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गतः) श्रीगङ्गाधरेन्द्रसरस्वतीप्रणीतप्रणवकल्पप्रकाशाख्यभाष्यसमलंकृतः । [चौ. ७४] ३-००

२७ **प्रज्ञानानन्दप्रकाशः** । 'भावार्थकौमुदी'टीका–भाषानुवाद सहितः ३-००

२८ **बोधसारः** । श्रीनरहरिकृतस्तच्छिष्यपण्डितश्रीदिवाकर कृत टीकया सहितश्च । [ब. २३] २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२९ **ब्रह्ममीमांसात्रिशतिः** । (ब्रह्मसूत्रार्थसंग्रहात्मिका) नेट १-२५

*३० **ब्रह्मविनय** । मधुसूदन ओझा । सं० वासुदेवशरण अग्रवाल ५-००

*३१ **ब्रह्मसिद्धिः** । मण्डनमिश्रकृतः । शङ्खपाणिकृत व्याख्या सहित । नेट ७-७५

३२ **ब्रह्मसूत्रम्** । सुषमा हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार : स्वामी श्री हनुमानदास जी षट्शास्त्री ।

सम्पूर्ण शांकरभाष्य का गूढ़ तत्त्व इस हिन्दी व्याख्यान में प्रतिफलित हो उठा है । संस्कृत की ससन्दर्भ वेदान्त-सूक्तियां पदे-पदे अनुस्यूत हैं । भाषा बड़ी सरल और प्रवाहपूर्ण है । इसे ब्रह्मसूत्र पर अन्य सब भाष्यों का सार समझना चाहिए । पृष्ठ संख्या ५२० मूल्य नाम मात्र ४-००

३३ **ब्रह्मसूत्रदीपिका** । श्रीमच्छङ्करानन्दभगवद्विरचिता तथा-तत्त्वानुसंधानं-श्रीमहादेवानन्दसरस्वतीप्रणीतम् [ब. २४] ५-००

३४ **ब्रह्मसूत्रभास्करभाष्यम्** । श्रीभास्कराचार्य कृत । यन्त्रस्थ

३५ **ब्रह्मसूत्रविज्ञानभिक्षुभाष्यम्** । वादरायण प्रणीत , वेदान्तसूत्राणां यतीन्द्र श्रीमद्विज्ञानभिक्षुविरचितं 'विज्ञानामृत व्याख्यानं' संपूर्णम् २५-००

३६ **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्** । 'ब्रह्मतत्त्वविमर्शिनी' हिन्दी व्याख्या तथा डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय विरचित प्राच्य-पाश्चात्त्य-उभय-मत-समन्वयात्मक सुविशद भूमिकादि सहित । व्याख्याकार—स्वामी हनुमानप्रसाद षट्शास्त्री ।

प्राचीन विद्वत्ता तथा कठोर तपस्या के साधिकार योग से प्रसूत प्रस्तुत व्याख्या बड़ी सहज तथा सरल है । ऐसा कोई पद नहीं छूटा है जिसकी स्पष्ट व्याख्या न हुई हो । ग्रन्थ लगाने के लिये यह सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है । छात्र, अध्यापक, जिज्ञासु, मुमुक्षु सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है । विश्वविद्यालयीय परीक्षार्थियों के लिए इसकी भूमिका मात्र ही पर्याप्त है ।

प्रथम भाग १-२ अध्याय १५-००

द्वितीय भाग ३-४ अध्याय शीघ्र प्राप्त होगा

३७ **ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्यम्** । आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि कृत सविमर्श हिन्दी व्याख्या सहित ।

चतुःसूत्र्यन्त भाग ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३८ **ब्रह्मसूत्रवृत्ति-मिताक्षरा** । अन्नंभट्टकृता नेट ७-०
*३९ **ब्रह्मसूत्र-वैदिकभाष्यम्** । स्वामी श्री भगवदाचार्य कृतम् । १-२ भाग नेट १०-०
४० **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्** । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्यासहितया श्रीगोविन्दानन्दप्रणीतया 'रत्नप्रभया' च समन्वितं ।
प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादपर्यन्तम् [का. ७१] ८-०
४१ **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्** । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्या, श्री गोविन्दा नन्दप्रणीत 'रत्नप्रभा' व्याख्यया, प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीय-पादपर्यन्तं, श्रीमद्वाचस्पतिमिश्र कृत 'भामती' व्याख्यया च सहितं सटिप्पणं १२-०
*४२ **ब्रह्मसूत्रभाष्यम्** । शिवार्कमणिदीपिका व्याख्यासहित ३०-०
४३ **ब्रह्मामृतम्** । श्रीमज्जयकृष्ण ब्रह्मतीर्थ विरचितम् । १-५
४४ **बृहदारण्यकवार्तिकसारः** । विद्यारण्यस्वामिविरचितः । महेश्वर-तीर्थकृत 'लघुसंग्रह' व्याख्यासहितः । अयञ्च श्रीमच्छुद्धानन्दमुनिवरशिष्य श्री उत्तमश्लोकयतिविरचित-'वेदान्तसूत्रलघुवार्तिक' श्लोकबद्धः १५-०
४५ **भक्ति-तरङ्गिणी** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।
भक्ति-भाव से ओत-प्रोत वेद मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद । भक्तित्तरङ्गिणी अध्यात्म-पथ के यात्रियोंके लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी ३-०
४६ **भक्ति का विकास** । डॉ० मुंशीराम शर्मा ।
परमपुरुषार्थ रूपमें प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा । २०-०
+४७ **भक्तिरत्नावली** । विष्णुपुरीगोस्वामीरचित सान्वय भाषाटीकासहित १-७
४८ **भक्तिरसायनम्** । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
*४९ **भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य** । डॉ० भगवानदास ०-५
५० **गीता-नवनीत** । श्रीमद्भगवद्गीता की नवीन व्याख्या, मूल और भाषानुवाद । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ५-०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५१ **श्रीमद्भगवद्गीता** । सानुवाद मधुसूदनीव्याख्या सहित ।
अनुवादक–स्वामी श्री सनातनदेव जी महाराज ।
मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या के साथ उसकी अक्षरशः हिन्दी व्याख्या भी प्रकाशित की गई है । हिन्दी व्याख्या अत्यन्त सरल, प्रवाहमय तथा मूल का प्रतिपद अनुवर्तन करने वाली है । सर्वत्र ही गूढ़ स्थलों को सुस्पष्ट करने के लिए मत-मतान्तर-निरासपूर्वक विषयवस्तु का यथार्थ बोध कराया गया है । वयोवृद्ध मुमुक्षुजनों के लाभार्थ बड़े टाइप में सुस्पष्ट मुद्रण किया गया है । पुरुषार्थचतुष्टय के साधन पथ का सम्बल यह एक मात्र संस्करण जिज्ञासु व्यक्तिमात्र के लिए परम उपादेय है । १५–००

*५२ **गीताप्रवचन गीताव्याख्यानमाला** । गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ।
१–३ भाग ३४–५०

*५३ **भगवद्गीतार्थप्रकाशिका** । ब्रह्मयोगीकृत नेट १५–००

५४ **भामती** (ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या) वाचस्पतिमिश्रविरचिता । श्री ढुण्ढिराजशास्त्रिसङ्कलितया विषमस्थलटिप्पण्या समलङ्कृता [का. ११६] ४–००

*५५ **भारतीय तत्त्वचिन्तन** । श्री व्रजभूषण पाण्डेय ।
अत्यन्त बोधगम्य भाषा एवं शैली में भारतीय मनीषियों के चिन्तनों को पल्लवित किया गया है । दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों की सुन्दर एवं मार्मिक व्याख्या ही इस ग्रंथ की अपनी विशेषता है । ३–५०

५६ **भेदधिक्कारः** । नृसिंहाश्रममुनिकृतः । श्रीनारायणशर्मकृतव्याख्यासहितः । तथा **'उपक्रमपराक्रम'** अप्पयदीक्षितकृतः । [ब. २२] ५–००

*५७ **भेदरत्नम्** । शङ्करमिश्र विरचितम् १–००

*५८ **मध्वतन्त्रमुखमर्दनम्** । व्याख्यासहितम् । श्रीमदप्पयदीक्षितेन्द्रकृतं २–००

+५९ **महाभारततात्पर्यप्रकाशः** । श्री सदानन्द व्यास प्रणीतः ६–००

*६० **महाभारतम्** । नीलकण्ठीसंस्कृत व्याख्या सहितम् । ...

*६१ **मानमाला** । अच्युतकृष्णानन्दतीर्थकृत । रामानन्दकृत व्याख्या सहित ३–००

*६२ **माध्वमुखभङ्गः** । श्रीसूर्यनारायण शुक्ल विरचितः १–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६३ **मिताक्षरा** (श्रीगौडपादाचार्यकृतमाण्डूक्यकारिकाव्याख्या) श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वयंप्रकाशानन्दसरस्वती स्वामिविरचिता। शङ्करानन्दकृत माण्डूक्योपनिषद्दीपिका च [का. ४८] १-५०

६४ **योगवासिष्ठः**। वासिष्ठमहारामायणतात्पर्यप्रकाशव्याख्यासहित। पत्रात्मक ३०-००

*६५ **लघुरामायणम्**। वाल्मीकीयम्। श्री गोविन्दनाथ गुह प्रोक्तम्। रेशमी जिल्द राजसंस्करण नेट ६-५० सुलभ संस्करण नेट ३-५०

*66 **Vadavali of Jayatirtha with English translation by P. Nagaraja Rao.** Nett. 15-00

*६७ **विचारचन्द्रोदय**। पीताम्बर जी कृत ३-००

*६८ **विचारप्रदीपिका**। श्री स्वामी शिवगिरि जी।
निवृत्ति की ओर से विमुख तथा प्रवृत्ति की ओर उन्मुख प्राणियों को ग्रन्थगत चार धर्मों के आध्यात्मिक रहस्य, गुरु शिष्य-संवाद तथा कहानियों के माध्यम से उचित कर्तव्य का निर्देश प्राप्त होगा। इसे पढ़ते ही हृदय में शान्ति का अनुभव होता है। २-००

६९ **विचारसागर**। व्याख्याकार हनुमानदास जी षट्शास्त्री।
ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी निश्चलदास विरचित हिन्दी का यह प्रसिद्ध गूढ़ ग्रन्थ सुविशद हिन्दी भाष्य के साथ प्रकाशित किया गया है। हिन्दी-संस्कृत की विचार-पोषक सूक्तियाँ भी व्याख्यान में यत्र-तत्र पिरोई हुई हैं ३-००

७० **विवरणादिप्रस्थानविमर्शः**। डॉ० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय।
इस ग्रन्थ में भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैतवाद के ऊपर अवान्तर मत-भेदरूपप्रतिबिम्बवाद, आभासवाद तथा अवच्छेदवाद का एकत्र सुन्दर संकलन किया गया है। १-००

७१ **विवरणोपन्यासः**। श्रीरामानन्दसरस्वती विरचितः विवरणतात्पर्यस्य व्याख्यानम् तथा-'**वाक्यसुधा**' श्रीशङ्कराचार्यविरचिता। श्रीब्रह्मानन्दभारतीकृतव्याख्यासहितः। [ब. १६] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७२ **हिन्दी वेदान्त-परिभाषा** । आचार्य गजानन शास्त्री । विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ की अत्यन्त सरल तथा सरस हिन्दी व्याख्या इतनी उत्तम शैली में प्रस्तुत की है कि सम्प्रदाय-पुरस्सर अध्ययन करने का ही लाभ आप प्राप्त कर सकेंगे । व्याख्या में पहले मूल ग्रन्थ को लगाकर बाद में शंका-समाधान के रूप में वेदान्त के मार्मिक सिद्धान्तों, क्लिष्ट अंशों तथा मत-मतान्तरों पर सरल शब्दों में व्यापक प्रकाश डाला गया है । पाण्डित्यपूर्ण विशद् भूमिका भी छात्रों के लिए परम उपादेय है । १०-००

७३ **वेदान्तपरिभाषा**—सटिप्पण 'अर्थदीपिका' टीका सहित । महामनीषी श्रीशिवदत्त कृत 'अर्थदीपिका' टीका तथा वेदान्ताचार्य पं० त्र्यम्बकराम शास्त्री विरचित सुविस्तृत टिप्पणी सहित यह शोधपूर्ण तृतीय संस्करण अधिक महत्त्वपूर्ण है । समाप्त

74 Vedanta Paribhasha. With English translation by S. Suryanarayan Sastri. Nett. Rs. 12-00

७५ **वेदान्तदर्शनम्** । श्रीरामानन्दसरस्वतीकृत 'ब्रह्मामृतवर्षिणी'-नामक विस्तृतसूत्रार्थनिर्णायिकाटीकासहितम् । [चौ. ३६] ७-५०

७६ **वेदान्तदर्शन** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ४-००

७७ **वेदान्तसारः** । (वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा के अनिवार्य प्रथम पत्र के लिए पाठ्य ग्रंथ) 'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित । (संशोधित चतुर्थ संस्करण) प्रो० रामशरण शास्त्री संपादित इस अभिनव संस्करण की व्याख्या में अज्ञान (माया), अध्यारोप, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि स्थल इतने विस्तार एवं सरलतापूर्वक लिखे गये हैं कि साधारण से साधारण छात्र के लिये भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुबोध हृदयंगम करने योग्य हो गया है । इसकी समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी अध्ययन करने योग्य है । ग्रन्थ के अन्त में अनेक विश्वविद्यालयों के प्रश्न पत्र भी दिये गये हैं २-५०

७८ **वेदान्त(सूत्रपाठः)दर्शनम्** । भगवद्व्यासमहामुनिकृतम् [चौ. पु.] ०-१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७९ **वैराग्यशतकम्** । श्रीभर्तृहरिविरचित । सरल, सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा हिन्दी पद्यानुवाद सहित । १-००

८० **श्रीशाङ्करपीठतत्त्वदर्शनम्** । संपादकमण्डल— स्वामी रामानन्द संन्यासी, विद्याधर शर्मा, महादेव शास्त्री, पट्टाभिराम शास्त्री। जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य जी के बहुरंगी सुन्दर चित्र से युक्त २-५०

+८१ **सर्वतंत्रसिद्धान्तपदार्थ[८९०१]लक्षणसंग्रहः**। भिक्षुगौरीशंकरः ०-७५

+८२ **सर्वसिद्धान्तसंग्रहः** । श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितः ०-३७

*८३ **सर्ववेदान्तसारसंग्रहः** । पं० श्यामसुन्दरझारचित अभिनव ग्रन्थः २-००

८४ **सिद्धान्तबिन्दुः** न्यायरत्नावली-नारायणीटीकोपेतः[का. ६५]यन्त्रस्थ

+८५ **सिद्धान्ततत्त्वं नाम वेदान्तप्रकरणम्** । श्रीमदनन्तदेव निरूपितम् १-५०

८६ **संक्षेपशारीरकम्** । रामतीर्थस्वामिकृत 'अन्वयार्थप्रकाशिका' टीका सहितम् । [का. २] १०-००

८७ **संक्षेपशारीरकम्** । 'मधुसूदनी' टीका सहितम् । [का. १८] १०-००

*८८ **सूत्रार्थामृतलहरी** । (द्वैत) कृष्णावधूतपण्डितविरचिता नेट ३-२५

*८९ **सौन्दर्यलहरी** । हिन्दी अनुवाद तथा विद्यातत्त्व-कुण्डलिनी-रहस्य सहित । ५-००

९० **स्वानुभवादर्शः** । माधवाश्रमविरचितः । स्वकृतटीकाविभूषितश्च ५-००

९१ **श्रीमत्सनत्सुजातीयम्** । श्रीमच्छङ्करभगवत्पादविरचितभाष्येण 'नीलकण्ठी' व्याख्यया च संवलितम् । [का. १३] २-००

*९२ **श्रीमद्भागवत हिन्दी पद्यात्मक** । ले० श्री रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल 'अटल' ।

श्रीमद्भागवत ऐसे पाण्डित्यपूर्ण संस्कृत ग्रन्थ का अत्यन्त सजीव, रोचक पद्यानुवाद जिसमें भावार्थ तथा शब्दार्थ दोनों ही मूल के तत्सम हों एक बहुत ही कठिन कार्य है। परन्तु 'अटल' जी के पद्यों को पढ़ने से मालूम होता है कि श्रीमद्भागवत मूल का 'हिन्दी पाठ' हो रहा है। शब्दों का प्रयोग, विन्यास, शैली इतनी ओजपूर्ण है कि कहीं से भी भावों की मौलिकता तिरोहित नहीं होती। विद्वानों, भक्तों, कथावाचकों आदि सभी वर्ग के लिए पुस्तक संग्रहणीय है। १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+९३ **श्रीमद्भागवतम्** । मूल । गुटका ६-०१

+९४ **श्रीमद्भागवतम्** । 'सरस्वती' भाषाटीका दृष्टान्त और 'प्रकाश' टिप्पणी से अलंकृत। पत्रात्मक संस्करण ३२-००

+९५ **श्रीमद्भागवतम्** । सामयिकी भाषा टीका पत्रात्मक २४-००

*९६ **श्रीमद्भागवतम्** । 'बालबोधिनी' भा-टी. सहित सजिल्द १-२ भाग १५-००

+९७ **श्रीमद्भागवतम्** । (दशमस्कन्ध) भाषा टीका सहित पत्रात्मक ८-००

+९८ **श्रीमद्भागवतम्** । श्रीधरी टीका ग्लेज कागज । काशी २४-००

*९९ **श्रीमद्भागवतम्** । चूर्णिका व्याख्या सहित । पत्रात्मक २४-०१

+१०० **श्रीमद्भागवतम्** । अन्वितार्थ प्रकाशिका संस्कृत टीका । पत्रात्मक ४८-००

*101 Valmiki Ramayan. **Abridged edition by M. A. Srinivasachariar. Nett.** 3-00

102 **VALMIKIYA RAMAYAN : English Translation by** Ralph T. H. Grifflth. **(Chow. Sans. Studies Vol. XXIX)** 25-00

+१०३ **आनन्द रामायणम्** । सजिल्द । मूलमात्र १०-००

१०४ **श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्** (विशुद्ध प्रामाणिक संस्करण) (रामायणपूजाक्रम, स्मार्त, वैष्णव तथा माध्व संप्रदायोंके रामायण-पठनोपक्रम, नवाह्नपारायणक्रम, कुशलवगीतक्रम, गायत्रीरामायण, वेदोक्त राममन्त्र, रामतारकषडक्षरमंत्र, श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न तथा आञ्जनेय मन्त्र, रामसाक्षात्कारप्रद मन्त्र, राम-हृदय, रामायण-माहात्म्य, रामदर्शनादि विविध परिशिष्टों से विभूषित)। शताधिक वर्ष पूर्व की हस्तलिखित प्रामाणिक प्रति से तथा आजतक के प्रकाशित सभी संस्करणों से पाठ मिलाकर यह अत्यन्त शुद्ध और प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित किया गया है । ९-०१

+१०५ **श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्** । भाषाटीका । सजिल्द २४-००

+१०६ **श्रीमद्भगवद्गीता** । 'श्रीधरी' व्याख्या सहित २-००

+१०७ **श्रीमद्देवीभागवतम्** । मूलमात्रम् ८-०१

*१०८ **श्रीमद्देवीभागवतम्** । हिन्दीभाषाटीका सहितम् । पत्रात्मक ४०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०९ हरिलीलामृतम् । विद्वच्छिरोमणिश्रीवोपदेवप्रणीतम् । श्रीमत्परमहंस-मधुसूदनसरस्वतीप्रणीत टीकासहितम् । तत्प्रणीत परमहंसप्रिया व्याख्या-युतं श्रीमद्भागवतस्याऽऽद्यपद्यं च । [चौ. ७१] यन्त्रस्थ

*११० हरिवंशम् । हिन्दी टीकासहितं पत्रात्मकं सम्पूर्णम् ३२-००

*१११ अप्रकाशित सामान्य उपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (७१ उपनिषत्) नेट २०-००

*११२ अष्टोत्तरशतोपनिषद् । हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग २१-००

*११३ ईशादिदशोपनिषद् । ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-ऐतरेय-तैत्तिरीय छान्दोग्य बृहदारण्यकोपनिषद । शाङ्करभाष्य सहित । १-२ भाग १५-००

*११४ उपनिषत् प्रकाशः । हिन्दी अनुवाद सहित ४-५०

*११५ छान्दोग्योपनिषद् । अन्वय, पदार्थ, हिन्दी भावार्थ सहित ३-००

*११६ दशोपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृतव्याख्या सहित । १-२ भाग । नेट ३०-००

*११७ याज्ञिक्युपनिषद्विवरणम् । पुरुषोत्तमतीर्थकृत नेट ४-००

*118 Yoga Upanisads translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar. Nett. 16-00

*११९ वैष्णवोपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (१४ उपनिषत्) २०-००

*१२० शाक्तोपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित(८ उपनिषत्) नेट ८-००

*१२१ शैवोपनिषदः " " (१५ उपनिषत्) नेट १२-००

*122 Saiva Upanisads. Translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar Nett. 9-00

*१२३ सामान्यवेदान्तोपनिषदः। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या (२४ उपनिषत्) २०-००

124 AGNI PURANA : A Study by Dr. S. D. Gyani. (Chow. Sans. Studies Vol. XLI) 25-00

१२५ अग्निपुराणम् । आलोचनात्मक विशद हिन्दी भूमिका सपरिशिष्ट सुसंपादित शोधपूर्ण संस्करण । शीघ्र प्राप्त होगा

*१२६ आत्मपुराणम् । शङ्करानन्द विरचित । व्याख्या सहित । पत्रात्मक ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२७ **गरुडपुराणम्** । सम्पादक—श्री रामशंकर भट्टाचार्य ।

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विवेचन और समानान्तर स्थलों के निर्देश से युक्त विस्तृत भूमिका, परिशिष्ट और विषयों तथा चरित्रों की अनुक्रमणिका इत्यादि से अलंकृत शोधपूर्ण संस्करण । १०-००

१२८ **नृसिंहपुराणम्** । मूलमात्र ४-००

*१२९ **पद्मपुराणम्** । मूलमात्र । १-५ भाग । सजिल्द ५३-००

130 THE PURANA TEXT OF THE DYNASTIES OF THE KALI AGE. With Introduction, Text, Notes and Eloborate Commentary–by F. E Pargiter M. A. (Chow. Sans. Studies Vol. XIX) 20-00

131 PURANA PANCALAKSANA : By W. Kirfel. Text edited in Devanagari. Introduction rendered into English by Dr. Suryakant. Shortly

१३२ **पुराण-विमर्श** । ले० आचार्य बलदेव उपाध्याय ।

इसमें ऐतिहासिक पद्धति से पुराण की आलोचना विद्यमान है तथा साथ ही साथ परम्परा पद्धति से पुराणविषयक मननीय सामग्री भी संकलित है । पुराण के अनुशीलन में यह एक नवीन दृष्टिकोण को अग्रसर करता है, जो एकदम नवीन तथा पूर्णतया विश्लेषणात्मक है । २०-००

१३३ **पौराणिक कथाएँ** । पुराणों में बिखरे हुए ७५ चरित्र नायकों का अपूर्व कथा-संग्रह । संपादक, श्री हृदय राम शर्मा २-५०

१३४ **मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन** । आचार्य बदरीनाथ शुक्ल

इस ग्रन्थ में अध्यायक्रम से मार्कण्डेय पुराण का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है; कथा की परम्परा में कहीं भी त्रुटि नहीं आने पाई है । कथावाचक और अनुसंधानकर्त्ता दोनों के लिए यह ग्रंथ समान उपयोगी है । ४-५०

*१३५ **विष्णुपुराणम्** । सव्याख्या । पत्रात्मक १०-००

१३६ **लिंगपुराणम्** । मूलमात्र । सजिल्द यन्त्रस्थ

*१३७ **शिवमहापुराणम्** । मूलमात्रम् । सजिल्द १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१३८ **शिवमहापुराणम्** । भाषा टीका सहित । गुटका १२-५०

१३९ **श्रीपुराणसंहिता–श्रीमद्वेदव्यासविरचिता ।**

(आळमन्दार–बृहत्सदाशिव–सनत्कुमारसंहितात्रय संवलिता)

म. म. श्री गोपीनाथ जी कविराज ऐसे महामनीषी ने भी पुरातत्त्व से ओत-प्रोत तीन हजार श्लोकों के इस ग्रंथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसकी प्रस्तावना में सत्-चित्-आनन्द के रहस्यों का बहुत ही सरल और संक्षेप में सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। १०-००

*१४० **स्कन्दमहापुराण** । मूलमात्र । १-५ भाग ६ जिल्द में संपूर्ण (नागर और प्रभास खंड छोड़कर) ९०-००

वेदान्त-शुद्धाद्वैत (वल्लभसम्प्रदाय) ग्रन्थाः

१ **अष्टाक्षरटीका** । [चौ. पु.] ०-२५

२ **गूढार्थदीपिका** । धनपतिसूरिकृता । श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थ-'रासपञ्चाध्यायी' व्याख्या एवं भ्रमरगीतव्याख्या तथा जगन्नाथसुधिविनिर्मिता 'रसव्याख्या' च [ब. २९-३०] ८-००

३ **पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः** । यन्त्रस्थ

४ **प्रस्थानरत्नाकरः** । गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजीमहाराजविरचितः ५-००

५ **ब्रह्मवादसंग्रहः** । [गोस्वामि श्रीहरिरायजी विरचित 'ब्रह्मवादः'—गोपालकृष्णभट्ट विरचित विवरण सहितः । गोस्वामिश्रीव्रजनाथ विरचित-ब्रह्मवादः । श्री रामकृष्णभट्टविरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारः—श्रीरघुनाथ-शास्त्रि विरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारतात्पर्यव्याख्यानसहितः] हिन्दीभाषानुवादसमेतश्च [का. ६२] १-५०

६ **ब्रह्मसूत्रवृत्तिः**–(मरीचिका) श्रीव्रजनाथभट्टकृता सम्पूर्णा [चौ. २४] ५-००

७ **शुद्धाद्वैतमार्तण्डः** । गोस्वामिश्रीगिरिधरजीमहाराजविरचितः । श्रीरामकृष्णभट्टविरचित 'प्रकाश' व्याख्यया संवलितः सम्पूर्णः । तथा—**प्रमेयरत्नार्णवः** । श्रीबालकृष्णभट्टविरचितः सम्पूर्णः [चौ. २८] यन्त्रस्थ

८ **श्रीमदणुभाष्यम्** । गोस्वामि श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज विरचित—'प्रकाश' व्याख्यासमेतम् [ब. २६] ३७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ **श्रीविद्वन्मण्डनम्** । श्रीविट्ठलनाथदीक्षितकृतम् । गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराजकृत 'सुवर्णसूत्र' व्याख्यया सहितम् [व. ३५] ५–००

१० **श्रीसुबोधिनी** । श्रीवल्लभाचार्यविनिर्मिता । श्रीमद्भागवतस्य दशमस्कन्ध-जन्मप्रकरणे प्रथमाध्यायान्तं व्याख्या । गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथदीक्षित-विरचित 'टिप्पणी' सहिता तथा गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराज-विरचित–'प्रकाश' व्याख्या समेता [चौ. ३८] ६–००

११ **श्रीमदाचार्यचरितम्** । भाषा [चौ. पु.] ०–१५

१२ **श्रीवल्लभाष्टकटीका** तथा **चतुःश्लोकी टीका** । भाषा [चौ. पु.] समाप्त

वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः

1 VEDĀTNADEŚIKA. A Study of His Life, Works and Philosophy by Dr. Satya Vrata Singh. M. A., Ph.D. (Chow. Sans. Studies Vol. V) 20–00

2 A CRITICAL STUDY OF THE PHILOSOPHY OF RAMANUJA by Anima Sen Gupta 13–50

३ **तत्त्वत्रयम्** । श्रीमल्लोकाचार्यप्रणीतम् । श्रीमद्वरवरमुनिस्वामिनिवद्ध-भाष्योपबृंहितम् । सम्पूर्णम् [चौ. ४] यन्त्रस्थ

४ **तत्त्वशेखरः** । श्री लोकाचार्य विरचितः तथा **तत्त्वत्रयचुलुकसंग्रहः** श्रीकुमारवेदान्ताचार्य श्रीवरदगुरु विरचितः [व. २७] यन्त्रस्थ

*५ **तत्त्वसारः** । रत्नसारिणी व्याख्या सहितः नेट ६–००

६ **न्यायपरिशुद्धिः**—सटीक । श्रीवेदान्ताचार्यप्रणीता [चौ. ५१] १०–००

*7 Philosophy of Visiṣṭadvaita by P. N. Srinivasa-chari Nett. 25–00

८ **वेदान्तदीपः** । श्रीभगवद्रामानुजाचार्यविरचितः । ब्रह्मसूत्रव्याख्या ७–५०

*९ **वेदान्तकारिकावली** । बुचो वेङ्कटाचार्य कृत । वी० कृष्णमाचार्य कृत संस्कृतव्याख्या आंग्लानुवाद सहिता नेट ८–००

*10 Vedantasara of Ramanuja with English translation by M. B. Narasimha Iyengar. Nett. 20–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ **रामानुज वेदान्तसारः**—श्रीसुदर्शनाचार्यकृत 'अधिकरण-सारावली' सहितः

रामानुजवेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य श्री रामदुलारे शास्त्री कृत पाद-टिप्पणी से परिष्कृत अभिनव विशुद्ध संस्करण २-५०

१२ **श्रीभाष्यवार्तिकं यतीन्द्रमतदीपिका च ।** श्रीनिवासाचार्यकृता तथा सकलाचार्यमतसंग्रहश्च [ब. २८] ५-००

*१३ **सिद्धित्रयम् ।** श्री यामुनाचार्य विरचितं सिद्धाञ्जन व्याख्या सहितम् ३-५०

स्वामिभगवदाचार्य-श्रीरामानन्दसम्प्रदायविशिष्टाद्वैतग्रन्थाः

*१ **ईशादयो दशोपनिषदः ।** स्वामी भगवदाचार्य कृत संस्कार भाष्य सहित ८-००

*२ **क्रान्ति के इतिहास की एक झलक** (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में संवत १९७८ की) प्रथम भाग । स्वामी भगवदाचार्य ०-७५

*३ **तत्त्वार्थ पञ्चक ।** स्वामी भगवदाचार्य ०-५०

*४ **दशरथमोक्षः ।** ०-१५

*५ **दिव्यस्तोत्रकलापः ।** १-५०

*६ **भक्तकल्पद्रुमः ।** ०-२५

*७ **भगवत्पूजनपद्धतिः ।** ०-५१

*८ **भारत पारिजातम्** (श्रीमहात्मा गान्धि चरितम्) स्वामी भगवदाचार्य । हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १८-००

९ **ब्रह्मसूत्रीयवेदान्त वृत्तिः ।** श्री भगवदामानन्दमुनीन्द्रप्रसादिता श्रीमदानन्दभाष्यानुसारिणी, स्वामीरघुवराचार्यवेदान्तकेसरिणा कृता १-२५

*१० **यतिधर्म समुच्चयः ।** ०-५०

*११ **यतिन्द्रविंशतिः ।** ०-१२

*१२ **रामपटल ।** भगवदाचार्य कृत रहस्यप्रकाशिका व्याख्या सहित १-५०

*१३ **विशिष्टाद्वैत दर्शनम् ।** २-००

*१४ **वेदान्तदर्शन ।** व्यास प्रणीत । १-४ अध्याय । रामानन्द नामक संस्कृत-हिन्दी भाष्य सहित (श्रीरामानन्द सिद्धान्तानुसारी ब्रह्मसूत्र भाष्य) ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१५ **वेदान्तदर्शना पर पर्याय ब्रह्मदर्शन**। भगवत्पाद वेदव्यास प्रणीत। वैदिकभाष्य सहित। १-२ अध्याय। १-२ भाग १०-००

*१६ **वैष्णवमताब्जभास्करः**। ०-७५

*१७ **शारीरकर्ममीमांसा**। आनन्दभाष्य अर्थात् संग्रह भाष्यम् सहित (ब्रह्मसूत्र पर स्वामी भगवदाचार्य का भाष्य ४-००

*१८ **श्रीजानकीकृपा भाष्यस्य संक्षिप्तसार**। ब्रह्मसूत्र के १-४ अध्याय पर श्रीरामप्रसादाचार्य कृत भाष्य का सार ५-००

*१९ **श्रीमद्भगवद्गीता**। भगवद्भाष्य सहित। १-६ अध्याय २-५०

*२० **श्रीभगवद्गीता तत्त्व-विमर्श**। १-००

*२१ **शुक्ल यजुर्वेद संहिता**। शुक्लयजुः संस्कार नामक संस्कृत-भाष्य सहित। १-५ अध्याय ३-३० ६-१० अध्याय २-००, ३१-३५ अध्याय २-००, ३६-४० अध्याय १-००

*२२ **सामवेद और यजुर्वेद भाष्य की प्रस्तावना**। ३-००

*२३ **सामवेद संहिता**। सामसंस्कार नामक संस्कृत-हिन्दी भाष्य सहित १-३ भाग १७-००

*२४ **स्वामी भगवदाचार्य**। प्रथम भाग। बालकाण्ड-अयोध्याकाण्ड-गुर्जरकाण्ड ७-००

*२५ **स्वामी भगवदाचर्य**। द्वितीय खण्ड। वेद विषयक प्रश्नोत्तर १-२५

*२६ **स्वामी भगवदाचार्य**। तृतीय भाग। रहस्योद्घाटन-श्रीराममन्त्रराज परम्परातत्त्वोद्वोधनमीमांसा-श्रीपरम्परापरित्राण-प्रस्तुतप्रसङ्गभङ्ग-तत्त्व-प्रकाश-श्रीसम्प्रदाय और अस्पृश्यस्पर्श-त्रिरत्नी-श्रीसम्प्रदायरक्षा-श्री-विभूतिधारण-विचार-आर्यावर्त का गुरुत्व ग्रंथों का संग्रह ७-००

*२७ **स्वामी भगवदाचार्य**। चतुर्थ भाग। भगवद्गीता के २, १२, १३, १५ वां अध्याय-गुजराती टीका सहित ५-२५

*२८ **स्वामी भगवदाचार्य**। षष्ठ भाग (स्वामी भगवदाचार्य के जीवन चरित से सम्बन्धित पूर्व अफ्रिका के प्रवचन) ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः

१ **क्रमदीपिका**। जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्यप्रणीता। विद्याविनोदश्रीगोविन्दभट्टकृतविवरणोपेता। गुरुभक्तिमन्दाकिनीव्याख्या तथा लघुस्तवराजस्तोत्र सहिता [चौ. ४९] ७-५०

२ **ब्रह्ममीमांसाभाष्यम्**। **'वेदान्तपारिजातसौरभ'**नामकं व्याख्यानम् [चौ. ३४] २-५०

३ **ब्रह्मसूत्रम्**। श्रीदेवाचार्यप्रणीत 'सिद्धान्तजाह्नवी' श्रीसुन्दरभट्टविरचित 'सिद्धान्तसेतु' व्याख्यासहितं तथा श्रीगिरिधरप्रपन्नरचित **'लघुमञ्जूषा'** युक्ता 'दशश्लोकी' च [चौ. २६] ७-५०

४ **वेदान्तरत्नमञ्जूषा**। श्रीपुरुषोत्तमाचार्यविनिर्मिता सम्पूर्णा। तथा- **'वेदान्ततत्त्वबोधः'**। सम्पूर्णः [चौ. ३२] ५-००

५ **वेदान्तसिद्धान्तसंग्रहः**। श्रुतिसिद्धान्तापरनामकः श्रीवनमालिमिश्र ब्रह्मचारिकृतः स्वकृतस्यैव कारिकारूपमूलग्रन्थस्य व्याख्यात्मकः सम्पूर्णः। तथा **वेदान्तकारिकावली**। पण्डितपुरुषोत्तमप्रसादकृता। मूलकृतैव कृत **'अध्यात्मसुधातरङ्गिणी'** टीका सहिता। सम्पूर्णा [चौ० ३९] ७-५०

६ **श्रुत्यन्तकल्पवल्ली**। श्रीमत्पुरुषोत्तमदासविरचिता सम्पूर्णा [चौ. ६५] ५-००

७ **श्रुत्यन्तसुरद्रुमः**। श्रीमत्पुरुषोत्तमप्रसादविरचितः तथा श्रीव्रजेश्वरप्रसादकृता **'श्रुतिसिद्धान्तमञ्जरी'** च। [ब. ३२] ७-५०

❀ स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थ ❀

*१ **आनन्दवाणी**। १-४ भाग २-५०

*२ **ईशावास्य-प्रवचन** १-२५

*३ **चरित्रनिर्माण आणि ब्रह्मज्ञान**। अनुवादक-शरद द्वारकानाथ हजारे (मराठी) १-००

*४ **भगवान के पाँच अवतार** २-००

*५ **महाराजश्री का एक परिचय** ०-२५

*६ **मोहन मोहिनी (गुजराती)** ०-५०

*७ **श्रीपुरुषोत्तम योग** २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*८ **श्रीमद्भागवत रहस्य** २-५०

*९ **सत्संग, साधन और फल** २-००

*१० **सांख्ययोग**। गीता का द्वितीय अध्याय ५-००

*११ **सुगम भक्ति मार्ग** २-००

ज्यौतिष-ग्रन्थाः

* १ **अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्यौतिष**। सहायक भृगुसंहिता पद्धति अर्थात् ज्यौतिषशास्त्र ४-५०

* २ **अखण्डभाग्योदयदर्पणः**। (धनप्राप्ति के साधन, त्रिकाल ज्ञान, फलितज्ञान, तेजी-मंदी, लाभकारी रङ्ग और मणियाँ) ले० भगवानदास मीतल ३-००

* ३ **अङ्गविज्जा**। पुव्वायरियविरइया (मणुस्सविविहचेट्ठाइणिरिक्खणदारेण। भविस्साइफल णाणविण्णारूवा) मुनिपुण्यविजय सम्पादित। २१-००

* ४ **अध्यात्म ज्योतिष विचार**। (वेदान्त और योगशास्त्र का ज्योतिषशास्त्र में समन्वय) लेखक—ह. ने. काटवे नेट १०-००

* ५ **अयनांशनिर्णयः**। केतकर रचित नेट २-००

६ **अहिबलचक्रम्**। सान्वय 'शिशुतोषिणी' हिन्दीटीका सहित इस चक्र के द्वारा भूमि में गड़े हुए धन तथा हड्डी आदि दूषित पदार्थों का ज्ञान होता है। सम्पादक-ज्यो० आ० विन्ध्येश्वरी प्रसाद ०-२५

७ **करणप्रकाशः**। श्रीब्रह्मदेवविरचितः। [चौ. ५] २-५०

८ **खेटकौतुकम्**। 'भाववोधिनी' भाषा टीकासहितम्। [ह. १६६] ०-२५

* ९ **गणकतरङ्गिणी**। श्रीसुधाकरद्विवेदिकृता २-००

*१० **गणित का इतिहास**। सुधाकर द्विवेदी कृत ३-००

११ **गणितीय कोष** (गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली) डा० ब्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पीएच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी ९-००

१२ **गणितकौमुदी** (बालकोपयोगी-प्रथम भाग) इससे जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि का ज्ञान बिना शिक्षक के ही विद्यार्थी स्वयं प्राप्त कर सकता है। यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३ **गणितकौमुदी** (वाराणसी तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमापरीक्षा पाठ्य स्वीकृत, द्वितीय भाग)

(परिष्कृत परिवर्तित चतुर्थ संस्करण)

पं० श्री गणपतिदेव शास्त्री निर्मित इस पुस्तक से संस्कृत के छात्र गणित विषय को जितना शीघ्र और सरल रूपेण समझ सकेंगे उतना हिन्दी-अंग्रेजी की स्कूली पुस्तकों से कथमपि नहीं समझ पायेंगे यह लेखक का दावा है। १-२५

*१४ **गुरुविचार**। ह० ने० काटवे। अनुवादक-विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

१५ **गोलपरिभाषा-शङ्कुज्याक्षेत्रविचारसहिता**। 'तत्त्वप्रकाशिका' विवृति विभूषित। [ह. ११२] ०-५०

१६ **गोलीय रेखागणितम्** तथा **गोलबोध**-सटीक [नि.] दुष्प्राप्य

१७ **ग्रहगोचरः**। 'शिशुतोषिणी' भाषाटीका सहितः [ह. १०१] ०-२५

*१८ **ग्रहफलदर्पण**। वासुदेवशर्मा कृत हिन्दी टीका सहित १-५०

१९ **ग्रहलाघवम्**-'माधुरी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित।

विश्वनाथकृत प्राचीन सोदाहरणव्याख्या तथा नूतन उदाहरण-उपपत्ति-सहित 'माधुरी' नामक संस्कृत हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में विश्वनाथी उदाहरण के अतिरिक्त नवीन उदाहरण तथा उपपत्ति भी यथास्थान दे दी गई है। [का. १४२] ३-५०

*२० **चन्द्रविचार**। ह० ने० काटवे। अनुवादक-जोहरापुरकर २-००

२१ **चमत्कारचिन्तामणिः**। सान्वय-'भावबोधिनी' भाषा टीका सहित ०-७५

२२ **चापीयत्रिकोणगणितम्**-विविध-वासना-समलंकृतम्।

वाराणसी तथा बिहार की शास्त्री परीक्षा में निर्धारित।

बीजगणित के यशस्वी टीकाकार ज्यौ० अच्युतानन्द झा जी की टीका से यह ग्रन्थ ऐसा सरल हो गया है कि अल्प परिश्रम करने पर भी परीक्षा में आये हुए कठिन प्रश्नों का समाधान विद्यार्थी स्वयं कर सकेंगे।

[का. १३९] १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **चलनकलन-प्रश्नोत्तर-विवरणम्** । ले. ज्यौ० अच्युतानन्द झा । इसमें 'चलनकलन' के चारों अध्यायों के प्रश्नों के उत्तर अति स्फुटता के साथ सरल संस्कृत में लिखेगये हैं [हृ. ९४] ०-७५

*२४ **जन्माङ्ग-नक्षत्र-दीपिका** । प्र० भाग । श्रीलक्ष्मीनारायणत्रिपाठीकृत १-५०

२५ **जन्माङ्गपत्रावली**–(जन्मकुण्डली फार्म) आधुनिक आकर्षक कलामय रंगीन बार्डर तथा नवग्रहों के सर्वाङ्गपूर्ण वेदोक्त रंगीन चित्रों से सुसज्जित प्रत्येक पत्र ०-०६, सैकड़े ६-२५

*२६ **जातकदीपक**(Astrological Science) प्रथम भाग । बालमुकुन्द त्रिपाठी सङ्कलित १२-५०

२७ **जन्मपत्रदीपकः**–सोदाहरण सटिप्पण-हिन्दीटीकासहितः श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ज्योतिषाचार्य रचित इस शोधपूर्ण संस्करण में जन्मपत्र बनाने की विधियां ऐसी सरलतापूर्वक नये ढङ्ग से लिखी गई हैं कि अब साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इसका आद्योपान्त मनन करके अच्छी जन्म-कुण्डली बना सकता है । अभिनव परिवर्द्धित संस्करण १-५०

२८ **जातकपारिजातः**–(सचित्र) 'सुधाशालिनी' टीकोपेतः । सोपपत्तिक–'सुधाशालिनी' 'विमला' संस्कृत–हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में परीक्षोपयोगी सभी विषयों को स्पष्ट करके अद्भुत कल्पना द्वारा नवीन उपपत्ति, संकेत तथा नाना प्रकार के चक्र एवं चित्र देकर सभी मार्मिक गूढ विषयों को स्पष्ट कर दिया गया है ।
अभिनव द्वितीय सुलभ संस्करण १०-०० उत्तम संस्करण १२-००

२९ **जातकाभरणम्**–सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित । इसकी 'विमला' टीका में संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, ग्रहयुति, नाभस योग, दृष्टिफल आदि की व्याख्या अत्यन्त सरल शब्दों में की गई है तथा परिशिष्ट में ग्रहों के परस्पर नैसर्गिक, तात्कालिक, संस्कृत अधिमित्रादि, राशियों के स्वामी, होडा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, त्रिंशांश, द्वादशांश, राहु के गृह–मित्र आदि का विचार, दशा–अन्तर्दशा के गणित, स्पष्ट आयु लाने का प्रकार, भावेश फल आदि के ज्ञान–प्रकार स्पष्ट रूप से दिये गये हैं–जो इस संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता है ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३० **जातकालङ्कारः**—दैवज्ञ श्री हरभानुकृत संस्कृतटीका तथा 'भावबोधिनी' हिन्दी टीका सहित।
हिन्दी टीका में जातक (नवजातशिशु) संबन्धी प्रत्येक विषय (प्रश्न) का स्पष्टीकरण सरल और सुबोध शब्दों में किया गया है १-००

३१ **जैमिनीयसूत्रम्**—'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीकासहित।
इसमें अनेक प्रकार से आयुर्दाय विचार वर्णित हैं। अन्य प्रकाशित संस्करणों में जो जो त्रुटियां और अधूरापन था उन सभी विषयों का सुधार कर सोदाहरण संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रकाशित की गई है। [ह. १५९] द्वितीय संस्करण २-००

३२ **ज्यौतिषप्रबोधः**—(यात्राप्रकरणान्त भाग) वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत। ले० पं० गणेशदत्त पाठक।
ज्यौतिष शास्त्र में प्रवेश करने की आरम्भिक योग्यता—पारिभाषिक शब्दों, संज्ञाओं आदि का ज्ञान तथा यात्रामूहूर्त देखने की योग्यता इससे सरलतापूर्वक होती है। हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल है। ०-४०

३३ **ज्यौतिष-प्रश्नफल-गणना**। (अत्यन्त प्राचीन आश्चर्य चमत्कारी प्रश्नोत्तर विषयक फलित ग्रंथ) 'विमला' हिन्दी व्याख्या सहित। सं० दैवज्ञ दयाशंकर उपाध्याय। १-००

+३४ **ज्योतिषसिद्धान्तसंग्रहः**। तत्र सोमसिद्धान्तः ब्रह्मसिद्धान्तः पितामहसिद्धान्तः वृद्धवशिष्ठसिद्धान्तश्च [ब. ३९] ५-००

*३५ **ज्योतिस्तत्त्वम्**। मुकुन्ददैवज्ञबड़थ्वालविरचित। हिन्दी भाषाटीका उदाहरण सहित। १-२ भाग ५०-००

*३६ **ज्यौतिषचन्द्रिका**। पं० रेवतीरमणझाकृत भाषाटीका सहित २-७०

३७ **ताजिकनीलकण्ठी**—पं० गंगाधर मिश्रकृत 'जलदगर्जना' संस्कृतटीकया 'गूढग्रन्थिमोचनी' वासनया 'उदाहरणचन्द्रिका' हिन्दी भाषाटीकया च सहिता। [ह० १४३] ४-५०

३८ **तिथिचिन्तामणिः**। श्रीमद्गणेशदैवज्ञप्रणीतः। सोदाहरण 'विजयलक्ष्मी' भाषाटीका सहित [ह. ७६] ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३९ **देवकेरलम्**। (चन्द्रकलानाडी) अच्युत प्रणीतम् १–२ भाग। नेट २३–७५

*४० **दैवज्ञकल्पद्रुमः**। पं० गङ्गारामराजज्योतिर्षीकृत भाषाटीका सहित ४–००

४१ **दैवज्ञकामधेनुः**। म० म० अनवमर्शीसंघराजवरेण सङ्कलिता [ब. २५] १२–००

४२ **धराचक्रः**। 'सुबोधिनी' भाषाटीका सहित [ह. १६२] ०–३५

४३ **नरपतिजयचर्या**। सुबोधिनी संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार, पं० गणेशदत्त पाठक

इस शोधपूर्ण संस्करण की व्याख्या में समस्त मत-मतान्तरों का युक्ति-प्रमाणों द्वारा निराकरण किया गया है। शीघ्र प्राप्त होगा

४४ **नाड़िदत्तपञ्चविंशतिका**। ०–०५

+४५ **पञ्चस्वराः**। 'सुबोधिनी' संस्कृत टीकासहित १–७५

४६ **पञ्चाङ्गविज्ञानम्**–हिन्दीटीकासहित।

विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के लिए सरल हिन्दी टीका से सुशोभित पञ्चाङ्ग-ज्ञान-सम्बन्धी मौलिक ग्रन्थ। [ह.१०४] ०–५०

४७ **पद्मकोशः**—'भावबोधिनी' सरल भाषा टीका विभूषितः।

सूर्यादिनवग्रहों के भावफलों को जानने का सर्वोत्तम ग्रन्थ [ह. २१०] ०–४०

४८ **परवलयक्षेत्रम्**। श्रीमुरलीधरठक्कुरकृत। प्रश्नपत्रसहित [ह. १८] ०–५०

*४९ **पौर्वात्यपाश्चात्यसामुद्रिकज्ञान**। लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ०–६२

५० **प्रश्नवैष्णवः**। श्रीमन्नारायणदाससिद्धविरचितः। [चौ. पु.] ०–५०

५१ **प्रश्नभूषणम्**–'विमला' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम्।

इसकी सरल संस्कृत–हिन्दी टीका में उदाहरण, प्रत्युदाहरण, चक्र आदि देकर जटिलप्रश्नोत्तरों को सुगम और सुबोध बना दिया गया है। [ह० १३१] ०–७५

*५२ **प्रश्नमार्ग**। पूर्वार्द्ध नेट ३–५०

५३ **प्रश्नाङ्कचूडामणिः**–ध्वजादिप्रश्नगणनाश्च। [ह. ३२] ०–२५

५४ **प्रस्तारचक्रम्**। श्रीशिवप्रणीतम्। 'कमला' हिन्दीटीकासहित [ह.१०३] ०–१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५५ **बीजगणितम्**—'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी-टीकोपेतम् ।
इस संस्करण की विशेषता यह है कि जीवनाथी टीका में जो आधुनिकता का अभाव था उन सभी विषयों को इस संस्करण में विशद रूप से परिष्कृत कर सरल कर दिया गया है तथा मूल के साथ-साथ जीवनाथी टीका एवं श्री अच्युतानन्द झा कृत विस्तृत हिन्दी टीका तथा नवीन उदाहरण और नवीन उपपत्ति भी दी गयी है। [का० १४८] ८-००

५६ **बीजवासना (सोपपत्तिक बीजगणित)**। ज्योतिषाचार्य पण्डित श्रीगङ्गाधरमिश्रेण संगृहीता [ह. १२४] ०-७५

*५७ **बुधविचार**। ह० ने० काटवे। अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-००

५८ **बृहज्जातकम्**—'विमला' हिन्दीटीकोपेतम् ।
अनेक विश्वस्त प्रमाणों के सहित अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दीटीका तथा नवीन उपपत्ति और अनेक उदाहरणों से युक्त यह नवीन उपयोगी संस्करण छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी है। [ह. १७१] ३-५०

५९ **बृहज्ज्योतिषसारः**। दैवज्ञवाचस्पति श्री वासुदेव गुप्त ।
यह पुस्तक फलित ज्योतिष के दृष्ट, अदृष्ट दोनों अङ्गों की पूर्ण और सम्यक् विवेचना एवं हिन्दी टीका से संयुक्त होने के कारण अत्यन्त ही उपादेय है। हर प्रकार के विषयों में विविध विवरणों द्वारा उन्हें अत्यन्त विस्तृत ढंग से समझाने एवं विविध प्रकार के चक्रों सारणियों आदि के दे देने से यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के सामान्य ज्ञान रखने वालों एवं प्रत्येक हिन्दू गृहस्थों के लिए संग्रहणीय है ४-५०

६० **बृहत्संहिता**। सोदाहरण—'विमला' हिन्दी व्याख्योपेता ।
अच्युतानन्दझा ज्योतिषाचार्यजी ने इस ग्रन्थ पर सर्वबोध सुगम हिन्दी व्याख्या की रचना की है। इस व्याख्या द्वारा ग्रन्थ की दुरूह ग्रंथियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ वराहमिहिराचार्य की उक्ति का ग्रन्थान्तर से समन्वय करने का भी भगीरथप्रयत्न किया गया है, जो इस संस्करण का सबसे अधिक महत्त्वपूर्व विषय है। ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६१ **बृहत्-होडाचक्रविवरणम्**—वाराणसी की प्रथमा परीक्षोपयोगी ग्रन्थ। सम्पादक, पं० मुरलीधर ठक्कुर।
इसमें लोकोपयुक्त मौहूर्तिक संग्रह को एकत्र करके उन सब श्लोकों की हिन्दी टीका भी कर दी गयी है। शतपदचक्र, नक्षत्रचक्र, राशिचक्र, वरवधू मेलापकचक्र, घातचक्र, लग्न बनाने की विधि आदि १० चक्र भी दिये गये हैं। [हृ. ८७] ०-५०

*६२ **भविष्य-वाणी-सञ्चय**। चन्द्रनाथ सैन्धव १-००

*६३ **भाभ्रमबोधः**। ०-५२

*६४ **भारतीयकुण्डलीविज्ञान** (हिन्दी) रफ ४-५० ग्लेज ५-५०

*६५ **भार्गवनाडिका**। नेट ६-००

*६६ **भावकुतूहलम्**। सान्वय-भाषाटीकासहित ३-००

६७ **भावप्रकाशः**। जीवनाथझाप्रणीतः। भावबोधनी भाषाटीका प्रश्नपत्रसहित १-२५

६८ **भावफलाध्यायः**। (लोमशोक्त-भृगुसंहितोक्त-युग्म-संस्करण) सुबोधिनी-विमला हिन्दी टीका विभूषित ०-५०

*६९ **भूमण्डलीयसूर्यग्रहगणितम्**। केतकररचितम् नेट ८-००

*७० **भृगुसंहिता**। कुण्डलीखण्ड-फलितखण्ड-जातकप्रकरण-तात्कालिकभृगुप्रश्न-प्रत्यक्षमूकप्रश्न नष्टजन्माङ्गदीपिका-सर्वारिष्टनिवारण-खण्ड-राजखण्ड-सन्तानउपायखण्ड-नरपतिजयचर्याखण्ड-स्त्री-फलितखण्ड। भाषाटीका। १-११ खण्ड नेट ५०-००

*७१ **मङ्गलविचार**। ह० ने० काटवे। अनुवादक: विद्याधरजोहरापुरकर २-५०

*७२ **मनुष्य का हाथ**। (सचित्र) ले०—बलदेवप्रसाद शुक्ल ३-५०

+७३ **महासिद्धान्तः**। श्री आर्यभट्टकृतः। श्रीसुधाकरद्विवेदिकृत टीकासहितः। ७-५०

७४ **मानसागरी**। 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित।
काशीनरेश के सभापण्डित, मिथिला के लब्धप्रतिष्ठित दैवज्ञ पं० मधुकान्त झा जी काशी में फलित ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् माने जाते हैं। अपनी व्याख्या में इन्होंने जातक का फलादेश तथा जन्मपत्र-निर्माण विधिका सांगोपांग सोदाहरण, सोपपत्तिक विवरण दे दिया है जिससे यह संस्करण साधारण विद्वान् के लिए भी सुगम और संग्रहणीय हो गया है ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७५ **मुहूर्तचिन्तामणिः ।** 'पीयूषधारा' व्याख्यासहित । पं० अनूपमिश्रकृत नवीनगणित विषयोपपत्ति 'युक्तिमञ्जरी' टिप्पणी सहित। (परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण) ५-००

७६ **मुहूर्तचिन्तामणिः**—सान्वय 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहित-ग्रन्थाभिप्राय को भली-भाँति समझने के लिये श्लोकों के अन्वय के बाद शुद्ध हिन्दी में उनके अर्थ, उपपत्ति, उदाहरण तथा और भी विषयों का उल्लेख किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस संस्करण में 'पीयूषधारा' और 'प्रमिताक्षरा' के अपेक्षित आवश्यक अंशों का भी विमर्शाख्य अनुवाद सन्निविष्ट कर दिया गया है [ह० १५८] शीघ्र प्राप्त होगा।

७७ **मुहूर्तमार्तण्डः**—सान्वय 'मार्तण्डप्रकाशिका' टीकासहित । जिन विषयों को पढ़ लेने पर भी छात्र यथार्थ ज्ञान से विमुख रहते थे वे सभी स्थल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या उदाहरण उपपत्ति आदि से इस संस्करण में स्पष्ट कर दिये गए हैं। [का. १४६] ३-००

७८ **मुहूर्तमार्तण्डः** । मार्तण्डवल्लभ संस्कृत व्याख्या सहितः [चौ. पु.] ०-५०

७९ **योगिनीजातकम्** । सोदाहरण 'विमला' भाषाटीका सहितं [ह. १४५] ०-५०

८० **रत्नविज्ञान** (Gemology) । डॉ० राधाकृष्ण पाराशर । प्रत्येक रत्न-उपरत्न के असली-नकली की पहिचान और उसकी ज्योतिष शास्त्रानुसार एवं प्राच्य-पाश्चात्त्य चिकित्सात्मक उपयोग का विवेचन करने वाला प्रथमोपस्थित स्वतन्त्र प्रामाणिक ग्रन्थ । प्रेस में

८१ **रमलनवरत्नम्** । 'विमला' हिन्दीटीका सहित । रमल-पाशा का निर्माण, प्रक्षेप, गुप्तरहस्य आदि, जिसे रमल शास्त्री छिपाया करते थे उन सभी का ज्ञान इस टीका में रेखा-चित्र द्वारा कराया गया है। [ह.] २-००

८२ **रत्नगर्भाचक्रम्** । 'हरिप्रिया' भाषाटीकोदाहरणसंवलितम् [ह. ८४] ०-२०

*८३ **रत्नदीपिका रत्नशास्त्रं च** । चण्डेश्वर-बुधभट्टाभ्यां विनिर्मितम् नेट २-२५

*८४ **रत्नदीपिका** (रत्नों, उपरत्नों का विवेचन) । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*८५ **रविविचार**। ले० ह० ने० काटवे। अनुवादक : विद्याधरजोहरापुरकर २-००

*८६ **राशिगोलस्फुटानीतिः**। अच्युतविरचिता २-५०

*८७ **राहु-केतु-ग्रहण विचार**। ह० ने काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ३-५०

८८ **रेखागणितम्**। (एकादश-द्वादशाध्यायौ) [नि.] ०-७५

८९ **रेखागणितषष्ठाध्यायः-परिभाषारूप-पञ्चमाध्यायसहितः**। सम्पादक : ज्यौ० आ० पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर [ह. १२८] ०-४०

×९० **लग्नचन्द्रिका**। हिन्दी टीका सहित २-००

९१ **लग्नरत्नाकरः (बृहल्लग्नजातकम्)**। सान्वय-'शिशुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित [ह. ५०] ०-४०

९२ **लग्नवाराही**। वराहमिहिराचार्यकृता। 'तत्त्वप्रकाशिका' भाषाटीका सहित [ह. ६०] ०-२०

*९३ **लग्नसारणीसमुच्चयः**। चिमनलाल शर्मा ज्योतिषीकृत २-००

९४ **लीलावती**। सोपपत्तिक सोदाहरण-'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता। परीक्षोपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्नपत्रादि सहित।

मिथिला के प्रतिष्ठित दैवज्ञ लषण लाल झा विरचित सुविस्तृत संस्कृत हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, उदाहरण आदि यथेष्ट सामग्री दी गई है। प्रकरण के अन्त में परिशिष्ट देकर नवीन गणित का भी तुलनात्मक विवेचन किया गया है तथा परीक्षा में आनेवाले प्रष्टव्य विषयों को तोड़-मरोड़ करके प्रश्नोत्तर के रूप में 'अभ्यासार्थ प्रश्न' के नाम से लिख दिया गया है। छात्रों के आधुनिक अध्ययन तथा अध्यापकों के अध्यापन सौकर्य की दृष्टि से यह अभिनव सर्वोत्तम संस्करण है ४-००

९५ **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी**। 'सुबोधिनी' टीकासहित। सोदाहरण सान्वय, संस्कृत हिन्दी व्याख्या, से यह संस्करण इतना सरल बन गया है कि पाठक स्वयं भी इसका अध्ययन करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। [ह. १३५] १-२५

*९६ **वटेश्वरसिद्धान्त**। वटेश्वराचार्य विरचित। संस्कृत-हिन्दी विज्ञान-भाष्योत्पत्ति सहित ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९७ **वनमाला** । सान्वय–'अमृतधारा' हिन्दी व्याख्योपेता ।
दैवज्ञ जीवनाथ झा विरचित इस लघु ग्रन्थ में ग्रहों की स्थिति, वायु की स्थिति, प्राकृतिक स्थिति तथा प्रश्न आदि के आधार पर भी वृष्टि का विचार, फसल का परिणाम आदि घोषित करने की युक्तियाँ दीगई हैं ०-७

*९८ **वरवधूनक्षत्र-मेलापक** । पं० श्रीनिवास शास्त्री ४-०

*९९ **वर्षभास्करम्** । जन्मपत्र–वर्षपत्र बनाने का ग्रंथ । भाषाटीकासहित २-०

+१०० **वसिष्ठसिद्धान्तः** । ब्रह्मपुत्रमहर्षिवसिष्ठविरचितः । ०-१

×१०१ **वास्तवचन्द्रश्रृङ्गोन्नतिसाधनम्** । संस्कृत टीका सहित १-२

*१०२ **वास्तवविचित्रप्रश्नास्सभङ्गाः** । श्रीसुधाकरद्विवेदी विरचित ०-१

१०३ **वास्तुरत्नाकर**–आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी ।
इस पुस्तक में भवन-निर्माण-सम्बन्धी प्रत्येक विषय पर पूर्ण विचार, परिशिष्ट प्रकरण में राजा-महाराजा, माण्डलिक, सामन्त इत्यादि के लक्षण तथा उनके मकान का प्रमाण इत्यादि का समस्त विवरण निविष्ट किया गया है। अन्त में प्रत्येक नक्षत्र पर से एक ५६ पेजों की बड़ी गृहसारणी और सारणी पर से पिण्ड निश्चित करने की विधि भी दे दी गई है। साथ में सरल सुबोध हिन्दी टीका, उदाहरण और जगह-जगह पर उपपत्ति एवं आवश्यक टिप्पणियाँ भी कर दी गई हैं। [ह. ४६] ३-०

१०४ **वास्तुरत्नावली** । सोदाहरण 'सुबोधिनी' व्याख्यासहित ।
यह संस्करण सर्वसाधारण के लाभ के हेतु सोदाहरण सरल संस्कृत हिन्दी व्याख्या से सुशोभित किया गया है। २-५

*१०५ **वित्रिभलग्नभ्रमणम्** । श्रीजगदीशशर्मविरचितम् ०-१

*१०६ **वित्रिभाङ्गायनविवेकः** । श्रीबुद्धिनाथझा विरचितः ०-३

+१०७ **विवाहवृन्दावनम्** । संस्कृत टीका भाषा टीका सहित २-४

१०८ **वीरसिंहावलोकः** (Astro-Medical Science)
अनुवादक—डॉ० राधाकृष्ण पाराशर ।
राजा वीरसिंह तोमर द्वारा विरचित इस ग्रन्थ में प्रत्येक रोग के निदान एवं चिकित्सा का वर्णन कर्मकाण्ड, कर्मविपाक, ज्योतिष, आयुर्वेदादि अनेक शास्त्रों द्वारा किया गया है।

यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०९ **वैजयन्तिपंचाङ्गगणितम्** । केतकर रचितम् । नेट ५-००

११० **व्यावहारिक ज्योतिष तत्त्व** । ले०-पं० लषणलाल झा । सरल सुबोध 'तत्त्वप्रभा' हिन्दी व्याख्या, विशेष विवरण, विविध प्रकार के विषय-बोधक चक्र, सारिणी आदि से सुसज्जित फलित ज्योतिष का अभिनव व्यावहारिक मौलिक ग्रन्थ । शीघ्र प्रकाशित होगा

१११ **शनिविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

११२ **शरीर सर्वाङ्ग लक्षण** (हस्त रेखा एवं आकृति विज्ञान) इसमें मनुष्य-शरीर के चोटी से एड़ी तक के संपूर्ण अङ्गों के प्रत्यक्ष रूप से सच्चे प्रमाणित होने वाले लक्षण लिखे गए हैं तथा हस्तरेखा-ज्ञान भी कराया गया है १-५०

११३ **शिवजातकः** । अखिलब्रह्माण्डनायक श्रीशिवनिर्मितः । 'शिशुतोषिणी' भाषाटीकासहितः [ह. ६५] ०-२०

११४ **शिशुबोधः** । सान्वय-'विमला' हिन्दी टीका सहित । ज्योतिषशास्त्र के प्रवेशार्थियों के लिये आवश्यक प्रारंभिक जानकारी इस पुस्तक में अति सरल रूप में दी गई है । अन्वय, भाषाटीका, टिप्पणी आदि से विषय और भी सरल हो गया है ०-६५

११५ **शीघ्रबोधः**-'सरला' हिन्दी टीका सहितः । पं० श्री अनूपमिश्रजी रचित इस टीका के समान अत्यन्त सरल और सुबोध अन्य कोई भी टीका प्रकाशित नहीं हुई है १-००

११६ **शुक्रविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

११७ **षट्पञ्चाशिका** । श्रीमद्भट्टोत्पलकृत संस्कृतटीकायुत 'विभा' नामक भाषाटीका सहिता [ह. १४९] ०-४५

११८ **समरसारः** । वासुदेव गुप्त कृत सोदाहरण हिन्दी टीका सहित १-२५

११९ **सरलत्रिकोणमितिः** । म० म० पण्डित श्रीबापूदेवशास्त्रिसङ्कलित म० म० पण्डित मुरलीधरशर्मकृत टिप्पणी सहित [नि.] समाप्त

१२० **सरलरेखागणितम्** । ज्योतिषाचार्य पं० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी विरचित [ह. ८२] १-२ अध्याय १-००

१२१ **सामुद्रिक-दीपिका** । (हिन्दी) पौर्वात्य पाश्चात्त्य पद्धतियों का तुलनात्मक विवेचन । लेखक-लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी। १-३ भाग नेट ११-६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

×१२२ **सारावली** । भा. टी. सहित। कपड़े की जिल्द ९-०० सादी जिल्द ८-००

*१२३ **सिद्धान्तदर्पणम्** । गार्ग्य केरल नीलकण्ठ विरचित २-५०

+१२४ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः** । श्रीकमलाकरभट्टविरचितः । म० म० श्रीसुधाकरद्विवेदिकृत टिप्पणी तथा म० म० श्रीमुरलीधरशर्मकृत टिप्पणीसहित। सम्पूर्ण [ब. १] १०-००

१२५ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । भास्कराचार्यविरचितः । वासनाभाष्य सहितः म० म० श्रीबापूदेवशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितश्च । सम्पूर्णः [का. ७२] यन्त्रस्थ

१२६ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । सोपपत्तिक 'प्रभा' व्याख्यासहित। अनेक ग्रन्थों के सम्पादक पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर ज्योतिषाचार्य की साभिमान घोषणा है कि नवीन वैज्ञानिक सर्वांगपूर्ण यह 'प्रभा' व्याख्या आधुनिक विकास युग में गणित सिद्धान्त प्रेमियों को भारतीय पुरातत्त्व के आलोक में लाकर गणित-विज्ञान के शिखर पर पहुँचा देगी। व्याख्या में पाश्चात्त्य मतों का भी प्राच्य सिद्धान्तों के साथ सन्तुलन किया गया है। स्पष्टाधिकारान्त प्रथम भाग [का. १४९] ५-००

*१२७ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । मध्यमाधिकारान्त । वासनाभाष्य, श्री केदार दत्त कृत दीपिका-संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित ५-००

*१२८ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । स्पष्टाधिकार-त्रिप्रश्नाधिकारात्मक । वासना भाष्य-मरीचि-भाष्य-श्री केदार दत्त कृत दीपिका-संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित २०-००

*१२९ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । ग्रहगणिताध्याय, वासना भाष्य, मरीचि भाष्य-श्री केदारदत्त कृत दीपिका संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित २०-००

*१३० **सिद्धान्तशिरोमणिः** । ग्रहगणिताध्याय के पर्वसम्भवाधिकार से पाताधिकार तक के ९ अधिकार पर्यन्त तृतीय भाग। वासना भाष्य, मरीचि भाष्य-श्री केदार दत्त कृत दीपिका संस्कृत तथा शिखा हिन्दी भाष्य सहित ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३१ **सूर्यसिद्धान्तः**—'तत्त्वामृत' भाष्यसहित ।
पूर्वप्रकाशित सभी टीकाओं के गुण-दोषों की समालोचना करके ज्योतिषाचार्य श्री कपिलेश्वर शास्त्रीजी द्वारा तत्त्वामृतभाष्य तथा उपपत्ति-टिप्पणी सहित श्रेष्ठ संस्करण [का. १४४] ४-००

*१३२ **सौरार्यब्राह्मतिथिगणितम्** । केतकररचितम् नेट १-००

*१३३ **हस्तरेखाविज्ञान** (२४२ चित्रों से युक्त) हरगोविन्द द्विवेदी ३-५०

*१३४ **हस्तरेखाविज्ञान** । शरीर-लक्षण-चरणचिह्न तथा तिल विचार सहित । गोपेशकुमार ओझा । परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण ८-००

*१३५ **हस्तसामुद्रिक** । सचित्र भाषा ६-००

*१३६ **होराशास्त्रम्** । वराहमिहिरकृतम् । 'अपूर्वार्थप्रदर्शिका' संस्कृत व्याख्या सहितम् । नेट २५-००

धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः

१ **अग्निष्टोमपद्धतिः** । ग्रन्थरत्नेऽस्मिन् **'आध्वर्यवपद्धतिः'** कर्कानुसारिणी, **'औद्गात्रपद्धतिः'**-लाट्यायनद्राह्यायण सूत्रानुसारिणी, **'हौत्रपद्धतिः'**-शाङ्खायनश्रौतसूत्रानुसारिणी च सन्निविष्टास्ति [चौ. ८१] १-२ खण्ड ७-५०

* २ **अङ्गिरसस्मृतिः** । नेट १२-००

३ **अन्त्यकर्मदीपकः**-आशौचकालनिर्णयसहितः, प्रेतकर्मब्रह्मीभूत यतिकर्मनिरूपणात्मकः । म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचितः ४-००

* ४ **अन्त्येष्टिकर्मपद्धतिः** । आश्चर्यनाथ पाण्डेय संगृहीत ४-५०

५ **आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्** । श्रीहरदत्तप्रणीत-'अनाकुला' श्रीसुदर्शनाचार्य प्रणीत 'तात्पर्यदर्शन' व्याख्याद्वय समलङ्कृतम् [का. ५९] यन्त्रस्थ

६ **आपस्तम्बधर्मसूत्रम्** । श्रीहरदत्तमिश्र विरचित-'उज्ज्वलावृत्ति' सहित [का. ९३] यन्त्रस्थ

* ७ **आर्यविधानम्** । म० म० पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचितम् । भाषाटीकोपेतम् । १-२ भाग २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८ आशौचनिर्णयः । म. म. वाचस्पति मिश्र, म. म. रुद्रधरोपाध्याय प्रणीत युग्म संस्करण । 'मनोरमा' हिन्दीटीका ०-५०

* ९ आह्निकसूत्रावलिः (शुक्लयजुर्वेदीय) ६-००

10 INDIAN WISDOM. By Monier Williams (Chow. Sans. Studies Vol. XXXVI) 30-00

११ उपनयनपद्धतिः । विस्तृत टिप्पणी-परिशिष्ट सहिता । रचयिता-म० म० विद्याधरजी गौड़ [वि. २] १-५०

*१२ कर्मकलापः । स्वामी सहजानन्दकृत नेट १६-००

*१३ कर्मकाण्ड-प्रवेशिका । हिन्दीटीका सहित ०-७५

१४ का० तर्पणपद्धतिः । वेदाचार्य पं० अनन्तरामडोगराशास्त्रिकृत हिन्दीटीका सहित [चौ. पु.] ०-१५

१५ कातियेष्टिदीपकः । (दर्शपौर्णमासपद्धतिः) म० म० पण्डित नित्यानन्दपन्त पर्वतीय विरचित [का. २०] २-००

१६ कात्यायनश्रौतसूत्रम् । श्री कर्काचार्यविरचित 'कर्कभाष्य' सहित । अध्याय १२ से २६ पर्यन्त द्वितीय भाग मात्र [चौ. १९] १४-००

१७ कुलदेवतास्थापनविधिः हनुमद्ध्वजदानविधिश्च [चौ. पु.] ०-०५

१८ कूपोत्सर्गपद्धतिः । ०-१५

१९ कृत्यसारसमुच्चयः । म० म० अमृतनाथ झा विरचित । पं० गङ्गाधरमिश्रकृत बृहत् टिप्पणी परिशिष्ट विभूषित ५-००

*२० खादिरगृह्यसूत्रम् । रुद्रस्कन्दवृत्ति भाषाटीका सहित २-५०

२१ गायत्रीपूजापद्धतिः । श्रीविभाकराचार्यसंगृहीत [ह. ३१] ०-२५

२२ गोदानपद्धतिः । अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि. ५] ०-१५

*२३ गोभिलगृह्यकर्मप्रकाशिका । हिन्दी भाषा टीका सहित नेट ३-००

२४ गोभिलगृह्यसूत्रम् । म० म० श्रीमुकुन्दशर्म विरचित 'मृदुला' व्याख्या समलङ्कृत [का. ११८] ४-००

*२५ गौतमधर्मसूत्रपरिशिष्टम् (द्वितीय प्रश्न) १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ **गौतमधर्मसूत्राणि** । सानुवादमिताक्षरावृत्तिसहितानि अनु०—श्रीउमेशचन्द्रपाण्डेय ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में दी हुई आचार-शिक्षा दर्शनीय है। इसकी संस्कृत व्याख्या ही अबतक उपलब्ध थी। अब यह उत्तम हिन्दी अनुवाद तथा संस्कृत व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। मूल में शताधिक स्थलों पर संशोधन भी किया गया है। विचारपूर्ण विस्तृत-भूमिकादि-संवलित अभिनव संस्करण । १०-००

*२७ **चतुर्दशरत्नविवाहपद्धतिः** । हिन्दी भाषा टीका सहित नेट ३-००

२८ **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः** । श्रीभट्टोजिदीक्षितकृतः [व. ३४] ५-००

२९ **चूडाकरणपद्धतिः** । म० म० विद्याधरशास्त्रिकृत विस्तृतटिप्पणी परिशिष्ट सहित [वि. ४] ०-२५

*३० **छान्दोग्यस्मार्तप्रायश्चित्तसंग्रहः** । ०-३७

३१ **तिथिनिर्णयः** । श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचितः, श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितश्च [चौ. ८६] २-५०

३२ **तुलसीपूजापद्धतिः** । [चौ. स्तो. ११] ०-१५

३३ **दानदीपिका** । भाषा टीका सहित [ह. ५५] ०-५०

३४ **दानमयूखः** । श्रीनीलकंठभट्टविरचित [का. ४४] २-५०

३५ **दुर्गापूजा—श्यामापूजापद्धतिः** । ०-७५

*३६ **द्वैतनिर्णयः** । म० म० पं० वाचस्पतिमिश्र प्रणीत १-२५

*३७ **द्राह्यायणगृह्यसूत्रम्** । रुद्रस्कन्दवृत्ति भाषा टीका सहित २-५०

३८ **नारायणबलिप्रयोगः** । 'विष्णुप्रिया' हिन्दी व्याख्या सहित ०-६०

*३९ **नित्यकर्मविधिः** । बालकृष्ण आचार्य संगृहीत । भाषा टीका १-२५

४० **निर्णयसिन्धुः** । कमलाकरभट्टविरचितः । कृष्णभट्टकृत विस्तृत संस्कृत व्याख्यासहित [चौ. ५२] २२-००

४१ **पञ्चमङ्गलम्** । १. मण्डपस्थापनम् । २. हरिद्रालेपनं-कलशस्थापनम् ३. मातृकापूजा—सप्तघृतमाता ४. आयुष्यमन्त्रजपः ५. नान्दीमुखश्राद्धम् ०-४०

४२ **पञ्चाङ्गपद्धतिः** । वेदाचार्य अनन्तरामडोगरा शास्त्रिकृत टिप्पणी विभूषित । अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि० ६] ०-४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४३ **पञ्चपक्षात्मकरुद्रस्वाहाकारसमुच्चयः** । दुर्गाशङ्कर परिशोधितः ०-२५

*४४ **परिणयमीमांसा** । श्रीनटेशशास्त्रिणा विरचिता नेट १-५०

*४५ **पाराशरस्मृतिः** । भाषाटीका सहित १-५०

४६ **पितृकर्मनिर्णयः** (संग्रह निबन्ध) श्रीत्रिलोकनाथ मिश्र विरचित ३-००

४७ **पूजाविधिसहित षडंगरुद्री** । १-५०

४८ **पूतनाशान्तिः** । शिशुतोषिणी भाषाटीका सहित [ह. १०२] ०-२५

४९ **पौरोहित्यकर्मसारः** । परिवर्द्धित संस्करण । संपूर्ण [का. २६] १-६५

५० **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड ।**
डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी

वैदिक काल से लेकर आजतक के एतद्विषयक सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के पर्यालोचन के साथ ही विदेशी व्यवस्थाओं और मान्यताओं का भी परिचय इससे प्राप्त होता है। अपराधों की जो सूची प्रस्तुत की गई है वह राजनीति के छात्रों, अध्यापकों, शोध तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के बड़े ही उपयोग की वस्तु है। ६-००

५१ **प्राचीन भारतीय लोकधर्म** । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ४-००

52 FUNCTIONAL ANALYSIS OF INDIAN THOUGHT AND ITS SOCIAL MARGINS by Swami A. Bharati. (Chow. Sans. Studies Vol. XXXVII) 15-00

*५३ **बीस स्मृतियाँ** । श्रीराम शर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १४-००

५४ **बौधायनधर्मसूत्रम्** । श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेत [का. १०४] २०-००

*५५ **बृहद्ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः** । सग्रहमखषोडशसंस्काराद्यनेक विषय सहितः । शास्त्री दुर्गाशङ्कर कृत टिप्पणी सहित ६-००

*५६ **मण्डपकुण्डसिद्धिः** । विठ्ठलदीक्षित विरचिता । पदार्थमञ्जूषाभिधया गुर्जरभाषानुवाद सहितया संस्कृत टीकया संवलिता ५-५०

५७ **मनुस्मृतिः** । 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका, 'विमर्श' सहित ।
कुल्लूकभट्ट की टीका के अनुरूप यह हिन्दी टीका है तथा दुरुह स्थलों में भावार्थ और भी स्पष्ट करने के उद्देश्य से 'विमर्श' नामक टिप्पणी भी की गई है। परिष्कृत द्वितीय संस्करण-संपूर्ण ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५८ **मनुस्मृतिः**—'मणिप्रभा' हिन्दी टीका 'विमर्श' सहित। १—४ अध्याय २—५०

५९ **मनुस्मृतिः** (द्वितीयोऽध्यायः) परीक्षोपयोगी सान्वय प्रकाशिका' 'सुबोधिनी' संस्कृत हिन्दी टीका सहित [ह. ७१] ०—७५

६० **मनुस्मृतिः**। कुल्लूकभट्ट कृत मन्वार्थमुक्तावली संस्कृत व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

*६१ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः**। म० म० पं० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः ४—००

६२ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**। श्रीमन्मित्रमिश्रविरचित 'वीरमित्रोदय' श्रीविज्ञानेश्वरकृत 'मिताक्षरा' टीकाद्वयसहित। संपूर्ण [चौ. ६२] यन्त्रस्थ

६३ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**। विज्ञानेश्वर कृत मिताक्षरा संस्कृत टीका—डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित [सम्पूर्ण ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त होगा] आचाराध्यायमात्र ३—००

६४ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**। 'बालम्भट्टी' व्याख्यासमलङ्कृत 'मिताक्षरा' टीका सहित। व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण [चौ. ४१] २२—००

•65 Raja Dharma by K. V. Rangaswamy Aiyangar Nett. 5–00

*६६ **राज्याभिषेकपद्धतिः**। ३—००

६७ **रामनवमीव्रतपूजापद्धतिः**। जानकीनवमीव्रतपूजा सहित ०—४०

६८ **रामार्चापद्धतिः**। (श्री शिवसंहितोक्त) सं० गुलाबझा ०—४०

+६९ **रुद्रयागप्रयोगः**। वायुनन्दनमिश्र प्रणीत ४—००

70 RELIGIONS OF INDIA : A. Barth's Authorised English Translation by Rev. J. Wood. (Chow. Sans. Studies Vol. XXV) 15–00

७१ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्**। अग्निष्टोमान्तम्। म० म० पं० श्री मुकुन्द झा कृत व्याख्या सहित [का. ९७] ३—००

७२ **वर्षकृत्यदीपकः**। म० म० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीय विरचित। [का. ६६] १०—००

*७३ **व्यवहारनिर्णयः**। वरदराजकृतः नेट ३०—००

७४ **वसन्तोत्सवनिर्णयः**। स्व० पं० सूर्यनारायणशुक्लकृत ०—१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+७५ **वाराहगृह्यसूत्रम्** । भाषाटीका सहित १-५०

७६ **वास्तुपूजापद्धतिः** । **गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति-गृहप्रवेशपद्धति** सहित [ह. १५३] ०-७५

७७ **वाशिष्ठीहवनपद्धतिः** । भाषाटीका सहिता ।

वेद-कर्मकाण्ड-धर्मशास्त्राचार्य पण्डित श्रीविश्वनाथशास्त्रि संपादित । इसमें सम्पूर्ण हवनविधि, सप्रमाण ग्रहस्थापनविधि, नान्दीश्राद्ध, सर्वतोभद्र आदि कर्मकाण्ड की अनेक विधियां बहुत ही सरल रूप से दी गई हैं । ०-७५

*७८ **विवाहचन्द्रिका** । षोडश संस्कार सहिता १-५०

+७९ **विवाहपद्धतिः** । हिन्दी टीका सहिता १-००

८० **विवाह पद्धतिः** । **सटिप्पण, हिन्दी अनुवाद सहित** ।

सम्पादक—म० म० विद्याधर शास्त्री गौड़ । अनुवादक वेदाचार्य श्री दौलतराम शास्त्री गौड़ शीघ्र प्राप्त होगा

+८१ **विष्णुयागप्रयोगः** । श्रीवायुनन्दनमिश्रविरचितः । ३-६८

८२ **विष्णुस्मृतिः** । जे० जॉली सम्पादित ।

इंडिया आफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित श्री कोलब्रुक आदि विद्वानों द्वारा अन्विष्ट पाण्डुलिपियों के आधार पर संशुद्ध एवं श्रीनन्द पंडित कृत वैजयन्ती टीका, संपादकीय टिप्पणियों तथा अनेक अनुक्रमणिकाओं के साथ प्रकाशित शोधपूर्ण उत्तम संस्करण । १०-००

८३ **वीरमित्रोदयः** । महामहोपाध्याय श्री मित्रमिश्रविरचितः—

परिभाषाप्रकाशः संस्कारप्रकाशश्च २०-००

आह्निकप्रकाशः	१५-००	**व्यवहारप्रकाशः**	१५-००
पूजाप्रकाशः	१०-००	**श्राद्धप्रकाशः**	१०-००
लक्षणप्रकाशः	१७-५०	**समयप्रकाशः**	७-५०
राजनीतिप्रकाशः	१२-५०	**भक्तिप्रकाशः**	५-००
तीर्थप्रकाशः	१५-००	**शुद्धिप्रकाशः**	७-५०

१-१२ प्रकाशाः सम्पूर्ण [चौ. ३०] १४५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८४ **व्यवहारविज्ञानम्।** वाराणसी की प्रथमा परीक्षापाठ्य स्वीकृत। सान्वय 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित जीवन-निर्माण में बालकों को भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित किस व्यवहार-विधि का पालन करना चाहिए इसका शास्त्रसम्मत रोचक उपदेश ही इस पुस्तक का विषय है। बड़ी उपयोगी रचना है।

प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत प्रथम भाग ०-६०

द्वितीय भाग ०-७५

८५ **व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णयः**—(महान् लघुश्च) नागेशभट्टविरचितः। अत्र कलौ उपनयनयोग्याः क्षत्रिया नैव सन्तीति विवेचितम्। तथा—

व्रात्यताशुद्धिसंग्रहः [चौ. ६६] २-५०

८६ **शिलान्यासपद्धतिः।** म० म० श्रीविद्याधरजी गौड सम्पादिता विस्तृत टिप्पणी परिशिष्ट सहिता [वि. ३] ०-२५

*८७ **शुक्लयजुःकाण्वशाखीयजातकर्मादिसमावर्तनान्तसंस्कारप्रयोगः** ०-७५

*८८ **शुक्लयजुर्वेदीय-वैदिकवास्तुशान्तिप्रयोगः।** दुर्गाशङ्कर शास्त्री १-५०

८९ **शुक्लयजुर्वेदीय-सन्ध्योपासनपद्धतिः।** वेदाचार्य पं० अनन्तराम-डोगराशास्त्रिकृत भाषाटीका सहिता [वि. ८] ०-१५

९० **शुद्धिप्रदीपः प्रायश्चित्तप्रदीपः कृत्यप्रदीपश्च।**
आचार्य कृष्णमित्रप्रणीत धर्मशास्त्र के ये तीनों अत्यन्त प्राचीन अनुपलब्ध दुष्प्राप्य ग्रन्थ बहुत ही खोज तथा अर्थव्यय से उपलब्ध हुए हैं। शुद्धिप्रदीप में जन्म-मरणाशौचों का, प्रायश्चित्तप्रदीप में विविध प्रकार के पातक तथा महापातकादि के प्रायश्चित्तों का और कृत्यप्रदीप में द्विजातियों के षोडश संस्कारों तथा यज्ञादिकों में कर्त्तव्याकर्तव्यों का प्रामाणिक विवेचन है। २-५०

९१ **श्राद्धकल्पलता।** श्रीनन्दपण्डितकृता। [चौ. ७३] ६-००

९२ **श्राद्धगणपतिः।** यन्त्रस्थ

९३ **श्राद्धचन्द्रिका।** भारद्वाज दिवाकरभट्टनिर्मिता [चौ. ७६] ४-००

९४ **श्राद्धपद्धतिः।** म० म० वाचस्पतिमिश्रकृता। परिष्कृत संस्करण यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९५ **श्राद्धप्रयोगदीपिका** । नेने गोपाल शास्त्री संपादिता ।
महामहोपाध्याय श्री पं० नित्यानन्दजी पन्त पर्वतीय रचित संस्कारदीपक १-२ भाग, परिशिष्टदीपक, अन्त्यकर्मदीपक, वर्षकृत्यदीपक आदि ग्रन्थों से सभी विद्वान् पूर्ण परिचित हैं। उन्हीं महामहोपाध्याय जी के प्रधान शिष्य श्री पं० नेने गोपालशास्त्रीजी द्वारा संशोधित एवं परिष्कृत उसी परिपाटी का यह श्राद्धविषयक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है [ह. २४०] १-२५

९६ **श्राद्धविवेकः** । म० म० रुद्रधर विरचितः । विषमस्थलटिप्पणी तथा 'पार्वणश्राद्धक्रियाबोधक चित्रपट' सहित [का. १२२] २-५०

*९७ **श्राद्धविश्राम** । सम्पादक-रुद्रप्रसाद अवस्थी २-५०

*९८ **श्री आरति कल्पद्रुमः** । लघुरुद्रपद्धति सहित १-५०

*९९ **श्रीग्रहमखप्रयोगः** । ०-७५

*१०० **श्रीदुर्गा कल्पद्रुमः** । सप्तशती पाठ सहित ३-००

१०१ **श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेवपूजाविधान-पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त भाषाटीका सहित १-२५

*१०२ **श्रीशान्तिकल्पद्रुमः** । वास्तुशान्ति सहित १-५०

*१०३ **श्रीशारदीयदुर्गापूजापद्धतिः** । पण्डित गौरीनाथ ३-५०

१०४ **श्रौतसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतं 'देवयाज्ञिकपद्धति' सहित । १-८ खण्ड [चौ. ७२] २०-००

१०५ **षडशीतिः** । आदित्याचार्यप्रणीता । धर्माधिकारि नन्दपण्डित प्रणीत 'शुद्धिचन्द्रिका' व्याख्या समलङ्कृत [चौ. ६७] ४-००

*१०६ **षोडशसंस्कारविधि** । (सनातन) हिन्दी टीका सहित ४-००

*१०७ **संकलपसारप्रभा** । गौरीशंकर शास्त्री ०-६२

१०८ **संक्षिप्तदीक्षापद्धतिः तुलादानपद्धति** सहित [ह. १७०] ०-२०

*१०९ **संध्याभाष्यम्** । चतुर्वेद-संध्या-तर्पण-ब्रह्मयज्ञ-श्रुतिसूत्र व्याख्यानोपबृंहित पद्धति समेतम् । म० म० श्यामनारायण चतुर्वेदकृत ४-००

११० **संस्कारगणपतिः** । श्रीमद्याज्ञिकप्रवर श्रीमद्रामकृष्णप्रणीतः । पारस्करगृह्यसूत्रस्यातिविस्तृतव्याख्यानस्वरूपः [चौ. ८०] १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११९ **संस्कारदीपकः** । म० म० श्री नित्यानन्दपन्तपर्वतीय विरचित [का. ९५] प्रथम भाग ४-०० द्वितीय भाग ८-५० तृतीय भाग ५-५०
१-३ भाग संपूर्ण १८-००

११२ **संस्काररत्नमाला** । (गोपीनाथभट्टीया) १-२ खण्ड [चौ. १] ३-००

*११३ **सचित्र सतर्पण-सन्ध्यादर्पण** । हिन्दीभाषानुवादसहित २-००

*११४ **सनातनधर्मदीपिका** । स्वा० दयानन्द विरचित १-००

*११५ **सनातनधर्मोद्धार** । उमापति (नकछेदकराम शर्मा) द्विवेदी कृत हिन्दी टीका सहित । १-४ भाग २०-००

११६ **सब धर्मों की बुनियादी एकता** । डॉ० भगवानदास । इस ग्रन्थ में संसार भरके धार्मिक मज़हवों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की वारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहवों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है १२-००

११७ **सरस्वतीपूजापद्धतिः** । मूर्तिपूजा विधान सहित ०-२५

*११८ **साङ्गसप्ताहमण्डपपूजाविधिः** । २-००

११९ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः** । श्रीशुक्लविश्रामात्मज श्रीशिवराम-विरचित [चौ. ८७] ७-५०

*१२० **स्मार्तप्रभु** । प्रथम भाग १-२४ द्वितीय भाग (प्रतिष्ठाप्रभु) ४-००

*१२१ **स्मृतिसन्दर्भः** । १-६ भाग ३६-००

१२२ **स्मृतिसारोद्धारः** । विद्वद्वर श्रीविश्वम्भरत्रिपाठिसङ्कलितः [चौ. ३१] १०-००

*१२३ **हिन्दू धर्म** । **'सनातनधर्म की प्रारम्भिक पुस्तक' का हिन्दी अनुवाद** । मूल लेखक डा० एनी बेसेंट । अनुवादक—अम्बिकादत्त उपाध्याय ३-००

*124 Hindu Samskaras by Rajbali Pandey. 25-00

१२५ **हिन्दू संस्कार** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डॉ० राजबली पाण्डेय विरचित । यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है । गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है । द्वितीय संशोधित संस्करण १६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

126 SOCIO RELIGIOUS CONDITION OF NORTH INDIA (700–1200 A. D.) Based on Archæological Sources : By Dr. Vasudeva Upadhyaya. (Chow. Sans. Studies Vol. XXXIX) 25-00

*१२७ हिरण्यकेशीयगृह्यसूत्रम् । ०-५०

+१२८ हेमाद्रिदानखण्डः । भाग १-२ १०-००

छन्दः-काव्य-अलङ्कार-चम्पू-ग्रन्थाः

१ **अभिनन्दनग्रन्थ : सत्यनारायण शास्त्री** (सचित्र) न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास, पुराण, आयुर्वेद आदि प्रत्येक विषय पर महामनीषियों की मर्मस्पर्शी विचार-सामग्री से यह ग्रन्थरत्न भरा हुआ है । मूल्य लागत मात्र १५-००

*२ **अभिनवकाव्यप्रकाशः** । सटिप्पण (१-६ उल्लास) १-५०

३ **उत्कीर्णलेखपञ्चकम्** । व्याख्याकार—झाबन्धु ।

दरभंगा सं० विश्वविद्यालय की शास्त्रिपरीक्षा पाठ्यस्वीकृत । इस अभिनव संस्करण में १-रुद्रदामन का जूनागढ़-शिलालेख, २-महाराज चन्द्र का मिहरौली-स्तम्भलेख, ३-कुमार गुप्त का मन्दसौर-शिलालेख, ४-महाराज यशोवर्मा का शिलालेख और ५-वीसलदेव का देहली-शिवालिक स्तम्भलेख, इन संग्रहों का परीक्षा की दृष्टि से सटिप्पण हिन्दी अनुवाद भी किया गया है २-५०

४ **अभिलेखमाला** । व्याख्याकार—झाबन्धु ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत और कल्चर की एम० ए० परीक्षा में निर्धारित

इस पुस्तक में १-रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख, २-समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख, ३-कुमारगुप्त के मन्दसौर शिलालेख, ४-स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख, ५-पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल शिलालेख, ६-महाराजचन्द्र के मिहरौली शिलालेख, ७-महाराज यशोवर्मा के शिलालेख और ८-वीसल देव के देहली-शिवालिक शिलालेख संगृहीत हैं । इन शिलालेखों के सटिप्पण हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ इनके ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक वैशिष्ट्य का विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ **अमरुशतकम्** । अमरुक कवि विरचित । अर्जुन वर्म देवप्रणीत रसिक सञ्जीविनी संस्कृत टीका, श्रीप्रद्युम्न पाण्डेय कृत हिन्दी टीका तथा विस्तृत भूमिकादि युक्त ३-५०

*६ **अर्पण** । डॉ० सर्वानन्द पाठक ।
इस पुस्तक में काव्य सम्बन्धी हास्य, श्रृङ्गार, करुण आदि, विविध रस-भक्तियोग, ज्ञानयोग, विवेकानन्द, शंकराचार्य, बालयोगिनी, कुण्डलिनी-योग, अन्तर्लोक आदि रोचक विषयों का सम्मिश्रण हुआ है । १-५०

७ **अलङ्कारप्रदीपः** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ८] १-००

८ **अलङ्कारमुक्तावली** । श्री विश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ५४] १-००

९ **अलङ्कारशेखरः** । केशवमिश्रकृतः । साहित्याचार्य अनन्तरामशास्त्रीकृत भूमिकादि सहितः [का. ५६] १-२५

१० **अलङ्कारसारमञ्जरी**–सर्वविध मध्यमपरीक्षा पाठ्यरूपा ।
इसमें चन्द्रालोक तथा साहित्यदर्पण से संगृहीत अलङ्कारों की मूल-कारिकायें, उनकी स्वतन्त्र सरल विशद वृत्ति, चन्द्रालोकीय उदाहरण, रघुवंशादि अधीतग्रन्थों से उदाहरण तथा उनका समन्वय इत्यादि सभी विषय संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित दिए गए हैं ०-५०

११ **अलङ्कारसंग्रहः** । अमृतानन्दयोगी कृत नेट १६-००

*१२ **अलङ्कारपीयूष** । डॉ० गङ्गासागर राय
परीक्षा में प्रष्टव्य चुने हुए ५२ अलंकारों की मार्मिक हिन्दी व्याख्या के साथ इस ग्रंथ का संपादन किया गया है । संस्कृत की मध्यमा बी० ए० तथा एम० एस० के परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है १-५०

१३ **अवदानकल्पलता** । (तृतीयपल्लव) श्री क्षेमेन्द्र विरचित ०-२५

१४ **अवन्तिकुमारियाँ** । श्री देवदत्त शास्त्री ।
इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुंदरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है । २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१५ **आचार्य मम्मट और उनका काव्यप्रकाश** (विवेचनात्मक सरल अध्ययन) आचार्य श्रीरामचन्द्र झा

इसमे ऐतिहासिक आलोचनात्मक विषयों के विवेचन के साथ काव्यप्रकाश के प्रत्येक उल्लास में आए विवेचनीय गूढ़ विषयों का सरल एवं सुबोध अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। २-००

१६ **औचित्यविचारचर्चा**—महाकवि क्षेमेन्द्रकृता। शोधपूर्ण संस्करण 'प्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

भाव तथा विषय के अनुरूप ही व्याख्या की भाषा अत्यन्त सरल है। वृहदाकार भूमिका में 'औचित्य' के स्वरूप आदि पर उदात्त विवेचन के साथ प्रतिष्ठापक आचार्यों का ऐतिहासिक क्रम से परिचय, औचित्य पर पाश्चात्य आलोचकों की दृष्टि तथा क्षेमेन्द्र के जीवन और कृतित्व आदि विषयों पर पाण्डित्यपूर्ण उपयोगी विचार हैं। ४-००

१७ **आर्यासप्तशती**। पर्वतीयश्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचिता। ग्रन्थकर्तृकृत व्याख्यासंवलित [चौ. ६०] ४-५०

१८ **हिन्दी आर्यासप्तशती**। गोवर्धनाचार्य विरचित। व्याख्याकार—पं० रमाकान्त त्रिपाठी एम. ए.

प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत में अकारादिक्रम से रचा गया अनेकविधि शृङ्गार तथा नीतिसूक्तियों का भण्डार है जिसे अन्वयमुख सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं और विमर्श के साथ प्रकाशित किया गया है। १०-००

नेट ९-००

*१९ **उषानिरुद्धम्**। रामपाणिवादकृत

२० **उपाख्यान-मञ्जरी**। सम्पादक, पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

'वेतालपञ्चविंशति' की कतिपय कथाओं का यह छोटा-सा संग्रह सुरभारती का अनुशीलन करने वाले छात्रों को संस्कृत भाषा एवं गद्य रचना से परिचित कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है। १-२५

२१ **औचित्यविचारचर्चा-कविकण्ठाभरण-सुवृत्ततिलकम्**। क्षेमेन्द्रकृत। सटिप्पण [ह. २४-२५-२६] यन्त्रस्थ

२२ **ऋतम्भरा**। सं० डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय।

विश्व के प्रमुख मनीषियों के उपदेशों का सारभूत संग्रह। (यह पुस्तक गोरखपुर युनिवर्सिटी के अनिवार्य पाठ्यक्रम में है) ०-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

23 CONCEPT OF POETIC BLEMISHES IN SANSKRIT POETICS by Dr. Bechan Jha. (Chow. Sans. Studies Vol. XLVII) 15-00

२४ **कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ।

यह ग्रंथ सम्पूर्ण कादम्बरी का व्यवस्थित आलोचनात्मक हिन्दी रूपान्तर है। कादम्बरी के विषय में इस एक ग्रंथ को लेकर आप अन्य किसी ग्रंथ की अपेक्षा नहीं रखेंगे। साहित्यप्रेमियों को इस ग्रंथ का अवश्य संग्रह करना चाहिए १३-७५

२५ **कादम्बरी**—'चन्द्रकला' विद्योतिनी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सम्पूर्ण। व्याख्याकार, आचार्य कृष्णमोहन ठक्कुर तथा आचार्य रामचन्द्र मिश्र

इस संस्करण की सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रत्येक शब्द के पर्याय, समास, विग्रह, कोश, अलंकार आदि से मूल के पद-पद की ग्रन्थियाँ खोल दी गई हैं। इसकी हिन्दी व्याख्या मूल के अनुरूप ही पदविच्छेद-पूर्वक सरल शब्दों में संशोधित करके की गयी है जिससे हिन्दी-अंगरेजी के छात्र भी कादम्बरी का अध्ययन अल्पायासेन ही कर सकेंगे। इस संस्करण की विशेषता पर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय तथा विहार-संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों ने जो उद्गार प्रकट किए हैं, वे पुस्तक में प्रकाशित कर दिए गए हैं। कादम्बरी-समीक्षा, कथासार आदि से सुसज्जित।

१-२ भाग **सम्पूर्ण** २४-००

कथामुखपर्यन्त ३-७५, **पूर्वार्द्ध** १३-५०

उपर्युक्त सभी विषयों से सुसज्जित **उत्तरार्ध** १०-५०

२६ **हिन्दी कादम्बरी : शुकनासोपदेश।** व्या०—झाबन्धु

इसमें समस्त शब्दों का विग्रह, अत्यन्त सरल संस्कृत में उसकी व्याख्या तथा प्राञ्जल तथा मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद दिया गया है इन सब के अतिरिक्त इसकी टिप्पणी में ग्रन्थ में आये पारिभाषिक शब्दों की प्रामाणिक व्याख्या और उसका इतिहास भी लिखा गया है अलङ्कारों का भी यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। इसकी विस्तृत भूमिका में बाण सम्बन्धी समस्त आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर बहुत ही प्रामाणिक रूप से दिये गये हैं। ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२७ **हिन्दी कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त ।** प्रद्युम्न पाण्डेय
विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस पुस्तक में कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त भाग की अत्यन्त स्पष्ट, सरस एवं सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पुस्तक के आदि में महाकवि बाण और महाश्वेता की विशेषताओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है अन्त में क्लिष्ट शब्दों और वाक्यों की संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या तथा दो परिशिष्टों में बाण की अन्य विशेषताओं का उल्लेख कर दिया गया है। अनुसन्धित्सुओं के लिये भी संग्राह्य है ४-००

२८ **कादम्बरीकथासारः ।** हिन्दी-अङ्ग्रेजी व्याख्या सहित
सम्पादक-श्री बलराम सदाशिव अग्निहोत्री एम० ए०
विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस संकलन में कादम्बरी का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है। व्याख्यान करने में यह ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी उससे मूल के भावों तक पहुँच सकें साथ ही कथा की धारा भी टूटने न पाए। अँग्रेजी के छात्रों के लिए इसकी अँग्रेजी व्याख्या ही पर्याप्त है प्रेस में

२९ **ऋतुसंहारम्**—कालिदास विरचिता। 'प्रभा' टीकोपेतम्।
इसकी हिन्दी टीका में किन-किन ऋतुओं में किन-किन वस्तुओं का किस प्रकार उपभोग किया जाता है इसका सुस्पष्ट विवेचन किया गया है ०-४०

३० **कलाविलासिनी वासवदत्ता ।** श्री देवदत्त शास्त्री।
महाराज उदयन और महारानी वासवदत्ता की कलाविलासिताओं में भोग और योग का पूर्ण समन्वय है। इसी पौराणिक विषय का राष्ट्रभाषा हिन्दी में विशद विवेचन इस पुस्तक में किया गया है २-५०

*३१ **कामायनी ।** (संस्कृत)। महाकवि जयशंकर प्रसाद। अनुवादक पं० भगवानदत्त शास्त्री। सर्ग १-३ नेट १-५०, संपूर्ण ५-००

३२ **काव्य-कदम्ब ।** सम्पादक, श्रीभुवनेश्वर प्रसाद पाण्डेय
इस पुस्तक में वीरकाव्य, निर्गुणकाव्य, रामकाव्य, कृष्णकाव्य, रीतिकाव्य, नीतिकाव्य, छायावाद और नवचेतना के अग्रदूत : इन आठ स्तम्भों में रोचक हिन्दी कविताओं का संकलन किया गया है। हिन्दी काव्य प्रेमियों के लिए यह संग्रह सर्वथा स्पृहणीय है। २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३३ **काव्य-कलिका** । सम्पादक—प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१ 'निरंजना' हिन्दी खण्ड काव्य, २ किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग हिन्दी-पद्यानुवाद तथा ३ नेहरू की रूस-यात्रा पर लिखे गये संस्कृत काव्य 'शान्तिविजयम्' का प्रथम सर्ग १-००

३४ **काव्यकल्पलतावृत्तिः** । अमरचन्द्रयतिनिर्मिता । अरिसिंहकृतसूत्र सहित यन्त्रस्थ

३५ **काव्यदीपिका**—'मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेता ।
इस ग्रन्थ में काव्यप्रयोजन, लक्षण, अभिधा-लक्षण, व्यंजनानिरूपण, काव्य-भेद-रस-ध्वनिभेद-निरूपण, नाटकोपयोगि निरूपण, दोष, गुण, रीति, अलंकार और अर्थालंकार निरूपण आदि का सरल तथा सुबोध शब्दों में विवेचन किया गया है [ह. २११] सम्पूर्ण २-००

३६ **काव्यदीपिका-अष्टमशिखा**—डा० भोला शंकर व्यास
आगरा यूनिवर्सिटी की बी. ए. कक्षा में निर्धारित इस अष्टम शिखा की डा० व्यासलिखित समालोचना के साथ सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या अधिक उपादेय है [ह. २११] १-२५

३७ **काव्यप्रकाशः** । म० म० श्रीगोकुलनाथोपाध्यायकृत व्याख्या सहित । प्रथम उल्लास [चौ.] १-००

३८ **काव्यप्रकाशः**—'नागेश्वरी' संस्कृतव्याख्या सहित
प्रदीप, उद्योत, संकेत, सुधासागरी, वामनी, आदि अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन टीकाओं की सारभूत यह सरल अभिनव 'नागेश्वरी' व्याख्या प्रकाशित की गयी है । इसमें ग्रन्थ के सभी दुरूहांशों को ननु-नच करके सरल तथा स्पष्ट कर दिया गया है [का. ४९] तृतीय संस्करण ७-००

३९ **हिन्दी काव्यप्रकाश** । व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह
संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी में समानरूप से इस ग्रन्थ की व्यापकता को देखकर तदनुकूल ही इसकी व्याख्या की गयी है । व्याख्या के साथ-साथ टिप्पणी (नोट्स) में वे सभी विषय दिये गये हैं जो वामनी, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक-लोचन आदि में बिखरे पड़े हैं । परिष्कृत तृतीय शोधपूर्ण संस्करण । संपूर्ण १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४० **हिन्दी काव्यप्रकाश : १–३ उल्लास।** डॉ० सत्यव्रत सिंह
छात्रों को विवेच्य विषय सुलभ कराने के लिये मूल के साथ विषयानुरूप बोधगम्य भाषा में व्यवस्थित अनुवाद एवं विशद टिप्पणी (नोट्स) द्वारा विषय की गम्भीरता तथा व्यापकता को स्पष्ट करने का प्रयास एकमात्र इसी संस्करण की विशेषता है [चौ. वि. १५] ३–००

४१ **हिन्दी काव्यप्रकाश : दशम उल्लास।** डॉ० सत्यव्रत सिंह
विश्वविद्यालयों की एम० ए० परीक्षा में पाठ्य-ग्रन्थ रूप में स्वीकृत 'काव्यप्रकाश का दशम उल्लास' अति क्लिष्ट माना जाता है। अतः टीकाकार ने व्यवस्थित भाषा में मूल के नीचे भाषानुवाद अङ्कित करके अपनी टिप्पणी (विमर्श) द्वारा ग्रन्थ की रहस्यपूर्ण ग्रन्थियों का सम्यक् समुन्मोचन कर दिया है। आलोचनात्मक विषयों का ज्ञान सुविस्तृत भूमिका द्वारा ही हो जाता है [चौ. वि. १५] ५–००

४२ **काव्यप्रकाशरहस्यम्** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
भारतवर्ष के सभी संस्कृत एवं अँग्रेजी-हिन्दी कालेजों में काव्यप्रकाश का पठन-पाठन देख कर रची गई इस पुस्तक में किसी भी प्रान्त की परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के सही व सरल उत्तर प्राप्त हो जायँगे १–५०

४३ **काव्य-प्रबन्धः**—अनेक शिक्षासंस्थाओं द्वारा स्वीकृत प्रबन्धग्रंथ। इस पुस्तक में काव्य, वाक्य, शब्दार्थ, तात्पर्यार्थ, शक्ति, संकेतग्रह, जातिवाद, लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, रस, स्थायिभावभेद, गुणालंकार भेद तथा श्लेषालंकारभेदों का निरूपण करके कवित्व का लक्षण तथा महाकवि कालिदास, भवभूति, भारवि, शूद्रक, माघ, दण्डी, बाण आदि कवियों की संक्षिप्त जीवनियों तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला गया है १–५०

४४ **काव्यमञ्जूषा नाम रत्नावलीगद्यकाव्य–कामकन्दलनाटक–श्रीकालिकामन्दाक्रान्ताशतक–धर्माधिकारिवंशवर्णन–श्रीरेणुकास्तोत्रनाम्नां** ग्रन्थरत्नानां संग्रहः [चौ. ७८] २–००

४५ **काव्यमीमांसा।** राजशेखर विरचित। श्रीमधुसूदनमिश्रकृत मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या सहित। संपूर्ण ४–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६ **हिन्दी काव्य-मीमांसा ।** व्या०, डॉ० गंगासागर राय
इस संस्करण में सटिप्पण मार्मिक हिन्दी व्याख्या की गई है। व्याख्या को अन्य सिद्धान्तों के परिवेश में उपस्थित कर तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक रूप दिया गया है। प्रारम्भ की विस्तृत भूमिका में राजशेखर का समय पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा तथा उसमें राजशेखर का स्थान, देश-काल, विषय-वस्तु आदि का मार्मिक परिचय दिया गया है। अन्त में कई परिशिष्ट भी हैं। ८–५०

४७ **काव्यमीमांसा ।** श्रीमधुसूदनमिश्रकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। [१–५ अध्याय] १–००

४८ **काव्यमीमांसा ।** म. म. श्री नारायण शास्त्री खिस्तेकृत 'काव्यमीमांसा चन्द्रिका' व्याख्या सहित। १-५ अध्याय १–५०

४९ **हिन्दी काव्यादर्शः ।** व्याख्याकार, आचार्य रामचन्द्र मिश्र।
सरल संस्कृत-हिन्दी भाष्य करके इसे सुबोध बनाया गया है। इस संस्करण की प्रस्तावना में लगभग ७० अलंकारशास्त्रियों का समय, रचनाएँ तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन है। साथ ही अलंकारशास्त्र, अलंकारशब्दार्थ एवं अलंकारशास्त्र का क्रमविकास नामक प्रसंग भी प्रस्तावना में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। [चौ. वि. ३७] ६–५०

५० **हिन्दी काव्यालंकार ।** महाकवि रुद्रट विरचित। व्याख्याकार– श्रीरामदेव शुक्ल।
सविमर्श हिन्दी व्याख्या, पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थालोचन, अलंकार-समीक्षण तथा शास्त्रीय विचारों से परिपूर्ण प्रस्तावना-वक्तव्य-परिशिष्ट आदि से सुसज्जित। १६–००

५१ **काव्येन्दुप्रकाशः ।** कामराज दीक्षित प्रणीत। सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री।
संस्कृत साहित्य का यह लक्षण ग्रंथ बहुत सरल तथा 'गागर में सागर' है। अपने विषय-विवेचन के वैशिष्ट्य में इसका उल्लेखनीय स्थान है अतः पाठकों की सुविधा के लिये अँगरेजी संस्कृत भूमिकादि के साथ सम्पादित किया गया है। अभिनव संस्करण ३–००

५२ **काव्याङ्गनिर्णय**–प्रोफेसर जंगबहादुर मिश्र। यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५३ **किरातार्जुनीयम्**–मल्लिनाथी सुधा व्याख्या सहित।

इसमें सर्वप्रथम पात्रपरिचय; संक्षिप्त कथा तथा क्रमशः मल्लिनाथकृत घण्टापथ व्याख्या, सुधा व्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, सरलार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, शिक्षासंग्रह, आदि परीक्षोपयोगी बहुत से विषय दिये गये हैं। १–२ सर्ग १–२५, १–३ सर्ग २–००

५४ **किरातार्जुनीयम्** (तृतीय सर्ग) 'घण्टापथ' सुधा व्याख्या

आगरा विश्वविद्यालय में पाठ्य स्वीकृत इस तृतीय सर्ग की संस्कृत व्याख्या में अन्वय समास-विग्रह, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, भावार्थ आदि परीक्षोपयोगी विषय देकर हिन्दी व्याख्या तथा भूमिका में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का तुलनात्मक विवेचन किया गया है १–००

५५ **किरातार्जुनीयम्**। विश्वविद्यालय पाठ्यस्वीकृत १३वाँ सर्ग।

सान्वय संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समास, व्याकरण, कोश, हिन्दीपद्य, भावार्थ आदि सहित। व्याख्याकार–श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय १–२५

५६ **किरातार्जुनीयम्**–घण्टापथ-प्रकाश संस्कृत-हिन्दीव्याख्या।

मल्लिनाथ कृत घण्टापथ टीका के साथ साथ 'प्रकाश' नामक सरल हिन्दी व्याख्या होने से इस संस्करण की उपयोगिता बढ़ गयी है। हिन्दी व्याख्या में प्रायः सर्वत्र ही महाकवि भारवि की गूढ़ ग्रन्थियों को नतु-नच करके खोल दिया गया है तथा ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि की जीवनी एवं प्रत्येक सर्ग का संक्षिप्त कथासार भी दे दिया गया है संपूर्ण ४–००

५७ **किरातार्जुनीयम्**। उपर्युक्त व्याख्या सहित केवल १–५ सर्ग १–५०

५८ **कृष्णस्य शान्तिप्रयासः**। (महाभारत उद्योगपर्व अध्याय ८१-९३) 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। वाराणसी की शास्त्री परीक्षा द्वितीय खण्ड अनिवार्य द्वितीयपत्र निर्धारित।

श्री बालकेशवप्रसाद मिश्र एम० ए० विरचित इसकी संस्कृत हिन्दी व्याख्या ससन्दर्भ प्रस्तुत की गई है। शास्त्री के विद्यार्थी अल्पायासेन स्वयं इसका अध्ययन कर सकते हैं। इसकी समालोचनात्मक भूमिका-कथासार भी परीक्षार्थी छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है। १–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५९ **काव्यालङ्कारः** । श्रीभामहाचार्येण विनिर्मितः [का. ६१] यन्त्रस्थ

६० **काव्यालङ्कारसूत्राणि** । आचार्यवामनविरचितवृत्तिसमेत । श्री गोपेन्द्र त्रिपुरहरभूपाल-विरचित काव्यालङ्कारकामधेनुव्याख्यासहित । यन्त्रस्थ

६१ **कुमारसम्भवः** । सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । इस संस्करण को पढ़कर संस्कृत का विशिष्ट ज्ञान न रखने वाले व्यक्ति भी अनुवाद की मधुरता से मूल काव्य का रसास्वादन करने में समर्थ हो सकेंगे । ग्रन्थ के आदि में महाकवि की काव्य कलात्मक विस्तृत समीक्षा भी प्रस्तुत कर दी गई है । संपूर्ण २-००

६२ **कुमारसम्भवः**—'पुंसवनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः । इस टीका की विशेषताएँ—प्रत्येक श्लोक का १ अवतरण सहित दण्डान्वय, २ परीक्षोपयोगी व्याख्या, ३ विग्रह, व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्द, प्रमाणप्रदर्शन, मल्लिनाथादि प्रदर्शित दोषोद्धार, व्युत्पत्ति, ४ संस्कृत में भावार्थ, ५ भाषा के संक्षिप्त पदों के द्वारा श्लोकाभिप्राय, ६ हिन्दी में सरल भावार्थ, ७ प्रत्येक सर्ग की कथा का संक्षेप में संग्रह, ८ विशिष्ट भूमिका इत्यादि [ह. ९०]

१-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-५०, एवं १-७ सर्ग ५-००

६३ **कुमारसंभवः** (प्रथम और पंचम सर्ग)

प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तैलंग विरचित नोट्स तथा विस्तृत प्रस्तावनादि विभूषित 'पुंसवनी' नामक संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । बिहार की मध्यमा परीक्षा तथा अंग्रेजी की आई० ए० और बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस संस्करण के 'नोट्स' मात्र के अध्ययन से भी विद्यार्थी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं [ह. ९०] १-५०

६४ **कुमारसंभवः**—(पंचम सर्ग) उपर्युक्त सभी विषयों से युक्त १-००

*६५ **कुट्टनीमतम्** । (शम्भलीमतकाव्यं) दामोदर गुप्त विरचित । हिन्दी टीका सहित ६-००

६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६६ **हिन्दी कुवलयानन्द।** व्याख्याकार, डॉ० भोलाशंकर व्यास। इसकी व्याख्या में शास्त्रार्थस्थलों को सुबोध बनाने की अथक चेष्टा की गई है। कुवलयानन्दकार की परिभाषाओं, भेदों तथा उदाहरणों की जहाँ जहाँ पण्डितराज ने रसगंगाधर में आलोचना की है, उन-उन स्थलों पर पण्डितराज के आक्षेपों को उपन्यस्त कर ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बनाया गया है। आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका है जिसमें प्रायः सभी प्राचीन अलंकारशास्त्रियों के मतों का समन्वय एवं समीक्षा आदि है। ९-००

६७ **हिन्दी गाथासप्तशती।** व्याख्याकार—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी पारिवारिक जीवन की तीव्र अनुभूतियों की झाँकी के साथ-साथ नायक-नायिकादि की चेष्टाओं एवं मनोभावों की जानकारी प्राप्त करना भी, इस पुस्तक द्वारा बहुत कुछ सुलभ हो जाता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी पाठकों के लिये सुलभ न होना चिंत्य रहा है। इसमें अनुवाद के साथ-साथ विस्तृत भूमिका एवं उपयोगी परिशिष्ट भी सुलभ है [चौ. वि. ५५] ५-००

६८ **हिन्दी गाथासप्तशती।** (बृहत् संस्करण) व्याख्याकार—हिन्दी ध्वन्यालोक-लोचन के रचयिता श्री जगन्नाथ पाठक। प्राकृत भाषा की इस श्रेष्ठतम काव्यकृति में प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा ग्राम्यजीवन की अनूठी झाँकियाँ है। अलंकार-शास्त्र का तो यह बीज ही है। विषयानुकूल भाषा में हिन्दी अनुवाद, व्याख्यात्मक विवेचन, विस्तृत भूमिका, सुविशद परिशिष्ट आदि प्रमुख विशेषताओं के कारण अपने विषय का यह संस्करण सर्वश्रेष्ठ प्रकाशित हो रहा है। यन्त्रस्थ

६९ **गीतगोविन्दकाव्यम्।** महाकवि-जयदेव विरचितम्। 'इन्दु' नामक हिन्दी भाषाटीका विस्तृत भूमिका सहित [ह. १२९] १-००

७० **कौमुदी कथाकल्लोलिनी।** प्रो० रामशरण शास्त्री। इस ग्रंथ में रोचक गद्य-कथानकों में कौमुदी के अच्संधि से उत्तरकृदन्त तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की नवीन विधि का अनूठा प्रयोग प्रस्तुत किया गया है। कथा का आधार कथासरित्सागर है। अन्त में छपे 'संस्कृत-हिन्दी-अभिधान' से ग्रन्थ अधिक उपयोगी हो गया है। ८-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७१ **चतुर्वेदीय संस्कृत रचनावली ।** महामहोपाध्याय विद्या-वाचस्पति पं. गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी विरचित प्रकाशित अप्रकाशित यावत्, निबन्धों का संग्रह प्रथम भाग २०–००

७२ **चन्द्रप्रभाचरितम् ।** म० म० श्री शङ्करलाल विरचितम् 'पौर्णमासी' संस्कृत व्याख्या, परिशिष्ट, नोट्स सहित ।

इसकी शैली दण्डी एवं बाणभट्ट की कोटि की उत्कृष्ट है । अनेक परीक्षाओं में पाठ्य स्वीकृत हो जाने के कारण इसका सर्वबोध्य सुगम छात्रोपयोगी व्याख्या तथा नोट्स भी प्रस्तुत कर दिया गया है ५–००

७३ **चन्द्रालोकः ।** गागाभट्टकृत 'राकागम' टीका सहित [चौ. ८३] ३–००

७४ **चन्द्रालोकः ।** पौर्णमासी-कथाभट्टी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ।

इस संस्करण में बहुत से परीक्षोपयोगी विषयों को सरल शब्दों में परिष्कृत कर दिया गया है । इस संस्करण की एक यह विशेषता है कि मूल ग्रन्थ की हिन्दी टीका के साथ-साथ संस्कृत टीका की भी हिन्दी टीका कर दी गयी है [ह. ५७] संपूर्ण ३–००

७५ **चन्द्रालोक-पञ्चममयूखः ।** डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री कृत सविमर्श 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित १–५०

७६ **चन्द्रालोक-रहस्यम् ।** (चन्द्रालक-प्रश्नोत्तरी)

इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रश्न के उत्तर में अधीत विषय को संक्षिप्त रूप में लिखने की शैली और विषय का ठोस ज्ञान एक साथ ही होता चलता है । १–२५

*७७ **चन्द्रापीडचरितम् ।** अनन्ताचार्य विरचितम् । नेट १–१०

७८ **चन्द्रप्रभचरितम् ।** 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित।

पं० अमृतलाल जी जैन ने इसकी सरल सुबोध सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी तथा परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दकोश आदि से सुसज्जित कर समालोचना में महाकवि वीरनन्दी का इतिवृत्त तथा कथासार भी लिख दिया है । आगरा यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए यह संस्करण अधिक उपयोगी है । [ह. २०७] ०–४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७९ **चम्पूभारतम्** । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्रजी ने अपनी टीकाओं द्वारा इसे ऐसा सुबोध बना दिया है कि संस्कृत न जानने वाले भी समान रूप से इसका आनन्द ले सकते हैं । चंपू साहित्य के और भी प्रमुख ज्ञातव्य विषय इस प्रकार उपनिबद्ध कर दिये गये हैं कि चंपू का पूर्वापर देश, काल और उसकी प्रतिष्ठा अनायास ही हृदयंगम हो जाती है [चौ. वि. ३१] ८-००

८० **चम्पूरामायणम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र की लौह लेखनी से प्रसूत छात्रोपयोगी आधुनिक विस्तृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ यह अभिनव संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपादेय है । इसकी मनोवैज्ञानिक हिन्दी समालोचना तो परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिये सबसे अधिक उपयोगी है [चौ. वि. २६] ६-००

८१ **चम्पूरामायणम्-(बालकाण्डम्)** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् । व्याख्याकार, आचार्य रामचन्द्र मिश्र ३-००

*८२ **चउप्पन्नमहापुरिसचरियं**। सिरि-सीलंकायरियविरइयं । अमृतलाल मोहनलाल भोजक संपादित २१-००

८३ **चारुचर्या** । महाकवि श्री क्षेमेन्द्र विरचित मूल श्लोक तथा 'प्रकाश' हिन्दी अनुवाद सहित । १-००

८४ **हिन्दी चारुचर्या** । सम्पादक : श्री देवदत्त शास्त्री ।
श्री क्षेमेन्द्र विरचित चारुचर्या का यह हिन्दी रूपान्तर है । यह ग्रन्थ भारतीय सदाचार एवं शिष्टाचार का कोष है । मनुष्य जिन आचरणों और व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है—उनका एकत्र समुच्चय इस पुस्तक में है । २-००

*८५ **चित्रमीमांसा** । अप्पय दीक्षित कृत । धरानन्द कृत सुधा संस्कृत व्याख्या सहित १६-००

८६ **चिन्तन के नये चरण** । श्री देवदत्त शास्त्री ।
इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं । ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८७ **छन्दोविंशतिका**—सोदाहरण 'विमला' टीका सहित । संपादक, पं० रामचन्द्र झा । वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा निर्धारित छन्दोविषयक ग्रन्थ ।

इस पुस्तिका में बिहार तथा वाराणसी की १–३ खण्ड परीक्षा निर्धारित अश्लीलांश वर्जित केवल २० छन्दों का यथाक्रम से सान्वय सोदाहरण व्याख्या की गई है । अल्प वयस्क बालकों के लिए परीक्षा निर्धारित छन्दों के लिए यह संस्करण सर्वोत्तम है । मूल्य नाम मात्र ०–२५

८८ **छन्दोमञ्जरी** । 'प्रभा' 'रुचिरा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता । यह व्याख्या प्रतिशब्द के पर्याय, कोष, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि के साथ ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सुगमता से व्यक्त करने में समर्थ हुई है । [ह. ११५] २–००

८९ **छन्दःकौमुदी** (चौखम्बा प्रकाशन) म. म. नारायणशास्त्री

अल्पवयस्क बालकों को सरल सुबोध भाषा में छन्द का ज्ञान कराने के लिए यह पुस्तक अद्वितीय है । अश्लीलांश वर्जित सोदाहरण छन्दों की सरल हिन्दी व्याख्या तथा छन्दःशास्त्रप्रणेताओं का संप्रदायक्रम, प्रश्नोत्तर और विशिष्ट भूमिका में छन्दःशास्त्र का इतिहास भी लिखा गया है । ०–४०

*९० **छन्दश्चन्द्रिका** । प्रथमा के विद्यार्थियों के लिए छन्द की उत्तम पुस्तक ०–१२

९१ **छन्दस्सारः** । भाषा टीका प्रश्नपत्र उदाहरणसहित । [ह. १२] ०–१५

*९२ **जानकीहरणम्** । कुमारदास विरचित । गोपाल रघुनाथ नंदरगीकर संपादित १०–००

९३ **दशकुमारचरितसारः** । डा० सत्यव्रत सिंह ।

महाकवि दण्डि-विरचित सम्पूर्ण दशकुमारचरित में वर्णित दसों कुमारों का चरित अत्यन्त सरल रूप में इस प्रकार उपनिबद्ध किया गया है कि तनिक भी असम्बद्धता नहीं प्रतीत होती । पुस्तक अपने में पूर्ण मौलिक प्रतीत होती है । [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य स्वीकृत] ०–९५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९४ **दशकुमारचरितम् ।** बालबोधिनी-संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या । साहित्यरत्नाकर पं० ताराचरणभट्टाचार्य की लौह लेखनी से रञ्जित बालबोधिनी संस्कृतहिन्दी व्याख्या विभूषित यह संस्करण सब संस्करणों से श्रेष्ठ एवं परीक्षोपयोगी है । संपूर्ण ५-५०

पूर्वपीठिका १-२५ पूर्व पीठिका तथा प्रथम और अष्टम उच्छ्वास २-००
अपहारवर्मचरित पर्यन्त अभिनव भूमिका संयोजित संस्करण ३-००

९५ **हिन्दी दशरूपकम् ।** संशोधित, परिवर्तित, सुपरिष्कृत, परिवर्धित नवीन द्वितीय संस्करण । व्याख्याकार, डा० भोलाशंकर व्यास ।

संस्कृत तथा हिन्दी दोनों व्याख्याएँ अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अत्यधिक उपयोग की हुई हैं । विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर

इतना सुविस्तृत और गम्भीर विवेचन किया है कि यह हिन्दी व्याख्या दशरूपक की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना के रूप में परिणत हो गई है । ग्रन्थ के आरम्भ में अतिविस्तृत भूमिका देकर भारतीय नाटकों की उत्पत्ति, नाट्यशास्त्र का इतिहास तथा नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों को विस्तार से विश्लेषित किया गया है । यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस रचना से हिन्दी साहित्य की भी अवश्यमेव श्रीवृद्धि हुई है । संस्कृत तथा हिन्दी के अधिकारी विद्वानों और सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग), 'आज' (वाराणसी) तथा 'हिन्दीवाङ्मय' पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है ६-००

[चौ. वि.७]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९६ **देववाणी-परिचायिका** । श्री चक्रधर शर्मा ।

इस ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत, पञ्चतन्त्र, दूतवाक्य, भोजप्रबन्ध, मनुस्मृति, कुन्दमाला, बुद्धचरित, हितोपदेश, नागानन्द नाटक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरिशतक आदि सुरभारती के सुप्रसिद्ध प्रतिनिधि ग्रन्थों के उद्धरणों का रसमाधुर्य ओत प्रोत है। (यू० पी० हाईस्कूल के लिए पाठ्य स्वीकृत) १-६५

९७ **धर्माधिकारिवंशवर्णनम्** । श्रीवेणीरामपण्डितधर्माधिकारि विरचित समाप्त

+९८ **धार्मिकवर्णनलक्षणकाव्यम्** । ०-४०

९९ **हिन्दी ध्वन्यालोक-लोचन** । आचार्य जगन्नाथपाठक ।

इस ग्रन्थ में 'ध्वन्यालोक' तथा उसकी टीका 'लोचन' का इतना सुन्दर अनुवाद दिया गया है कि छात्रों को ग्रन्थ लगाने में तनिक भी आयास नहीं होगा। गूढ ग्रन्थि और अस्पष्टता के निवारण के लिये सुविशद टिप्पणी के रूपमें व्याख्यात्मक विवेचन देकर ग्रन्थाशय को सुस्पष्ट कर दिया गया है। सम्वद्ध विषयों के विचार से परिपूर्ण विशद भूमिका भी ग्रन्थ-गौरव के अनुकूल प्रस्तुत की गई है। मूल लोचन में संशोधन भी किया गया है। अपनी कोटि का यह सर्वप्रथम उपयोगी संस्करण है।

प्रथम उद्द्योत ४-००

सम्पूर्ण ग्रन्थ १६-००

१०० **ध्वन्यालोकः** । 'दीधिति' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः ।

कविशेखर श्री पं० बदरीनाथ झा विरचित 'दीधिति' व्याख्या में ग्रन्थ की गूढ़ग्रन्थियों को नवीन शब्दावली में अभिव्यक्त किया गया है। इस संस्करण में 'दीधिति' टीका के अनुरूप सुविस्तृत सुबोध प्राञ्जल राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी प्रतिपद की सारगर्भित व्याख्या भी की गई है। समालोचनात्मक प्रस्तावना आदि से सुसज्जित शोधपूर्ण संस्करण ९-००

१०१ **ध्वन्यालोकः** । कविशेखर पं० बदरीनाथ शर्मा कृत 'दीधिति' संस्कृत व्याख्या, तथा श्रीशोभित मिश्र कृत हिन्दी व्याख्या, विस्तृत प्रस्तावना सहित । प्रथम-द्वितीय उद्योत ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०२ **ध्वन्यालोकः ।** श्रीमदानन्दवर्धनाचार्य विरचितः ।
बालप्रियादिव्याञ्जनाभ्यां समुपेतेन श्रीमदभिनवगुप्तपाद विरचितेन लोचनेन सहितः । यन्त्रस्थ

१०३ **ध्वन्यालोक-रहस्यम् ।** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
इस पुस्तक में काशी तथा विहार आदि की परीक्षाओं में आये हुये प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर सरल, सुबोध तथा संक्षिप्त रूप से लिखे गये हैं। साथ ही प्रथम उद्द्योत से लेकर संपूर्ण ग्रन्थ की परीक्षा में आने योग्य पंक्तियों की परीक्षोपयोगी व्याख्या भी कर दी गयी है। २-००

१०४ **ध्वन्यालोकसारः ।** आचार्य श्रीपुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी ।
इस ग्रन्थ के योग्य विद्वान् रचयिता ने संपूर्ण ग्रन्थ के सभी स्थलों का सार इस प्रकार सरल भाषा में संगृहीत कर दिया है कि केवल इसी पुस्तक के अवलोकन मात्र से इस विस्तृत ग्रन्थ या इसकी सहायक अन्य टीकाओं को देखने की आवश्यकता नहीं रह जाती। १-२५

१०५ **नलोपाख्यानम्** (महाभारत वनपर्व) श्री काशीनाथ द्विवेदी विरचित सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या समालोचनात्मक भूमिकादि सहित २-५०

106 NALOPAKHYANAM By Monier Williams (Chow. Sans. Studies Vol. LIII) 25-00

१०७ **नवसाहसांकचरित ।** आचार्य परिमल पद्मगुप्त कृत ।
हिन्दी व्याख्या तथा विस्तृत अध्ययन सहित ।

इसकी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या में ग्रंथ के भाव, भाषा, छन्द, शैली, रस, अलंकार आदि का विशद विवेचन किया गया है।
आगरा विश्वविश्वविद्यालय की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत प्रथम सर्ग ०-७५
विस्तृत भूमिका सहित संपूर्ण १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०८ **हिन्दी नलचम्पू।** (चण्डपालकृत 'प्रकाश' संस्कृत व्याख्या सहित) व्याख्याकार, श्री कैलाशपति त्रिपाठी।

इसकी विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या में श्लोकों की व्याख्या के साथ चण्डपाल की संस्कृत व्याख्या की भी सविमर्श व्याख्या की गई है। अनेकार्थक श्लोकों की व्याख्या भी विविध रूप से प्रस्तुत है। इसकी समालोचनात्मक लग-भग १०० पृष्ठ की वृहत् भूमिका छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है। प्रथम उछ्वास २-००

१-२ उछ्वास ३-०० सम्पूर्ण ११-००

१०९ **नीलकण्ठविजयचम्पूः।** 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित

संस्कृत काव्यानन्द हिन्दी जानने वालों को भी प्राप्त हो इस उद्देश्य से आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण प्रस्तुत किया है। व्याख्या की भाषा का गुम्फन इस कौशल के साथ किया गया है कि मूल न पढ़ने पर भी वैरस्य न उत्पन्न हो। ४-००

११० **नैषधीयचरितम्।** 'जीवातु' 'मणिप्रभा' व्याख्योपेतम्।

म० म० मल्लिनाथ कृत दुष्प्राप्य अति प्राचीन विशुद्ध 'जीवातु' टीका के साथ-साथ नारायणी टीका की सारभूत इसकी 'मणिप्रभा' नामक विस्तृत हिन्दी टीका ने तो गागर में सागर भर दिया है। हिन्दी टीका में नारायणी टीका के अनुसार अनेकार्थक सभी श्लोकों के प्रत्येक अर्थ को भिन्न-भिन्न रूप से खोल दिया गया है।

प्रथम सर्ग १-००, १-३ सर्ग १-७५, १-५ सर्ग ३-५०,
१-९ सर्ग ६-०० संपूर्ण ग्रन्थ १३-००

१११ **नृसिंहचम्पूः।** विमर्शाख्य संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार, डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री, (हिन्दू विश्वविद्यालय काशी)

सरल एवं सरस संस्कृत-हिन्दी में पहली बार अनूदित इसकी विस्तृत भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विशद आलोचना तथा कवि का प्रामाणिक इतिवृत्त वर्णित है। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिये अधिक उपादेय है। २-५०

*११२ **पउमचरियं।** विमलसूरि विरइयं। हिन्दी अनुवाद सहित।
प्रथमो भागः १८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११३ **पञ्चामृत** । सम्पादक : प्रो० गौतम हंसवंशी

बी० ए० कक्षा में निर्धारित सूर-तुलसी-केशव-बिहारी-भूषण—के काव्यों के सभी अंश इसमें क्रमशः उपनिबद्ध हैं। कवि का प्रामाणिक जीवन-वृत्त, शब्दार्थ-भावार्थ, टिप्पणी आदि देने से इसकी सुबोधता और भी बढ़ गई है। ३-००

११४ **पारिजातहरणचम्पूः** । महाकवि शेषश्रीकृष्णविरचिता। सान्वय-'श्रद्धा' हिन्दी व्याख्योपेता।

'पारिजात-हरण' जैसे रोचक प्रसंग का चम्पू-काव्यबद्ध होना ही बड़ी रसपूर्ण बात है। उस पर कुशल टीकाकार की भावानुकूल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं से सर्वबोध्य होकर यह ग्रन्थ और भी उपयोगी हो गया है। व्याख्याएँ अति विशद एवं सरस होने से साहित्यानुरागियों के लिये विशेष उपकारक हैं। ३-५०

•115 **Padya Pushpanjali** (A Nosegay of Sanskrit Poems.) Text and Eng. Translation by V. Subrahmanya Iyer Nett. Rs. 2—00

११६ **पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम्** । (वैदिकच्छन्दःप्रकरणान्तम्) हलायुधवृत्तियुत-सटिप्पण-कादम्बिनी हिन्दी भाषा टीका सहित [ह. १८३] समाप्त

*117 **Priya-Pravas of Harioudha.** Translated from Hindi Verses into English Prose. Rs. 1—75

*११८ **प्राकृतपैंगलम्** । संस्कृत व्याख्यात्रयोपेत । हिन्दी टीका सहित। संपादक-डॉ० भोलाशंकर व्यास। १-२ भाग ३१-००

११९ **पौराणिक कथाएँ** । श्री हृदयराम शर्मा।

उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकूल रूप देकर यह ग्रन्थ सम्पादित किया गया है। आबाल-वृद्ध सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा। २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२० **बुद्धचरितम्।** वाराणसी की पूर्वमध्यमा के अनिवार्य प्रथम पत्र में पाठ्य स्वीकृत। सरल हिन्दी अनुवाद सहित।

अनुवादक, महन्त श्री रामचन्द्रदास शास्त्री।

हिन्दी ज्ञाताओं को काव्यानन्द के साथ भगवान् बुद्ध के मार्मिक एवं करुण जीवनचरित द्वारा शान्तरस का आनन्द भी सुलभ कराने की दृष्टि से यह संस्करण प्रस्तुत है। इसमें हिन्दी टीका विषयानुकूल प्रवाह-युक्त तथा सरल एवं सरस है। सम्पूर्ण ग्रन्थ १-२ भाग में ५-५०

प्रथम भाग (सर्ग १ से १४ तक)—महाकवि अश्वघोष रचित मूल के साथ हिन्दी टीका २-५०

द्वितीय भाग (सर्ग १५ से २८ तक)—महन्त श्री शास्त्री जी द्वारा स्व-परिश्रम-पूर्वक रचित मूल के साथ हिन्दी टीका ३-००

१२१ **प्राकृतपुष्करिणी।** हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ. जगदीशचन्द्र

इस ग्रन्थ में ध्वन्यालोक, दशरूपक, सरस्वतीकण्ठाभरण, अलङ्कार-सर्वस्व, काव्यप्रकाश, काव्यानुशासन आदि अलङ्कार ग्रन्थों में उद्धृत प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ चुनी हुई ५०० गाथाओं का वर्णानुक्रम से सङ्कलन है २-००

१२२ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** डॉ० जगदीशचन्द्र जैन।

वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम ही अवतरित हुआ है। २०-००

१२३ **प्रेमरसायनम्।** श्री विश्वनाथपण्डित रचितम्। सटीकम् [का. ६३] १-००

१२४ **भट्टिकाव्यम्।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्।

'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' संस्कृत हिन्दी व्याख्याओं से युक्त 'भट्टिकाव्य' का परीक्षोपयोगी सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित दूसरा कोई भी संस्करण नहीं है।

१-६ सर्ग ४-००, पूर्वार्ध १ से ११ सर्ग ७-५०

उत्तरार्द्ध १२ से २२ सर्ग ५-००, सम्पूर्ण १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२५ **भर्तृहरिशतकत्रयम् ।** (नीतिशतक, शृङ्गारशतक, वैराग्यशतक) सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित ।

मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है। संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं।

मूल्य प्रति शतक १-०० एकत्र तीनों शतक ३-००

*१२६ **भागवतचम्पूः ।** अभिनव कालिदास विरचित २-००

*१२७ **भागीरथीचम्पूः ।** अच्युत शर्मा विरचित ३-००

१२८ **भामिनी-विलासः ।** पण्डितराज जगन्नाथ विरचित। सान्वय 'प्रकाश' हिन्दी-व्याख्योपेतः व्याख्याकारः श्री राधेश्याम मिश्र ।

प्रस्तुत ग्रंथ में कवि की अनूठी प्रतिभा का विलास दर्शनीय है। प्रायः सभी विषयों पर एक-से-एक बढ़कर उपदेशप्रद मार्मिक उक्तियाँ इसमें आद्यन्त हैं। व्याख्या में पहले दण्डान्वय फिर हिन्दी रूपान्तर तथा 'व्याख्या' के अन्तर्गत जितना कुछ उस पद्य के सम्बन्ध में विशेष ज्ञेय है, सब विस्तार से दिया गया है। इससे अधिक भावावबोधक विशद व्याख्या इसकी अबतक प्रकाशित नहीं हुई। विस्तृत भूमिका में पुस्तक से संबंधित काल-विशेष की संपूर्ण सांस्कृतिक झाँकी प्राप्त हो जाती है। पद्यानुक्रमणिका भी संलग्न है। उच्चकक्षा के छात्रों तथा काव्यरसिकों के लिये अवश्य द्रष्टव्य संस्करण है। **अन्योक्तिविलास मात्र** ३-००

सम्पूर्ण १०-००

१२९ **भारत-कथा**—महामहोपाध्याय श्री गंगाधरशास्त्री विरचित। सान्वय 'बोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। (वाराणसेय सं० वि० की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण महाभारतीय कथा का उपनिबन्धन मौलिक श्लोकों में ही बडे कौशल से किया गया है। पाठ्य पुस्तक होने से प्रस्तुत संस्करण में छात्रों के लिये इसकी बहुत सरल संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या मूल के साथ प्रकाशित की गई है। पहले स्वतंत्र रूप में दण्डान्वय देकर तब समास-पर्यायादि संस्कृत और हिन्दी व्याख्याएँ दी गई हैं। १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३० **भारतीय साहित्य की रूपरेखा।** डॉ० भोलाशंकर व्यास।
भारतीय संस्कृति तथा साहित्य की परम्परा लगभग पाँच-छः हजार वर्षों से निरन्तर प्रवहमान रूप में उपलब्ध होती है। इस संस्कृति और साहित्य की अट्टालिका के निर्माण का इतिवृत्त प्रस्तुत करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। ७-५०

१३१ **भोजप्रबन्धः** (सटिप्पण) श्री बल्लालसेन विरचितः। [ह. ४२] ०-७५

१३२ **भोज-प्रबन्धः।** 'राज्यश्री' हिन्दी व्याख्योपेतः।
डॉ० भोलाशंकर व्यास सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका तथा भावगर्भित 'राज्यश्री' नामक हिन्दी टीका से सुसज्जित इस अभिनव संस्करण ने राष्ट्रभाषा को विशेष गौरव प्रदान किया है। १-५०

१३३ **महाकवि कालिदास।** (देव पुरस्कार से पुरस्कृत)
डॉ० रमाशंकर तिवारी विरचित इस ग्रंथ में कालिदास एवं उनकी कृतियों पर अत्यन्त प्रामाणिक, अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। महाकवि की प्रत्येक कृति का इस प्रकार समीक्षण प्रथम बार देखने को मिलेगा। सर्वश्रेष्ठ संस्करण। ८-००

*१३४ **मन्दारमञ्जरी।** विश्वेश्वरपाण्डेयविरचित। कुसुमाभिधव्याख्यासहित ४-५०

१३५ **मन्दाकिनी।** डॉ० देवर्षि सनाढ्य।
वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, श्रीहर्ष, मयूर, जयदेव आदि संस्कृत-साहित्य के महान् मनीषियों की रचनाओं का हिन्दी-व्याख्यात्मक परिचय पाठकों को न केवल मनोविनोद का कारण होगा, प्रत्युत भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा की भावना भी उत्पन्न करेगा। १-२५

१३६ **मूलरामायण-महाभारतीयशीलनिरूपणाध्यायौ।**
प्रथम परीक्षोपयोगी 'सुधा' संस्कृत हिन्दी टीका, कथासार सहित।
बालकों को सरल रूप से श्लोकों का अर्थ समझने के लिए इसमें प्रत्येक श्लोक का अन्वय, व्याख्या, समास और वाच्यपरिवर्तन करके हिन्दी भाषा में विस्तृत रूप से व्याख्या प्रस्तुत की गई है ०-७५

१३७ **मूलरामायण।** उपर्युक्त सब विषयों से युक्त। ०-४०

१३८ **महाभारतीयशीलनिरूपणाध्याय।** उपर्युक्त सब विषयों से युक्त ०-४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

139 MANUAL OF CLASSICAL SANSKRIT PROSODY : By Prof. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B. Shortly

१४० **मेघदूतम्** । सान्वय-'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, भावार्थ, टिप्पणी (नोट्स), व्याकरण, सरलार्थ, सहित । व्याख्याकार—आचार्य शेषराज शर्मा

इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक की—अन्वय, सरल संस्कृत व्याख्या, संस्कृत सरलार्थ, हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पणी—इस क्रम से विशद व्याख्या दी गई है। टिप्पणी में समास-व्युत्पत्ति-कोष-अलंकार-आदि का यथावश्यक निर्देश अत्युपयोगी है।

उपोद्घात के ४० पृष्ठों में कालिदास के जन्म-काल-जीवन तथा रचनाओं का सुस्पष्ट समीक्षण, तदनन्तर प्रकृत काव्य का शास्त्रीय दृष्टि से निकषण, कालिदास की प्रशस्तियां, मेघदूत के सुभाषित, भौगोलिक शब्दों का संक्षिप्त विवरण, संस्कृत 'उदाहरण' में पौराणिक आधार का उद्धरण, पद्यानुक्रमणी आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अतिशय छात्रोपयोगी सामग्री दी गई है। छात्रों के लिये मेघदूत का इतना सुन्दर दूसरा कोई उपयुक्त संस्करण नहीं है। ४-५०

१४१ **मेघदूतम्** । सञ्जीविनी-चारित्रवर्द्धिनी-भावबोधिनी-सौदामिनी नामक संस्कृत-हिन्दी टीकाचतुष्टयोपेतम् ।

उपर्युक्त टीकाओं द्वारा जो विभिन्न प्रकार का भाव-प्रकाशन हुआ है उससे छात्रों, अध्यापकों एवं साहित्यानुरागियों को निश्चय ही समान रूप से ज्ञान-संवर्द्धन होगा। १-२५

142 MEGHA DUTA : English Translation by H. H. Wilson Fourth Edition. (Chow. Sans. Studies Vol. IX) 7-50

१४२ **मोहन की वंशी : भजनसंग्रह** । डॉ० ब्रजमोहन

कृष्ण-भक्ति की तन्मयता में साधक के हृदय की सहज गति से विगलित भावधारा अत्यन्त सरल एवं स्वाभाविक पदों के रूप में आबद्ध की गई है। एक बार अवश्य पढ़ कर जीवन सफल बनाइए। ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४४ **यशस्तिलकचम्पूमहाकाव्यम्**। विस्तृत भा. टी. सहितम्। पूर्वार्द्ध १६-००

१४५ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'मल्लिनाथी' 'सुधा' व्याख्योपेतम् । प्रत्येक श्लोक में क्रमशः अवतरण-श्लोक, मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी टीका-अन्वय-'सुधाव्याख्या' कोश-समासादि-व्याकरण-वाच्यपरिवर्तन-तात्पर्यार्थ-हिन्दीभाषार्थ आदि विविध उपयुक्त विषयों से अलंकृत परीक्षोपयोगी टीका के साथ साथ मल्लिनाथ कृत सञ्जीविनी टीका सहित **रघुवंश** का यह संस्करण सर्वश्रेष्ठ है । १ सर्ग ०-७५, २ सर्ग ०-७५, १ व ५ सर्ग १-५०, २-३ सर्ग १-५०, १-४ सर्ग २-५०, १-२ सर्ग १-५० १-५ सर्ग ३-०० पृथक् पृथक् प्रत्येक सर्ग ०-७५

१४६ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । १३-१४ सर्ग । 'चन्द्रकला' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार पं० श्री शेषराज शर्मा रेग्मी । १-५०

१४७ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'सञ्जीविनी' 'मणिप्रभा' टीकोपेतम् । 'सञ्जीविनी' टीका को आदर्श मानकर 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका में प्रायः सञ्जीविनी टीका की व्याख्या भी कर दी गयी है । किं बहुना, यत्र तत्र विमर्श भी देकर महाकवि कालिदास के भावों को विशदरूप से व्यक्त कर दिया गया है । ग्रन्थ के आदि में समालोचनात्मक विस्तृत हिन्दी भूमिका में महाकवि की जीवनी, समय आदि का विस्तृत विवेचन कर प्रत्येक सर्ग का पृथक् पृथक् संक्षिप्त कथासार भी प्राञ्जल राष्ट्रभाषा में लिखा गया है । संपूर्ण ग्रंथ ५-००

१४८ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'सञ्जीविनी' 'मणिप्रभा' संस्कृत हिन्दी टीका 'विमर्श' सहितम् । १-५ सर्ग १-५०, ६-१४ सर्ग २-२५

५-१४ सर्ग २-५०

१४९ **रामवनगमनम्**। 'सुधा' संस्कृत टीका के साथ साथ 'इन्दुमती' विस्तृत हिन्दी टीका में श्लोकों के गूढ़ अभिप्रायों को इस तरह सरल शब्दों में अभिव्यक्त कर दिया गया है कि श्लोकार्थ समझने में पाठकों को कठिनाई नहीं होगी । [ह. १८०] १-२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५० **हिन्दी रसगङ्गाधर** । 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्या ध्वन्यालोक के सफल टीकाकार जगत् प्रसिद्ध कविशेखर आचार्य बदरी नाथ झा जी की अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत व्याख्या के साथ ही आचार्य मदनमोहन शास्त्री कृत आधुनिक सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या होने से तो सोनेमें सुगन्धि पैदा हो गयी है । यह हिन्दी व्याख्या केवल संस्कृत छात्रों के लिए ही नहीं प्रत्युत हिन्दी-अंगरेजी छात्रों की कठिनाइयों को विशेष ध्यान में रख कर प्रस्तुत की गयी है । इसकी समालोचनात्मक विशाल हिन्दी प्रस्तावना भी छात्रों के लिए अधिक उपादेय है । प्रथमानन पर्यन्त प्रथम भाग ९-००

द्वितीयानन का उत्प्रेक्षानिरूपणान्त द्वितीय भाग १६-००

अतिशयोक्त्यलङ्कारादि समाप्तिपर्यन्त तृतीय भाग २०-००

१५१ **रसगङ्गाधररहस्यम्** । (प्रश्नोत्तरी) आचार्य श्रीमदनमोहन झा की विरचित इस ग्रन्थ में छात्रों के हितार्थ सभी प्रष्टव्य स्थलों पर प्रश्नोत्तर के रूप से सरल तथा सारगर्भित लेख लिखे गये हैं जिनके अभ्यास मात्र से छात्र परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं । १-००

१५२ **रसगङ्गाधरहृदयम्** । श्री ज्ञानचन्द त्यागी इस पुस्तक में रसगंगाधर के सभी प्रश्नोत्तरों का संक्षेप में ही ज्ञान कराया गया है जिसके अभ्यास मात्र से परीक्षार्थी परीक्षा में अनायास सफलता प्राप्त करेंगे । २-००

१५३ **रसचन्द्रिका** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मिता । [का. ५३] १-००

*१५४ **रसमञ्जरी** । भानुदत्त विरचित । व्यङ्ग्यार्थ कौमुदी व्याख्या सहित २-००

१५५ **हिन्दी रसमञ्जरी** । 'सुरभि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित हिन्दी तथा संस्कृत जानने वालों के लिए आचार्य बदरी नाथ झा विरचित 'सुरभि' नामक सरल सुबोध संस्कृत टीका के साथ पण्डित जगन्नाथ पाठक रचित सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या से विभूषित यह संस्करण छात्रों के लिए सर्वथा उपयोगी है ५-००

१५६ **राक्षसकाव्यम्** । 'नूतनकिशोरकेलि' व्याख्यासहितम् [ह. ७३] ०-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५७ **रसराज।** कविवर मतिराम। आचार्य रामजी मिश्र रचित हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित

हिन्दी साहित्य का यह प्राचीन अथ च क्लिष्ट लक्षणग्रन्थ है जिस पर अत्यन्त सरस, सरल तथा प्रामाणिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है। समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका आदि के सहित यह संस्करण साहित्यानुरागियों तथा अध्येताओं के लिये परमोपादेय है। ७-५०

१५८ **राघवपाण्डवीयम्।** (कविराज पंडित विरचित) सरस, सरल विवेचनात्मक 'सुबोधिनी' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित। व्याख्याकार पं. दामोदर झा १२-५०

१५९ **रामाभ्युदययात्रा**—श्री रुद्रप्रसाद अवस्थी सम्पादित। (वाराणसी की शास्त्री प्रथम खण्ड परीक्षा के अनिवार्य प्रथम पत्र निर्धारित) संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। २-२५

१६० **रामायणमञ्जरी।** महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित। विजयमित्र शास्त्री कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

वाल्मीकि रामायण के आधार पर रचित यह ग्रंथ विद्वानों के हृदयों को हर लेने वाला है। नवीन कवि कल्पनाओं से यह ग्रंथ परिपूर्ण है। पद-पद पर इसमें मनोहारिणी काव्य-छटा दृष्टिगोचर होती है। यह अनुपम काव्य ग्रंथ अभी तक अव्याख्यान ही रहा है। सम्प्रति तो मूल ग्रंथ भी अप्राप्य है। सुन्दरकाण्ड मात्र यन्त्रस्थ

सम्पूर्ण ग्रन्थ भी शीघ्र प्राप्त होगा

१६१ **रसमीमांसाविवेकः।** गङ्गाराम जी विरचित संस्कृत मूल। संस्कृत व्याख्या-आंग्लभूमिका-हिन्दी भूमिका युक्त। व्याख्याकार-डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह। शीघ्र प्राप्त होगा

१६२ **रसिकाष्टककाव्यम्।** [चौ. पु.] ०-०५

*१६३ **रुक्मिणीकल्याणकाव्यम्।** राजचूडामणि दीक्षित कृतम्। नेट ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६४ **हिन्दी वक्रोक्तिजीवित।** व्याख्याकार–राधेश्याम मिश्र एम.ए. सावतरण हिन्दी अनुवाद, विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी (नोट्स) समालोचनात्मक प्रस्तावना तथा विविध परिशिष्ट-विभूषित संग्राह्य संस्करण। इस अभिनव संस्करण की विशेषता यह है कि इस क्षेत्र के समस्त मत-मतान्तरों एवं प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्ण टीकागत सम्यक् रूप से अप्रतिपादित अंशों का हृदयस्पर्शी मार्मिक युक्ति प्रमाणों द्वारा जो निराकार किया गया है वह निश्चित ही अभूतपूर्व है। भूमिका में व्याख्याकार ने अब तक की समस्त नवीन गवेषणाओं और उपलब्धियों का समाहार करते हुए पाठकों के लिए प्रस्तुत संस्करण को सर्वतोभावेन सुन्दर एवं उपयोगी बना दिया है। शीघ्र प्राप्त होगा

१६५ **वरदाम्बिकापरिणयचम्पू।** आंग्लानुवाद सहित। डा. सूर्यकान्त सम्पादित यन्त्रस्थ

१६६ **वाग्भटालङ्कारः।** सिंहदेवगणिविरचित संस्कृत-व्याख्या डॉ० सत्यव्रतसिंह कृत 'शशिकला' हिन्दीव्याख्या सहित। संस्कृत टीका के साथ विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या हो जाने से अब साहित्य शास्त्र के जिज्ञासुओं की साहित्यविषयक जिज्ञासा इस एक ही लघुकाय ग्रन्थ से पूर्ण हो सकती है। २-००

१६७ **विद्वद्विभूति।** (बिहार मध्यमा परीक्षापाठ्य ग्रन्थ) इसमें संस्कृत के प्राचीन तथा नवीन प्रायः सभी उत्कृष्ट विद्वानों की जीवनियाँ सुललित राष्ट्रभाषा में लिखी गई हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी स्कूल तथा कालेज के छात्र इस ग्रन्थ से विशेष लाभान्वित होंगे। १-२५

१६८ **वाग्वल्लभः।** पं० दुःखभञ्जनकविकृतः। महामहोपाध्याय कविचक्रवर्ति पं० देवीप्रसादकृत 'वरवर्णिनी' नामक टीकायुतः। छन्दोज्ञान के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। संस्कृत साहित्य में जितने बिखरे हुए छन्द हैं उन सभी के लक्षण व्याख्या सहित उल्लेख किए गए हैं। संस्कृत तथा हिन्दी उभय कवियों एवं कविता प्रेमियों के लिये यह अवश्य संग्रहणीय ग्रन्थ है। [का. १००] ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१६९ **विक्रमाङ्कदेवचरितम्** । बिल्हण विरचित । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। । १-१८ सर्ग । १-३ भाग २२-००

१७० **विक्रमाङ्कदेवचरितम्** । 'प्रबोधिनी' व्याख्योपेतम् । राष्ट्रभाषा हिन्दी में छात्रोपयोगी व्याख्या तथा सुविस्तृत प्रस्तावना में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है ।
प्रथम सर्ग ०-६५

१७१ **वासवदत्ता** । 'चपला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता । नवीनपद्धति के अनुकूल इसकी सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रति पद का पर्याय, कोश, अलंकार आदि देकर तदनुरूप हिन्दी टीका में भी पद पद का विस्तृत विवेचन किया गया है । इसकी गवेषणात्मक हिन्दी प्रस्तावना भी अध्ययन करने योग्य है । ४-००

१७२ **विदुलोपाख्यानम्** । वाराणसी की पुराणेतिहास–पूर्व-मध्यमा प्रथम खण्ड परीक्षा पाठ्य ग्रंथ । 'लीला' 'विलास' संस्कृत हिन्दी टीका सहित । ०-६५

१७३ **विश्रुतचरितम्** । (परीक्षोपयोगी संस्करण) 'बालविबोधिनी' नामक संस्कृत-हिन्दी व्याख्या में समास-विग्रह, आदि से ग्रन्थ के दुरूहांशों को विशेष स्पष्ट कर दिया गया है । संस्कृत का थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले छात्र इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे १-००

१७४ **विश्वगुणादर्शचम्पूः** । श्री बालकृष्ण शास्त्री विरचित 'पदार्थचन्द्रिका' संस्कृतटीका तथा श्री जटाशंकर पाठक कृत सान्वय हिन्दी व्याख्या विभूषित ।

इस दुर्लभ ग्रन्थ में नाटकीय शैली में भूलोक-वर्णनपूर्वक भारतान्तर्गत समस्त प्रमुख नगर-नगरियों, नदियों, आश्रमों, अरण्यों, तथा विविध विषयों के अध्येताओं का अत्यन्त ललित तथा सरस वर्णन संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध है। अनूठी कल्पनाएँ तथा उक्ति-चमत्कार इसकी प्रधान विशेषता है । छात्र-अध्यापक तथा संस्कृत न जानने वाले लोग भी इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे । १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७५ **वीरोत्साह-वर्द्धनम्** । श्री पं० सुरेशचन्द्र त्रिपाठी ।

भारत-सीमा पर चीनी आक्रमण के प्रसङ्ग पर छात्रों तथा सैनिकों में उत्साह एवं वीर भावों के उद्बोधन के लिये संस्कृत पद्यों में लिखी यह पुस्तिका अनुपम है । ०-५०

१७६ **वृत्तरत्नाकरः** । 'नारायणी' 'मणिमयी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेत: भट्टनारायणभट्टीव्याख्या सहित सुविस्तृत टिप्पणी, मणिमयी हिन्दी टीका विभूषित इस द्वितीय संस्करण से परीक्षार्थी विद्यार्थियों की सारी कठिनता दूर हो गई है । [का. ५५] ३-००

१७७ **वृत्तरत्नाकरः** । मूल श्लोक तथा 'मणिमयी' हिन्दी टीका सहित बालकोपयोगी सुलभ संस्करण [का. १४७] ०-५०

* १७८ **वृत्तरत्नावलिः** । वेङ्कटेशकृत । संस्कृतव्याख्या आंग्लानुवाद सहित नेट ४-००

१७९ **हिन्दी व्यक्तिविवेक** । आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी

प्रस्तुत संस्करण के चार अंश हैं—(१) मूलग्रन्थ, (२) व्यक्तिविवेक व्याख्यान नामक प्राचीन संस्कृत टीका, (३) दोनों का परिष्कृत हिन्दी में अनुवाद तथा (४) हिन्दी में ही दोनों की स्वतन्त्र तुलनात्मक समीक्षा। इस संस्करण की प्रमुख विशेषता यह है कि आधुनिक शोधशैली तथा प्राचीन विचारों के समन्वय से इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है । विस्तृत भूमिका में विद्वान् लेखक ने काव्यशास्त्र के अनेक विषयों पर ऐसे विचार दिए हैं जो क्रान्तिकारी कहे जा सकते हैं जिससे विचारों को नवीन दिशा भी मिलती है । १६-००

१८० **व्यवहारविज्ञानम्** । वाराणसी की प्रथमा परीक्षापाठ्य स्वीकृत । सान्वय 'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित । संपादक—श्री हरिहर झा ।

जीवन-निर्माण में बालकों को भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित किस व्यवहार-विधि का पालन करना चाहिए इसका शास्त्रसम्मत रोचक उपदेश ही इस पुस्तक का विषय है । बड़ी उपयोगी रचना है ।

प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत प्रथम भाग ०-६०

द्वितीय भाग ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८१ **वैराग्यशतकम्।** भर्तृहरि विरचित। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा हिन्दीपद्यानुवाद सहित १-००

१८२ **शिशुपालवधम्।** 'मल्लिनाथी' 'मणिप्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या। इस ग्रन्थ में अनेकार्थक श्लोक अधिक हैं जो परीक्षा में पूछे जाते हैं; विविध प्रकार से उनकी व्याख्या कर दी गयी है और विमर्श में उन ग्रन्थियों को और भी खोल दिया गया है। ग्रन्थ में आई हुई पौराणिक कथायें, प्रत्येक सर्ग के संक्षिप्त कथासार, महाकवि के इतिवृत्त तथा काव्य-महाकाव्यादि के लक्षण-भेद आदि से सुसज्जित यह संस्करण मौलिक संस्करण के रूप में हो गया है।

१-६ सर्ग ३-०० संपूर्ण ८-००

१८३ **शिशुपालवधम्।** सान्वय-मल्लिनाथी व्याख्या सहितम्।
[ह. ८०] १-३ सर्ग समाप्त १-२ सर्ग ०-७५

१८४ **शिशुपालवधम्।** (तृतीयसर्ग) मल्लिनाथी-वल्लभदेवीटीकाद्वयसहितम् ०-५०

१८५ **शिशुपालवधम्।** परीक्षोपयोगि 'सुधा' व्याख्योपेतम्। परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिए इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक के क्रमशः अवतरण, श्लोकान्वय, नवीन सुधाव्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, तात्पर्यार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, संस्कृत-हिन्दी कथासार, प्रश्नपत्र आदि विषय दिये गये हैं। १-२ सर्ग २-००

१८६ **शुकसप्ततिः।** विनोदिनी संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेता व्याख्याकारः श्रीरमाकान्तत्रिपाठी।
प्रस्तुत कथा ग्रंथ में उत्तम उपदेशप्रद ७० कहानियाँ हैं। क्लिष्ट संस्कृत में होने से इसकी व्याख्याओं की नितान्त आवश्यकता थी। बहुत ही सरल तथा प्रवाहमयी प्रस्तुत व्याख्याओं से मूल के प्रतिपद का अर्थ समझा जा सकता है। संस्कृत कथा-साहित्य का वैभव इस ग्रंथ में स्पष्ट देखने को मिलता है। एक से एक अनूठी कथाएँ हैं। व्याख्याओं सहित यह सर्वप्रथम संस्करण अवश्य पठनीय है। विशद भूमिकादि सहित। यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८७ **शुकनासोपदेशः** । व्याख्याकार झा-बन्धु ।

कादम्बरी का यह शुकनासोपदेश प्रकरण सरल संस्कृत व्याख्या-समास-विग्रहादि, हिन्दी अनुवाद, अलंकार-निर्देश टिप्पणी, विशद आलोचनात्मक भूमिकादि सहित छात्रोपयोगी संस्करण ३-००

*१८८ **श्रीगान्धिचरितम्** । 'प्रियंवदा' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् । संपादक—श्रीब्रह्मानन्द शुक्ल १-५०

*१८९ **श्रीरामानुजचम्पूः** । रामानुजाचार्यकृत । (सव्याख्यानम्) नेट ३-००

१९० **श्रीलक्ष्मीसहस्रम्** । श्रीमद्वेङ्कटाध्वरिविरचितम् । श्रीनिवासपण्डित विरचित सुबोधिनीव्याख्यया अवतरणेन निःश्रेणिकया च सम्भूषितं सम्पूर्णम् । [चौ. २३] २०-००

१९१ **श्रुतबोधः** । 'आशुबोधिनी' व्याख्या सहित [नि.] यन्त्रस्थ

१९२ **श्रुतबोधः** । (अश्लीलांशवर्जितः) 'विमला' टीकोपेतः । इस संस्करण में प्रति छन्द का अन्वय, व्याख्या, हिन्दी अनुवाद, समास, व्याकरण, उदाहरण, प्रत्युदाहरण तथा साथ ही साथ छन्दोमञ्जरी के भी लक्षण दे दिये गये हैं । ०-२५

१९३ **शृङ्गारतिलकम्** (मूलमात्रम्) [चौ. पु.] ०-०५

१९४ **शृङ्गारतिलकम्** । संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित । यन्त्रस्थ

१९५ **शृंगारशतकम्** । भर्तृहरिकृत । सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित १-००

१९६ **संस्कृत-काव्य-कलिका** । डा० आद्याप्रसाद मिश्र

इस पुस्तक में प्रतिज्ञायौगन्धरायण के साथ-साथ महाराज रघु तथा राजकुमार अज के परम-पावन एवं उदात्त चरित वर्णित हैं। इसमें उनके अलौकिक तेज, पराक्रम तथा संस्कृतिमूलक आचार आदि के भी दिव्य दर्शन होते हैं। [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य-स्वीकृत] ०-९५

*१९७ **संस्कृतसूक्तिरत्नाकर** । डा० रामजी उपाध्यायकृत हिन्दी टीका २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१९८ **संस्कृत-सूक्तिसागर।** श्रीनारायणस्वामीकृत हिन्दी टीका
संस्कृत के कवियों की अनुपम कल्पना का आनन्द अनायास ही आपको सुलभ कराने के लिए सरस हिन्दी भाषानुवाद के साथ संस्कृत साहित्य की देव-सूक्तियाँ तथा रस-सूक्तियाँ प्रस्तुत खण्ड में अकारादिक्रम से संगृहीत हैं। रस सूक्तियों में भी रसराज शृङ्गार का विस्तार के साथ तथा अन्य आठ रसों का संक्षिप्त विवरण के साथ सूक्तिसंग्रह है। २१-००

१९९ **समयोचितपद्यरत्नमालिका।** अकारादिक्रमेण सुभाषित पद्यों का अनुपम संग्रह [द्वि. १९५] ०-७५

२०० **संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः**-बिहार मध्यमा परीक्षा पाठय ग्रंथ (हिन्दी-व्याख्योपेत नवीन संस्करण) संपादक—श्री बृहस्पति शास्त्री।
नीति-ग्रन्थों के सारभूत समयोचित सुभाषितों के इस संग्रह की उपादेयता पर ही बिहार संस्कृत विश्वविद्यालय ने इसको मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत कर लिया है। २-५०

२०१ **संस्कृत-गद्य-काव्यकैरवी।** प्रो० चारुदेव शास्त्री।
प्रस्तुत पुस्तक में सुबन्धु, दण्डी, बाणभट्ट आदि के आदर्शों के साथ कतिपय आधुनिक यशस्वी लेखकों की रचनाओं के अंश भी उपन्यस्त हैं। समाप्त

*२०२ **समस्यासमज्या।** (संस्कृत की १७२ दुरूह समस्याओं की लगभग ७५० श्लोकों में पूर्त्ति का अनुपम ग्रन्थ) भागवताचार्यस्वामिकृत २-००

*२०३ **समीक्षाशास्त्र।** आचार्य सीताराम चतुर्वेदी।
ग्रन्थ चार खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में समीक्षा के सिद्धान्त हैं दूसरे खण्ड में भारतीय साहित्य सम्प्रदायों की विवेचना की गई है। तीसरे खण्ड में विभिन्न देशों की समीक्षा-पद्धतियोंका संक्षिप्त इतिहास दिया गया है। चौथे खण्ड में संसार के सभी साहित्यिक या साहित्य सम्बन्धी वादों का परिचय दिया गया है। इसे पढ़ लेने पर संसार का कोई समीक्षा-ग्रंथ पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती। २१-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०४ **संस्कृतगद्यलहरी ।** श्रीहरिहर झा

संस्कृत के २० निबन्धों की इस पुस्तक में विभिन्न आधुनिक वैज्ञानिक विषयों एवं नवीनप्रगति का पर्याप्त ज्ञान सुरक्षित है। प्रतिपाठ के अन्त में अभ्यास के लिये कुछ प्रश्न तथा आवश्यक स्थलों पर चित्र भी हैं।
प्रथम भाग १-५० द्वितीय भाग १-५० १-२ भाग ३-००

२०५ **संस्कृत सौरभम्** ((सचित्र : कक्षा ८ के लिये प्रस्तुत)
ले. पं. करुणापति त्रिपाठी-डा. सुभाषचन्द्र तनेजा ।

कक्षा ८ के अल्पवयस्क बालकों को अत्यन्त सरल रूप में संस्कृत का ज्ञान कराने के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है। पाठों के अन्त में जो अभ्यास दिये गये हैं उनमें नवीन शैली अपनायी गई है। किं बहुना, पदे-पदे आकर्षक चित्रों द्वारा बालकों के लिये उपयोगी बनाने का भगीरथ प्रयत्न किया गया है। १-२५

२०६ **साहित्यदर्पणम् ।** सटिप्पण-'लक्ष्मी' टीकोपेतम् ।

कादम्बरी के सफल टीकाकार आचार्य श्रीकृष्णमोहन शास्त्री साहित्याचार्य एम. ए. ने इस सुविस्तृत टीका की रचना की है। म० म० हरिहरकृपालु जी द्विवेदी, म० म० गोपीनाथ जी कविराज, म० म० नारायण शास्त्री जी खिस्ते, साहित्यरत्नाकर पं० महादेव शास्त्री जी, कविशेखर पं० बदरीनाथ झा जी, जयपुर के भट्ट मथुरानाथ शास्त्री जी प्रभृति भारतविभूतियों ने प्रशंसापत्रों में मुक्तकंठ से इस टीका की प्रशंसा की है जो पुस्तक में प्रकाशित है संपूर्ण १२-००

२०७ **हिन्दी-साहित्यदर्पण ।** 'शशिकला' हिन्दी व्याख्यासहित
व्याख्याकार, डॉ० सत्यव्रत सिंह, प्रो० लखनऊ विश्वविद्यालय

इस संस्करण की विशेषता—इस संस्करण में पहले सर्वबोध्य सुगम भाषा में मूल का व्यवस्थित अनुवाद अंकित किया गया है तत्पश्चात् विमर्शाख्य विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है जिसके द्वारा विषय की दुरूह ग्रन्थियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। इसमें कहीं भी मूल की उपेक्षा हुई प्रतीत नहीं होती। आरम्भ में एक सौ पृष्ठों की विस्तृत भूमिका है जिसमें कुछ अलङ्कारों पर वैज्ञानिक शोधसम्बन्धी दृष्टिकोण, स्वरूप तथा परस्पर वैषम्य सङ्केतित हैं। सर्वश्रेष्ठ संस्करण संपूर्ण १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२०८ **हिन्दी-साहित्यदर्पण** । षष्ठ परिच्छेद । शशिकला व्याख्या
विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस परिच्छेद की छात्रोपयोगी सर्वाङ्गपूर्ण व्याख्या कर दी गई है । व्याख्याकार–डॉ सत्यव्रत सिंह ४–५०

२०९ **हिन्दी साहित्यदर्पण** । दशम परिच्छेद । विमर्शाख्य
शशिकला हिन्दी व्याख्या । व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रतसिंह ५–००

२१० **साहित्यदर्पणादर्शः** । (साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी)
इस प्रश्नोत्तरी में साहित्यदर्पण के सभी प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में परीक्षोपयोगी ढंग पर लिखे गये हैं तथा यथास्थान कोष्ठक देकर ग्रन्थाशय को भी सरल रूप में समझाया गया है । १–५०

२११ **साहित्य-निबन्धः** (अनेक शिक्षासंस्थाओं-द्वारा पाठ्यस्वीकृत)
काशी के विद्वानों की सम्मति व निबन्धों के आधार पर इस ग्रन्थ का निर्माण हुआ है । परीक्षा में पूछे जाने योग्य प्रायः सभी साहित्यिक निबन्ध इस पुस्तक में लिखे गये हैं । १–५०

२१२ **सुवृत्ततिलकम्** । क्षेमेन्द्रकृतम [ह. २६] ०–२५

२१३ **सूक्तिमञ्जरी** । ले०–आचार्य बलदेव उपाध्याय ।
इस ग्रन्थ में विशाल संस्कृत-साहित्य से सूक्तियाँ चुनकर उनकी इतनी चटपटी भाषा में ललित हिन्दी व्याख्या की गयी है कि संस्कृत से अनभिज्ञ भी इस ग्रन्थ के अनुशीलन से अपनी रसपिपासा शान्त कर सकता है । यन्त्रस्थ

२१४ **सूक्तिशतकम्**—सं० हरिहर झा
मानव–जीवन के नित्य व्यवहारों में प्रयुक्त होने वाली सभी प्रकार की नीति-रीति से संबंधित संस्कृत सुभाषित श्लोकों का यह मनोहर संग्रह है
१–२ भाग १–५०

२१५ **सूक्तिसंग्रहः** । श्रीराक्षसकविकृतः । 'प्राज्ञविनोदिनी' व्याख्या संवलितः ०–२०

२१६ **सूर्यशतकम्** । 'कला' हिन्दी टीका विस्तृत भूमिकादि सहित ।
अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएं आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं । विचार पूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से संबन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है । २–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२१७ **सौन्दरानन्दः** । अश्वघोषकृत । मूल संस्कृत और हिंदी अनुवाद संपूर्ण ३-००

*२१८ **हरिचरितम्** । परमेश्वरकृतम् । सटीक नेट ७-५०

२१९ **हर्षचरितसारः** । सं० हरिहर झा

महाकवि बाणरचित हर्षचरित के कथांश का सारभाग इस पुस्तक में अधिकतर उपशीर्षकों का प्रयोग कथा को अधिक स्पष्ट किए रहता है। मूल ग्रंथ का क्लिष्ट गद्यांश इसमें नहीं लिया गया। गद्य-साहित्य के विषय में सब आवश्यक जानकारी विचारपूर्ण भूमिका से ही प्राप्त हो जाती है १-५०

२२० **हिन्दी हर्षचरित**–(शोधपूर्ण परिवर्द्धित द्वितीय-संस्करण) 'सङ्केत' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिकादि सहित। व्या० आचार्य जगन्नाथ पाठक।

संस्कृत व्याख्या तथा विषयानुरूप सरल हिन्दी व्याख्या के साथ यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण की हिन्दी व्याख्या मात्र को यदि आद्योपान्त पढ़ा जाय तो यह अपने आप में इतनी पूर्ण है कि स्वतंत्र मौलिक रचना प्रतीत होगी। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका भी महाकवि का वंशवर्णन, कवि की आत्मकथा, पात्रालोचन, कादम्बरी का परिचय और उससे तुलना, कथासार, आलोचना आदि विविध परीक्षोपयोगी ज्ञातव्य विषयों से विभूषित है। ७-००

२२१ **हर्षचरितम्** । (पञ्चम उच्छ्वासः) 'सुधा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या-सहित। व्या० श्री शिवनाथ शर्मा पाण्डेय

इस उच्छ्वास के प्रत्येक अनुच्छेद की पृथक्-पृथक् व्याख्या की गयी है। हिन्दी व्याख्या में भी ध्यान रखा गया है कि अनुवाद सरल एवं स्पष्ट हो तथा अनुच्छेद का वास्तविक स्वरूप लुप्त न होने पावे। 'विशेष' में व्याकरण एवं कोष-सम्बन्धी विषयों का तथा 'टिप्पणी' में सांस्कृतिक विषयों का भी निर्देश है। सुविशद भूमिका में परीक्षोपयोगी सभी शास्त्रीय विषयों पर व्यापक विवेचन है। ३-००

२२२ **हर्षचरितम्** । (प्रथम उच्छ्वासः) जयश्री-कथाभट्टी संस्कृत हिन्दी टीका सहित। [ह. २६] समाप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२३ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्** । सायणभाष्यसहित 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्याविमर्शोपेतम् । व्याख्याकारः उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

इसमें मूल के बाद उसका सरल हिन्दी अनुवाद, तब सायणभाष्य और फिर विमर्शात्मक टिप्पणी भी दी गई है। ग्रंथ का कोई भी अंश ऐसा नहीं छूटा जिस पर विवेचनात्मक प्रकाश न डाला गया हो। विशद भूमिका में शास्त्रीय विषयों तथा ग्रंथ से सम्बन्धित पाण्डित्यपूर्ण विचार प्रदर्शित किए गए हैं। २-५०

२२४ **हितोपदेशः** । विषमस्थलटिप्पणोपेतः । सम्पूर्ण १-००

२२५ **हितोपदेश-मित्रलाभः** (अश्लीलांशवर्जित : वाराणसी तथा दरभंगा उभय सं० विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा पाठ्य-स्वीकृत) सान्वय 'किरणावली' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।

प्रथमा परीक्षा के कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, संस्कृत व्याख्या, सरलभावार्थ तथा हिन्दी-भाषार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं। सबसे बड़ी विशेषता प्रस्तुत संस्करण की यह है कि ग्रन्थारंभ में प्रत्येक कथा का परीक्षोपयोगी कथासार भी दे दिया गया है। [हृ. ७७] एकादश संस्करण १-००

२२६ **हितोपदेश-सुहृद्भेदः** । सान्वय 'किरणावली' व्याख्योपेतः । अन्वय, संस्कृत मूल के प्रतिपद का संस्कृत पर्याय और हिन्दी पढ़ लेने के बाद बालकों को कोई ग्रन्थांश अविदित नहीं रह पावेगा। यह संस्करण सब प्रकार से छात्रोपयोगी है। १-२५

२२७ **हितोपदेशः** । सान्वय 'किरणावली' हिन्दी टीका सहित ।

प्रस्तुत संस्करण, शब्दार्थ पद्यान्वय के साथ ही हिन्दी के अत्यन्त स्पष्ट एवं मधुर अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है ताकि विद्यार्थियों को सरलता से समझ में आ जाय। प्रत्येक अंश के प्रारम्भ में पूरी कथावस्तु भी संक्षेप में दी गई है। अभी तक इस पुस्तक का इतना सुन्दर संस्करण दुर्लभ था। सम्पूर्ण ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२८ **हिन्दी-काव्य-मञ्जूषा** । ले० रमाशंकर पाण्डेय।
(वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)
इसमें चन्दबरदायी से दिनकर तक २६ कवियों की रचनाओं के 'राष्ट्र शक्ति के विकास में योगप्रद' अंशों का संकलन किया गया है। प्रति पृष्ठ पर पर्यायबोधक विस्तृत टिप्पणी दी गई है तथा अन्त में प्रत्येक कवि का वृत्तबोधक संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। शैली और कौशल की दृष्टि से यह हिन्दी साहित्य की सर्वोत्तम परिचायिका है ३-००

229 HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS:
By Dr. Rajbali Pandeya. M. A., D. Litt.
(Chow. Sans. Studies Vol. XXIII) 15-00

नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः

१ **अभिषेकनाटकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्या०—आचार्य रामचन्द्रमिश्र
भास विरचित इस नाटक की कथा श्रीरामाभिषेक पर आधारित है। प्रतिपद-बोधिनी इसकी संस्कृत-हिन्दी दोनों व्याख्याएँ भाव, भाषा आदि की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध हैं। भूमिका में नाट्यशास्त्रीय विषय सुसंगृहीत हैं। २-५०

२ **अभिनयदर्पणम्** । आचार्य नंदिकेश्वर रचित ।
आलोचनात्मक परिचय तथा स्वतन्त्र हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

३ **अमृतोदय-नाटकम्** । म. म. श्री गोकुलनाथ उपाध्याय विरचित । आचार्य रामचन्द्रमिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक विस्तृत भूमिकादि सहित ।
मुक्तितत्त्व का प्रतिपादक तथा न्यायवैशेषिक का समर्थक यह संस्कृत नाटक प्रत्येक दृष्टि से अधिक क्लिष्ट है। अतः संस्कृत नाटकों के सिद्ध-हस्त व्याख्याकार ने अपनी सरल सुबोध संस्कृत हिन्दी व्याख्याओं द्वारा इसके दुरुहांश को सर्वथा दूर कर दिया है। संस्कृत व्याख्या से मूल का प्रतिपद बड़ी सरलता पूर्वक लगाया जा सकता है। समीक्षण तथा परीक्षोपयोगी नोट्स आदि विषयों से सुसज्जित अभिनव सर्वश्रेष्ठ संस्करण ५-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ **अनर्घराघवम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित व्याख्या के साथ यह नाटक प्रकाशित किया गया है। सरलता इस व्याख्या की प्रमुख विशेषता है। भूमिका में ग्रन्थकर्त्ता का विस्तृत जीवनवृत्त, उनके ग्रन्थ, उनका शास्त्र-पाण्डित्य, उनका कवित्व, फिर कथासार, कथा का आधार, पात्रालोचन आदि तथा परिशिष्ट में नोट्स, नाटकीय विषय, लक्षण सहित छन्द, सूक्तियाँ आदि उपयोगी विषय दिए गए हैं। ८-००

५ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तेलङ्ग सम्पादित विस्तृत प्रस्तावना नोट्स सहित। व्याख्या में प्रतिशब्द—पर्याय, कोष, व्याकरण, समास, अलङ्कार, सरल भाषार्थ आदि से ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सरलता से व्यक्त किया गया है। हिन्दी में इस प्रकार का सुविस्तृत नोट्स, समालोचना और पात्रालोचन सहित कोई भी संस्करण नहीं है। संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी के परीक्षार्थी छात्रों के लिए इसकी शाकुन्तल समीक्षा और नोट्स ही पर्याप्त है। ६-००

6 **ABHIJNANA ŚAKUNTAL : Text with Literal English Translation and Notes By Monier Williams.**
(Chow. Sans. Studies Vol. XII) 15-00

७ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (चतुर्थ अङ्क) श्री देवदत्त शास्त्री
विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुर्थ अङ्क की ऐसी अनुशीलनान्वयार्थ संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है कि परीक्षार्थी स्वयं इस ग्रन्थ का अनुशीलन कर सकेंगे। लगभग ४० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में इस अंक का समीक्षात्मक विवेचन भी किया गया है। १-००

८ **अविमारकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र-विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं में विषयानुकूल लालित्य तथा अधिक सरलता है। विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में नाट्यशास्त्रीय तथा सम्बद्ध ऐतिहासिक जानकारी का कोई अंश नहीं छूटने पाया है ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ **आश्चर्यचूड़ामणिः** । शक्तिभद्र विरचित । श्रीरमाकान्त झा कृत 'रमा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित ४-५०

१० **उत्तररामचरितम्** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम् प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तेलंग एम. ए. लिखित विशेष विवरण, 'नोट्स' समलंकृत इसकी सुविस्तृत सरल व्याख्या में प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन है जो किसी भी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है। यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी कालेज के छात्रों के लिए समानरूप से उपयोगी है। चतुर्थ संस्करण ४-५०

११ **कर्णभारम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्य पेतम् । आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित दोनों व्याख्याएँ बड़ी सरल और ग्रन्थ के भावानुरूप हैं। सुविशद भूमिका में समस्त नाटकीय विषय, कवि का इतिवृत्त, रचना एवं पात्रों की विशेषताएँ आदि वर्णित हैं। १-२५

*१२ **उषारागोदया** । (नाटिका) श्री रुद्रचन्द्रदेव प्रणीता । सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल, शास्त्री ३-००

१३ **ऊरुभङ्गम्** । महाकवि भास विरचित । 'प्रकाश' नामक संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, आलोचना, कथासार सहित १-५०

१४ **कुन्दमाला** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित यन्त्रस्थ

15 COMIC ELEMENT IN SAṀSKṚTA DRAMA by Dr. L. R. Singh. In the Press.

१६ **कृषकाणां नागपाशः** (रूपकम्) । इस पुस्तक की मौलिकता ने ग्रामीणपृष्ठभूमि पर आधृत रूपक के पात्रों में जान डाल दी है। सर्जन होते ही यह रूपक इलाहाबाद रेडियो स्टेशन के रंगमंच से पुरस्कृत हो चुका है। ०-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७ **कर्पूरमञ्जरी ।** 'मकरन्द' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या सहित ।
इस संस्करण में मूल (प्राकृत) के साथ ही साथ संस्कृत छाया को बैठाकर प्रतिपद की सविमर्श संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है। इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना, कथासार तथा विविध प्रकार के परिशिष्ट तो आधुनिक परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय हैं ३-००

*१८ **काश्मीरसन्धानसमुद्यमः** (रूपकम्) निपीजे भीमभट्ट कृतः । नेट १-००

१९ **कौमुदीमहोत्सवनाटकम् ।** विज्जिका विरचित । हिन्दी व्याख्या विस्तृत भूमिकादि सहित । यन्त्रस्थ

२० **चण्डकौशिकम् ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
संस्कृत-हिन्दी व्याख्या में जन साधारण के अनुकूल भाषा-प्रयोग आदि में सरलता का ध्यान रखा गया है। विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्टादि में इतिहास, समीक्षा, लक्षण, आलोचन आदि विविध उपयोगी विषय दिए गए हैं। सभी के लिये यह सब दृष्टि से उपयोगी संस्करण है। ४-००

२१ **चन्द्रकला नाटिका ।** 'प्रभावली' हिन्दी व्याख्या सहित
व्याख्याकारः श्रीबाबूलाल शुक्ल शास्त्री ।
नाट्यशास्त्र के अधिकारी विद्वान् श्री शुक्ल जी द्वारा रचित हिन्दी व्याख्या के साथ यह इसका सर्वप्रथम संस्करण है। व्याख्या विषयानुकूल मुहावरेदार भाषा में है, पढ़ने पर अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है, फिर भी मूल से कहीं भी संग-विच्युति नहीं है। विस्तृत भूमिका पद्यानुक्रमणिकादि सहित। यन्त्रस्थ

२२ **चारुदत्तम् ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
व्याख्या अपने नाम के अनुरूप आधुनिक ढंग की है। इसकी आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका में पात्रालोचन, व्यवस्थित कथासार आदि के साथ अन्य उपादेय विषय भी हैं। २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **चैतन्यचन्द्रोदयम्** । हिन्दीव्याख्योपेतम् । व्याख्याकारः आचार्य पं० रामचन्द्रमिश्र ।

संस्कृत साहित्य के इस अलौकिक नाटक में वेदान्तादि-गम्य ब्रह्मतत्त्व और उसकी प्राप्ति के विषय में अति सरस विवेचन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है । 'वहुजनहिताय' हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित होने से हिन्दी मात्र पठित व्यक्ति भी इससे लाभ उठा सकते हैं । भूमिकानुक्रमणिकादिसहित । ७–००

*२४ **जीवानन्दम्** । आनन्दरायमखिकृत । संस्कृत व्याख्या सहित । नेट ३०–००

25 **DRAMAS or A COMPLETE ACCOUNT OF THE DRAMATIC LITERATURE OF THE HINDUS :** By H. H. Wilson. (Chow. Sans. Studies Vol. XVIII) 4–00

२६ **दूतघटोत्कचम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम् ।

इस एकांकी की प्रथम बार संस्कृत-हिन्दी व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयी हैं । छात्रों के लिये विचारपूर्ण भूमिका मात्र ही पर्याप्त है । १–२५

२७ **दूतवाक्यम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

अत्यन्त वोधगम्य हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या तथा सूक्ष्म विचारपूर्वक विशद आलोचनात्मक भूमिका से युक्त अपूर्व संस्करण १–२५

२८ **दूताङ्गदं-नाटकम्** । 'दूताङ्गदचन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्

ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि के ऐतिहासिक परिचय, संस्कृत-हिन्दी कथासार आदि भी दिये गये हैं । १–००

२९ **नाटक-चन्द्रिका** । आचार्य श्री रूपगोस्वामी प्रणीत । सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित ।

वैष्णव आचार्य श्री रूपगोस्वामी की यह नाट्यकृति सर्वप्रथम मूल, सुबोध हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी, विचारपूर्ण आमुख तथा परिशिष्ट आदि के साथ प्रकाशित की गई है । इसमें उदाहरण भी वैष्णव रचनाओं से ही संगृहीत हैं । ७–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३० **नाटकलक्षणरत्नकोशः।** आचार्य श्रीसागरनन्दी प्रणीत। हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
यह इसका परिशुद्ध एवं व्याख्या सहित सर्वप्रथम संस्करण है जिसमें टिप्पणी-भूमिका आदि संलग्न कर सर्वजनोपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है। शीघ्र प्रकाशित होगा

३१ **नागानन्दनाटकम्।** 'भावार्थदीपिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम। व्याख्याकार–आचार्य बलदेव उपाध्याय।
उपाध्याय जी की सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिका एवं छात्रोपयोगी विविध परिशिष्ट से अलंकृत सर्वांगपूर्ण यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के सभी छात्रों के लिये समान रूप से उपादेय है। ३–००

३२ **नाट्यशास्त्रम्।** (१-२ अध्याय विश्वविद्यालय पाठ्य-स्वीकृत)
इस संस्करण की 'मयूख' नामक हिन्दी टीका में भरतमुनि के गूढ़ाशयों को वहुत ही सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। ०–६५

३३ **नाट्यशास्त्रम्।** (सचित्रः शोधपूर्ण संस्करण) 'प्रदीप' हिन्दीव्याख्या सहित। व्याख्याकार—श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
इसकी सारगर्भित सरल सुबोध व्याख्या में भ्रामक मत-मतान्तरों के निरासपूर्वक इस ढंग से विषय का यथार्थ स्वरूप प्रतिपादित किया गया है कि एक बार पढ़ लेने मात्र से हृदय पटल पर विषय अंकित-सा हो जाता है। सुविस्तृत भूमिका, पाठान्तर आदि से सुसज्जित प्रेस में

*३४ **नवग्रहचरितम्।** (समवकारः) श्री घनश्याम प्रणीतम्। भूमिका टिप्पणी आदि से युक्त। श्रीबाबूलाल शुक्ल शास्त्री १–८७

३५ **नारीजागरण-नाटकम्।** लेखक–पं० गोपाल शास्त्री दर्शनकेसरी शीघ्र प्राप्त होगा

३६ **पञ्चरात्रम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या ने मणि-काञ्चन संयोग कर दिया है। इसकी विस्तृत भूमिका में कथावस्तु से सम्बद्ध सभी पक्षों की विस्तृत विवेचना करके परिशिष्ट में नोट्स, तथा नाटकीय विषयों पर पर्याप्त विवेचन, प्रस्तुत किया गया है। २–२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३७ **पाणिनीयनाटकम् ।** लेखक—गोपालशास्त्री दर्शनकेसरी

राजस्थान के राज्यपाल डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, अहमदाबाद के पण्डितराज स्वामी भगवदाचार्य जी, महावैयाकरण आचार्य ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु तथा डॉ० मंगलदेव शास्त्री प्रभृति उद्भट विद्वानों की सम्मतियों से विभूषित ।

'त्रिमुनि व्याकरणम्' इस नाटक की भित्ति है । महर्षि पाणिनि के इतिवृत्त के माध्यम से व्याकरण शास्त्र का संक्षिप्त इतिहास ही इस नाटक द्वारा रंगमंच पर दर्शाया गया है । २-००

३८ **प्रसन्नराघवम् ।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

आचार्य श्री शेषराज शर्मा जी ने प्रतिपद की व्याख्या, समास-विग्रह, कोश, अलंकार आदि देकर इस संस्करण को अधिक सरल बना दिया है । इसकी समालोचनात्मक हिन्दी भूमिका, नोट्स तथा आधुनिक विविध परिशिष्ट तो परीक्षार्थी के लिए अधिक उपादेय हैं । ४-५०

३९ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् ।** सविमर्श 'प्रकाश' व्याख्योपेतम् ।

संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ आलोचनात्मक टिप्पणी-नोट्स, विशद भूमिका हो जाने से यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है । २-००

४० **प्रतिमानाटकम् ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

आचार्य रामचन्द्र मिश्र कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या युक्त यह नवीन संस्करण संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी छात्रों के लिये समान रूप से उपयोगी है । डॉ० सत्यव्रत सिंह सम्पादित इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना तथा नोट्स ही परीक्षार्थी के लिए पर्याप्त है २-५०

४१ **प्रबोधचन्द्रोदयनाटकम् ।** 'प्रकाश' टीकोपेतम् ।

आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी विरचित सरल, सुबोध संस्कृत तथा सुललित हिन्दी टीका एवं नाटक समीक्षा, नाटककार की जीवनी, इतिवृत्त, नोट्स, नाटकीय विषय आदि से सुसज्जित यह संस्करण सर्वोत्तम है २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४२ **प्रियदर्शिका ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता ।
आधुनिक टीकाकारों में आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी का नाम सर्वोपरि है। इस नाटक को भी आपने व्याख्या, विग्रह, समास, अलङ्कार, हिन्दी अनुवाद, नोट्स, आदि से सर्वथा अलंकृत कर दिया है। २-००

४३ **बालचरितम् ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्
सामान्य विद्यार्थियों का बुद्धिवैभव देखकर ही इसकी संस्कृत व हिन्दी टीकाएँ रची गई हैं जिनसे प्रतिपद का अर्थस्पष्ट हो जाता है। समस्त ज्ञातव्य नाट्यशास्त्रीय विषयों का ज्ञान विशद भूमिका मात्र से ही हो जाता है। २-५०

*४४ **भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप।** राय गोविन्दचन्द ५-००

४५ **भासनाटकचक्रम् ।** आचार्य बलदेव उपाध्याय संम्पादित 'महाकवि भास' नामक सुविस्तृत भूमिकादि विभूषित प्रकाश संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित । (शोधपूर्ण संस्करण)
इस संस्करण में भास के १३ नाटकों में से प्रत्येक की अतिसरल संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याएँ की गई हैं जिनसे ग्रन्थ का कोई शब्द अविदित नहीं रह जाता। उपाध्याय जी की शताधिक पृष्ठों की शोधपूर्ण भूमिका में भास संबन्धी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इतनी अधिक उपयोगी सामग्री के साथ भास के सभी नाटकों का यह सम्मिलित संस्करण प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है। छात्रों, अध्यापकों तथा पाठकों के लिए यह नितान्त उपयोगी संस्करण है। १-२ भाग २२-००

*४६ **भैरवविलासः** (प्रेक्षणक) ब्रह्मत्र-वैद्यनाथ प्रणीतः ।
सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री ३-००

४७ **मत्तविलास प्रहसनम् ।** श्री महेन्द्र विक्रमवर्म विरचित
श्री कपिलदेव गिरि कृत 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित १-२५

४८ **मध्यमव्यायोगः ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्
भास विरचित इस संस्कृत एकांकी नाटक की संस्कृत और हिन्दी दोनों व्याख्याएँ ललित भाषा में की गई हैं। भूमिका में सभी नाट्यशास्त्रीय एवं परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी विषयों का समावेश है। १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४९ **मलयजाकल्याणम्** । (नाटिका) वीरराघव प्रणीतम् ।
सम्पादक श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री ३-२५

५० **महावीरचरितम्** । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
संस्कृत व्याख्या में प्रतिपद का पर्याय, समास, कोश, अलङ्कार आदि देकर आधुनिक प्रांजल राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। साथ ही परिशिष्ट में हिन्दी नोट्स, नाटकीय विषय आदि देकर तथा ग्रन्थ के आरम्भ में हिन्दी समालोचना, महाकवि की जींवनी, कथासार और गवेषणापूर्ण पात्रालोचन से सुसज्जित कर इस संस्करण को मौलिकता प्रदान की गयी है। ४-००

५१ **मुद्राराक्षस-नाटकम्** । 'शशिकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या
डॉ० सत्यव्रत सिंह विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या तथा आधुनिक टिप्पणी द्वारा इस नाटक की विविध विशेषताओं की अभिव्यक्ति की गयी है। वस्तुतः यह टीका आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से लिखी हुई होने के कारण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के छात्रों और साहित्यप्रेमियों के लिये समान रूप से उपयोगी है। ३-२५

५२ **मृच्छकटिकम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् ।
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के यशस्वी प्रोफेसर पं० कान्तानाथ शास्त्री तेलंग विरचित हिन्दी समालोचना, नोट्स आदि से सुसंस्कृत इसकी आधुनिक संस्कृत-हिन्दी टीका के सामने पूर्व प्रकाशित सभी टीकाएं नगण्य हो चुकी हैं। प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन किसी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है। ६-००

५३ **मालतीमाधवं नाटकम्** । 'चन्द्रकला' टीकोपेतम् ।
महाकवि भवभूति के सर्वश्रेष्ठ, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी सभी परीक्षाओं में पाठ्य स्वीकृत इस ग्रन्थ की यह सर्वांगपूर्ण संस्कृत-हिन्दी टीका तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी में ग्रन्थ की आधुनिक समालोचना, महाकवि की जीवनी, कथासार, नोट्स आदि अत्यन्त उपादेय है। ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५४ **मालविकाग्निमित्रम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने नाटकीय ढंग पर इसकी ऐसी सरल टीका लिखी है कि परीक्षार्थी स्वयं भी इस ग्रन्थ का अभ्यास कर सकते हैं ३-५०

५५ **रत्नावली-नाटिका** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता ।
व्याख्याकार आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने इस संस्करण के मूल के प्रत्येक शब्द का पृथक् पृथक् पर्याय, कोश, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि देकर ग्रन्थ के अन्त में सरल राष्ट्रभाषा में विविध परिशिष्ट तथा आदि में समालोचनात्मक प्रस्तावना, कवि की जीवनी, संक्षिप्त कथासार आदि विषयों से ग्रन्थ को पूर्ण सुसज्जित कर दिया गया है ३-००

५६ **ललितमाधवम्** । श्रीरूपगोस्वामिप्रणीत । नारायणप्रणीत-संस्कृतटीकासहितम् । सम्पादकः—श्रीबाबूलालशुक्ल शास्त्री ।
नारायण प्रणीत संस्कृत टीका के साथ श्री शुक्ल जी द्वारा संपादित समीक्षणात्मक टिप्पणियों, विस्तृत पाण्डित्यपूर्ण प्रस्तावना तथा परिशिष्ट आदि के सहित इस उत्कृष्ट अति प्राचीन ग्रन्थ का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है ।

57 LAWS AND PRACTICE OF SANSKRIT DRAMA :
By Dr. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B.
Vol. I. (Chow. Sans. Studies Vol. XIV) 25-00

५८ **विक्रमोर्वशीयम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम् ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित सरल सुबोध टीकायें छात्रों में विशेष सम्मानित हो चुकी हैं । इस ग्रन्थ को भी आपने विस्तृत हिन्दी समालोचनादि से सुसज्जित कर ऐसा बना दिया है कि अंग्रेजी-हिन्दी के छात्रों को तो उसीसे पूर्ण ज्ञान हो जायगा । ३-५०

५९ **विद्धशालभञ्जिका** । राजशेखर विरचित । सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक विस्तृत भूमिकादि सहित ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६० **लटकमेलकम्** । (प्रहसनम्) 'प्रकाश' व्याख्योपेतम्
हिन्दी व्याख्या से इसकी व्यापकता और बढ़ गई है। भूमिका में साहित्य-शास्त्रीय तथा ऐतिहासिक परिपार्श्व में नाटक का आलोचन, कथावस्तु, तात्कालिक सामाजिक रीति-नीति आदि पर उत्तम विचार है। १—२५

*६१ **वीरप्रतापनाटकम्** । म० म० मथुराप्रसाद दीक्षित विरचित । ३-००

*६२ **वीरपृथ्वीराजविजयनाटकम्** । म. म. मथुराप्रसाद दीक्षित १-२५

६३ **वेणीसंहारनाटकम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
इसमें टीका के साथ-साथ पात्र के लक्षण तथा नाटक, चम्पू, काव्य और महाकाव्य आदि के लक्षण भी जगह-जगह दे दिये गये हैं तथा विस्तृत 'भूमिका' में सम्पूर्ण ग्रन्थ की समालोचना एवं सभी अङ्कों का सुविस्तृत हिन्दी 'कथासार' भी लिख दिया गया है, जिससे हिन्दी, अंगरेजी के छात्रों को भी इस ग्रन्थ का कथानक समझने में बड़ी सुगमता हो गई है। परिष्कृत द्वितीय संस्करण [ह. १२१] ३-५०

*६४ **संकल्पसूर्योदयनाटकम्** । वेङ्कटनाथकृतम् । प्रभाविलास-प्रभावली व्याख्याद्वयसहितम् । १-२ भाग नेट ४५-००

६५ **सत्यहरिश्चन्द्रनाटक** । (छात्र-संस्करण) समालोचना, टिप्पणी सहित । शुभाशंसक—पं० बाबूराव विष्णुपराड़कर ०-६५

६६ **सुभद्राहरणम्** । सान्वय 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्योपेतम् ।
श्रीगदित महाभारतीय रोचक आख्यान के आधार पर रचा गया यह नाटक अब सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। १-२५

६७ **स्वप्नवासवदत्तम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पं० कान्तानाथ शास्त्री तेलंग सम्पादित समालोचनात्मक हिन्दी प्रस्तावना से सुसज्जित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण छात्रों के लिये अधिक उपादेय है। अंग्रेजी छात्रों के लिये तो शास्त्री जी की समालोचनात्मक भूमिका ही परीक्षा के लिये पर्याप्त है। २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६८ **सौगन्धिकाहरणम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम्
महाभारतीय आख्यान पर आधारित यह संस्कृत नाटक हिन्दी व्याख्या सहित प्रस्तुत है। भूमिका में कविपरिचय, कथावस्तु, पात्रालोचन तथा और भी शास्त्रीय विषयों पर विचार है। २-००

*६९ **संस्कृत महाकवियों के सम्बन्ध में प्रचलित लोकोक्तियाँ : एक विश्लेषण** । श्री पं० रामचन्द्र झा
प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत के महाकवियों के संबन्ध में प्रचलित यथाप्राप्त अधिकतम संस्कृत सूक्तियों का अलग-अलग निबन्ध के रूप में युक्तिसंगत विवेचन किया गया है। १-५०

७० **हनुमन्नाटकम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित यन्त्रस्थ

७१ **हास्यार्णवप्रहसनम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित ।
प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ विषयानुकूल सरल हिन्दी भाषा के माध्यम से संस्कृत साहित्य का हास्यरस प्रस्तुत किया गया है। २-५०

७२ **हिन्दी के पौराणिक नाटक** । डॉ० देवर्षि सनाढ्य
संस्कृत, हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परंपरा का इतिवृत्त इस शोध ग्रंथ में उपस्थित किया गया है। १०-००

❁संगीत-ग्रन्थाः

१ अप्रकाशित राग। १-३ भाग ६—००
२ आवाज सुरीली कैसे करें। ३—५०
३ आसावरी थाट अंक। ३—००
४ कत्थक नटवरीनृत्य। ३—५०
५ कथक नृत्य। प्रकाशनारायण २—५०
६ कथक नृत्य। लक्ष्मीनारायण ८—००
७ कथकलि नृत्यकला। ३—००
८ कल्याण थाट अंक। ३—००
९ काफी थाट अंक। ३—००
१० क्रमिकपुस्तकमालिका १-६ भाग ५९—२५
११ खमाज थाट अंक। ३—००
१२ ठुमरी अंक। ३—००
१३ ठुमरी गायकी। ३—५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४ ताल अङ्क। ६—००
१५ तालप्रकाश। ५—००
१६ तालमार्तण्ड। ६—००
१७ तोड़ी थाट अंक। ३—००
१८ **दत्तिलम्।** आचार्य दत्तिल विरचित। संगीतशास्त्र का यह प्राचीनतम ग्रन्थ अधिक श्रम से प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी व्याख्याकार श्रीदेवदत्त शास्त्री यन्त्रस्थ
१९ ध्वनि और संगीत। ४—५०
२० नलदवदन्तीरास। महीराजकृत। भोगीलाल जे० सांदेसरा संपादित ४—२५
२१ नृत्य अंक। ३—५०
२२ नृत्य भारती। प्रथम भाग ४—००
२३ पूर्वी थाट अंक। ३—००
२४ बाल संगीत शिक्षा। १-३ भाग ३—००
२५ बाँसरी बज रही। रुतु सड़ितना। मुण्डा लोकगीत ८—००
२६ बेलाविज्ञान। ५—००
२७ बैंजोमास्टर। २—००
२८ भरत का संगीत सिद्धान्त। ६—५०
२९ भातखण्डे संगीत पाठमाला। प्रथम भाग १—५०
३० भातखण्डे संगीतशास्त्र। १-४ भाग ३६—००
३१ भातखण्डे स्मृति अंक। १—२५
३२ भारतीय संगीत का इतिहास १२-५०

३३ **भारतीय संगीत का इतिहास।**

लें० श्री शरदचन्द्रश्रीधर परांजपे।

ऐतिहासिक दृष्टि से संगीत में शोधकार्य का फल प्रस्तुत ग्रंथ है। यह हिन्दी साहित्य में अपने विषय का पहला ही ग्रन्थ है। वैदिक काल से आरम्भ कर गुप्तकाल तक का इतिहास बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से चिन्तित तथा विद्वत्तापूर्ण ढंग से सप्रमाण वर्णित है। अपने विषय का पहला ग्रन्थ। यन्त्रस्थ

३४ भैरव अंक। ३—००
३५ भैरव थाट अंक। ३—००
३६ मणीपुरी नृत्य। १—००
३७ महिला हारमोनियमगाइड। १—५०
३८ मारवा थाट अंक। ३—००
३९ मारिफुन्न ग़मात। १-३ भाग १५—५०
४० मृदंग तबला प्रभाकर। १-२ भाग ५—५०
४१ मृदङ्गसागर। ५—००
४२ मेलरागमालिका। महावैद्यनाथ शिव कृत ५—००
४३ म्यूजिक मास्टर। २—५०
४४ रविशंकर के आरकेस्ट्रा। ६—००
४५ रवीन्द्र संगीत। ३—५०
४६ राग अंक। ४—००
४७ राग अने रास। ओंकारनाथ ठाकुर (गुजराती) १—७५
४८ रागनिर्णय। २—५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४९ **रागपरिचय** । १-३ भाग ७—००
५० **राग विज्ञान** । १-७ भाग २८—००
५१ **रागविबोधः** । सोमनाथ कृत स्वकृत विवेक व्याख्या सहित १५—००
५२ **राष्ट्रिय संगीत अंक** । ३—५०
५३ **वाद्यशास्त्र** । २—५०
५४ **वाद्य संगीत अंक** । ३—५०
५५ **वितत वाद्य शिक्षा** । प्रथम सोपान १—२५
५६ **विलावल थाट अंक** ३—००
५७ **वीणा लक्षण वीणा प्रपथक** । जे० एस० पादे संपादित ३—५०
५८ **श्रीरामकथा मंदाकिनी** । स्वरकार श्रीमती गोदावरी वाई साठे ३—००
५९ **संगीत अर्चना** । ६—००
६० **संगीत कादम्बिनी** । ६—००
६१ **संगीत किशोर** । १—७५
६२ **संगीत चूड़ामणि** । जगदेक मल्ल कृत ६—५०
६३ **संगीतदर्पणः** । चतुरदामोदरप्रणीत ३—३७
६४ **संगीतदर्पणः** । हिन्दी टीका सहित २—५०
६५ **संगीत निवन्धावली** । प्रथम भाग २—५०
६६ **संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन** । ३—००
६७ **संगीतपारिजातः** । हिन्दी टीका सहित ५—००
६८ **संगीत निवन्धमाला** । २—२५
६९ **संगीत प्रश्नपञ्जिका** । ३—००
७० **संगीतमालिका** । महम्मदशाहकृत । जे० वी० चौधरी सम्पादित ५—००
७१ **संगीतरत्नाकरः** । शार्ङ्गदेव कृत । चतुरकल्लिनाथ सिंह भूपालकृत व्याख्याद्वय सहित १-४ भाग ९५—००
७२ **संगीत रहस्य** । श्री पदवन्द्यो-पाध्याय २—२५
७३ **संगीतराजः** (पाठ्यरत्नप्रवेश) । कालसेन महारानाकुम्भ कृत । कुन्हनराजा सम्पादित प्रथम भाग ३—००
७४ **संगीतराज** । नृपति कुम्भकर्ण प्रणीत । संपादिका-डॉ० प्रेमलता शर्मा । प्रथम खण्ड ४०—००
७५ **संगीतलहरी** । संग्रहकर्त्री— देवी मेहता १—००
७६ **संगीतविशारद** । ६—००
७७ **संगीत शास्त्र** । प्रथम भाग १—२५
७८ **संगीत शास्त्र** । के० वासुदेव शास्त्री ६—५०
७९ **संगीतशास्त्र दर्पण** । १-२ भाग ५—००
८० **संगीतशास्त्र परिचय** । १-२ भाग १—२५
८१ **संगीत शिक्षा** । २—५०
८२ **संगीतशास्त्र मीमांसा** । ३—५०
८३ **संगीतसागर** । ७—००
८४ **संगीतसीकर** । ६—००
८५ **संगीत सुधा सागर** । २—००
८६ **संगीतसोपान** । ३—००
८७ **संगीतोपनिषदसारोद्धार** । वचनाचार्य सुधाकलश विरचित १२—००
८८ **सन्त संगीत अंक** । ३—५०
८९ **सहगल संगीत** । ३—००
९० **सारेगम** । २—५०
९१ **सितारसुबोधिनी** । पांचवां भाग ४—००
९२ **संग्रहचूड़ामणि** । गोविन्दाचार्यकृत १५—००
९३ **सितार मार्ग** । १-३ भाग १५—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९४ सितार मालिका । ६—००
९५ सूर संगीत । २ भाग ४—००
९६ स्वरमेलकलानिधिः । हिन्दी टीका सहित १—२५
९७ हमारे संगीत रत्न । १५—००
९८ हरिदास अंक । १—२५
९९ हाई स्कूल संगीत शास्त्र । २—००

•100 Evolution of Songs & Lives of Great Musicians. 3—37
101 UNIVERSAL HISTORY OF MUSIC by S. M. Tagore. (Chow. Sans. Studies. Vol. XXXI) 20-00
102 HINDU MUSIC FROM VARIOUS AUTHORS : By Raja Sir Sourindro Mohun Tagore (Chow. Sans. Studies. Vol. XLIX) 25-00

नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **अपराध और दण्डशास्त्र** । श्री कौशलकुमार राय
यह विषय प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत है। इस पर हिन्दी में कुछ पुस्तकें निकली भी हैं परन्तु उनमें किसी में भी दण्डशास्त्र पर सामग्री उपलब्ध नहीं है। इसी कमी की पूर्ति के लिए इस पुस्तक की रचना हुई है। ८-००

* २ **अभिलषितार्थचिन्तामणिः** । सोमेश्वरदेवकृत । नेट २-५०

• 3 Indian Cameralism by K. V. Rangaswamy Aiyangar Nett. 12—00

४ **कथासंवर्तिका** (बालोपयोगी मनोरम कथानक संग्रह)
सन्धिविरहित अति सरल तथा सारगर्भित संस्कृत में लिखी कथाओं की यह पहली पुस्तक है। कहानियाँ अपने ढंग की निराली होती हुई भी नीति और शिक्षापूर्ण हैं। ०-७५

५ **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** (शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर)
रूपान्तरकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला ।
आलोचनात्मक मनोवैज्ञानिक विमर्श, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शब्द-कोश ऐतिहासिक प्रस्तावनादि सभी विषयों से विभुषित। १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ **हिन्दी कौटिलीय-अर्थशास्त्र** (उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत) व्याख्याकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला। प्रस्तुत संस्करण में इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो। मूल के प्रतिपद का अर्थ इसमें स्पष्टतया देखा जा सकता है। पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्यसंघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों, और उनके बाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त, का ऐतिहासिक दृष्टि से समीक्षण किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने वाले और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगल्स और लेनिन जैसे महान् राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों की भी समीक्षा विस्तार से की गई है। ग्रन्थान्त में लगभग ८०० प्रशासनिक शब्दों के अँगरेजी-हिन्दी पर्यायों का संयोजन भी किया गया है जिनसे कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण उत्तरप्रदेशीय शासन ने एक सहस्र रजत मुद्राओं से लेखक को पुरस्कृत किया है। तात्पर्य यह कि यह बृहत्संस्करण अब तक के प्रकाशित समस्त संस्करणों में अद्वितीय है। छात्र, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, शोधकर्ता—कोई भी हों, प्रस्तुत संस्करण में अपनी जिज्ञासा का समाधान अवश्य प्राप्त करेंगे। २०—००

7 KAUTILYA'S POLITICAL IDEAS AND INSTITUTIONS : By Prof. Radha Krishna Choudhary. In the Press

८ **चाणक्यसूत्रम्**। (प्रथमोऽध्यायः)। 'बालबोधिनी'-'सरला'-संस्कृत-हिन्दीटीकासहितम् [हृ. ८५] ०—४५

९ **चाणक्यसूत्रम्**। अनुवादक—वाचस्पति गैरोला अर्थशास्त्र पर चाणक्य के लगभग ५०० परमोपयोगी सूत्रों का व्यवस्थित भाषानुवाद। ०—७५

*१० **धर्मचौर्यरसायनम्**। गोपालयोगीन्द्रकृत नेट २—२५

*११ **नीतिवाक्यामृतम्**। सोमदेवसूरि विरचित। सव्याख्या ३—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१२ **नीतिशतकम्** । 'ललिता' 'बाला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। भर्तृहरि योगीन्द्र प्रणीत इस नीति शतक के १०० श्लोक बालक-बालिकाओं को अभ्यास करा देने से निश्चय ही उनका जीवनस्तर उन्नत हो जायगा। व्याख्या अत्यन्त सरल तथा सुबोध है। १–००

*१३ **नीतिमंजरी** । श्री द्याद्विवेदविरचिता सभाष्या । भूमिका टिप्पणी परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता । ४–५०

१४ **पञ्चतन्त्रम्** । (शोधपूर्ण संस्करण) 'सरला' हिन्दी व्याख्या सहित । (व्याख्याकार–श्री गोकुलदास गुप्त बी० ए०)

इस ग्रन्थ की जो अन्यान्य हिन्दी टीकाएँ प्रकाशित हुई हैं वे शोधपूर्ण नहीं होने से इस कोटि की हैं कि संस्कृत के ज्ञाता ही उनसे लाभान्वित हो सकते हैं। अतः आधुनिक ढंग की यह व्यवस्थित सरल हिन्दी टीका प्रस्तुत की गई है। इस टीका की यह विशेषता है कि केवल हिन्दी जानने वाले भी पंचतंत्र की कथाओं में आए हुए उपदेशों तथा नीतितत्त्वों से भली भाँति अवगत हो जायँगे। यह संस्करण विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं साहित्य तथा नीतिप्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

मित्रभेद (प्रथमतन्त्र) २–५०, **मित्रसम्प्राप्ति** (द्वितीयतन्त्र) १–००
काकोलूकीय (तृतीयतन्त्र) १–२५, **लब्धप्रणाशम्** (चतुर्थतन्त्र) ०–७५
अपरीक्षितकारक (पञ्चमतन्त्र) ०–७५, संपूर्ण अजिल्द ४–००
सजिल्द ५–००

१५ **पञ्चतन्त्रम्** । अश्लीलांश-वर्जितम् । विषमस्थलबोधिनीविवृति सहित बालकोपयोगी सर्वोत्तम पुस्तक । पञ्चमतन्त्र ०–१५ सम्पूर्ण २–००

१६ **पञ्चतन्त्र-मित्रभेदः** (प्रथमतन्त्रम्) अश्लीलांशवर्जित । 'बोधिनी' नामक विवृति सहित : ०–७५

१७ **पञ्चतन्त्रम्** (अपरीक्षितकारकम्) 'सुबोधिनी' व्याख्योपेतम् । अश्लीलांशवर्जित । संस्कृत-हिन्दी टीका, टिप्पणी, संक्षिप्त-कथा, शिक्षासंग्रह, विस्तृतभूमिका आदि विषयों से विभूषित ०–७५

*१८ **प्रियदर्शिप्रशस्तयः** Edicts of Asoka with Sanskrit and English translation. Nett. 12—00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९ **बार्हस्पत्य राज्य-व्यवस्था।** ले० डॉ० राघवेन्द्र वाजपेयी। राजनीति के प्रमुख आचार्य बृहस्पति ने राज्य-शासन तथा राज्य प्रबन्ध के लिये जिन विधि-विधानों का आदेश दिया है, उन पर पाण्डित्यपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत पुस्तक में दर्शनीय है। इससे वर्तमान भारतीय राज्य-व्यवस्था के गुण-दोषों पर अनजाने ही पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है। राजनीति के क्षेत्र में यह अभिनव ग्रन्थ है। १०-००

*२० **भारत राष्ट्र संघटना।** नेट २-००

२१ **भर्तृहरिशतकत्रयम्** (नीति-शृङ्गार-वैराग्य शतकम्)
हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित
महायोगी महाराज भर्तृहरि-रचित इन ग्रन्थरत्नों के श्लोकों का मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, तथा साथ में हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है। संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं। गद्य, एवं पद्य दोनों अनुवादों की भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा भावों के सर्वथा अनुकूल है। मूल्य प्रति शतक १-०० एकत्र तीनों शतक ३-००

२२ **राजनय के सिद्धान्त और व्यवहार।** श्रीमती कृष्णाराय। इस पुस्तक में प्रायः भारतीय विश्वविद्यालयों के एम० ए० के इतिहास और राजनीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी विषयों का समावेश है। अतः यह पुस्तक विद्यार्थियों की एक बहु प्रतीक्षित माँग की पूर्ति करती है। 'राजनय' की जटिलता एवं दुरुहता से इतिहास व राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थी भली भाँति परिचित हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फैली विषमताओं और शान्ति समस्याओं को देखते हुए इस विषय की जानकारी और भी आवश्यक हो गयी है। अतः सरल एवं सुस्पष्ट उदाहरणों द्वारा इसे अधिकाधिक बोधगम्य बनाने की चेष्टा की गयी है। पुस्तक निर्माण में अनेक अंग्रेजी पुस्तकों की सहायता ली गयी है। 'राजनीति' में रुचि रखने वाले सामान्य नागरिक का भी इससे हित साधन होगा। अन्त में अंग्रेजी हिन्दी पर्यायसहित परिभाषिक शब्दानुक्रमणिका तथा एक विस्तृत सहायक ग्रन्थ सूची भी दे दी गयी है। ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **राजनीति रत्नाकरः** । चण्डेश्वरकृत हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

*२४ **वैशम्पायननीतिप्रकाशिका** । सीतारामकृत तत्त्वविवृति सहिता ४-१२

२५ **शुक्रनीतिः** । 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

*२६ **हरिहरचतुरङ्गम्** । गोदावरीमिश्रप्रणीतम् । नेट ६-५०

२७ **विदुरनीतिः** । 'तत्त्वार्थदर्शिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । स्वतन्त्र भारत के जनतन्त्र राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को साधारण व्यावहारिक नीति के साथ ही राजनीति जानना भी परमावश्यक हो गया है । इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्रत्येक व्यक्ति नीति में निपुण होकर योग्य नागरिक तथा राष्ट्रनेता बन सकता है । २-००

२८ **हितोपदेशः** । 'किरणावली' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित इसकी अत्यन्त सरल सान्वय संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या ग्रन्थ लगाने के लिये अपने ढंग की बड़ी उत्तम व्याख्या है । प्रत्येक प्रकरण के कथासार तथा तद्गत श्लोकों की अकाराद्यनुक्रमणिका भी दी गई है । छात्रों को विशेष ज्ञान तथा परीक्षा की दृष्टि से इसी संस्करण का संग्रह करना चाहिए । सम्पूर्ण शोधपूर्ण संस्करण ३-५०

२९ **हितोपदेशः** । सटिप्पण । सम्पूर्ण १-००

३० **हितोपदेश-मित्रलाभः** । (अश्लीलांश वर्जित । वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) सान्वय किरणावली संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित

प्रथमा परीक्षा के कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, संस्कृत व्याख्या, सरलभावार्थ तथा हिन्दी-भाषार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं । सबसे बड़ी विशेषता प्रस्तुत संस्करण की यह है कि ग्रन्थारम्भ में प्रत्येक कथा का परीक्षोपयोगी कथासार भी दे दिया गया है । [ह. ७७] एकादश संस्करण १-००

३१ **हितोपदेश-सुहृद्भेदः** । परीक्षोपयोगी सरल सुबोध सान्वय किरणावली संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोश-ग्रन्थाः

१ **अभिधानचिन्तामणिः।** आचार्य हेमचन्द्रकृतः। 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या विमर्श सहित। व्याख्याकार—पं० हरगोविन्द शास्त्री

प्रस्तुत कोश ग्रन्थ सारपूर्ण विस्तृत हिन्दी टीका एवं अपूर्व कोश-कला से परिपूर्ण है। इसकी विस्तृत भूमिका, विषयसारिणी, नव-शब्द-योजना तथा अंतिम शब्दानुक्रमणिका अत्यंत ही उपादेय और प्रशस्त है २०-००

*२ **आख्यानकमणिकोशः।** नेमिचन्द्र सूरि विरचित। आम्रदेव सूरि कृत वृत्ति सहित। मुनि पुण्य विजय संपादित २१-००

३ **आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोशः।** प्रो० रामसरूप शास्त्री।

इस कोश में लगभग चालीस सहस्र हिन्दी-हिन्दुस्तानी शब्दों तथा मुहावरों के संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक शब्द का लिंगनिर्देश भी किया गया है। हिन्दी क्रिया पदों के संस्कृत धातुओं के गण, पद, सेट, अनिट्, वेट्, णिजन्त आदि के रूप भी दिये गये हैं। कोश की उपयोगिता पर डॉ० सूर्यकान्तशास्त्री, श्रीविश्वबंधु शास्त्री, महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्द शास्त्री, आदि-आदि विद्वानों ने अपनी-अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं। १२-५०

४ **अमरकोश-रामाश्रमी।** (शोधपूर्ण संस्करण)

इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, किन्तु उन पूर्व प्रकाशित संस्करणों में जो प्रमापक वचन या ग्रन्थ नाम आदि आये हैं, उनमें मुद्रणादि की परम्परा से प्रमादवश बहुत से स्थल अशुद्ध, अपूर्ण या नामान्तरित हो गये हैं। हमारे कुशल सम्पादक महोदय ने उन प्रत्येक वचनों में आने वाले शब्दों को उन ग्रन्थों से मिलान कर प्रस्तुत संस्करण तैयार किया है। साथ ही यथास्थान उपयुक्त टिप्पणियाँ, पाठ-भेद, अकारादिक्रम से शब्दानुक्रमणिका आदि देकर इस संस्करण को पूर्णतया शुद्ध एवं परमोपयोगी बना दिया है। शीघ्र प्रकाशित होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ **अमरकोशः** । 'मणिप्रभा' हिन्दीव्याख्यासहित ।

हिन्दी व्याख्या में मूल श्लोकों के पर्याय, लिङ्ग, पाठान्तर और मतान्तर के पर्याय, अन्य ग्रन्थों या कोषों में मिलने वाले आंशिक समानाकार बाहरी शब्द तथा हिन्दी में अर्थ दिये गये हैं और 'अमरकौमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणी में वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण और साहित्यादि अनेक ग्रन्थों से प्रमाण-वचन, पाठान्तर आदि, तथा अक्षौहिणी सेना, मन्वन्तर काल, द्रोण खारी आदि परिमाण (तौल) इत्यादि के अनेक चक्र भी दिये गये हैं। प्रथम काण्ड ०–७५ द्वितीय काण्ड २–००,

१–३ काण्ड सम्पूर्ण ६–००

६ **अमरकोशः-मूल** । प्रथम काण्ड मात्र ०–२०

७ **अमरकोशः-मूल** । द्वितीय काण्ड मात्र [नि.] ०–४०

८ **अमरकोशः** । तृतीय काण्ड मात्र । 'प्रभा' टीका सहित ०–५०

९ **अमरकोशः** । [गुटका सम्पूर्ण] 'प्रभा' टीका सहित ।

यह प्रामाणिक संस्कृत टीका यद्यपि संक्षिप्त है पर कोई विषय छूटा नहीं है। हिन्दी में भी निर्देश किया गया है कि ये इतने अमुक के नाम हैं। परीक्षा की दृष्टि से छात्रों के लिये यह विशेष उपयोगी है १–५०

१० **अनेकार्थध्वनिमञ्जरी** । द्विरूपकोश-एकाक्षरकोश सहिता [नि.] ०–२०

११ **आख्यातचन्द्रिका नाम क्रियाकोषः** । श्रीभट्टमल्लविरचितः यन्त्रस्थ

१२ **अनेकार्थसंग्रहः कोशः** । हेमचन्द्रविरचितः यन्त्रस्थ

*१३ **वंगला-हिन्दी-शब्दकोश** । गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ७–००

१४ **महाभारत कोश** । (महाभारत के नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका) रचनाकार : डॉ० रामकुमार राय ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अकारादि क्रम से महाभारत के नामों तथा विषयों की सर्वाधिक विस्तृत, वैज्ञानिक तथा व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत की गई है। व्याख्यायें इतनी विस्तृत हैं कि उनके बाद मूल ग्रन्थ पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। सन्दर्भ संकेत पर्व, अध्याय और श्लोक संख्याओं में दिये गये हैं। प्रथम भाग (अ-क) २०-०० द्वि० भाग (ख–द) मूल्य २०–०० शेष भाग शीघ्र प्रकाशित होंगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **गणितीय कोश** । (गणितीय परिभाषा तथा शब्दावली) लेखक डॉ० ब्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पी-एच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ९-००

*१६ **मानस शब्दसागर** । संकलनकार-बद्रीदास अग्रवाल २०-००

१७ **मेदिनीकोशः** । मेदिनिकरविरचितः । यन्त्रस्थ

१८ **राजतरंगिणीकोश** । डॉ० रामकुमार राय यन्त्रस्थ

१९ **वाचस्पत्यम्** । बृहत्संस्कृताभिधानम् । तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथ भट्टाचार्येण सङ्कलितम् । संपूर्ण १-६ भाग

वृत्ति-उदाहरण-सहित पाणिनीय लिंगानुशासन, पाणिनीयप्रत्यय- उणादि-प्रत्यय-परिनिष्ठित रूप, पूर्वोत्तरपदों में परिवृत्तिसहत्वासहत्व आदि यथेष्ट सामग्री भूमिका रूप में देकर चार्वाक आदि समस्त दर्शन, समस्त श्रौतसूत्र-गृह्यसूत्र-स्मृति-पुराण आदि, रामायण-महाभारण, ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, राजशास्त्र, शकुनशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, नीतिशास्त्र, पाकशास्त्र, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, छन्दोलंकारादि शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों के लिंग, विग्रह, व्युत्पत्ति, विभिन्न अर्थों में पर्याय, उदाहरण तथा तत्तत् शब्द के सम्बन्ध में यथाशक्य अधिकतम ज्ञातव्य सामग्री प्रस्तुत की गई है । विश्व में इससे बड़ा कोई दूसरा संस्कृत कोश नहीं है । २७५-००

२० **वाल्मीकीय रामायण कोश** । डॉ० रामकुमार राय ।

वाल्मीकीय रामायण के नामों और विषयों की सर्वप्रथम और विस्तृत व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका जिसमें इस रामायण में आने वाले सभी नामों और प्रसङ्गों का व्याख्या सहित स-सन्दर्भ उल्लेख है । २०-००

२१ **विश्वप्रकाशकोशः** । हिन्दी टीका भूमिकादि सहितः प्रेस में

२२ **शब्दकल्पद्रुमः** । राजा राधाकान्तदेव बहादुर विरचितः संस्कृताभिधान ग्रन्थः ।

इस देश के समस्त कोशों और सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति, विग्रह वाक्य, पर्याय, कौन शब्द कहाँ किस अर्थ में प्रयुक्त है इसका सोदाहरण विवेचन आदि सर्वविध शब्दज्ञान से परिपूर्ण । १-५ भाग द्वितीय संस्करण यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२३ **श्रीकोश।** (बालकोपयोगी हिन्दी से संस्कृत जेबी कोष) इसमें लिङ्ग, क्रियाविशेषण, संज्ञा, भाववाचक संज्ञा आदि का निर्देश समुचित रूप से दिया गया है। एक्सरे, कुर्सी, टेबुल, आलमारी, बेंच, आदि वर्तमान चलते-फिरते शब्दों के प्रामाणिक संस्कृत शब्द अनेक संस्कृत कोश के सहारे सप्रमाण उद्धृत किए गये हैं। १-२५

*२४ **वैदिक कोश।** (वैदिक विषयों एवं नामों का) डा० सूर्यकान्त २२-५०

*२५ **श्याम संक्षिप्त हिन्दी कोश।** ४-००

*२६ **श्याम गुटका हिन्दी कोश।** २-५०

*27 Twentieth Centuary English Hindi Dictionary by Sukhsampattirai Bhandari. Vols. I–V. 56-00

*28 Practical Sanskrit Eng. Dictionary by A. A. Macdonell. Nett. 36-00

*29 Sanskrit-English Dictionary by V. S. Apte. Revised edition. Complete in 3 Vols. Nett. 125-00

30 ENGLISH-SANSKRIT DICTIONARY By M. Monier Williams (Chow. Sans. Studies Vol. XIII) 32-00
Library edition 75-00

*31 Dictionary of Indian Birds. Nett. 15-00

*32 Great English-Indian Dictionary by Dr. Raghuvira Parts. I–II. Nett. 30-00

*३३ **संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ।** पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी १५-००

*३४ **सर्वतन्त्रसिद्धान्तपदार्थलक्षणसंग्रहः।** इस जेबी शब्दकोश में अकारादि क्रम से शास्त्रीय शब्दों के ८९०१ लक्षण संगृहीत हैं। ०-७५

*३५ **हिन्दी बंगला-शब्दकोश।** गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ५-००

कामशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **अनङ्गरङ्गः।** कल्याणमल विरचितः। यंत्रस्थ

+२ **कामकला।** विजयबहादुर सिंह ४-५०

३ **कामकुञ्जलता।** संस्कृत यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ **हिन्दी कामसूत्र (जयमङ्गला टीका सहित)**
व्याख्याकार—श्री देवदत्तशास्त्री ।
वात्स्यायन का कामसूत्र और उसकी 'जयमंगला' टीका जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पर यह हिन्दी व्याख्या अपनी निजी विशेषताएँ रखती है। व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श लिख कर इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या कामसूत्र की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना ही बन गई है १६-००

*५ **केलिकुतूहलम्** । म० म० मथुराप्रसाददीक्षित विरचितम् २-००

*६ **केलिकुतूहलम्** । हिन्दी टीका सहित ४-००

७ **पञ्चसायकः-नर्मकेलिकौतुकसंवादश्च** । कविशेखर श्रीज्योतीश्वराचार्य तथा कविराज मुकुटेन दण्डिना विरचितः [चौ. पु.] १-००

८ **रतिमंजरी** । हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित [चौ. पु.] ०-४०

९ **रतिरत्नप्रदीपिका** । श्रीप्रौढदेवराज विरचिता [चौ. पु.] १-००

*१० **रतिरहस्यम्** । कांचीनाथ कृत दीपिका टीका टिप्पणी सहितम् ३-००

तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः

1 ABHINAVA GUPTA : An Historical & Philosophical Study by Dr. Kanti Chandra Pandeya (Chow. Sans. Studies. Vol. I.) Revised and Enlarged Second Edition. 40–00

*2 Introduction to the Ahirbudhnya Samhita Nett. 10–00

३ **काथबोधः** । साजनीकृत टीकोपेतः समाप्त

*४ **कामधेनुतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-५०

*५ **कालीतन्त्रम्** । सं० भद्रशील शर्मा २-००

*६ **कालीकर्पूरस्तवः** । सविधि । पुण्यशील शर्मा १-००

*७ **कुलार्णवतन्त्रम्** । भद्रशील शर्मा सम्पादित ३-५०

*८ **कौलकीर्तनम्** । सत्यान्वेषी १-२५

*९ **कौलावलीनिर्णयः** । ज्ञानानन्द परमहंसकृत । नेट . ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१० **कौलावली निर्णय** । रमादत्त शुक्ल । हिन्दी भाषा मात्र । ३-२५
*११ **कौलोपनिषद्-त्रिपुरोपनिषद्-भावोपनिषद्** । सटीक नेट ४-००
१२ **क्रमदीपिका** । जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्य प्रणीता । विद्याविनोद श्रीगोविन्दभट्टकृत विवरणोपेता । 'गुरुभक्तिमन्दाकिनी' व्याख्या सहिता 'लघुस्तवराजस्तोत्र' विभूषिता च [चौ. ४९] ७-५०
१२ **गायत्री तन्त्रम्** । श्रीमच्छङ्करमुखविनिःसृतम् । गायत्री-शापोद्धार-गायत्री-कवच-दशमहाविद्यास्तोत्रैः संभूषितम् हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ
१४ **गायत्रीपूजापद्धतिः** । श्री विभाकराचार्यसंगृहीता [ह. ३१] ०-२५
*१५ **चंडीचरितावली** । ०-७५
*१६ **चंडिकामाहात्म्य** । १-००
*१७ **चिद्गगनचन्द्रिका** । श्री कालिदासकृत । नेट ३-००
*१८ **ज्ञानसंकलनीतंत्र** । सं० भद्रशील शर्मा १-५०
१९ **तन्त्रसारः** । म० म० श्रीकृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य विरचितः । २-००
*२० **तन्त्रसारसंग्रहः** (विषनारायणीयं) सटीकः । नारायणकृतः नेट १५-२५
*२१ **तन्त्राभिधान-बीजनिघण्टु-मुद्रानिघण्टुः** । नेट ५-००
*२२ **तान्त्रिक पञ्चाङ्ग** । स्वामीजी महाराज दतिया । २-००
२३ **तारापारिजातः** । यन्त्रस्थ
*२४ **तोडलतन्त्रम्** । मूलमात्र । सम्पादक भद्रशील शर्मा १-५०
२५ **त्रिपुरारहस्यम्** । माहात्म्यखण्डम् । १०-००
26 TRIPURA-RAHASYA (Jnanakhanda) English Translation and a comparative Study of the Process of Individuation by A. U. Vasavada (Chow. Sans. Studies Vol. L) 15-00
२७ **त्रिपुरारहस्यम्-ज्ञानखण्डम्** । स्वामी सनातनदेव कृत हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ
*२८ दकारादि श्री दुर्गासहस्रनामसहस्रम् । ०-७५
२९ दुर्गापञ्चाङ्गम् । [ह. ११८] १-२५
३० **दुर्गासप्तशती** । मूलमात्र (गुटका संस्करण) यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **दुर्गासप्तशती** । (सर्वांग पूर्ण संस्करण) 'सरला' हिन्दी व्याख्या सहित । सम्पादक, श्रीहरेकान्त मिश्र ।

दुर्गा के अनेकानेक हिन्दी अनुवाद छप चुके हैं, उनमें प्रायः अनेक परम्परा का अनुसरण करने के कारण व्यवस्थित नहीं है। अतः सुयोग्य विद्वान द्वारा इस संस्करण का व्याख्यात्मक हिन्दी अनुवाद कराकर प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर संशोधित रूप में यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। पुस्तक के आरम्भ और अन्त में शतचण्डी, सहस्रचण्डी विधानादि सभी उपयोगी विषयों का समावेश दुर्गापटल के आधार पर कर दिया गया है। पूजा-पाठ करने वालों के लिए सर्वांगपूर्ण यह संस्करण बड़े महत्व का है। शीघ्र प्राप्त होगी

३२ **दुर्गासप्तशती** । स्थूलाक्षर । पत्रात्मक २-००
*३३ **दुर्गास्तवमञ्जरी** । हिन्दी टीका सहित २-५०
*३४ **दोहावली** । ०-५०
*३५ **धन प्राप्ति के उपाय** । भद्रशील शर्मा १-००
*३६ **निरुत्तरतन्त्रम्** । सम्पादक-भद्रशील शर्मा २-५०
*३७ **निर्वाणतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-००
*३८ **नीलतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा २-००
*३९ **परशुरामतंत्र** । सम्पादक भद्रशील शर्मा १-००
*४० **परातन्त्रम्** । श्रीधन शमशेर जंगवहादुर राणा १-५०
*४१ **पारमेश्वरसंहिता** । (पाञ्चरात्रान्तर्गत) नेट १५-००
*४२ **पारायणविधि** । प्रणेता-राष्ट्रगुरु श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज २-००

४३ **पुराणसंहिता** । श्रीमद्वेदव्यास विरचिता ।
आळमन्दार संहिता-बृहत्सदाशिवसंहिता-सनत्कुमारसंहिता संवलिता [चौ. सी.] १०-००

४४ **पूतनाशान्तिः** । शिशुतोषिणी हिन्दी टीका सहितः ०-२५
*४५ **पौष्करसंहिता** । नेट १२-०० | *४६ **भैरवीचक्रपूजनम्** । १-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४७ **मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य।** (तन्त्रानुसार)

डॉ० शिवशङ्कर अवस्थी, शास्त्री ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में व्याकरणागम, सूतादिसंहिताओं, पुराणवचनों तथा रहस्यमयी स्मृतियों का प्रमाणार्थ उपयोग हुआ है। अहन्ता, कामकला, कुण्डलिनी, परा-पश्यन्ती आदि वाग्भेद, ओङ्कार तथा तद्गत अकार, उकार, मकार, बिन्दु, अर्द्धचन्द्र, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति आदि कलाओं, पूर्णा या परा प्रकृति एवं तदन्तर्गत पर पुरुष, अपर पुरुष, पर काल, अपर काल, पर प्रकृति, अपर प्रकृति तथा प्रतिभा आदि तत्वों की व्यापक चर्चा इसमें द्रष्टव्य है। वर्णों का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विवरण, मन्त्रों के स्वरूप तथा शक्ति का तलस्पर्शी विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता है। ग्रन्थ में विषय-विभाग इस प्रकार है—तन्त्र और आगम, आगम-समुच्चय, मातृका के विविध स्वरूप और मातृका वर्ण, मातृकाओं के वर्णरूप मातृकावर्णविकास, मातृकावर्णरूप-वाचक और उनके वाच्य, तथा मन्त्रस्वरूपविचार एवं प्रकार-भेद। हिन्दी भाषा का यह सर्वप्रथम ग्रन्थ है जिसमें तन्त्र जैसे दुरूह विषय का व्यवस्थित और बोधगम्य वर्णन देखने को मिलेगा। १६-००

*४८ **मन्त्रकोषः।** २-००

४९ **महामृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्।** १-२५

*५० **मातृकाभेदतन्त्रम्।** २-७५

५१ **माहेश्वरतन्त्रम्।** अस्य माहेश्वरतन्त्रस्य मुद्रणं न कुत्रापि सञ्जातमित्यालोच्य एतत्तन्त्रशास्त्रं पाठभेदादियोजनपुरःसरं परमपुरुषोत्तमपादसरोजानुरागिणां तन्त्रशास्त्रोपासकानामुपकाराय सम्मुद्रापितम् [चौ. ८५] ७-५०

*५२ **मुद्रायें एवं उपचार।** सम्पादक—भद्रशील शर्मा २-००

*५३ **रामार्चामाहात्म्यम्** (कथा-पूजा) नेट ०-७५

*५४ **वरिवस्यारहस्यम्।** भासुरानन्दनाथकृत व्याख्या सहितम् नेट १०-००

५५ **शारदातिलकम्।** लक्ष्मण देशिकेन्द्र विरचित। श्रीमद्राघवभट्टकृत 'पदार्थादर्शटीका' सहितम्। १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*५६ सविधि आपदुद्धारवटुकभैरवस्तोत्रम् । ०-७५

*५७ सांख्यायनतंत्र । सम्पादक भद्रशील शर्मा ३-००

५८ सात्वततन्त्रम् । (वैष्णवतन्त्रम्) एतत्तन्त्रं नारायणेन शिवायोपदिष्टं शिवेन नारदायेति ग्रन्थतो ज्ञायते [चौ. ७९] २-५०

*५९ प्रपञ्चसारतन्त्रम् । शङ्कराचार्यकृत । पद्मपादाचार्यकृतव्याख्यासहित २०-००

*६० ब्रह्मसंहिता । श्रीजीवगोस्वामिकृत व्याख्या सहिता तथा **विष्णु-सहस्रनाम** शाङ्करभाष्य सहितम् नेट ४-००

61 YUGANADDHA by Dr. Herbert V. Guenthar. (Chow. Sans. Studies. Vol. III) Second Revised Edition. In the Press

*६२ षट्चक्रनिरूपणम् । सचित्र । भाषा टीका १-५०

+६३ साङ्गसप्तशतिः गुटिका । १-५०

*६४ श्री उच्छवगीतांजलिः । २-२५

६५ श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः । सर्वदेव पूजा विधान पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त । हिन्दी टीका सहित १-२५

*६६ श्रीविद्यास्तवमञ्जरी । ३-५०

*६७ श्रीश्यामासपर्यावासना । प्रातःकृत्य से लेकर समस्त अर्चनविधान के एक-एक अङ्ग का दार्शनिक विवेचन । ३-५०

६८ श्रीकल्पद्रुमः । 'गुप्तावतार' बाबा मोतीलाल जी । १-२ भाग ५-५०

*६९ श्रीकमलास्तवमंजरी । २-५०

*७० श्री काली-नित्यार्चनम् । अर्गला, कीलक, कवच आदि स्तोत्र सहित ३-००

*७१ श्री कालीस्तवमञ्जरी । हिन्दी अनुवाद सहित ३-५०

*७२ श्री कालीस्वरूपतत्त्व । भगवती आद्या के ध्यान का आध्यात्मिक रहस्य २-००

*७३ श्री छिन्नमस्तानित्यार्चनम् । २-००

*७४ श्री तारास्तवमञ्जरी २-२५

*७५ श्री तारास्वरूपतत्त्व २-००

*७६ श्री तारा-नित्यार्चन २-५०

*७७ श्रीबालानित्यार्चन । ३-००

*७८ श्री बगला-नित्यार्चन २-००

*७९ श्री बगलापूजापद्धति २-००

*८० श्री भुवनेश्वरी-नित्यार्चन ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*८१ **श्रीभुवनेश्वरीस्तवमंजरी।** ३-००

*८२ **श्रीत्रिपुरामहोपनिषद्।** १-५०

*८३ **श्री श्रीविद्या-नित्यार्चन।** ३-५०

*८४ **श्री बालास्तवमञ्जरी।** भगवती बाला त्रिपुरसुन्दरी के त्रैलोक्यविजय कवच, हृदय, अष्टोत्तरशतनाम, खड्गमाला, मालातन्त्र, सहस्रनाम, कर्पूरादि स्तवराज, शान्ति-स्तोत्र जैसे अनूठे स्तोत्रों और श्रीबाला के सूक्त उपनिषद् आदि का अनूठा संग्रह। २-५०

*८५ **श्रीभुवनेश्वरीरहस्य।** ३-००

*८६ **श्रीश्यामापूजापद्धतिः।** ३-००

*८७ **हिन्दी तन्त्रसार।** रमादत्त शुक्ल ८-००

*८८ **हिन्दी शाक्तानन्दतरङ्गिणी।** शाक्तधर्म के मूल सिद्धान्तों का परिचय देने में अति उपयोगी। २-७५

*८९ **मन्त्रसिद्धि का उपाय।** मन्त्र-साधना की सभी गुत्थियों के सुलझाने में सद्गुरु-समान। २-००

*९० **साधक का संवाद।** एक शक्ति-साधक की आत्मकथा, जो शाक्तधर्म की जानकारी रोचक ढङ्ग से कराती है। ३-७५

*९१ **मातृ-उपासना।** सात्विक भावों से पूर्ण मातृ-उपासना का रूप एवं माहात्म्य २-५०

*९२ **वन्दे मातरम्।** महामन्त्र 'वन्दे मातरम्' का रहस्य २-००

*९३ **वाममार्ग।** परिचय नाम ही से प्रकट है ३-००

*९४ **आनन्दलहरी।** हिन्दी टीका व विस्तृत व्याख्या सहित २-२५

*९५ **आरतिमाला।** ०-७५

*९६ **सार्थ सौन्दर्यलहरी।** प्रत्येक श्लोक की टीका और व्याख्या के साथ उसके यन्त्र-मन्त्रात्मक प्रयोग का हिन्दी में पहला और बेजोड़ प्रकाशन ३-५०

*९७ **सन्तानसुखप्राप्ति के प्रयोग।** भद्रशील शर्मा १-००

*९८ **सप्तशतीमीमांसा।** रमादत्त शुक्ल १-७५

*९९ **सप्तशतीरहस्य।** पहले खण्ड में दार्शनिक दृष्टिकोण से सप्तशती के आध्यात्मिक तत्त्व की विवेचना और उसकी उपासना की तान्त्रिक पद्धति, दूसरे खण्ड में मूल सप्तशती और उसके अङ्गों का संग्रह ३-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१०० **दुर्गा सप्तशती ।** शब्दशः पद्यानुवाद । संस्कृत न जाननेवालों द्वारा नित्यपाठ के उपयुक्त । १-५०

*१०१ **शतचण्डी-विधान ।** मण्डप, कुण्ड, होमद्रव्य आदि से लेकर पूरी प्रयोग-विधि । २-७५

*१०२ **चक्रपूजा ।** शाक्तों की निशापूजा का विधान ३-००

*१०३ **चक्रपूजा के स्तोत्र ।** निशापूजा में पठित गुरु, पात्रवन्दना, उल्लास, शान्ति, नीराजन आदि सभी स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह १-००

*१०४ **विनय सुधा ।** उक्त स्तोत्रों के आधारपर रचित हिन्दी पद्यों का संग्रह १-२५

*१०५ **हिन्दी कुलार्णव** २-५०

*१०६ **हिन्दुओं की पोथी ।** जेबी पुरोहित ३-००

*१०७ **श्री भगवती गीता ।** पद्यानुवाद व व्याख्या सहित ३-२५

*१०८ **श्री भैरवोपदेश ।** गीता के समान महत्त्वपूर्ण पुस्तक ३-२५

*१०९ **उपदेश मुक्तावली ।** रहस्य भरा भजन-संग्रह । १-४ भाग ७-७५

*११० **सुमुक्षु-मार्ग ।** एक अनूठी कृति । १-३ भाग ६-००

*१११ **गायत्री तत्व विमर्श ।** अपने विषय में वेजोड़ २-००

*११२ **पञ्चमकार तथा भावत्रय ।** ३-००

*113 Pratyabhijnahrdayam. Text and English translation by K. F. Leidecker. 10-00

Works Bs Sir John Woodroffe (Arthua Avalon)

*114 Introduction to Tantra Shastra (A Key to Tantrik Literature) 5-00

*115 Principles of Tantra (Tantra Tattva) 30-00

*116 Shakti & Shakta (Essays and Addresses) 25-00

*117 The Great Liberation (Mahanirvana Tantra) Text Translation and Commentary. 25-00

*118 Tantraraja Tantra. 6-00

*119 Garland of Letters (Studies in Mantra Shastra) 15-00

*120 Wave of Bliss (Anandalahari) 3-00

*121 Greatness of Shiva (Mahimnastava of Pushpadanta) 3-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*122 Hymn to Kali (Karpuradi Stotra) Text & Commentary with English translation and Notes. 6–00

*123 Hymns to the Goddess (From Tantras and Stotras of Shankaracharya) 6–00

*124 Is'opanisad Text and Commentary with English Translation. 3–00

*125 Mahāmāyā (The World as Power: Power as Consciousness) by Sir John Woodroffe & P. N. Mukhopadhyaya. 10–00

*126 The World as Power (Reality, Life, Mind, Matter, Causality & Continuity) 15–00

वैदिक-ग्रन्थाः

१ **अथर्ववेदः ।** (शोधपूर्ण संस्करण) विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार, डॉ० रामकृष्ण शास्त्री । सम्पादक, आचार्य विश्वनाथ शास्त्री वेदाचार्य यन्त्रस्थ

२ **अथर्ववेद संहिता ।** मूलमात्र । सम्पादक आचार्य ऋषिशंकर अग्निहोत्री यन्त्रस्थ

३ **अथर्ववेदसंहिता ।** सायणभाष्य सहित । सम्पूर्ण यन्त्रस्थ

4 ATHARVA-VEDA PRATISAKHYA or Saunakiya Caturadhayika : Text, Translation and Notes : By W. D. Whitney. (Chow. Sans. Studies Vol. XX) 20–00

५ **अथर्ववेद एण्ड गोपथ ब्राह्मण ।** (M. Bloomfield सम्पादित संस्करण का अविकल हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक–डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री २५–००

*६ **अथर्ववेद संहिता ।** सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । १–२ भाग । श्रीरामशर्मा आचार्य १२–००

७ **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका ।** भट्ट मञ्जनाचार्यविरचिता ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८ मूल संस्कृत उद्धरण (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स)

लेखक–प्रो० जे मूइर। सम्पादक और हिन्दी अनुवादक : डॉ० रामकुमार राय। १–५ भाग में संपूर्ण

इस संस्करण की विशेषतां—

भाग १ : हिन्दू जातियों की उत्पत्ति-सम्बन्धी पौराणिक विवरणों से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का संकलन, उनका हिन्दी अनुवाद तथा यह विवेचन कि वैदिक काल में भी जातिवाद का अस्तित्व था अथवा नहीं। २०—००

भाग २ : इस तथ्य की विवेचना करते हुये कि हिन्दू जाति के लोग हिमालय के उस पार से आये तथा भारोपीय जाति की पश्चिमी शाखा से सम्बद्ध थे, अथवा नहीं, इस विषय पर मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनका हिन्दी अनुवाद। २०—००

भाग ३ : ऋग्वेदिक सूक्तों के संग्रह के ठीक पूर्व अथवा उसके पाश्चात् के भारतीय कृतिकारों के वेदों की उत्पत्ति, विभाजन, प्रेरणा-स्रोत और आधिकारिकता को व्यक्त करने वाले मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा हिन्दी अनुवाद। २०—००

भाग ४ : वैदिक सूक्तों, ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा इतिहास-पुराण में मिलने वाले ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और अम्बिका आदि देवी-देवताओं से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद सहित संग्रह तथा यह विवेचन कि देवी-देवताओं सम्बन्धी आरम्भिक धारणायें बाद की कृतियों के किस प्रकार उत्तरोत्तर परिवर्तित होती गई। शीघ्र प्राप्त होगा

भाग ५ : वैदिक कालीन भारतीयों के सृष्टिरचना, पुराकथाशास्त्रीय और धार्मिक विचारों तथा जीवन और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने वाले सानुवाद मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनकी विवेचना। शीघ्र प्राप्त होगा

मूल्य प्रत्येक भाग २०—००

पाँच रुपये अग्रिम जमा कर १–५ भाग के स्थायी सदस्य बनने वाले सज्जनों को जो **भाग** छप कर तैयार हैं तुरन्त तथा शेष भाग भी प्रकाशित होते ही भेज दिए जायंगे। अग्रिम धन अन्तिम भाग भेजते समय बाद कर दिया जायगा। पुस्तक अल्प संख्या में छप रही है अतः अग्रिम धन तुरन्त भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लेवें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९ **ऋग्वेद संहिता पद-पाठ सहित ।** डा. मैक्स मूलर सम्पादित । १–२ भाग लाइब्रेरी संस्करण ५०–००
साधारण संस्करण ४०–००

10 HYMNS OF THE ṚGVEDA In Samhita and Pada Texts by F. Max-Muller. 2 Vols. Library Edition 50-00
Ordinary Edition 40-00

*११ **ऋग्वेद संहिता ।** सायणभाष्य सहित । डॉ. मैक्स मूलर सम्पादित । १-४ भाग संपूर्ण १४०–००

12 RIG-VEDA SAMHITA with the Commentary of Sayanacharya. Edited by Dr. Max Muller. Vols. I–IV Complete. 140–00

१३ **हिन्दी ऋग्वेदभाष्य-भूमिका ।** श्री जगन्नाथ पाठक । सायणाचार्य के 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' की यह हिन्दी व्याख्या बहुत ही उपयोगी और ग्राह्य शैली में प्रस्तुत की गई है, जिससे विद्यार्थी और इस विषय के जिज्ञासु लाभान्वित होंगे । एम० ए० के विद्यार्थियों के लिये तो यह संस्करण विशेष उपयोगी बन गया है । पहले मूल ग्रन्थ को छाप करके बाद में उसके सारे तथ्यों को पूर्णरूप से हिन्दी में विवेचन करके समझाया गया है और साथ ही सायणाचार्य के जीवन तथा साहित्य पर भी विचार किया गया है । ३–००

*१४ **ऋग्वेद संहिता ।** सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । १–४ भाग । श्रीरामशर्मा आचार्य २४–००

*१५ **ऋग्वेदव्याख्या ।** माधवकृत व्याख्या । द्वितीय भागमात्र । नेट २०–००

१६ **कौषीतकिब्राह्मणपर्यालोचनम्** अथवा **कौषीतकिब्राह्मण आचारविचाराः ।** डा. मंगलदेव शास्त्री २–५०

१७ **चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः ।** (सायणाचार्यविरचितानां स्ववेदभाष्यभूमिकानां संग्रहः) सं० आचार्य बलदेव उपाध्याय । सायणाचार्य कृत भाष्यभूमिका सहित तैत्तिरीय संहिता, ऋक्, साम, यजुः और अथर्व इन चतुर्वेदभाष्यभूमिका नामक इस संग्रह ग्रन्थ के इस द्वितीय संस्करण को उपाध्याय जी ने इस बार बहुत ही छान-बीन के साथ अपनी विस्तृत अंग्रेजी-संस्कृत भूमिका के साथ सम्पादित किया है । ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१८ **चरणव्यूहः** । महर्षिशौनकप्रणीतः आचार्य महिदासकृतभाष्ययुक्तः १-००

*१९ **छन्दस्वतीवाक्** । वासुदेवशरण अग्रवाल कृत आंग्लानुवाद सहित १-५०

२० **ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्** । सायणाचार्यविरचितभाष्य सहितम् ।
१-२ भाग सम्पूर्णम् २५-००

*२१ **दैवम्** । 'पुरुषकार' वार्तिकोपेतम् । कृष्णलीला शुक मुनि विरचित । इस पद्यबद्ध ग्रन्थ का प्रतिपाद्य है । पाणिनीय धातुपाठ । वार्तिक-सहित यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ पाण्डित्य-पूर्ण भूमिका, बहुमूल्य टिप्पणियों तथा उपयोगी ६ परिशिष्टों के साथ प्रकाशित किया गया है । ६-००

*२२ **निरुक्तम्** । निघण्टु देवराज यज्व कृत टीका सनाथी कृतम् पञ्चमोध्याय पर्यन्त तथा दुर्गाचार्य कृत टीका सहित । १-४ भाग संपूर्ण १८-००

*२३ **निरुक्त-समुच्चयः** । वररुचि प्रणीत । युधिष्ठिर मीमांसक संपादित ५-००

*२४ **नीतिमञ्जरी** । सभाष्या श्रीद्याद्विवेद विरचिता । भूमिका-टिप्पणी-परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता ४-५०

२५ **हिन्दी निरुक्त** । व्याख्याकार- प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' सभी विश्वविद्यालयों में १ से ४ और ७ वां अध्याय पाठ्य स्वीकृत है । अतः इस परीक्षोपयोगी संस्करण को इसी रूप में रखकर अनुवाद शब्दशः किया गया है तथा वैदिक मन्त्रों के अन्वय और शब्दार्थ के साथ अर्थ दिये गये हैं । यथास्थल अनुसन्धानात्मक टिप्पणियाँ भी की गयी हैं । अन्त में वैदिक मन्त्रों का हिन्दी-अनुवाद तथा प्रारम्भ में १२५ पृष्ठों की सर्वांगपूर्ण समालोचनात्मक भूमिका भी दी गयी है जो छात्रों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । ७-५०

+२६ **पाणिन्यादि (द्वात्रिंशत्) शिक्षासंग्रहः** । २ से ४ खण्ड ९-००

*२७ **पादविधानम्** । शौनककृतम् । १-५०

*२८ **पितृसंहिता-पितृकल्पः** । रामगीता सहित ०-७५

२९ **पुष्पसूत्रम्** । (सामप्रातिशाख्यं) पुष्पर्षिप्रणीतम् । श्रीमदजातशत्रु-कृतभाष्य सहितम् [चौ. ५७] ७-५०

३० **पुरुषसूक्तम्** । 'बालबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । अनुष्ठान-विधान भी ग्रन्थारंभ में दिया गया है । ०-१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **पुरुषसूक्तम् ।** सायणभाष्य-महीधरभाष्य-मंगलभाष्य-निम्बार्कमत-भाष्य चतुष्टय सहितम् । [का. १२] २-००

३२ **बृहद्देवता (शौनकीय) ।** (ऋग्वेदिक देवताओं और पुराकथाओं का सारांश) ।
मूल श्लोकबद्ध हिन्दी व्याख्या तथा टिप्पणियों से विभूषित ।
सम्पादक तथा व्याख्याकार :—डॉ० रामकुमार राय १५-००

३३ **मन्त्रार्थदीपिका ।** म० म० श्रीशत्रुघ्नमिश्रविरचिता । सटीक । [का. १०८] यन्त्रस्थ

*३४ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः ।** म० म० श्री चिन्नस्वामि शास्त्रिकृतः । नेट ४-००

३५ **रुद्रस्वाहाकारपद्धतिः ।** [ह. १६८] ०-२५

३६ **वैदिक आख्यान ।** डॉ० गङ्गासागर राय
इस पुस्तक में जीवन को सुगठित एवं समुन्नत बनानेवाले प्रेरणाप्रद वैदिक आख्यानों का गुम्फन इतनी सरस भाषा एवं शैली में किया गया है कि एक ही बैठक में बिना पुस्तक समाप्त किए जी नहीं मानता । २-००

३७ **वैदिक माइथौलोजी** (वैदिक पुराकथाशास्त्र) प्रो. ए. ए. मैकडॉनल (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ. रामकुमार राय ।
यह ग्रन्थ वेद की आत्मा का भासमान प्रदीप है । वैदिक देवताओं का रहस्य जानना यदि अभीष्ट हो तो इस ग्रन्थरत्न को अवश्य पढ़कर लाभ उठाइये । १५-००

३८ **वैदिक इण्डेक्स ।** मैकडोनेल और कीथ (हिन्दी रूपान्तर)

अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय ।
अनुवाद की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसमें सन्दर्भ संकेत संख्यायें तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है । इस व्यवस्था के कारण जो निःसन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है । अनुवाद की भाषा इतनी प्रौढ़ और प्राञ्जल है कि उसे पढ़ने से ग्रन्थ बिल्कुल मूल जैसा ही प्रतीत होता है । १-२ भाग सम्पूर्ण ४०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९ **वैदिक निबन्धावली ।** डॉ० मुंशीराम शर्मा ।

इस निबन्ध संग्रह में वेदों की एक स्वल्प झाँकी प्रस्तुत करने वाले २५ निबन्ध हैं । यह निबन्ध उच्च कक्षा के विद्यार्थियों, शोध-छात्रों एवं जन साधारण वेदप्रेमियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है ४-००

४० **वैदिकयुग के भारतीय आभूषण ।** डॉ० राय गोविन्दचन्द

वैदिक युग में मनुष्य कौन-कौन से आभूषण किस प्रकार धारण करता था, किस आभूषण के कितने भेदोपभेद या प्रकार थे, आदि का प्रामाणिक तथा सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है । चारो वेदों तथा वैदिक साहित्य का सूक्ष्म परिशीलन करके इस विषय पर विचार व्यक्त किए गए हैं, यह इसकी लेखन-शैली से स्पष्ट हो जाता है । प्रमाण रूप में सर्वत्र ही वैदिक साहित्य ऋचायें तथा मन्त्र सानुवाद उद्धृत किए गए हैं । उपर्युक्त विवेचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सामाजिक रीति-नीति आदि की भी सुस्पष्ट झाँकी प्राप्त हो जाती है । इतिहास, शोध, मानव-विज्ञान आदि के अध्येताओं के लिये यह अवश्य संग्रहणीय संस्करण है । १५-००

*४१ **वैदिक-वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन-प्रकार ।** युधिष्ठिर मीमांसक १-५०

४२ **वैदिक योगसूत्र (वैदिक योगमाया)**

ले० श्री हरिशंकर जोशी ।

प्रस्तुत ग्रंथ में वेदों-ब्राह्मणों-आरण्यकों, उपनिषदों, पुराणों तथा धर्म ग्रन्थों में विकीर्ण तथा व्याप्त उस समस्त प्राचीन योगदर्शन का चूडान्त विवेचन संस्कृत के सूत्रों, हिन्दी और अंगरेजी के भाष्यों तथा सन्दर्भों सहित विशद रूप में दिया गया है जिसे जाने विना हम अपनी संस्कृति, दर्शन और ज्ञान सम्पत्ति का न तो उचित मूल्यांकन कर सकते, न उनके रहस्यों की अनुभूति ही पा सकते हैं । शीघ्र प्रकाशित होगा

०-७५

*४३ **वैदिकसंध्याभाष्यम् ।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४४ **हिन्दी वैदिक व्याकरण** । डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय

बी० ए० तथा एम० ए० परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नवनिर्मित इस पुस्तक में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रियारूपों का कोश भी प्रकाशित किया गया है २-००

४५ **वैदिक सूक्तपञ्चकम्** । (१. वाचस्पतिसूक्तं, २. कृषिसूक्तं. ३. सहृदयतासूक्तं, ४. शुद्धिसूक्तं , ५. निर्भयतासूक्तम्) 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

इस पुस्तक में अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के चुने हुए पाँच सूक्त प्रस्तुत किए गए हैं। हिन्दी में मन्त्रों का अर्थ तथा भाष्य हो जाने से सर्वसाधारण के लिये यह बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। ०-५०

४६ **वैदिक सूक्त-मंजरी** (VEDIC-SELECTIONS) पदपाठ, समन्वय भाषार्थ, ऋज्वर्थ, निरुक्त व्याकरण, हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित । संपादक डॉ० रामकृष्ण शास्त्री

विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक में ऋग्वेद तथा शुक्लयजुर्वेद के निम्न लिखित सूक्तों का संकलन है—(ऋग्वेद)—(१) विश्वेदेवाः सूक्तम् (१-१।८९।१-१०।४-१।९०।६-९), (२) विष्णुसूक्तम् (५-१।२२।१६-२१), (३) प्रजापतिसूक्तम् (८-१०। १२१।१-१०), (४) वागम्भृणीसूक्तम् (९-१०।१२५।१-८), (५) अघमर्षणसूक्तम् (११-१०।१९०।१-३), (६) ज्ञानसूक्तम् (१२-१०।१९१) (यजुर्वेद)-(७) शिवसंकल्पसूक्तम् (१३-३४। १-६), (८) पुरुषसूक्तम् (१५-३१।१-२२), (९)उत्तरनारायण-सूक्तम् (१६-२०।१४, १७।२०-२१), (१०) सूर्यसूक्तम् (१७-७।४१-४३), (११) आपःसूक्तम् (१८-३६।१४,१८-२४), (१२) रुद्रसूक्तम् (१९-१६।४१) और (१३) लिंगसूक्तम् (२०-२२।२२)। इन सूक्तों की उपर्युक्त व्याख्याओं से मन्त्रों का यथार्थ स्वरूप छात्रों के हृदय में अवश्य अंकित हो जायगा और वे उसकी परिष्कृत व्याख्या प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकेंगे १-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

47 SATAPATHA BRAHMAṆ. In the Madhyandin Śākha with extracts from the commentaries of Sayaṇa, Hari Swamin and Dvivedaganga. Ed. by. A. Weber. 100-00

४८ **शतपथब्राह्मणम्** (शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीयां शाखा-मनुसृत्य) सायणाचार्य-हरिस्वामी द्विवेदगङ्ग कृत भाष्येभ्यः सारमुद्धृत्य । डॉ० अल्बेर्तन वेवेरेण शोधितम् । १००-००

४९ **शतपथब्राह्मणम्** । [सस्वरम्] सम्पादक-म० म० श्रीचिन्नस्वामीशास्त्री [का. १२७] १ से ७ काण्ड ६-००

५० **शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता** । श्रीसायणाचार्यविरचितभाष्यसहिता यन्त्रस्थ

५१ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । रुद्राभिषेकमाहात्म्य, स्वस्ति-प्रार्थनामन्त्राध्याय, शान्त्यध्यायादि विविध परिशिष्ट सहित ०-४०

*५२ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । हिन्दी टीका सहित । सजिल्द ३-००

५३ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । 'श्रीविद्या' हिन्दी टीका विभूषिता । यज्ञीय पात्रादि का लक्षण विधान आदि विविध विषयों से समलंकृत । ०-४०

54 THE SHUKLA YAJURVEDA VAJASANEYI PRATISHAKHYA with English Translation by Shrimati Indu Rastogi, M. A., In the Press

५५ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सम्पादक-श्री दौलतराम गौड़ वेदाचार्य । प्रस्तुत संस्करण सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद का ३२ पेजी छोटा गुटका संस्करण है । वेदमन्त्र सब सस्वर दिए गए हैं । प्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान् ने आवश्यक स्थलों पर 'प्रकाश' नामक टिप्पणी भी दी है । एतद्विषयक पाण्डित्यपूर्ण विचारों तथा विविध उपयोगी विषयों से परिपूर्ण विशद भूमिका भी परमोपयोगी है । ३-००

*५६ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीराम शर्मा आचार्य ६-००

*५७ **शुक्लयजु० माध्य० बृहद् मन्त्रसंहिता** । ५२३ मन्त्रयुक्त ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

+५८ **शुक्लयजुस्सर्वानुक्रमसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतम् । श्रीयाज्ञिकानन्तदेवविरचितभाष्यसहितम् [व. १३] ८–००

५९ **शुल्वसूत्रम्** । श्रीकर्कभाष्य–महीधरवृत्तिसहितम् [का. १२०] ०–७५

६० **श्रीसूक्तम्** । भाष्यत्रयेण टिप्पण्या च समलङ्कृतम् । [का. ४] यन्त्रस्थ

*६१ **सामतन्त्रम् (सामेवदीयं प्रातिशाख्यम्)** । सम्पादक—ए० एम० रामनाथ दीक्षित ३०–००

*६२ **सामवेदसंहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीराम शर्मा आचार्य ६–००

*६३ **सामवेदः** । स्वामि भगवदाचार्य कृत सामसंस्कार भाष्य नामक हिन्दी अनुवाद सहित । १–३ भाग नेट १७–००

६४ **सामवेदीयरुद्रजपविधिः**—पञ्चवक्त्रपूजनम्, लघुरुद्रविधानयुतञ्च । १—५०

६५ **सामवेदीय-रुद्रजप-विधिः** (सचित्र) । आचार्य ऋषि शंकर अग्निहोत्री श्रीमाली कृत हिन्दी भाष्य-आंग्लानुवाद गायन-पदपाठ सहित ४–००

६६ **सामवेदीय आह्निकं–उपाकर्मपद्धति (श्रावणी) सहितम्** । सामवेदाचार्य पं० दुर्गादत्तत्रिपाठिसम्पादितम् १–७५

६७ **सामवेदीयत्रिकालसन्ध्यातर्पणप्रयोगः** । सटिप्पण ०–१५

६८ **सांख्यायनगृह्यसंग्रहः** । पं० वासुदेवकृतः तथा—**कौषीतकिगृह्यसूत्राणि** च [ब. ३६] २–५०

६९ **स्वस्तिवाचनप्रयोगः** । चतुर्वेदोक्त तत्तन्मन्त्र सहित ०–२०

७० **स्वस्त्ययनकलशप्रतिष्ठापूजनविधिः** । [चौ. पु.] ०–१०

71 STUDIES IN VEDIC INTERPRETATION : By Sri A. B. Purani.(Chow. Sans. Studies Vol. XXXII) 20–00

72 HYMNS OF THE SAM-VEDA : Translated into English with a popular commentary by Ralph T. H. Griffith. (Chow. Sans. Studies Vol. XXVIII) 20–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

73 HYMNS OF THE RIG-VEDA : Translated into English with a popular commentary by Ralph T. H. Griffith. (Chow. Sans. Studies Vol. XXXV) 2 Vols. 40–00

*74 Sparks from the Vedic Fire by Dr. V. S. Agrawala. 30–00

*75 Sama Veda Samhita (English Translation) Rev. J. Stevenson. D. D. 12–00

*76 Jaiminiya–Brahmana of the Samaveda. Complete Text. Edited by Dr. Raghuvira. 30–00

पाकशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **नलपाकः (पाकदर्पण)** । नलविरचितः । सम्पूर्णः [का. १] यन्त्रस्थ

*२ **पाकचन्द्रिका** ६–०० *३ **पाकविज्ञान** ४–००

*४ **बृहत् पाक संग्रह** ४–०० *५ **बृहत् पाकावली** । हिन्दी टीका १–२५

*६ **स्वादिष्ट अचार** । श्रीमती आद्यादेवी २–००

समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः

*१ **अग्निपुराणविषयानुक्रमणी** । समीक्षात्मक भूमिका सहित । डॉ० रामशंकर भट्टाचार्य ८–००

२ **अवन्तिकुमारियाँ** । श्री देवदत्त शास्त्री ।
इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुन्दरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है । २–००

३ **अक्षर अमर रहें** । (निबन्ध-संग्रह) श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला ।
यह निबन्ध-संग्रह संस्कृत हिन्दी के सामान्य विद्यार्थियों तथा शोधकार्य-रत स्नातकों के लिये पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, शोध और कला की दृष्टि से विशेष उपयोगी है । ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४ **इतिहास-पुराण का अनुशीलन।** (इतिहास-पुराणोक्त विशिष्ट तथ्य और समस्याओं का विवेचन) डॉ० रामशङ्कर भट्टाचार्य १०-००

५ **ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य।**

लेखक–वी० एम० चिन्तामणि ।

लेखक ने इस नवीन कृति में हिन्दी के उपन्यासों, विशेषकर ऐतिहासिक उपन्यासों की बहुत सुन्दर समीक्षा प्रस्तुत की है। नयी सूझ-बूझ और गंभीर मन्थन की परिचायक यह रचना हिन्दी के आलोचना-क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन है। ३-००

६ **औचित्य-सम्प्रदाय का हिन्दी काव्य-शास्त्र पर प्रभाव।** (प्रत्यक्ष तथा परोक्ष) श्री चन्द्रहंस पाठक यन्त्रस्थ

+७ **कवि और काव्य।** आचार्य बलदेव उपाध्याय ३-००

८ **कविवर डा० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य।**

प्रो० दशरथ राज ।

कविवर डा० रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत करने का यह सर्वोत्तम प्रयास है। ३-००

९ **कालिदास : एक अनुशीलन।** पं० देवदत्त शास्त्री

कालिदास के जीवन, जन्मभूमि और स्थिति पर ठोस प्रमाणों सहित ऐसी नई स्थापनाएँ आपको इस ग्रन्थ में मिलेंगी जिनपर मत प्रकट करने या विचार करने की उत्सुकता अवश्य आप में उत्पन्न होगी। २-५०

*१० **कविसमय-समीक्षा।** डॉ० विष्णुस्वरूप ।

संस्कृत और हिन्दी साहित्य में कवियों के सम्प्रदाय में प्राचीन काल से स्वीकृत कुछ ऐसी मान्यताओं का विचार इस ग्रन्थ में किया गया है जो लोकदृष्ट स्थितियों से भिन्न होती हैं।

अजिल्द ८-०० सजिल्द संस्करण ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ **काव्यात्मसीमांसा** । डॉ० जयमन्त मिश्र

काव्यात्म सम्बन्धी विचारों का आलोचनात्मक ढंग से शोधपूर्ण एवं विश्लेषण करके रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य तत्त्वों का विश्लेषणात्मक स्वरूप निर्देश, ऐतिहासिक क्रम से साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनके तात्त्विक रहस्यों का समुद्घाटन किया गया है। 'पृष्ठभूमि और प्रेरणा-स्रोत' नामक प्रथम-अध्याय में वैदिक साहित्य से लेकर भरत पूर्व के संस्कृत वाङ्मय में प्रतिपादित रस का गवेषणात्मक विचार है। द्वितीय अध्याय में भरत से लेकर अर्वाचीन संस्कृत काव्य शास्त्र में रसात्म-विषयक विचारों का विश्लेषण तथा तृतीय से सप्तम अध्याय तक इसी प्रकार अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य का क्रमशः आलोचन हुआ है। अन्तिम अष्टम अध्याय में गवेषणा-प्रसूत निष्कर्षों का प्रतिपादन है, जिसमें वस्तुतः काव्य की आत्मा क्या है इस विषय का अभूतपूर्व विचार हुआ है। अन्त के परिशिष्टों में काव्य सम्बन्धी कतिपय अन्य विषयों का विचार किया गया है १६-००

१२ **काव्यवल्लरी** । श्री व्यथित हृदय समाप्त

१३ **काव्य-चिन्ता** । डॉ० रमाशंकर तिवारी ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के दो खण्डों में काव्य के मूल स्वरूप तथा जीवन के साथ उसके सम्बन्ध एवं काव्य के प्रयोजन का जो मार्मिक विश्लेषण सम्पन्न हुआ है, वह सर्वथा मौलिक एवं विचारोत्तेजक है। काव्य-चिन्तन की आधुनिक परम्परा में इससे निश्चित ही परिष्कार का प्रवेश होगा। ६-००

१४ **कृष्णभक्ति काव्य में सखीभाव** । (सचित्र) श्रीशरण बिहारी गोस्वामी । सखीसम्प्रदाय का सारगर्भित ग्रंथ ।

गोपीतत्त्व और सखीतत्त्व पर गम्भीर विचार, उपास्य तत्त्व का विस्तृत विवेचन तथा सखी-सम्प्रदाय की उपासना-पद्धति का संयोजन आदि इस ग्रन्थ के प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। सखीभाव-विषयक हिन्दी-साहित्य की सामग्री का परिचय एवं समीक्षा, रस-परिपाटी का विवेचन, लगभग ५० वैष्णवसम्प्रदायाचार्यों के सदुपदेशों का सचित्र वर्णन तथा कवियों और काव्यों का परिचय समीक्षण आदि अत्यन्त सरल भाषा और शैली में विवेचित हैं। यह ग्रन्थ अत्यन्त रसपूर्ण और उपादेय है। २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **गोस्वामी तुलसीदास ।** आचार्य श्री सीताराम चतुर्वेदी

तुलसीदासजी के जन्मकाल, जन्मस्थान, जीवन की अनेक घटनाओं और उनकी रचना के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है जिनकी ओर सामान्य समीक्षकों का ध्यान अब तक नहीं पहुच पाया था । ३-००

१६ **चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन ।** डॉ० छविनाथ त्रिपाठी

इसमें चम्पू-काव्य का स्थान-निर्धारण, उसकी सर्वथोपयुक्त परिभाषा, गद्य-पद्य-मिश्रित काव्यों के विकास का ऐतिहासिक एवं खोजपूर्ण विवरण, २४५ चम्पू-काव्यों का सविवरण आलोचनात्मक परिचय, वर्ण्य वस्तु और चम्पू-काव्यों के मूल स्रोतों का अन्वेषण करके उनका वर्गीकरण आदि उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की गई है । १२-००

१७ **चित्र और चिन्तन ।** श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी

इस पुस्तक में चित्र : जीवन के दैनिक अनुभवों के हैं, चिंतन : सामयिक परिस्थितियों, समस्याओं और नवनिर्माण के हैं । इसमें व्यक्ति, समाज और विश्व की धड़कन है । आप भी इसमें अपनी धड़कन पायेंगे और युग के प्राण-प्रवाह से एकमेक हो जायंगे २-५०

१८ **चिन्तन के नये चरण ।** श्री देवदत्त शास्त्री ।

भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, पुराण-उपनिषद्, नृत्य-नाटक-अभिनय ये पाँच इस पुस्तक के विषय-स्तम्भ हैं । इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं । विद्यार्थियों को तो इन निबन्धों में नई दृष्टि, नई चेतना और अनुसन्धान के नये आयाम मिलेंगे । ६-००

१९ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज ।**

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

हर्ष, शोक, विस्मयादि नाना भाव धाराओं में अवगाहन करते हुए भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का, शैली और कौशल की दृष्टि से उनका वर्णन प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है । २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२० **जीवनदर्शन ।** डॉ० मुंशीराम शर्मा ।

जीवन क्या है ? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है ? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे । ३-००

२१ **दिनकर की उर्वशी ।** डॉ० रमाशंकर तिवारी

'दिनकर' की नवीन काव्य कृति 'उर्वशी' के अत्यंत सूक्ष्म परिशीलन, मार्मिक समीक्षात्मक अध्ययन, प्रौढ़ चिन्तन एवं अधिकारिक मीमांसा से संयुक्त संग्रहणीय ग्रंथ ३-००

२२ **परिक्रमा ।** श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी । वाराणसी की उत्तर मध्यमा द्वितीय खण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत ।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में—भारतीय साहित्य और जीवन की इस परिक्रमा में कालिदास, रवीन्द्र, पन्त, महादेवी आदि की समालोचना एवं संस्मरणों का मणिकांचन योग है। शैली प्रांजल, प्रवाहपूर्ण एवं सरस है। **वाराणसी परीक्षापाठ्य स्वीकृत अंश** २-००
संपूर्ण ४-००

२३ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष ।** (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ।

इस ग्रन्थ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। ऐसे ३००० शब्दों की अकारादि-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है। लेखक की मान्यता है प्राचीन भारतीय संस्कृति-विषयक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पाणिनीय सामग्री का अध्ययन आवश्यक है। १५-००

२४ **पुरुषार्थ ।** भारतरत्न डॉ० भगवानदास (शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण)

मनीषी लेखक के आध्यात्मिक एवं चिंतन का सार इस ग्रन्थ में आज के मानव के लिये सर्वथोपयुक्त शैली में उपनिबद्ध है। इससे मानव-मात्र को श्रेयःसम्पादन के लिए यथार्थ दिशा एवं प्रेरणा प्राप्त होती है। सम्पूर्ण वाङ्मय का सार ही इसे समझना चाहिए। १२-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५ **प्रयोगवादी काव्य-धारा ।** (तथोक्त नई कविता)

डॉ० रमाशंकर तिवारी । भू० ले०—श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु, अध्यक्ष, विधानसभा, बिहार ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में 'नई कविता' कही जानेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा का तटस्थ एवं पूर्वग्रह-विमुक्त, विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन प्रथम वार प्रस्तुत किया गया है । इससे प्रयोगवादी धारा को समझने तथा उसके प्रति समुचित एवं सन्तुलित न्याय वरतने की सम्भावनाएँ निश्चित ही परिष्कृत एवं परिपुष्ट होंगी । १२–५०

२६ **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड ।**

डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी ।

प्रस्तुत पुस्तक अंग्रेजी, हिन्दी एवं किसी भी भारतीय भाषा में प्रकाशित होने वाली सर्वप्रथम पुस्तक है । समाजशास्त्र, विधि, न्यायपालिका एवं प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के सम्बन्ध में वैदिक काल से लेकर निबन्ध ग्रन्थों तक की सामग्री को एक स्थान पर वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत करने वाली इस पुस्तक ने हिन्दी साहित्य की एक अनिवार्यता की पूर्ति की है । पुस्तक शोध के लिए जहाँ विपुल सामग्री प्रस्तुत करती है वहीं इस सम्बन्ध में कार्य करने वाले विद्यार्थियों, सामाजिक कार्य-कर्ताओं आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी है । अपराध और दण्ड की सूची इतने व्यापक रूप में दी गई है कि उससे सभी लाभ उठा सकते हैं । इसके साथ प्रत्येक विषय का ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठ-भूमि का अध्ययन किया गया है । आधुनिक सिद्धान्तों, तत्कालीन समाजों एवं विकास करने वाली सारी मान्यताओं के आधार स्वीकार करने से पुस्तक का महत्त्व अत्यन्त उच्च हो गया है । इस एक पुस्तक का अध्ययन करने से ही भारतीय संस्कृति समझी जा सकती है और उसके वे मूलाधार समझे जा सकते हैं जो उसे शाश्वत बना रखते हैं । पुस्तक विद्यार्थियों से लेकर शोधकार्य करने वालों तक सभी के लिए उपयोगी है । विषय की महत्ता, प्रतीकात्मक उच्च कोटि के आवरण, छपाई एवं कागज की उत्तमता सराहनीय हैं ६–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२७ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** प्रो० जगदीशचन्द्र जैन। वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम अवतरित हुआ है। २०-००

२८ **प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति।** डॉ० राजबली पाण्डेय

इसके विविध खण्ड हैं—(१) भौगोलिक और जातीय आधार (२) राजनीतिक इतिहास (३) राजनीतिक विचार और संस्थायें (४) आर्थिक जीवन (५) सामाजिक चिंतन और संस्थायें (६) धार्मिक जीवन (७) दार्शनिक सिद्धान्त (८) भाषा और साहित्य (९) कला तथा (१०) उपसंहार। भारतीय जीवन और मान्यताओं का एक संतुलित चित्र इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। शीघ्र प्राप्त होगा

२९ **प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन।** डॉ० रायगोविन्दचन्द भारत के विभिन्न स्थलों पर खोदाई में जो मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं उनके कलात्मक आकार के आधार पर भारतीय सभ्यता के विकास का आरम्भ से लेकर गुप्तकाल तक का इतिहास इस पुस्तक में वर्णित है १२-००

३० **प्रतिभा-दर्शन (भाषा-तत्त्वशास्त्र)।** आचार्य हरिशंकर जोशी। स. ले. : म. म. डॉ. गोपीनाथ कविराज भाषा-तत्त्वशास्त्र प्राचीन भारतीयों की अपूर्व देन है जिसका पाश्चात्य विद्वानों ने वैज्ञानिक यन्त्रों के सहारे वहुत अधिक विकास कर लिया है। भारत में इसके ज्ञाता वहुत कम हैं और उनके पास इसे पढ़ाने के लिये हिन्दी ग्रन्थों का अभाव था, पाश्चात्य विद्वानों को कई प्राचीन भाषातत्त्व के सिद्धान्तों का ज्ञान भी नहीं हो सका है। उसकी भी इस ग्रंथ ने पूर्ति कर दी है। इस ग्रन्थ में भारतीय भाषाओं के क्रमिक युगों के प्रामाणिक विकासों के साथ-साथ अर्वाचीन भाषाओं तक के भाषा-तत्त्वों का विशद् विवेचन तीन बड़े भागों में दिया गया है। इसकी भाषा प्राञ्जल और धारावाही है। प्रत्येक विषय को सुगम बनाने के लिये स्थान-स्थान पर चित्र और मानचित्र भी दिये गये हैं २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२१ **भक्ति का विकास** । डा० मुंशीराम शर्मा

परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा। २०-००

*३२ **भारतस्य सांस्कृतिकनिधिः** । डॉ० रामजी उपाध्याय १२-००

३३ **भारतीय इतिहास के स्रोत, सिक्के** । (ई० जे० रैपसन के 'इण्डियन कॉएन्स' का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक : डा० रामकुमार राय ।

रैपसन का प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसके लेखक कुछ उन आरम्भिक पाश्चात्य इतिहासकारों में एक थे जिन्होंने वस्तुतः भारतीय इतिहास के अध्ययन-अनुसन्धान को वह वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जो आज हमें उपलब्ध हैं।

अंग्रेजी में यह ग्रन्थ सर्वथा दुर्लभ है। इसके हिन्दी अनुवाद से इसकी दुर्वलता तो दूर ही होगी साथ ही पाठकों के क्षेत्र में भी वृद्धि होगी।

अनुवाद में मूल ग्रन्थ के फलक ज्यों-के-त्यों छापे गये हैं जिससे इसमें कोई भी कमी नहीं रह गई है। १२-००

३४ **भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि-सिद्धान्त** । ले० श्री राजवंश सहाय 'हीरा' ।

प्रस्तुत ग्रंथ में रस, ध्वनि एवं अलंकार को प्रतिनिधि-सिद्धान्त मान कर उन्हीं का विवेचन किया गया है। काव्य के स्वरूप, कारण, हेतु एवं भेद, शब्दशक्ति, ध्वनि, रस, गुण एवं दोषों का वर्णन प्रमुख है। दूसरे खण्ड में अलंकारों का विश्लेषण, विशेषतः ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक दृष्टि से किया गया है। शब्दशक्तियों के वर्णन में शास्त्रार्थ वाले स्थानों पर तथा अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के विषय में विस्तृत एवं निर्भ्रान्त विवेचन है। संस्कृत के मूल ग्रन्थों के उद्धरणप्रमाण स्वरूप उपन्यस्त हैं। ग्रन्थ अपने में पूर्ण है। यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३५ **भारतीय इतिहास-परिचय।** डॉ० राजबली पाण्डेय।

इस पुस्तक में भारत का संक्षिप्त, सरल और सुबोध इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इसमें उन्हीं घटनाओं, व्यक्तियों और विचारधाराओं का समावेश किया गया है, जिन्होंने भारतीय जीवन की परम्परा को किसी न किसी प्रकार प्रभावित किया है। यह पुस्तक केवल विदेशी इतिहासकारों का अनुकरणमात्र नहीं है। इसमें भारतीय ऐतिहासिक परम्परा का समुचित आदर के साथ उपयोग किया गया है। साथ ही इस देश के उत्थान और पतन तथा जय और पराजय को भारतीय दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है। भारत के प्रामाणिक, सजीव और क्रमबद्ध इतिहास के परिचय के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। १०-००

*३६ **भारतीय कला।** (प्रारंभिक युग से तीसरी शती तक)
डा० वासुदेवशरण अग्रवाल २४-००

३७ **भारतीय प्रज्ञा।** (मॉनियर विलियम्स कृत इण्डियन विज़डम का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक: डा० रामकुमार राय।

पुस्तक में हिन्दुओं के धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक विचारों तथा सिद्धान्तों के उदाहरणों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही संस्कृत साहित्य के प्रमुख विभागों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुये भारत की अतीत तथा वर्तमान नैतिक और बौद्धिक स्थिति का भी विवरण दिया गया है।

मूल लेखक का, जो कि सर्वाधिक महान पाश्चात्य प्राच्यविदों और भाषा वैज्ञानिकों में से एक है, परिचय देने की आवश्यकता नहीं। जिस विद्वत्ता, गहन सूझ-बूझ और सहानुभूति के साथ उन्होंने यहाँ विषय का विवेचन किया है इसने इस कृति को भारतीय दर्शन, धर्म, नीतिशास्त्र, और भाषाविज्ञान का एक अपूर्व ग्रन्थ बना दिया है।

हिन्दी अनुवाद में मूल ग्रन्थ के समस्त गुणों को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है। २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा।** डॉ० भोलाशंकर व्यास

वाराणसी का शास्त्री द्वितीय खण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत

वेदों से लेकर अब तक के समस्त भारतीय साहित्य—वैदिक, संस्कृत, पालि-प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य—की रूपरेखा के अलावा भारत की सभी आधुनिक भाषाओं—हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, आदि—के प्राचीन तथा अद्यतन साहित्य की गतिविधि का सुन्दर परिचय इसी एक ग्रन्थ से प्राप्त हो जाता है। ७-५०

*३९ **भारतीय-रत्न-चरितम्।** श्री रुद्रदत्त पाठक

संस्कृत के ललित एवं सरल वाक्यों में गुम्फित यह कथाशैली का प्रथम भारतीय इतिहास ग्रन्थ है। जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति से भारतीय-स्वातन्त्र्य-प्राप्ति तक की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। ८-००

४० **भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार।**
डॉ० भोलाशंकर व्यास

अलंकार भारतीय साहित्यशास्त्र का कठिनतम तथा जटिलतम अंग है पर अभी तक अलंकारों पर शास्त्रीय, वैज्ञानिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत कोई विवेचना नहीं मिलती। प्रस्तुत ग्रन्थ द्वारा यह कमी पूरी हो जाती है। पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के गंभीर अध्ययन के साथ ही भारतीय साहित्यशास्त्र के मूल ग्रन्थों का ठोस परिज्ञान इस ग्रन्थ में प्रतिपद लक्षित होता है। नवीन दृष्टि से भारतीय साहित्यशास्त्र की प्राचीन स्थापनाओं की ऐसी प्रामाणिक तथा आधिकारिक विवेचना हिंदी क्षेत्र में कम ही मिलेगी। भरत से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक तथा अरस्तू से इलियट तक सभी भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य शास्त्रियों के प्रासंगिक मतों को कुशलतापूर्वक आत्मसात् कर प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ की अन्य मूल्यवत्ता यह भी है कि अलंकारों के सम्बन्ध में प्रचलित शास्त्रार्थों और प्रसिद्ध उदाहरण-पद्यों को विवेचना में खास तौर पर लिया गया है और साथ में मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन हिन्दी-कविता से भी तत्-तत् अलंकारों के उदाहरण दिये गये हैं। प्रथम भाग ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४१ **भारतीय भाषा विज्ञान।** पं० किशोरीदास वाजपेयी।

भारतीय भाषाओं का मौलिक पद्धति पर विवेचन-विश्लेषण और वर्गीकरण इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। ६-२५

४२ **भारवि काव्य में अर्थान्तर न्यास।** ले. उमेशप्रसाद रस्तोगी

प्रस्तुत ग्रन्थ में भारवि के जन्मकाल, स्थान तथा काव्य का परिचय देते हुए प्रवाहपूर्ण भाषा तथा मार्मिक शैली में उनके अर्थान्तरन्यास-सम्बन्धी काव्य, कवित्व तथा प्रतिभा का समुचित विवेचन तथा यथार्थ विश्लेषण किया गया है। ६-००

४३ **भाषा वैज्ञानिक संस्कृत व्याकरण।** डॉ० लाल रमायदुपाल सिंह यन्त्रस्थ

४४ **मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद।**

डॉ० कपिलदेव पाण्डेय। भू० ले०, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

इस ग्रंथ में वैदिक साहित्य से लेकर उत्तर-मध्यकालीन साहित्य तक के अवतारवादी रूपों और प्रवृत्तियों का विशद विवेचन किया है। एकत्र ही वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, गीता, आगम तथा बौद्ध, जैन, नाथ, शैव, शाक्त, संत, सूफी, भागवत, पांचरात्र आदि साम्प्रदायिक साहित्यों के विभिन्न अवतारवादी तत्त्वों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। साथ ही दशावतार, चौबीस अवतार, राम, कृष्ण, अर्चा, आचार्य, भक्त आदि विविध अवतारों का भी मौलिक विवेचन हुआ है। अंत में अवतारवाद के मानवशास्त्रीय (एन्थ्रोपोलौजिकल), ऐतिहासिक, दार्शनिक, साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचारधाराओं पर भी यथेष्ट विचार किया गया है। समस्त ग्रंथ में अवतारवाद और भक्ति से सम्बद्ध सैकड़ों पारिभाषिक शब्दों पर स्वतन्त्र शोधपूर्ण विस्तृत निबंध लिखे गये हैं, प्राचीन एवं मध्यकालीन शोधकों के लिए यह संदर्भग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपादेय है। ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५ **मराठी का भक्ति साहित्य।** प्रो० भी० गो० देशपांडे

मराठी के भक्ति-साहित्य के विभिन्न काव्यरूपों के मूल स्रोत और विकास का मनोवैज्ञानिक ढंग से हिन्दी में अत्यन्त प्रामाणिक एवं सटीक विवेचन किया गया है। साधारण संस्करण ८-०० राज संस्करण १०-००

४६ **महाकवि कालिदास।** (देव पुरस्कार से पुरस्कृत)

डॉ० रमाशंकर तिवारी।

अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का विवेकपूर्ण उपयोग कर कालिदास का देश-काल तथा उनकी सौन्दर्य भावना, प्रेम भावना, काव्यादर्श, लोकादर्श आदि विषयों की १८ अध्यायों में प्रामाणिक विवेचना की गई है। ८-००

४७ **मधुपर्क।** श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील'। श्री कृष्ण लीला परक व्रजभाषा का महाकाव्य प्रेस में

*४८ **महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी के लेख और भाषण।**

भाग १-धार्मिक। संकलनकर्ता-डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल अजिल्द ४-००
सजिल्द ५-००

४९ **महाकविभवभूति।** डॉ० गङ्गासागर राय।

इस ग्रन्थ में महाकवि भवभूति के व्यक्तित्व तथा कृतियों का अनूठा, साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनकी रससिद्ध वाणी का यथार्थ मूल्याङ्कन प्रस्तुत किया गया है। अनुसन्धान पूर्ण परिशिष्ट बड़े श्रम से संकलित किये गये हैं। अनुसन्धानकर्त्ताओं तथा उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोगी ग्रन्थ है। ५-००

५० **महाकवियों की अमर रचनायें।** श्री चक्रधर शर्मा।

इस पुस्तक में संस्कृत के विख्यात महाकवियों (बाणभट्ट, कालिदास, भवभूति, भारवी, माघ आदि) के जीवनवृत्त एवं उनकी प्रमुख उत्कृष्ट रचनाओं का हिन्दी में सुसम्बद्ध, संक्षिप्त कथानक औपन्यासिक, सरस एवं आकर्षक ढङ्ग से विन्यस्त किया गया है। इसे एक बार पढ़ लेने से ही उन महाकवियों एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषय भली प्रकार ज्ञात हो जायेंगे। २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५१ **महाकवि भास : एक अध्ययन ।** आचार्य बलदेव उपाध्याय ।

आज से लगभग २४०० वर्ष पूर्व महाकवि भास ने संस्कृत में जिन नाटकों की रचना की थी, उनकी उत्कृष्टता तथा एतद्विषयक किसी उपयुक्त ग्रन्थ के अभाव के कारण इस पुस्तक का जन्म हुआ है। इसमें भास के नाटकों का परिचय, समीक्षण, तत्कालीन देश-काल की स्थिति आदि का प्रामाणिक तथा सांगोपांग विवेचन किया गया है। भास के समय आदि का भी प्रामाणिक निर्णय किया गया है तथा इस संबन्ध में उपलब्ध विभिन्न मत-मतान्तरों की तटस्थ एवं पूर्वग्रह-विमुक्त समीक्षा प्रस्तुत की गई है। ४–००

52 MYTHOLOGY OF THE ARYAN NATIONS : by Sir George W. Cox. (Chow.Sans.Studies Vol. XXVII) 30–00

+५३ **यूरोप और वहाँ के संग्रहालय ।** डॉ० सतीशचन्द्र काला

यूरोप के संग्रहालयों का विविध दृष्टिकोणों से प्रामाणिक एवं हृदयग्राही वर्णन तथा भारत से यूरोप ले जाई गई दुष्प्राप्य वस्तुओं का विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है। आर्ट पेपर पर छपे लगभग ५० दुष्प्राप्य चित्र भी दिए गये हैं। ५–००

५४ **लौकिक संस्कृत साहित्य ।** (Classical Sanskrit Literature by A. B. Kieth) अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री ।

अनुवाद में स्थान-स्थान पर मूल ग्रन्थों के उद्धरण देकर बड़े श्रम के साथ ग्रन्थ का सम्पादन हुआ है। ६–००

५५ **विक्रमादित्य** [संवत्–प्रवर्तक] । डा० राजबली पाण्डेय

सम्राट् विक्रमादित्य को ऐतिहासिक सिद्ध करने वाला यह बहुत ही शोधपूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वह सभी संगत सामग्री एकत्रित की गई है जिससे पूर्वाग्रहरहित कोई भी पाठक अपने ढङ्ग से निष्कर्ष निकाल सकता है। १०—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५६ **विष्णुपुराण कालीन भारत ।** श्री सर्वानन्द पाठक यन्त्रस्थ

५७ **विविधार्थ**—भारतरत्न, डॉ० भगवानदास (द्वितीय संस्करण)

डॉ० साहब ने अपने जीवन काल में ही १२ लेखों का संग्रह 'विविधार्थ' नाम से प्रकाशित कर दिया था। इन लेखों में 'बुद्धि प्रबल वा शास्त्र' लेख लगभग १०० पृष्ठों में, 'भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य' १२५ पृष्ठों में, एवं संस्कृति सम्मेलन का अभिभाषण भी १०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इनमें स्वतन्त्र ग्रन्थों जैसी प्रामाणिकता और गम्भीर विवेचनात्मक शैली है। ६-००

५८ **वेदकालीन समाज ।** डॉ० शिवदत्त ज्ञानी

यद्यपि इस ग्रन्थ का नाम ही स्वयं पूर्ण विज्ञापन है तथापि कहा जा सकता है कि वेदों से मानव-मात्र को लाभान्वित कराने के लिए ऐसे ही ग्रन्थों की आवश्यकता है। वेदों के समय में समाज की व्यवस्था और उसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, एवं कला और मनोरञ्जन इत्यादि से सम्बन्धित स्थितियाँ क्या थीं, इस बात को भली-भाँति जानकर आज प्रत्येक वर्ग का प्रबुद्ध मानव हेयोपादेय-विचार-पूर्वक निश्चित रूप से लाभान्वित होने को उत्सुक हो उठेगा। लेखक ने बड़े श्रम एवं कौशल से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। प्रत्येक स्थिति या आचार सप्रमाण निरूपित है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा प्राञ्जल है प्रत्येक कोटि के पाठक की रुचि इसे पढ़कर तुष्ट होगी। ग्रन्थ अवश्य पठनीय है। शीघ्र प्राप्त होगा

५९ **वैदिक साहित्य की रूपरेखा ।** प्रो. हंसराज अग्रवाल

कई विश्वविद्यालयों में वैदिक साहित्य की रूपरेखा पाठ्यक्रम में नियत है। इस पुस्तक में वैदिक साहित्य के आदि से अन्त तक की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण अङ्ग की जानकारी पाठक को संक्षेप से करा दी गई है। इसके अध्ययन से छात्रों को सर्वांगपूर्ण वैदिक साहित्य की महत्त्वपूर्ण बातों का आवश्यक ज्ञान हो जायगा। २-००

*६० **वैदिक साहित्यचरित्रम् ।** नेट ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६१ **वैदिक युग के भारतीय आभूषण**—डॉ० रायगोविन्दचन्द

वैदिक युग में मनुष्य कौन-कौन से आभूषण किस प्रकार धारण करता था, किस आभूषण के कितने भेदोपभेद या प्रकार थे, आदि का प्रामाणिक तथा सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है। चारों वेदों तथा वैदिक साहित्य का सूक्ष्म परिशीलन करके इस विषय पर विचार व्यक्त किए गए हैं, यह इसकी लेखन-शैली से स्पष्ट हो जाता है। प्रमाण रूप में सर्वत्र ही वैदिक ऋचाएँ तथा मन्त्र सानुवाद उद्धृत किए गए हैं। उपर्युक्त विवेचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सामाजिक रीति-नीति आदि की भी सुस्पष्ट झाँकी प्राप्त हो जाती है। इतिहास, शोध, मानवविज्ञान आदि के अध्येताओं के लिये यह संग्राह्य है। १५-००

६२ **शूद्रक और मृच्छकटिक।** डॉ० रमाशंकर तिवारी।

मृच्छकटिक का प्रौढ एवं प्राञ्जल विवेचन तथा शूद्रक-सम्बन्धी ऐतिहासिक पर्यालोचन।

प्रेस मे

63 Sanskrit and Prakrit Mahakavyas by R. Upadhyaya 10-00

६४ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** आर्थर मैक्डॉनल (हिन्दी संस्करण) अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री

मैकडॉनल-प्रणीत 'हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर' अपने विषय का सर्वमान्य तथा सर्वत्र पाठ्य स्वीकृत ग्रन्थ है। प्रस्तुत ग्रन्थ उसी का सरस अनुवाद है जो छात्रों तथा अध्यापकों के लिये नितान्त उपयोगी है। वैदिक काल पर्यन्त प्रथम भाग ७-५०

६५ **संस्कृतसाहित्येतिहासः** (संस्कृत) आचार्यरामचन्द्रमिश्र

वाराणसी की शास्त्री द्वितीय खण्ड के अनिवार्य द्वितीय पत्र के लिए पाठ्य स्वीकृत ग्रन्थ।

इसमें वेद-वेदांग आदि से लेकर यथाक्रम काव्यकाल तथा वैशिष्ट्य विवेचन आदि विषय हैं। अतिविस्तृत विषय को संक्षिप्त करना साधारण छात्रों के लिये कष्टकर होता है अतः संक्षेप में ही विषय का यथार्थ ज्ञान कराया गया है ४-००

 Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६६ **संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास।** (A New History of Sanskrit Literature by Sri Krishna Chaitanya का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक-डॉ० विनयकुमार राय

लेखक ने इसमें संस्कृत साहित्य के इतिहास पर एक नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है। प्रसिद्ध कृतियों तथा लेखकों का ऐतिहासिक विवेचन करते हुए पाश्चात्य लेखकों और कृतियों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लेखक ने आरम्भिकतम सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आरम्भ करते हुए वैदिक साहित्य से लेकर अब तक के संस्कृत साहित्य की समीक्षा की है। प्रायः आद्योपान्त विभिन्न ग्रन्थों और लेखकों से प्रतिनिधि उद्धरण देकर विवेच्य-विषय को और सुस्पष्ट बनाने की चेष्टा की गई है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में उससे सम्बद्ध सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची देकर भी लेखक ने और अधिक अनुसंधान करने वालों के लिए सामग्री का संकेत कर दिया है। सम्पूर्ण विषय का तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करते हुए लेखक ने एक ऐसा नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो अबतक के किसी भी संस्कृत साहित्य के इतिहास में नहीं मिलता। ग्रन्थ अपनी मौलिकता तथा अपने विषय के व्यापक विवेचन के कारण विद्वानों तथा विद्यार्थियों दोनों के लिए समान रूप से अवलोकनीय है। इसी कारण हम इसका आधिकारिक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहे हैं, जिसमें मूल की प्रायः समस्त विशेषतायें सर्वथा सुरक्षित हैं। २०-००

६७ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (वृहत् संस्करण) वाचस्पति गैरोला। (बिहार आदि की साहित्याचार्य परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

आर्यों का आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार-वीथियों का निर्माण हुआ और राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा। २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६८ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।** [संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण] लेखक : श्रीवाचस्पति गैरोला।

संस्कृत साहित्य के इतिहास विषयक ज्ञानार्जन के लिए छात्रों के समक्ष जो कठिनाइयाँ थीं उनको दृष्टि में रखकर इस पुस्तक का निर्माण किया गया है। इसमें विशाल एवं अगाध संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं का क्रमबद्ध विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से अब तक जितने भी इतिहास लिखे गये हैं उनमें इतनी सर्वांगीणता और विषय-विस्तार नहीं है।

उसकी उपयोगिता एवं विशेषता को दृष्टि में रखकर ही वाराणसी, बिहार, आगरा और सागर आदि विश्वविद्यालयों ने उसे अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया।

छात्रों और आध्येताओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नवीन संस्करण में हमने काव्य विद्याओं को सर्वथा परिवर्द्धित एवं नवीन रूप में प्रस्तुत किया है। इस सन्दर्भ में लगभग सौ पृष्ठों की नयी सामग्री बढ़ा दी गयी है, जिससे कि निर्धारित पाठ्यक्रम का कोई भी अंग अछूता न रहे और परीक्षाकाल में छात्रों को कोई असुविधा न हो। परीक्षार्थियों के लिये यह सर्वश्रेष्ठ संस्करण है। ११-००

६९ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (वैदिक साहित्य की रूपरेखा सहित) ले०–हंसराज अग्रवाल।

इस पुस्तक का विषय प्रमुखतया संस्कृत साहित्य के गौरवपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त वर्णन है। बी० ए० के छात्रों की आवश्यकता पूर्ण करने वाला और संस्कृत साहित्य के अध्ययन में उनकी सहायता करने वाला कोई ग्रंथ नहीं है, क्योंकि संस्कृत के उपलभ्यमान इतिहास ग्रंथों में से अधिक ग्रंथ उनकी योग्यता से बाहर के हैं। यह ग्रन्थ बी० ए० श्रेणी के ही छात्रों की आवश्यकता को पूर्ण करने के विशेष प्रयोजन से लिखा गया है। प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में यह निर्धारित है

संशोधित परिवर्धित संस्करण ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७० **संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास**। ले० डॉ० प्रभाकर नारायण कवठेकर।

पंचतन्त्र के पूर्व भारतीय नीतिकथा का उद्गम किन परिस्थितियों में हुआ, उसका वेदकालीन रूप क्या रहा होगा, जातक में लोककथा का आदान, उसके प्रसार के कारण विदेशों में उसका निर्गमन तथा महाभारत में नीतिकथा का राजनीतिक प्रज्ञा के निदर्शन के लिए प्रयोग आदि तथ्यों की गवेषणा इस प्रवन्ध की मुख्य विशेषता है। परिशिष्टों में सम्पूर्ण विश्व के नीति-कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यन्त्रस्थ

७१ **संस्कृतवाङ्मयपरिचयः**। (संस्कृत ऐतिहासिक ग्रन्थ) पण्डित मधुसूदन प्रसाद मिश्र (शास्त्री परीक्षोपयोगी)

वेद से लेकर बीसवीं सदी तक के संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों का उद्गम-काल, इतिहास, रचयिताओं के संक्षिप्त इतिवृत्त इस ग्रन्थ में दिए गये हैं। संस्कृत साहित्य में इस ढङ्ग का श्रेष्ठ यह प्रथम ग्रन्थ है। १—५०

७२ **संस्कृत भाषा**। मूल लेखक-टी० बरो, रूपान्तरकार डॉ० भोलाशंकर व्यास

इस पुस्तक में अद्यतन गवेषणाओं को आत्मसात् करते हुए प्राचीन भारत-योरोपीय भाषा, संस्कृत तथा तत्संबद्ध भाषाओं का आधिकारिक तुलनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। ३०-००

७३ **संस्कृत भाषा-विज्ञानम्**। श्रीरासाधीन चतुर्वेदी

इस निवन्ध-ग्रन्थ में शिक्षा-प्रातिशाख्य-तन्त्र-निरुक्त आदि ग्रन्थों में आए शब्दों की उत्पत्ति के प्रकार तथा शब्द-विकृति के नियमों की विवेचना की गई है। संस्कृत भाषा में लिखा यह अपने विषय का सर्वप्रथम सफल ग्रन्थ है। इसमें वेदों से लेकर आज तक के इस सम्बन्ध के जितने भी विषय हैं, सब पर सुचिन्तित प्रौढ़ सामग्री प्रस्तुत की गई है। ग्रन्थ की श्रेष्ठता का अनुमान विषय-सूची देखकर ही कर लिया जा सकता है। ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७४ **संस्कृत-कवि-दर्शन।** डॉ० भोलाशङ्कर व्यास।

इस पुस्तक में कई कवियों के विषय में ऐसे मौलिक सङ्केत किये गये हैं, जो अनुसन्धान-कर्ताओं को मार्ग-दिशा दे सकते हैं। साहित्यिक समाज को बहुत दिनोंसे संस्कृत कवियों पर हिन्दी में सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और समाजशास्त्रीय आलोचना का अभाव खटकता था। डॉ० व्यास ने इस अभाव की पूर्ति कर दी है। शास्त्री, आचार्य तथा बी० ए०, एम० ए० और साहित्यरत्न की परीक्षाओं में निबन्ध और इतिहास के लिये यह पुस्तक अधिक उपादेय है ६-००

७५ **संस्कृत सुकविसमीक्षा।** आचार्य बलदेव उपाध्याय

विक्रमपूर्व पंचम शती से लेकर बारहवीं शती के मान्य संस्कृत के कवियों की यह अनमोल समीक्षा छात्रों तथा अध्यापकों तथा सामान्यजनों के लिए समभावेन उपयोगी है। वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, वररुचि, कालिदास, अश्वघोष, भर्तृमेण्ठ, भारवि, भवभूति, दण्डी, बाण—आदि लगभग ३० कवि तथा कवयित्रियों के रूप तथा स्वरूप से, काव्य की आलोचना तथा रोचक दृष्टान्तों से यदि पाठक परिचय पाना चाहता है, तो वह इस प्रामाणिक ग्रन्थ का अवलोकन अवश्य करे। 'शंकराचार्य का आलोचनात्मक विवरण' एक सौ से अधिक पृष्ठों में दिया गया है जिसमें आचार्य की सम्पूर्ण जीवनी, समय, ग्रन्थ, शिष्यपरम्परा, तथा आध्यात्मिक उपदेशों का विशिष्ट विवरण विस्तार से दिया गया है। ग्रन्थ का परिशिष्ट—कविप्रशस्तयः—कविविषय का प्राचीन आलोचनामयी सूक्तियों का एकत्र संग्रह है जो पहिली बार इस रूप में प्रस्तुत किया गया है। तदनन्तर 'ऐतिहासिक परिचय' में इन अज्ञात तथा अल्पज्ञात, अप्रसिद्ध तथा अल्पप्रसिद्ध कवियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। शैली सुबोध तथा भाषा रोचक है २०-००

७६ **सब धर्मों की बुनियादी एकता।** डॉ० भगवानदास।

इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मज़हबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७७ **संस्कृत साहित्य में मौलिकता एवं अनुहरण ।**
लेꣳ श्री उमेशप्रसाद रस्तोगी ।
प्रस्तुत प्रबन्ध में 'मौलिकता और अनुहरण' की दृष्टि से संस्कृत साहित्य के विशिष्ट स्थलों का अध्ययन करते हुए संस्कृत काव्यपाठकों के सम्मुख मौलिकता और अनुहरण विषयक नई वस्तु प्रस्तुत की गई है । भाषा-शैली आदि सभी विषयानुरूप हैं । ८-००

८७८ **संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलङ्कारों का विकास ।**
डॉ० ब्रह्मानन्द शर्मा
बड़े-बड़े आचार्यों तथा उनके मतों की आलोचना करते समय लेखक ने परम्परा तथा पूर्वाग्रह का मोह नहीं रखा । अलंकारों का आन्तरिक तत्त्व समझने में यह ग्रन्थ परम सहायक होगा । अलंकारों के विषय में इतना व्यापक, विशाल तथा प्रामाणिक विवेचन प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है १२-००

८७९ **समन्वय**—डा० भगवानदास । परिवर्धित संस्करण
इस ग्रन्थ में सरल शैली में समन्वय के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है । सर्वत्र ऋषियों और मनीषियों के सुचिन्तित विचारों के मूल श्लोक प्रमाण रूप में उद्धृत किए गए हैं । इस ग्रन्थ का पारायण शिक्षा और आनन्द का साधक होगा । ५-००

८० **सावित्री-सत्यवान् ।** बिहार मध्यमा पाठ्य स्वीकृत ।
इस पुस्तक में औपन्यासिक रूप से भावुकतापूर्ण कथा का सृजन करके विद्वान् लेखक ने महाभारतीय सावित्री-उपाख्यान को सर्वथा नवीन एवं परमोपादेय रूप दिया है जो प्रत्येक बालक-बालिका तथा वयस्क के लिये भी अनिवार्य रूप से पठनीय है । ७—००

८१ **साहित्य और सिद्धान्त ।** प्रो० श्यामलाकान्त वर्मा ।
वाराणसी की उत्तरमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षापाठ्य स्वीकृत ।
हिन्दी साहित्य एवं काव्यशास्त्र के सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का सार-सङ्कलन स्वरूप यह ग्रन्थ छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए परम उपयोगी है । ३—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८२ **साहित्य-शास्त्र-सार** । ले० हंसराज अग्रवाल तथा श्रुतिकान्त जी ।

संस्कृत के लक्षण-ग्रन्थों की तरह अत्यन्त व्यवस्थित तथा संक्षेप में साहित्य के सभी अंगों की हिन्दी में प्रामाणिक जानकारी देनेवाला यह प्रथम ग्रन्थ है । इसकी शैली बड़ी सुबोध है और विषय के वर्गीकरण में बड़े कौशल से काम लिया गया है । प्रत्येक प्रकरण के अन्त में जो अभ्यास दिए गए हैं उनके मनन से उस प्रकरण के बुद्धिस्थ होने में तनिक भी आयास नहीं होता । पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका भी एतद्विषयक उत्तम विचारों से पूर्ण है । अनूठा ग्रन्थ है, एकबार देखकर ही उपयोगिता समझी जा सकती है । ४-५०

८३ **सोमेश्वर कृत मानसोल्लास : एक सांस्कृतिक अध्ययन** । ले० डा० शिवशेखर मिश्र ।

चालुक्य कुलोत्पन्न महाराज सोमेश्वर विरचित धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ मानसोल्लास के परिशीलन माध्यम से तत्कालीन संस्कृति एवं रीति-नीति का सुस्पष्ट परिचायक ग्रन्थ । २५-००

८४ **स्मृतियाँ और कृतियाँ** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ।

हिन्दी साहित्य के सुपरिचित सिद्ध लेखक श्री द्विवेदी की प्रस्तुत पुस्तक में १० निबन्ध संस्मरणात्मक हैं तथा १५ समीक्षात्मक । लेखक की सरलता तथा सूक्ष्म दृष्टि पुस्तक के पृष्ठों में सुस्पष्ट झलकती है । प्रत्येक हिन्दी पढ़ने-जानने वाले व्यक्ति के लिये इस पुस्तक का अवलोकन निश्चित ही उपयोगी होगा । ४-००

८५ **स्वतंत्र कलाशास्त्र** । ले० डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय ।

व्यापक दृष्टि रखकर कला शब्द पर कितना विशद अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है । यह इस एक ही ग्रन्थ को देखकर समझा जा सकता है । भारतीय मनीषी का प्रौढ़ पाण्डित्य और बहुज्ञत्व इस ग्रन्थ के एक एक शब्द से परिलक्षित होता है । कला को विचारों की कसौटी में कस देने पर जो ज्ञान की चिनगारियाँ प्रस्फुटित हुई हैं उन्हीं का संकलन ग्रन्थ के रूप में आपके हाथों में है । यह सचमुच अपने विषय का पूरा शास्त्र ही है । एकबार देखने पर अवश्य तुष्टि होगी । शीघ्र प्राप्त होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८६ **स्मृति के हस्ताक्षर** । श्री देवदत्त शास्त्री ।

'स्मृति के हस्ताक्षर' निःसन्देह हिन्दी के संस्मरण-साहित्य के लिए नई देन साबित होगा। हर संस्मरण एक नया शिल्प, निखरा सौष्ठव लेकर इस पुस्तक के माध्यम से अवतरित हुआ है। कोई संस्मरण ऐसा नहीं है जो पाठक के हृदय को तरल और सरल न बनाता हो। रोमांचकारी यात्रायें, व्यक्तिगत जीवन में घटी मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्त घटनायें पाठक में प्रेरणा, स्फूर्त्ति एवं संघर्षों से जूझने की अदम्य भावना उत्पन्न करने में पूर्ण सक्षम हैं। इन संस्मरणों के माध्यम से अज्ञात भारतीय भूगोल का रोचक अध्ययन हो जाता है। ५-००

८७ **हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ** । ले० व्यथितहृदय। वाराणसी की शास्त्री प्रथमखण्ड परीक्षा स्वीकृत। इसमें सरल और सुबोध ढङ्ग से हिन्दी के उन सर्वमान्य कवियों और उनकी कविताओं की आलोचना की गई है, जो उच्च कक्षाओं में अध्ययन के लिये सर्वत्र स्वीकृत हैं। समीक्षा और विषय-विवेचन में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ही प्रमुख रूप से महत्व दिया गया है। ३—५०

८८ **हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका** ।

ले० डा० शम्भुनाथ सिंह

यों तो अब तक हिन्दी साहित्य के अनेक इतिहास प्रकाशित हो चुके हैं पर केवल हिन्दी काव्य का कोई इतिहास अब तक प्रकाश में नहीं आया है। इसमें आदि काल से लेकर अब तक के हिन्दी काव्य के इतिहास का समाजशास्त्रीय विवेचन किया गया है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में बिलकुल नये ढंग से और विस्तार से विचार किया गया है और हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन वैज्ञानिक पद्धति से नये रूप में किया गया है। हिन्दी काव्य की युग-सापेक्ष्यता का ज्ञान जितना इस पुस्तक से हो सकता है, उतना अब तक प्रकाशित अन्य किसी इतिहास-ग्रन्थ से नहीं हो सकता। इसमें हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ आठवीं शताब्दी से माना गया है जो लेखक के गम्भीर शोधकार्य का परिणाम है। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के अन्वेषकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८९ **हिन्दी के पौराणिक नाटक ।** डॉ० देवर्षि सनाढ्य,
भारतीय पुराणों ने किस प्रकार भारतीय जन-मन को प्रभावित किया है और किस प्रकार पुराण की दिव्य कथाओं ने भारतीय मनीषी को प्रेरित किया है, इन सब का प्रामाणिक विवरण इस शोध-ग्रन्थ में उपस्थित किया गया है। १०—००

९० **हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ ।** लेखक—थि० गोल्डस्टकर।
अनुवादिका—सुश्री डॉ० रमा शास्त्री।
वैदिक काल में आर्यों की संस्कृति और सभ्यता एवं उनके आचार, विचार कितने समुन्नत थे तथा किन उत्कृष्टतम ग्रन्थों से इसका प्रामाणिक विवरण प्राप्त होता है इसका विशुद्ध विवेचन राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम बार ही प्रकाशित किया गया है। ४—००

९१ **हिन्दू संस्कार ।** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)
डॉ० राजबली पाण्डेय (परिवर्द्धित परिष्कृत द्वितीय संस्करण)।
यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण देन है। गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अंगों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते हैं। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के अध्ययन के परिणाम इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं १६—००

९२ **हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त काव्य ।**
डॉ० प्रभाकर माचवे।
इस ग्रन्थ में दक्षिण और उत्तर की भाषाओं के आरम्भिक भक्ति-साहित्य के साम्य और विभेद पर सामाजिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यशास्त्र-विषयक मान्यताओं के परिपार्श्व में प्रामाणिक अध्ययन तथा १२वीं से १५ वीं सदी के भारतीय वाङ्मय का एक रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। यह लेखक के १० वर्षों से अधिक के परिश्रम का निचोड़ है १२—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*93 Abanindranath Tagore (His Life and Arts) Dr. Rai Gobind Chanda. 18–00

94 FALL OF MOGUL EMPIRE: By Sidney J. Owen. M. A., Second Edition. (Chow. Sans. Studies Vol. VII) 8–00

95 HISTORICAL AND LITERARY INSCRIPTIONS : by Dr. Rajbali Pandeya, M. A., D. Litt. (Chow. Sans. Studies Vol. XXIII.) 15–00

96 HISTORY OF INDIAN LITERATURE by Albercht Weber. Translated from the Second German Edition by John Mann, M. A., and Theodor Zachariale Ph.D. (Chow. Sans. Studies Vol. VIII) 25–00

97 HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE : By F. Max Muller. Third Edition. (Chow. Sans. Studies Vol. XV) 25–00

98 INDO-ARYAN LETERATURE AND CULTURE (ORIGINS) : By Nagendranath Ghose (Chow. Sans. Studies Vol. LI.). 20–00

99 STUDIES IN THE DEVELOPMENT OF ORNAMENTS AND JEWELLERY IN PROTOHISTORIC INDIA : By Dr. Rai Govind Chanda. (Chow. Sans. Studies Vol. XLI) 75–00

100 STUDIES IN JAINISM AND BUDDHISN IN MITHILA by Dr. Upendra Thakur. (Chow. Sans. Studies Vol. XLIII) 15–00

101 THE BHAKTI CULT IN ANCIENT INDIA : By M. M. Dr. Bhagabat Kumar Goswami Shastri. (Chow. Sans. Studies Vol. LII.). 25–00

102 VISNUDHVAJ or QUTB MANAR : by Dr. D. S. Triveda (Chow. Sans. Studies Vol. XXIV) 5–00

103 VRATYAS IN ANCIENT INDIA : By Prof. Radha Krishna Choudhary (Chow. Sans. Studies. Vol. XXXVIII) 15–00

104 WOMEN IN ANCIENT INDIA by M. E. R. Martin. Chow. Sans. Studies. Vol. XLIV) 20–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

105 A STUDY OF HINDU ART AND ARCHITECTURE WITH ESPECIAL REFRENCE TO TERMINOLOGY by Dr. L. K. Sukla. In the Press.

106 CHANGING PHASES IN HINDI LITERATURE : By Dr. Bholashankar Vyas. In the Press.

107 FINE ARTS AND TECHNICAL SCIENCES IN ANCIENT INDIA. With Special Reference to Someswara's Manasollasa by Dr. Shiba Sheikhar Misra. M.A., Ph. D. In the Press.

108 HISTORY OF MUSLIM RULE IN TIRHUT (1200–1765) by Prof. Radha Krishna Chowdhary In the Press.

109 INSCRIPTIONS OF ASOKA : By Sri N. P. Rastogi. In the Press

110 MITHILA IN THE AGE OF VIDYAPATI : By Prof. Radha Krishna Choudhary. In the Press.

111 SRI AUROBINDO AND THE THEORIES OF EVOLUTION by Dr. Rama Shanker Srivastava. In the Press.

112 THE ARCHAEOLOGY OF KUMAON REGION INCLUDING DEHRADUN by Sri K. P. Nautiyal. In the Press.

113 THE DHVANI THEORY IN SANSKRIT POETICS : By Dr. Mukunda Madhava Sharma M. A., D. Phil. Kavyatirtha. In the Press.

114 THE HUNAS IN INDIA : By Dr. Upendra Thakur. In the Press

115 THE POLITICAL AND SOCIO–RELIGIOUS CONDITION OF BIHAR (185 B. C. to 319 A. D.) : By Sri Hari Kishore Prasad. In the Press.

116 THE STUDY OF INDIAN ART by K. De B. Codnington. In the Press

117 TRADE AND COMMERCE IN ANCIENT INDIA : By Sri Balaram Srivastava. In the Press.

118 A COMPARATIVE STUDY OF THE CONCEPTS OF SPACE AND TIME IN INDIAN THOUGHT : By Sri Kumar Kishore Mandal. In the Press.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बौद्ध-ग्रन्थाः

1 AN INTRODUCTION TO BUDDHIST ESOTERISM by Dr. Benoytosh Bhattacharya. (Chow. Sans. Studies Vol. XLVI) Second Edition. 30–00

२ **सौगतसिद्धान्तसारसङ्ग्रह** । डॉ० चन्द्रधर शर्मा ।
इस ग्रन्थ में भगवान् बुद्ध के उपदेशों से लेकर जब तक भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा तब तक के आचार्यों के उपलब्ध दार्शनिक ग्रन्थों में से बौद्धदर्शन के सारभूत तत्त्वों का संग्रह किया गया है। ५–००

३ **बौद्धदर्शन मीमांसा** । आचार्य बलदेव उपाध्याय ।
(प्रान्तीय १०००) रु० तथा डालमिया २१००) रु० से पुरस्कृत)
इसमें पांच खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक संप्रदायों के गूढ़तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पंचम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है। अभिनव द्वितीय संस्करण ६–००

४ **न्यायबिन्दुः** । संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः ।
इसमें तीन परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में प्रत्यक्ष, द्वितीय में स्वार्थानुमान और तृतीय में परार्थानुमान का वर्णन है। इसकी हिन्दी टीका में मूल के साथ धर्मोत्तराचार्यकृत संस्कृत टीका का भी सांगोपांग अनुवाद करके भूमिका में गौतमन्याय, जैनन्याय तथा बौद्धन्यायों के समालोचना करते हुए बौद्धदर्शन का संपूर्ण संक्षिप्त इतिहास भी लिख दिया गया है। ५–००

*५ **जातकमाला** । हिन्दी टीका सहित । १–२० जातक ३–००

६ **बुद्धचरितम्** । अश्वघोष कृतम् । वाराणसी की पूर्वमध्यमा प्रथमखण्ड परीक्षा पाठ्य स्वीकृत । संस्कृत मूल श्लोक-हिन्दी अनुवाद सहित । अनुवादक—महन्त श्रीरामचन्द्रदास शास्त्री ।
इसमें हिन्दी टीका विषयानुकूल प्रवाह-युक्त तथा सरल एवं सरस है।
प्रथम भाग (१–१४ सर्ग) २–५०, द्वितीय भाग (१५–२८ सर्ग) ३–००
सम्पूर्ण १–२ भाग ५–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*७ **प्रमाणवार्त्तिकम्-स्वार्थानुमान परिच्छेदः**। आचार्य धर्मकीर्ति कृत। स्वोपज्ञवृत्ति सहितम्। १–५१ कारिका आंग्लानुवाद सहित ४–००

8 BUDDHISM by Monier Williams. (Chow. Sans. Studies Vol. XLV) 35–00

९ **अवदानकल्पलता**। श्रीक्षेमेन्द्रविरचिता तृतीयपल्लवः [चौ. पु.] ०–२५

*१० **आर्यशालिस्तम्बसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादविभङ्गनिर्देशसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादगाथासूत्रम्**। नेट ९–००

11 BUDDHIST PHILOSOPHY IN INDIA & CEYLON by A. B. Keith D. C. L., D. Litt. (Chow. Sans. Studies Vol. XXVI) 15–00

१२ **विज्ञप्ति मात्रतासिद्धिः विंशति कारिका वृत्तिश्च**। डॉ० महेशतिवारी कृत हिन्दी व्याख्या सहित ६–००

*१३ **समन्तपासादिका नाम विनयट्ठकथा**। बीरबल शर्मा संशोधित १–२ भाग ३०–००

जैनदर्शनम्

१ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज**। डॉ० जगदीशचन्द जैन।

भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का–शैली और कौशल की दृष्टि से उनका–वर्णन प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है। २५–००

२ **जैनन्यायखण्डखाद्य**। विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—आचार्य बदरीनाथ शुक्ल, अध्यक्ष—न्यायवैशेषिक विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

न्यायखण्डखाद्य जैनदर्शन का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है। इस ग्रंथ की प्रस्तुत सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या की भाषा अतीव प्राञ्जल परिष्कृत और प्रवहमान है, इसमें विभिन्न दर्शनों के अनेक सिद्धान्तों की गम्भीर आलोचना के साथ जैन दर्शन के सभी प्रमुख सिद्धान्तों का बड़ा विशद एवं हृदयङ्गम विवेचन किया गया है, व्याख्या इस ढङ्ग से लिखी गई है कि वह केवल व्याख्या न होकर एक मौलिक रचना सी बन गई है, दर्शनशास्त्र के अध्येताओं के लिए यह ग्रंथ अत्यन्त ज्ञान-वर्धक और नितान्त उपादेय है। ८–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*३ **तत्त्वार्थसूत्रम्**। उमास्वामिविरचितम् । भास्करानन्द विरचित सुखबोध-व्याख्या सहितम् । नेट २-७५

४ **प्रमेयरत्नमाला**। अनुवादक—हीरालाल शास्त्री जैन ।

आचार्य माणिक्यनन्दी ने परीक्षामुख की रचना सूत्र रूप में की थी। इसके ऊपर आचार्य प्रभाचन्द्र ने प्रमेयकमलमार्तण्ड, विस्तृत भाष्य के रूप में लिखा था। इसके पश्चात् लघु अनन्तवीर्य ने प्रमेयरत्नमाला नाम की टीका लिखी थी। यह छात्रों के लिए कुछ दुरूह थी। अतः इसके हिन्दी अनुवाद में मूल के एक-एक शब्द का रहस्य तथा कठिन स्थलों का मर्म बीच-बीच में विशेषार्थ देकर खोला गया है। हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सरल, सरस और हृदयग्राह्य है। १५-००

*५ **प्रमेयरत्नालङ्कारः**। अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य विरचितः। नेट ३-५०

६ **स्याद्वादमञ्जरी**। श्रीमल्लिषेणनिर्मिता। श्रीमदार्हतधुरन्धर श्रीसिद्ध-हेमचन्द्रनिर्मितवीतरागस्तुतिव्याख्या सम्पूर्णा [चौ. ९] समाप्त

*७ **सुत्तागमे**। सम्पादगो-पुप्फभिक्खू । १-२ भाग ६४-००

भारतीय ज्ञानपीठ की पुस्तकें

*१ **कन्नडप्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थसूची**। १३-००

*२ **करकंडचरिउ**। मुनि कनकामर विरचित । हिन्दी-आंग्लानुवाद सहित १०-००

*३ **केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि**। हिन्दी टीका सहित ४-००

*४ **जातकट्ठकथा**। पठमो भाग। भिक्षुधर्मरक्षित सम्पादित। एकक-निपातवण्णता । ९-००

*५ **जिनसहस्रनाम**। आशाधर विरचित । श्रुतसागरसूरि प्रणीत व्याख्या हिन्दी टीका सहित। ४-००

*६ **जीवन्धरचम्पू** । ८-००

*७ **जैनेन्द्र महावृत्तिः**। आचार्य अभयनन्दि प्रणीत १५-००

*८ **तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक)**। अकलङ्कदेवकृत। हिन्दी सार सहित। १-२ भाग २४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*९ **तत्त्वार्थवृत्तिः** । महेन्द्रकुमार सम्पादित १६-००
*१० **नाममाला** । धनञ्जय विरचित । अमरकीर्ति भाष्य सहित ३-५०
*११ **न्यायविनिश्चयः** । अकलङ्कदेव कृत । वादिराजकृत विवरण सहित । १-२ भाग ३०-००
*१२ **पउमचरिउ (पद्मचरित)** स्वयंभूदेव विरचित । विद्याधर-अयोध्या-काण्ड । हिन्दी अनुवाद सहित । १-३ भाग ९-००
*१३ **पञ्चसंग्रहः** । संस्कृत व्याख्या प्राकृत वृत्ति हिन्दी टीका सहित १५-००
*१४ **पद्मपुराणम्** (जैन) १-३ भाग । हिन्दी टीका सहित ३०-००
*१५ **पुराणसारसंग्रहः** । दामनन्दी विरचित । १-२ भाग । हिन्दी टीकासहित । ४-००
*१६ **भद्रबाहुसंहिता** । हिन्दी टीका सहित ८-००
*१७ **भोजचरित्र** । राजवल्लभ कृत । अंग्रेजी प्रस्तावना, नोट्स परिशिष्ट सहित ८-००
*१८ **मदनपराजयः** । नागदेव विरचित । हिन्दी टीका सहित ६-००
*१९ **मयणपराजयचरिउ** । हरिदेव कृत । हिन्दी टीका सहित ८-००
*२० **महापुराणम्** । (आदि पुराण) १-२ भाग । हिन्दी टीकासहित २०-००
*२१ **महापुराणम्** । (उत्तर पुराण) हिन्दी टीका सहित १०-००
*२२ **महाबन्धः** । भूतबलिभट्टारकविरचित । हिन्दी टीका सहित । २-७ भाग ६६-००
*२३ **वसुनन्दिश्रावकाचारः** । आचार्य वसुनन्दिकृत । हिन्दी टीका सहित ५-००
*२४ **सभाष्यरत्नमञ्जूषा** । छन्दःशास्त्र २-००
*२५ **सर्वार्थसिद्धिः** । हिन्दी टीका सहित १२-००
*२६ **समयसारः** । आचार्य कुन्दकुन्द कृत । नागरी-रोमन लिपि संस्कृत-छाया आंग्लानुवाद सहित ८-००
*२७ **सिद्धिविनिश्चयटीका** । अनन्तवीर्याचार्यविरचित । १-२ भाग ३०-००
*२८ **हरिवंशपुराणम्** । आचार्य जिनसेन कृत । हिन्दी टीका सहित १६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तोत्र-माहात्म्य-व्रत-ग्रन्थाः

१ अपराजितास्तोत्रम् ०-१५

२ अन्नपूर्णास्तोत्रम्। लक्ष्मीलहरी सहित। ०-१५

*३ अष्टोत्तरशतनाममालिका। विद्यासागर शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित। सम्पादक-युधिष्ठिर मीमांसक ६-००

४ आदित्यहृदयस्तोत्र-नवग्रहसहित ०-१०

५ आळवन्दारस्तोत्रम्। ०-१५

६ ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्। ०-०५

७ एकादशीमाहात्म्यम्। 'सरला' हिन्दी टीकोपेतम्। धर्मप्राण जनता के प्राणभूत इन पौराणिक ग्रन्थों की भाषा आज प्रायः उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती है। श्लोकों के भाव भी परम्परा का अनुसरण करने के कारण यत्र-तत्र अव्यवस्थित से हैं। अतः सुयोग्य भाषाविद् विद्वानों से आमूल संस्कार कराकर व्यवस्थित एवं प्रवाहमय ललित हिन्दी अनुवाद के साथ यह संस्करण प्रकाशित किया गया है ४-००

८ कालीकवचम्। काली ताराध्यान सहितम् ०-१०

९ गणेशमहिम्नस्तोत्रम्। पुष्पदन्त विरचितम् ०-१०

१० गणेशसहस्रनामावली। ०-५०

११ गङ्गालहरी। मूल ०-१५

१२ गङ्गालहरी। पीयूषलहरी व्याख्या सहित ०-६०

१३ गङ्गालहरी। निर्मला नामक भाषा टीका सहित ०-३५

१४ गायत्रीरामायणम् ०-०५

१५ चर्पटपञ्जरी। इन्दुमती नामक भाषा टीका सहिता ०-१५

१६ तुलसीपूजापद्धतिः। ०-१५

१७ दत्तात्रयस्तोत्रम् ०-२०

१८ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ०-१०

१९ दुर्गाकवचम्। अर्गला-कीलक सहित ०-१०

२० देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्। ०-१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् । शङ्कराचार्यकृत ०-१०
१२ देवीसहस्रनामावली । ०-५०
१३ धन्वन्तरिस्तोत्रम् ०-१०
१४ नर्मदाष्टकम् । ०-०५
*१५ परशंभुमहिम्नस्तवः । ०-३७
*१६ पादुकासहस्रम् । वेदान्तदेशिककृत । नेट ३-५०
१७ प्रश्नोत्तरी (मणिरत्नमाला) । इन्दुमती भाषाटीका सहित । ०-१५
१८ बगलामुखीस्तोत्रम् ०-१५
१९ बटुकभैरवस्तोत्रम् । अनुष्ठानविधिसहित ०-१५

२० **बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः**—संपादक पं० श्री शिवराम शर्मा ।
नाना पुराणोक्त तथा विभिन्न सम्प्रदायाचार्यों द्वारा प्रणीत गणपत्यादि स्तोत्रों का यह गुटका साइज का अभूतपूर्व अनुपम संग्रह है । ४-५०

२१ महालक्ष्मीस्तोत्रम् । महालक्ष्म्यष्टक-अम्बाष्टकद्वयोपेतं ०-०५
२२ महाविद्यास्तोत्रम् । ०-१०
२३ महिम्नस्तोत्रम् । शिवताण्डवस्तोत्रञ्च । मूल ०-१५
२४ महिम्नस्तोत्रम् । मधुसूदनी-संस्कृतटीका-सहितम् ०-६०
२५ महिम्नस्तोत्रम् । इन्दु नामक भाषाटीका सहित ०-१५
२६ मृतसञ्जीविनीजपविधि-महामृत्युञ्जयजपस्तोत्रादि युत ०-२०
२७ मृत्युञ्जयमानसिकपूजनम् । ०-२०
२८ रामनामसहस्रनामस्तोत्रम् ०-१५
२९ रामरक्षास्तोत्रम् । ०-१५
*४० ललितात्रिशतिस्तोत्रम् । शाङ्करभाष्य सहित नेट २-००
४१ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । सचित्र ०-१५
४२ शनिस्तोत्रम् । शङ्कराचार्यकृत कृष्णाष्टकयुत ०-१५
४३ शिवताण्डवस्तोत्रम् । सर्वमङ्गला भाषाटीका सहित ०-१०
४४ **शिवकर्णामृतस्तोत्रम्** । श्री भरद्वाज मुनि कृत यन्त्रस्थ

 Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५ **शिवमहिम्नस्तोत्र।** हिन्दीपद्यानुवाद सहित, अनु० पं० राधेलाल त्रिवेदी।

वर्तमान युग का प्रसिद्ध फलदायी शिवमहिम्नस्तोत्र क्लिष्ट संस्कृत में होने से सबके लिये सुबोध नहीं है, वैसे पाठ तो लोग करते ही हैं। प्रस्तुत संस्करण में इसका छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। ये पद्य बड़ी सरल भाषा में हैं तथा श्लोक का पूरा भाव-वैभव इस अनुवाद में उतर आया है। प्रस्तावना भी पद्यों में ही लिखी गई है। अवश्य अवलोकनीय संस्करण है। ०-७५

४६ **शिवस्तोत्रम्। शिवकवच-शिवमानसपूजा-शिवमहिम्न-शिवापराधक्षमापनस्तोत्र** सहित ०-१५

४७ **श्रीशिवस्तोत्रावली।** श्रीमदुत्पलदेवाचार्य विरचित। श्री क्षेमराजाचार्य निर्मित विवृति समेत। काश्मीरी स्वामी श्री राजनक लक्ष्मण कृत हिन्दी टीका सहित।

संस्कृत स्तोत्र साहित्य की इस अनूठी कृति में अद्वैत-शैव-दर्शन के मूल सिद्धान्तों के आधार पर चरम सीमा को पहुँची हुई समावेशमयी भक्ति की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। शिवतत्त्व का प्रामाणिक इसका अध्ययन साहित्य-रसिकों को भी उत्कृष्ट कविता के रसास्वादन का आनन्द प्रदान करने की पूरी क्षमता रखता है। संस्कृत व्याख्या में तो गूढ़ भावों का स्पष्टीकरण हुआ ही है, इसकी अन्वयार्थबोधिनी हिन्दी व्याख्या केवल हिन्दी ज्ञाताओं को भी तुष्टि देने में पूर्ण समर्थ है। १०-००

४८ **शीतलाष्टकम्** ०-०५

*४९ **श्रीनटराजसहस्रनामावली** १-००

*५० **श्रीनटराजसहस्रनामभाष्यम्।** १-२ भाग ४-००

५१ **श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं श्यामलादण्डक-श्यामलानवरत्नमालिका श्रीवेङ्कटेश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रञ्च।** ०-१५

५२ **सन्तानगोपालस्तोत्रम्।** ०-१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५३ **सिद्धसरस्वतीस्तोत्रम्।** (गणेशस्तवराजस्तोत्रम्, सरस्वतीस्तोत्रम्, सरस्वत्यष्टकम्, सरस्वतीकवचम्, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्, कालभैरवाष्टकम्) प्रत्यक्षफलोपयोगी। ०–१५

५४ **सूर्यादिद्वादशस्तवीस्तोत्रं–अन्नपूर्णादिस्तोत्र** सहित। ०–२०

५५ **सत्यनारायणव्रतकथा।** 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका सहित। इसमें मूलपाठ को विचारपूर्वक सर्वथा शुद्ध रखते हुए विद्वानों द्वारा परिशोधित प्रामाणिक 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका प्रकाशित की गई है। सत्यनारायण व्रत कारिका, पृथक्-पृथक् सविधि गणपति-नवग्रहादि-पूजन, कलशस्थापन-पूजन, षोडशोपचार-सत्यनारायणपूजन, अन्त में सत्यनारायणाष्टक तथा सांगोपांग हवन-विधि आदि प्रस्तुत संस्करण की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। रफ ०–६२ ग्लेज ०–७५

५६ **सूर्यशतकम्।** 'कला' हिन्दी टीका सहित
अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएँ आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं। विचार पूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से संबन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है। २–५०

५७ **भारतीय व्रतोत्सव।** आचार्य पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी। भारतीय व्रतों व त्योहारों के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनसे इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें सभी व्रतोत्सवों का काल-विज्ञान एवं विधि-विज्ञान बुद्धिगम्य रूप में दिया गया है तथा शास्त्र व लोक दोनों के अनुसार विधियों की युक्तियुक्तता सिद्ध की गई है। ३–००

५८ **हमारे त्योहार।** डॉ० व्रजमोहन। समाप्त

प्रकीर्ण-ग्रन्थाः

*१ **अर्पण।** डॉ० सर्वानन्द पाठक।
पुस्तक में काव्य सम्बन्धी हास्य, शृङ्गार, करुण आदि विविध रसभक्ति-योग, ज्ञानयोग, विवेकानन्द, शंकराचार्य, बालयोगिनी, कुण्डलिनीयोग, अन्तर्लोक आदि रोचक विषयों का सम्मिश्रण हुआ है। १–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२ **अभिनव निबन्धावली ।** ले० श्री श्यामलाकान्त वर्मा

वाराणसी की शास्त्री प्रथम-द्वितीय खण्ड के अनिवार्य हिन्दी निबन्ध के लिये स्वीकृत ।

प्रस्तुत पुस्तक को विषयानुसार ३ खण्डों में विभक्त करके इसमें प्रायः सभी प्रकार के लगभग १०० परीक्षोपयोगी हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है छात्रों के लिए इसी प्रकार वर्गीकरण की आवश्यकता थी। भाषा, शैली, कौशल आदि सभी दृष्टियों से इसकी उत्तमता स्वीकृत की गई है तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों में यह निर्धारित भी है ४-५०

३ **असामान्य मनोविज्ञान ।** डॉ० रामकुमार राय ।

इस अद्वितीय पुस्तक में सभी विश्वविद्यालयों के बी. ए. तथा एम. ए. के असामान्य मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित विषयों का समावेश है। सम्पूर्ण पुस्तक उपयुक्त रेखा-चित्रों से सुसज्जित है; जिससे इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण १०-००

*४ **आजादी की लड़ाई और सुभाष बाबू ।**

डॉ० जगदीशचन्द जैन ।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जीवन और उनके कृत्य हमारे अन्दर स्वार्थत्याग और प्रचण्ड देश-भक्ति की भावना का संचार करते हैं। उन महान् पुरुष के जीवन की झाँकी इस पुस्तक में मिलेगी, जो आजादी की लड़ाई में दिन-रात जूझता रहा है। २-५०

५ **हिन्दी-काव्य-मञ्जूषा ।** ले० रमाशंकर पाण्डेय ।

(वाराणसी की उत्तरमध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

इसमें चन्दबरदायी से दिनकर तक २६ कवियों की रचनाओं के 'राष्ट्र शक्ति के विकास में योगप्रद' अंशों का संकलन किया गया है। प्रति पृष्ठ पर पर्यायबोधक विस्तृत टिप्पणी दी गई है तथा अन्त में प्रत्येक कवि का वृत्तबोधक संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। शैली और कौशल की दृष्टि से यह हिंदी साहित्य की सर्वोत्तम परिचायिका है ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ **काशी-दर्शन** । इसके पढ़ने से समस्त काशी के नवीन एवं प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों एवं घाट, मन्दिर, भवन, कला तथा शिक्षालयों आदि का संपूर्ण परिचय सहज में हो जाता है। ०–३५

७ **हिन्दी चारुचर्या** । व्याख्याकार–पं० देवदत्त शास्त्री ।
महाकवि क्षेमेन्द्र विरचित 'चारुचर्या' का यह हिन्दी रूपान्तर है। भारतीय सदाचार तथा शिष्टाचार पर इस से उत्तम, हृदय में चुभनेवाला दूसरा ग्रन्थ कोई नहीं है। श्लोकार्थ अंकित कर 'तात्पर्य' द्वारा तन्निहित उदाहरण कथा व्यक्त कर देने से बच्चों का बड़ा हित हुआ है। २–००

८ **तुलसीकृत रामायण सुन्दरकाण्ड** । विजयश्री भाषा टीका 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित । बिहार मध्यमा परीक्षोपयोगी १–२५

९ **द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग–यात्रा** । स्वामी रामानन्द सरस्वती १–५०

१० **दिव्य जीवन-दर्शन** । लेखकः–पथिक ।
ज्ञान, भक्ति तथा कर्मयोग का समन्वय जिसके जीवन में हुआ हो ऐसे ज्ञानी भगवदी के १०८ सदुपदेश इस पुस्तक में संगृहीत हैं। ०–५०

११ **नगरीय समाजशास्त्र** । श्री कौशलकुमार राय ।
प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में नगरीय समाजशास्त्र का पठन-पाठन आरंभ हो गया है। लेकिन इस विषय पर हिन्दी में कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। इसी अभाव की पूर्ति के हेतु प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। ८–००

१२ **नागरिक शास्त्र (सचित्र)** । प्रो० हनुमानप्रसाद शर्मा ।
नागरिक शास्त्र के सर्वांग पूर्ण विधान की जानकारी के लिए यह अद्वितीय पुस्तक है। आज के युग में प्रत्येक नागरिक को इसकी आवश्यकता पदे-पदे पड़ती है। इसका निर्माण इसी उद्देश्य से किया गया है। १-१ प्रति शीघ्र मंगाकर इससे लाभ उठाइए। ०–७५

*१३ **निबन्ध शेखर**—ले० महेश चन्द्र गर्ग ।
इसके निबन्ध छोटे-छोटे, भाषा सधी हुई सरल और भाव प्रभावोत्पादक है। हिन्दी की इस शैली में निबन्ध लिखने का यह प्रथम प्रयास है। उच्च कक्षा के छात्रों के लिये यह अधिक उपयोगी है। ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४ **पथचिह्न** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ।
बिहार की मध्यमा तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालयकी इण्टर परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत ।
इसमें कृतिकार के निर्माण-संकल्प का क्रमिक विकास और उसका रूप-विन्यास अत्यन्त मनोहर और हृदयंगम हुआ है। इसकी शैली सम्पन्न, अनुरूप, भावप्रवण तथा व्यञ्जक है। प्रतिपृष्ठ पर ये विशेषताएँ लक्षित होती हैं। १-५०

*१५ हिन्दी पाठमाला ०-५०

१६ **प्रारम्भिक भूगोल** (सचित्र) ।
(प्रथमा परीक्षापाठ्य सर्वोत्तम संस्करण) वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की नियमावली (सन् १९६५) के अनुसार क्रम से विषयों का उपन्यास कर यह पुस्तक प्रथमा-परीक्षार्थियों के लिए प्रस्तुत की गई है। यथास्थल चित्र और नक्शे भी दिए गए हैं। जूनियर हाई स्कूल के अनुभवी अध्यापक मण्डल द्वारा इसका सम्पादन हुआ है। अतः भूगोल का प्रारम्भिक ज्ञान कराने में इसके अतिरिक्त दूसरी कोई उत्तम पुस्तक नहीं है २-५०

*१७ **ब्रज और ब्रजयात्रा** । सम्पादक सेठ गोविन्ददास-रामनारायण अग्रवाल
समस्त संस्कृत वाङ्मय तथा हिन्दी और अंगरेजी साहित्य में प्राप्त ब्रज-सामग्री का मंथन करके विद्वानों और शोधकों ने पर्याप्त श्रमपूर्वक इस ग्रंथ के लिये लेख लिखे हैं। ब्रजयात्रा की परम्परा का इतिहास इस ग्रन्थ द्वारा ही पहली बार प्रकाश में आ रहा है। ५-५०

१८ **भारतीय इतिहास की रूपरेखा** । डॉ० बलराम श्रीवास्तव (वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)
इसमें भारतीय इतिहास के प्रमुख तथ्य ही सूक्ष्म रूप में व्यवस्थित किए गये हैं, फिर भी पुस्तक इतिवृत्तात्मक नहीं है। प्रथमा-छात्रों की व्यावहारिक कठिनाइयों तथा उनके एतद्विषयक बौद्धिक स्तर का विशेष ध्यान रखा गया है। यथावसर चित्र और नक्शे भी दिये गए हैं। २-५०

*१९ **भक्त ध्रुव**-ले० हर्षवर्द्धन शुक्ल ०-६५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*२० **भारततीर्थ-यात्रा** । निर्माता-स्वामी रामानन्द सरस्वती ६-५०

२१ **भारतीय इतिहास** (सचित्र) । प्रो० रामस्वरूप

३९ अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक में वैदिक सभ्यता से लेकर अब तक का विशद इतिहास इस कौशल से उपनिबद्ध है कि कोई विषय छूटने नहीं पाया है। स्थान-स्थान पर अनेक चित्र तथा अध्याय के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इतिहास में भारत की आत्मा साकार हो उठी है। आवरण अत्यन्त मनोरम छपा है। १-५०

२२ **भारत का भूगोल (सचित्र)** । प्रो०रामस्वरूप

प्रस्तुत संस्करण में भारत के भूगोल के साथ विश्व भूगोल भी सम्मिलित है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न तथा आवश्यक स्थलों पर चित्र भी दिए गए हैं। सभी विषय छात्रों की ग्रहण-योग्यतानुसार ही संग्रथित किए गए हैं तथा भूगोलसंबन्धी नवीनतम सूचनाओं को भी स्थान दिया गया है १-००

२३ **संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान** । श्री जगदीशसहाय विसारिया।
(वाराणसी की प्रथमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत)

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की परिवर्तित नियमावली (१९६५) के अनुसार निर्धारित विषयों को क्रम से सजा कर आवश्यक स्थलों पर चित्र देते हुए अत्यन्त सरल भाषा में यह पुस्तक लिखी गई है १-००

*२४ **महारास**—नरेशचन्द्र मिश्र 'भञ्जन'। प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत पर आधृत कल्पना के अनुसार 'महारास' शब्द की शास्त्रीय विवेचना के माध्यम से प्राणियों के लिये आध्यात्मिक उपासना की आवश्यकता, इसका स्वरूप एवं उसका फल—विस्तार से, नौ सर्गों में, हिन्दी काव्य के रूप में उपनिबद्ध है। ५-००

*२५ **महावीर वर्धमान** । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ।

जैन और बौद्ध ग्रन्थों की गहरी छान-बीन के बाद विद्वान् लेखक ने भगवान् महावीर के संबन्ध में यह प्रामाणिक विवरण लिखा है। इसमें महावीर जीवन और उनकी शिक्षाओं को एक नयी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। इसकी शैली बहुत रोचक है।

अजिल्द ०-७५, सजिल्द १-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६ **राष्ट्रभारती** । श्री करुणापति त्रिपाठी । वाराणसी की प्रथमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत । १-५०

*२७ **रासलीला : एकपरिचय** । सम्पादक सेठ गोविन्ददास, रामनारायण अग्रवाल
रास के इतिहास, उसके संगीत, नाट्य-रूप तथा उसकी कलात्मक व्यापकता और संस्कृत तथा व्रज-साहित्य में उपलब्ध तत्संबंधी विवरणों के साथ-साथ संक्षेप में रासलीला के प्राचीन और वर्तमान रूप का परिचय तथा रास के लौकिक रूप के अतिरिक्त आध्यात्मिक रूप का परिचय प्रस्तुत करना इस ग्रन्थ का विषय है । २-५०

२८ **वंदनीय भारतीय** । ले० श्री व्यथित हृदय ।
छात्रों में चरित्र के भाव दृढ़ करने के उद्देश्य से लिखी गई इस पुस्तक में अतीत के १२ वन्दनीय भारतीयों के चरित्रों का मनन, चिन्तन तथा उनकी जीवन-कथाओं का अनुशीलन घटनाओं के माध्यम से किया गया है । छात्रों के लिये यह सर्वाधिक आवश्यक पुस्तक है । २-८५

२९ **वरदपुत्र** । ले० श्री व्यथित हृदय ।
भारतमाता के जिन स्वनाम धन्य पुत्रों ने नवीन भारत के निर्माण के लिये शूलियों पर शैया, कारागारों में, देवमंदिरों और विदेशों की गलियों में स्वदेश के सुखों की अनुभूतियाँ संजोई हैं उन्हीं का त्याग, उनका स्वदेश प्रेम और उनका साहस ही प्रस्तुत पुस्तक में विचित्र कलमों द्वारा अंकित है । छात्रों के लिये यह निश्चित रूप से वहुमूल्य कृति है । २-१५

३० **विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान** । अरविन्द वसावड़ा ।
डॉ० सी० जी० युंग के मनोविज्ञान पर लिखित इस प्रारंभिक पुस्तक में उनकी जीवनी की पृष्ठभूमि में विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का विवेचन और प्रमुखतः व्यक्तित्व के संश्लेषण से सम्वन्धित विचारों को प्रस्तुत किया गया है । हिन्दी में युंग के मनोविज्ञान पर यह एक ऐसे विद्वान् द्वारा लिखित एक मात्र पुस्तक है जो भारतीय दर्शन में शिक्षित होने के साथ ही साथ अनेक वर्षों तक युंग के भी घनिष्ठ सम्पर्क में रहा है । २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१ **व्यावहारिक मनोविज्ञान।** डॉ० रामकुमार राय।
बी० ए० परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखित इस पुस्तक में विद्यार्थियों को आवश्यक समस्त सामग्री का इतना व्यापक विवरण मिलेगा कि उन्हें अन्य किसी पुस्तक को देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। पुस्तक में अनेक चित्र, प्रत्येक अध्याय का सारांश, विभिन्न प्रकार की अनुक्रमणिकायें और सन्दर्भ ग्रन्थ की विस्तृत सूची भी दी गई है। ८-००

*३२ **युरोप और वहाँ के संग्रहालय**—डॉ० सतीशचन्द्र काला
भारत से जो दुष्प्राप्य वस्तुएँ यूरोप ले जाई गई हैं उनका भी यथाशक्य विवेचन इसमें प्राप्त होता है। अन्त में आर्ट पेपर पर छपे लगभग ५० दुष्प्राप्य चित्र भी हैं। अनुसंधान प्रेमियों के लिए पुस्तक उपयोगी है। ५-००

३३ **व्यावहारिक मनोविज्ञान की रूपरेखा।** डॉ० रामकुमार राय।
प्रस्तुत पुस्तक इण्टर श्रेणी के नवीन पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इस विषय का अध्ययन आरम्भ करने वाले छात्र सरलता से विषय समझ सकें, लेखक का यह प्रयास सफल है। जिन मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों का उपयोग किया गया है उनके नाम, सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची, प्रत्येक अध्याय के अन्त में सारांश और प्रश्नावली, अनेक चित्र और रेखाचित्र, अंग्रेजी-हिन्दी तथा हिन्दी-अंग्रेजी शब्दसूची, पृथक्-पृथक् नामों और विषयों की अनुक्रमणिका आदि को देखते हुए छात्रों के लिए यह अत्यधिक उपयोगी संस्करण है। ५-००

*३४ **शरतचन्द्र।** ले० श्रीमती लावण्यप्रभा राय
प्रस्तुत पुस्तक में शरच्चन्द्र के जीवन पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है कि छोटी से छोटी भी मार्मिक घटना छूटी नहीं है। इनके उपन्यासों से इनके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं का क्या सम्बन्ध था यह इस पुस्तक से भलीभाँति समझा जा सकता है। २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३५ **सतरंगी कहानियाँ।** (सचित्र) लेखकः उदयन ।
जूनियर हाई स्कूल के बच्चों के लिये शिक्षाप्रद मनोरंजक कहानियों का सर्वोत्तम पुस्तक १–४०

३६ **सदाचार-सोपान।** पं० श्री रामबालक शास्त्री ।
विद्वान लेखक ने इसमें विद्यार्थी, अभिभावक और गुरु का कर्तव्य तथा शिक्षा में सदाचार की आवश्यकता का निरूपण करते हुये विद्यार्थियों की दिनचर्या और कर्तव्याकर्तव्य का चित्र ही खींच दिया है। ०–५०

३७ **सुनो कहानी।** (सचित्र) लेखकः उदयन ।
कहानी के माध्यम से बच्चों को पुस्तक पढ़ने के अभ्यास के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। बच्चों के लिए यह अधिक रोचक और शिक्षाप्रद है। १–४०

३८ **हिन्दी निबंधादर्श।** आचार्य रमाशंकर तिवारी ।
इसमें परीक्षा में प्रष्टव्य लगभग ४० आधुनिक सरल संक्षिप्त हिन्दी निवन्धों का संग्रह किया गया है। प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में भाषा, शैली, कौशल आदि की दृष्टि से इस संस्करण की उत्तमता स्वीकृत की गई है। २–२५

३९ **हिन्दी साहित्य सरोवर।** श्री चक्रधरशर्मा
इस पुस्तक में हिन्दी के नवीन एवं प्राचीन विद्वानों के संक्षिप्त जीवनवृत्त एवं उनकी उपयोगी गद्य-पद्यात्मक रचनायें हैं। शब्दार्थ और भावार्थ देकर विषय को अधिक से अधिक सुबोध बनाने का प्रयत्न किया गया है। (यू० पी० हाईस्कूल के लिए पाठ्य स्वीकृत। २–०५

कतिपय अत्यावश्यक उपयोगी पुस्तकें

1 An Outline of Early Buddhism by Dr. Ajaymitra Shastri. 10—00
2 Ancient Geography of India by A. Cunningham. 25–00
3 Archaeological Survey of Western India : Vol IV Report on the Buddhist Cave Temples and their Inscriptions, supplementary on 'The Cave Temples of India'. By James Burdges. 75–00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4 Architectural Pieces in Mathura Museum by Dr. V. S. Agrawala. 24-00

5 Srimadbhagavada Gita (Song Celestial) Text with English Translation in Poetry and Meghaduta (Cloud Messenger) Text with English Translation in Poetry by Dr. V. S. Agrawala. 8-00

6 Caste System of the Hindus by Sourindro Mohun Tagore. 2-00

7 Chakradhvaja the Wheel Flag of India by Dr. V. S. Agrawala. 20-00

8 Coins of Ancient India : By A. Cunningham. 25-00

9 Coins of Medieval India : By A. Cunningham. 25-00

10 Corpus Inscriptionum Indicarum Vol. I. Inscriptions of Asoka. Prepared by Alexander Cunningham. 50-00

11 Corpus Inscriptionum Indicarum Vol. III. Inscriptions of Early Gupta Kings and their Successors. With Plates. by John Fleet. 175-00

12 Evolution of the Hindu Temple and Other Essays by Dr. V. S. Agrawala. 6—00

13 Gotras in Panini by Dr. V. S. Agrawala. 3-00

14 Hymn of Creation : Nasadiya Sukta by Dr. V. S. Agrawala. 3-00

15 India As Known To Panini by Dr. V. S. Agrawala. 15-00

16 India Three Thousand Years Ago by John Wilson. 5-00

17 Indian Art Vol. I (A History of Indian Art from the Earliest Times up to the Third Century A. D.) by Dr. V. S. Agrawala. 45—00

18 Katyayana and Patanjali their Relation to each other and to Panini by F. Kielhorn. 5-00

19 Later Indo-Scythians : By A. Cunningham. With plates 25-00

20 Lectures on the Origin and Growth of Religion by F. Maxmuller. 25-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

21 Lingua India Revealed by S. C. Choudhury. 10-00

22 Mahabodhi or the Great Buddhist Temple under the Bodhi Tree at Buddha-Gaya by A. Cunningham. 50-00

23 Malavikagnimitram Text, English Translation by C. H. Tawney. 4-00

24 Master Pieces of Mathura Sculpture by Dr. V. S. Agrawala. 10-00

25 Mathura Museum Catalogue Part III-Jaina Tirthankaras and Other Miscellaneous Figures by Dr. V. S. Agrawala. 21—00

26 Matsya-Purana a Study by Dr. V. S. Agrawala. 30-00

27 Purna Kalasa or The Vase of Plenty by Prithvi Kumar Agrawala. 10—00

28 Siva Mahadeva-The Great God by Dr. V. S. Agrawala. 45—00

29 Stupa of Bharhut: With 57 plates by A. Cunningham. 100-00

30 The Thousand Syllabled Speech Vol. I. Vision in Long Darkness by Dr. V. S. Agrawala 50-00

31 Three Lectures on the Science of Language by F. Maxmuller. 6-00

32 Vamana-Purana-A Study by Dr. V. S. Agrawala 25-00

33 Vedic Lectures by Dr. V. S. Agrawala. 10-00

34 Vedic Mythology by A. A. Macdonell. 25-00

35 Vyala Figures on the Mediaevl Temples of India by Madhusudan A. Dhaky. 10—00

३६ **भारतवर्ष का इतिहास ।** लेखक—एच० एम० इलियट-जान डाउसन

१ औरंगजेब-मू० लेखक-ख़फी ख़ाँ ४—००

२ उत्तरकालीन मुगल-मू० लेखक-ख़फी ख़ाँ ४—००

३ बाबर तथा हुमायूं-मू० लेखक-बाबर ३—००

४ शेरशाह-मूल-लेखक-अब्बास सरवानी ४—००

५ अकबरनामा-मू०-लेखक-अबुल फ़ज़ल ५—००

३७ **सेठ कन्हैयालाल पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ ।** डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रकाशन

1 Aspects of Ancient Indian Economic Thought by K. V. Rangaswami Aiyangar. 9-00
2 Bhagvadgita. Edited and Translated by Dr. S. K. Belvalkar. 12-00
3 Buddhism and Hinduism by Gurusewak Upadhyaya. 1-50
4 Buddhist Hybrid Sanskrit Language and Literature Ten Public Lectures by F. Edgerton 10-00
5 Economy of Human Life (Full of Hindu Wisdom) Translated from an Indian Manuscript written by an Ancient Brahmin. 1-50
6 Himalayan Beas Basin : A Study in Habitat, Economy and Society by Dr. S. L. Kayastha. 25-00
7 Indo-European and Semitic. A Suggestion for the ultimate unity of the Indo-Eoropean and semitic Languages by Dr. Surya Kanta Shastri. 2-50
8 Integral Advaitism of Sri Aurobindo by Dr. Ram Shankar Misra. 14-00
9 Lectures on Shri Guru Granth Sahib delivered by Bhai Jodh Singh. 1-50
10 Mahamana Malaviyaji's birth Centenary Commemoration Volume, 25th December, 1961. 5-00
11 Purva Mimamsa it its Sources by Dr. Ganganath Jha. 15-00
12 Religion We Need by Dr. S. Radhakrishnan 1-00
13 Sectional Price Movements in India by Ayodhya Singh. 20-00
14 Some Aspects of Ancient Hindu Polity by Dr. D. R. Bhandarkar. 6-00
15 Spinoza in the Light of the Vedanta by Dr. Rama Kanta Tripathi. 10-00
16 Stories for Young Children from Hindu Sacred Books 1-00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

17 Theism of the Bhgawadgita by S. Radhakrishnan 3-00
18 Transport Geography of South Bihar by Dr. Jagdish Singh. 20-00
19 Under Graduate Medical Education Lectures by Col. Amir Chand. 2-50
20 Vedic Mathematics or 'Sixteen Simple Mathematical Formulae from the Vedas' by Swami Sri Bharati Krishna Tirthaji. 10-00
21 Yogacara Idealism by Ashok Kumar Chatterjee 12-00
२२ आयुर्वेदादर्शसंग्रह । दामोदरशर्मा गौड़ २-००
२३ छन्दस्वती वाक (Select Vedic Mantras) By V. S. Agrawala 1-50
२४ प्रकरणपञ्चिका । शालिकनाथ मिश्र विरचित । न्यायसिद्धि व्याख्या संवलित २५-००
२५ प्रौढ़मनोरमा । बृहच्छब्दरत्न-लघुशब्दरत्न व्याख्या द्वय सहित । प्रथम भाग ३०-००
२६ ब्रह्मसिद्धान्त । मधुसूदन ओझा । गिरधरशर्मा चतुर्वेदी कृत व्याख्या १२-००
२७ भगवद्गीता । सं० डॉ० बेलवेलकर । हिन्दी अनुवाद डॉ० वासुदेव ६-००
२८ महाभाष्य टीका । भर्तृहरि विरचित । चतुर्थाह्निक पर्यन्त । प्रथम भाग ७-००
२९ रजोवाद । मधुसूदन ओझा विरचित । सं० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ६-००
३० विक्रमांकदेवचरितम् महाकाव्यम् । विश्वनाथ शास्त्री भारद्वाज कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित । १-३ भाग २२-००
३१ वदिक कोश (वैदिक विषयों एवं नामों का) सूर्यकान्त शास्त्री २२-५०
३२ संगीत प्रवेशिका । हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजो । १-२ भाग ३-००
३३ संगीतराजः । नृपति कुम्भकर्ण प्रणीत । प्रथम् खण्ड । सं० डॉ० प्रेमलता शर्मा ४०-००
३४ सनातनधर्मोद्धारः । उमापति द्विवेदी कृत भाषा भाव प्रभा टीका सहित । १ से ४ भाग २०-००
३५ सामतंत्रम् (सामवेदीयं प्रातिशाख्यम्) । सं० एम० ए० रामनाथ दीक्षित ३०-००
३६ सिद्धान्तशिरोमणि । मध्यमाधिकारान्त । वासना भाष्य-केदार दत्त कृत दीपिका शिखा संस्कृत हिन्दी भाष्य सहित ५-००
३७ सिद्धान्तशिरोमणि । स्पष्टाधिकार-त्रिप्रश्नाधिकारात्मक । वासनाभाष्य-मरीचि भाष्य-दीपिका-शिखा संस्कृतं हिन्दी भाष्य सहित २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३८ सिद्धान्तशिरोमणि। ग्रहगणिताध्याय। वासनाभाष्य-मरीचिभाष्य-दीपिका-शिखा संस्कृत हिन्दी टीका सहित २०-००
३९ सिद्धान्तशिरोमणि। ग्रहगणिताध्याय के पर्वसम्भवाधिकार से पाताधिकार तक के ९ अधिकार पर्यन्त तृतीय भाग। वासनाभाष्य-मरीचि भाष्य-दीपिका-शिखा संस्कृत-हिन्दी भाष्य सहित ४-००
४० स्वार्थानुमान-परिच्छेद। आचार्य धर्मकीर्ति कृत प्रमाणवार्तिकान्तर्गत। सम्पादक दलसुखभाई मालवणिया १५-००
४१ कविसमयमीमांसा। डॉ० विष्णुस्वरूप ८-००, ९-००
४२ गीताप्रवचन गीता-व्याख्यानमाला। व्याख्याता गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। १-३ भाग ३४-५०
४३ गीतोपदेश (गीतारवाणी का हिन्दी अनुवाद) अनिलवरण राय ३-००
४४ त्रिकोणमिति। शुकदेव पाण्डेय ६-००
४५ नाथ और संत साहित्य (तुलनात्मक अध्ययन) डा० नागेन्द्र नाथ उपाध्याय ९-००, १०-००
४६ पाश्चात्य तर्कशास्त्र। भिक्षु जगदीश काश्यप। १-२ भाग ११-५०
४७ पुराण-विषयानुक्रमणी। राजबली पाण्डेय। प्रथम भाग-राजनीतिक १५-००
४८ प्राचीन भारत। गंगाप्रसाद मेहता ७-००
४९ व्रजभाषा और व्रजबुलि साहित्य (तुलनात्मक अध्ययन) डॉ० श्रीमती कणिका तोमर ८-००, ९-००
५० भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य। डॉ० भगवानदास ०-५०
५१ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य। गंगाशंकर मिश्र ९-००
५२ महामना मदनमोहन जी मालवीय के लेख और भाषण। भाग प्रथम-धार्मिक। सं० वासुदेवशरण अग्रवाल ४-००, ५-००
५३ मानव शरीर रचना विज्ञान। डॉ० मकुन्द स्वरूप वर्मा। १-२ भाग १४-००
५४ विश्व के संत महापुरुष। सं० डॉ० देवराज २-५०
५५ हिन्दी आलोचना का इतिहास। डॉ० रामदरश मिश्र ८-००, ९-००
५६ हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा में भक्ति। श्यामसुन्दर शुक्ल ७-००, ८-००
५७ हिन्दू धर्म (सनातन धर्म की प्रारम्भिक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद) डा० एनी बेसेंट। अनुवादक अम्बिकादत्त उपाध्याय ३-००
५८ हिन्दू धर्म और आचार। अनुवादक अम्बिकादत्त उपाध्याय ३-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

※ हिन्दी साहित्य-कुटीर की पुस्तकें—

१ अभिनव शिक्षणशास्त्र । सीताराम चतुर्वेदी ६–२५
२ आधुनिक हिन्दी साहित्य । कृष्णशङ्कर शुक्ल ४–५०
३ उर्दू साहित्य का इतिहास । ब्रजरत्नदास ३–७५
४ कामकला । विजयबहादुर सिंह ४–५०
५ खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास । ब्रजरत्नदास ३–००
६ चुभते चौपदे । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' २–००
७ चोखे चौपदे । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' २–७५
८ पारिजात । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ५–००
९ प्रसाद और उनका साहित्य । विनोदशङ्कर व्यास ३–१२
१० प्रसाद और उनके समकालीन । विनोदशंकर व्यास ४–००
११ प्रियप्रवास । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ४–००
१२ बोलचाल । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३–२५
१३ भारतीय और योरोपीय शिक्षा का इतिहास । सीताराम चतुर्वेदी ४–६९
१४ भाषा की शिक्षा । सीताराम चतुर्वेदी ५–००
१५ भाषालोचन । सीताराम चतुर्वेदी ६–००
१६ मानस शास्त्र और समाज । सीताराम चतुर्वेदी ३–००
१७ मीराँ माधुरी । ब्रजरत्नदास ५–६२
१८ रसकलस । अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ६–५०
१९ वाङ्मय विमर्श । विश्वनाथप्रसाद मिश्र (वा० उ० म० प्रथम खंड परीक्षोपयोगी) ७–००
२० वैदेही वनवास । अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३–५०
२१ शैली और कौशल । सीताराम चतुर्वेदी ६–००
२२ हरिऔध और उनका साहित्य । मुकुन्ददेव शर्मा ७–००
२३ हिन्दी उपन्यास साहित्य । ब्रजरत्नदास ५–००
२४ हिन्दी ज्ञानेश्वरी । रामचन्द्र वर्मा ५–००
२५ हिन्दी दासबोध । रामचन्द्र वर्मा ३–५०
२६ हिन्दी नाट्य साहित्य । ब्रजरत्नदास ३–७५
२७ हिन्दी शिक्षण विधान । सीताराम चतुर्वेदी २–००
२८ हिन्दी साहित्य सर्वस्व । सीताराम चतुर्वेदी ११–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराणसेय सं० विश्वविद्यालय परीक्षोपयोगी पुस्तकें-

प्रथमा

लघुसिद्धान्तकौमुदी-['इन्दुमती' सं० हि० टीका, परिशिष्ट सहित २-००
मञ्जुपाणिनीयम्-गोपालशास्त्री ०-५०
शब्दरूप धातुरूप के लिए-प्रथमा-शब्द-धातुरूपसंग्रहः ०-५०
भारतकथा-गंगाधरशास्त्रिकृता। ['बोधिनी' सं० हि० टीका १-००
व्यवहारविज्ञानम्। ['सुधा' टीका ०-६०
मूलरामायण-['सुधा' सं. हि. टी. ०-४०
भारतीयशीलनिरूपणाध्याय-['सुधा' सं० हि० टीका ०-४०
रघुवंश-प्रथमसर्ग-['सुधा' सं० हिन्दी व्याख्या ०-७५
छन्दों के लिए-छन्दोविंशतिका ०-२५
हितोपदेश-मित्रलाभ-अश्लीलांश रहित ['किरणावली' सं. हि. व्या. १-००
संस्कृतरचनानुवाद शिक्षक ले०-विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि २-००
निबन्ध के लिए-प्रबन्ध पारिजात १-७५
अमरकोश-प्रथम काण्ड-['मणिप्रभा' हि० टीका ०-७५
राष्ट्रभारती १-५०
आदर्श चरितावली १-२५
राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण १-२५
हिन्दी निबन्धके लिए-निबन्धसौरभ १-२५
भारतीय इतिहास की रूपरेखा डॉ० बलराम श्रीवास्तव २-५०
प्रारम्भिक भूगोल २-५०
संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान ले०-जगदीश सहाय विसारिया १-००
गणितकौमुदी-गणपतिदेव शास्त्री १-२५
ज्योतिष प्रबोध-गणेशदत्त पाठक ०-४०
होडाचक्रम् [सं० मुरलीधरठक्कुर ०-५०
तर्कसंग्रह [लक्षण-टिप्पणी सहित ०-२५

पूर्वमध्यमा प्रथम खण्ड

रघुवंश, सर्ग ३-४-['सुधा' सं० हिन्दी व्याख्या १-५०
बुद्धचरित-सर्ग १-३, ५ [हि० टी० सं० रामचन्द्रदास २-५०
संस्कृतव्याकरणम् (रचनानुवाद खण्ड निबन्ध खण्ड सहित) ३-००
निबंध के लिए-[प्रबन्धपारिजात १-७५
मध्यकौमुदी ['सुधा' सं० हि० टीका ५-०
भट्टीकाव्य-सर्ग १-४ ['चन्द्रकला' सं० हि० टीका ४-००
तर्कसंग्रह पदकृत्य सहित-[लक्षण-टि. सहित 'इन्दुमती' हि.टी. ०-५०
मानक हिन्दी व्याकरण-रामचन्द्र वर्मा २-००

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी-स्त्रीप्रत्ययान्त-['बाल मनोरमा' टीका, प्रथम भाग ३-५०

साहित्य

किरातार्जुनीय, सर्ग१-२-[मल्लि-नाथी-सुधा सं० हि० व्याख्या १-२५
रघुवंश-सर्ग १३-१४ [चन्द्रकला सं० हि० टीका, विमर्शादि सहित १-५०
कविताकाकली १-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वमध्यमा द्वितीय खण्ड

शिवराज विजय, प्र० विराम ३-००

अनुवाद के लिये-संस्कृतरचना- प्रकाश १-९५

निवन्धप्रकाश-कृष्णकुमार अवस्थी २-००

मध्यकौमुदी-['सुधा' सं. हि. टी. ५-००

भट्टीकाव्य, सर्ग ५-८ [चन्द्रकला सं० हि० टीका ७-५०

तर्कसंग्रह-पदकृत्य सहित-[लक्षण- टि. सहित इन्दुमती हि. टी. ०-५०

मानक हिन्दी व्याकरण- रामचन्द्र वर्मा २-००

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी-कारकादि-चातुर- र्थिकान्त [बालमनोरमा टी० १-२ भाग ७-००

साहित्य

चन्द्रालोक-[पौर्णमासी-कथा भट्टी सं० हि० व्याख्या ३-००

कुमारसम्भव, १-२, ५ सर्ग [पुंस- वनी सं० हि० टीका ३-५०

संस्कृत के विद्वान् और पण्डित १-५०

उत्तरमध्यमा प्रथम खण्ड

स्वप्नवासवदत्तम-['प्रबोधिनी' सं० हिन्दी व्याख्या २-५०

अलंकारों के लिये-[अलंकारसार मंजरी ०-५०

प्रबन्धपारिजात-रामचन्द्रमिश्र १-७५

मध्यकौमुदी-[सुधा सं० हि० टी० ५-००

भट्टिकाव्य, सर्ग १४-१७['चन्द्रकला' सं० हिन्दी व्याख्या ५-००

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, प्रत्यक्ष- खण्ड-['मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्या १-२५

हिन्दी प्रयोग-रामचन्द्र वर्मा २-५०

अनुवाद [संस्कृत रचना प्रकाश १-९५

नव्यव्याकरण

सि० कौमुदी, शैषिकादि जुहोत्या- द्यन्त-['बालमनोरमा' टीका ३-००

साहित्य

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका-['बाल- विबोधिनी' सं० हि० टीका १-२५

तर्कसंग्रह, पदकृत्य सहित-['इन्दु मती' हिन्दी व्याख्या ०-५०

तर्कामृत-[प्रकाश सं० हि० टी० ०-७५

हिन्दी काव्यमंजूषा-रमाशंकर पाण्डेय ३-००

धरती और आकाश-परिवर्तित- परिवर्धित संस्करण १-७५

साहित्य और सिद्धान्त ३-००

उत्तरमध्यमा द्वितीय खण्ड

अभिज्ञान शाकुन्तल [किशोरकेलि- सं० हि० व्याख्या ६-००

अशुद्धवाक्यशोधन-[व्युत्पत्ति- प्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम् ०-५०

प्रस्तावतरंगिणी-चारुदेवशास्त्री ४-००

मध्यसिद्धान्तकौमुदी-[सुधा सं० हि० टीका ५-००

भट्टिकाव्य, सर्ग १८-२२ [चन्द्र- कला सं० हि० टीका ५-००

हिन्दी प्रयोग-रामचन्द्र वर्मा २-५०

अनुवाद-[संस्कृत रचना प्रकाश १-९५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नव्यव्याकरण

सिद्धान्तकौमुदी, दिवादि से कृदन्त पर्यन्त उणादि प्रकरण छोड़कर [बालमनोरमा टीका ६–५०

साहित्य

काव्यमीमांसा, १–५ अध्याय–मधुसूदनी सं० हि० व्याख्या १–००

वृत्तरत्नाकर–[नारायणी–मणिमयी सं० हि० व्याख्या ३–००

किरात, सर्ग ३–६ [मल्लिनाथी, प्रकाश सं० हि० व्याख्या ४–००

गद्यनिकष २–००

हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ ३–००

परिक्रमा–शान्तिप्रिय द्विवेदी २–००

शास्त्री प्रथम खण्ड

शिशुपालवध–सर्ग १–२ सुधा सं० हिन्दी व्याख्या २–००

कादम्बरी-कथामुख [चन्द्रकला सं० हि० व्याख्या ३–७५

उत्तररामचरित [चन्द्रकला सं० हि० व्याख्या ४–५०

रामाभ्युदययात्रा-श्री रुद्रप्रसद अवस्थी २–२५

अभिनव निबन्धावली–चौखम्बा प्रकाशन ४–५०

साहित्य

शिशुपालवध–सर्ग ३–५ [सं० हि० व्याख्या ३–००

प्रसन्नराघव [प्रकाश सं. हि. टीका ४–५०

साहित्यदर्पण ['लक्ष्मी' टीका १२–००

कादम्बरी [चन्द्रकला सं० हि० टीका पूर्वार्द्ध १३–५०

हमारे आधुनिक कवि और उनकी कवितायें–व्यथित हृदय ३–५०

ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य-वी. एम. चिन्तामणि ३–००

शास्त्री द्वितीय खण्ड

तर्कभाषा-केशव मिश्र [तत्त्वालोक सं० हि० व्याख्या २–००

सांख्यकारिका [सानुवाद गौडपाद भाष्य सहित १–२०

वेदान्तसार ['प्रबोधिनी' सं० हि० व्याख्या २–५०

कृष्णस्य शान्ति प्रयासः [चौखम्बा प्रकाशन, सं० हि० व्याख्या १–५०

संस्कृतसाहित्येतिहासः–रामचन्द्र मिश्र ४–००

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास वाचस्पति गैरोला १२–००

अच्छी हिन्दी–रामचन्द्र वर्मा ४–००

अभिनव निबन्धावली–चौखम्बा प्रकाशन ४–५०

साहित्य

वेणीसंहार ['प्रबोधिनी' सं. हि. टीका ३–५०

नैषध [जीवातु-मणिप्रभा सं० हि० व्याख्या। १–९ सर्ग ६–००

साहित्यदर्पण ['लक्ष्मी' व्याख्या १२–००

भारतीय साहित्य की रूपरेखा–डा० भोलाशंकर व्यास ७–५०

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की १९६७ ई० की नियमावली (निर्देशिका) छप चुकी है। मूल्य रु० ३–०० तथा पोस्टेज रु० १–४०, कुल रु० ४–४० मनीआर्डर से भेजने पर आपको नियमावली रजिस्ट्री द्वारा शीघ्र प्राप्त हो जायगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की परीक्षा

पाठ्य पुस्तकें–

प्रथमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

हितोपदेश-मित्रलाभ (अश्लीलांश छोड़कर)–['किरणावली' सं० हि० टीका १–००

अमरकोश (स्वर्ग वर्ग)–['मणिप्रभा' हि० टीका ०–७५

संस्कृतव्याकरणम्–(परिवर्द्धित) ३–००

संस्कृतरचनानुवादशिक्षक २–००

अनुवादचन्द्रिका–लोकमणि जोशी १–२५

राष्ट्रीय साहित्य प्रमोद–भारतीय प्रकाशन, पटना

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण १–२५

पाँच फूल (हिन्दी) १–००

साहित्यबोध, भाग २ (मैथिली)

गणितकौमुदी भाग २–गणपतिदेव शास्त्री १–२५

नव भारत का इतिहास–फणीन्द्रनाथ ओझा १–१९

हमारे देश, हमारी दुनिया–सुरेश प्रसाद गुप्त

वर्ग 'क'

व्याकरण—

लघुकौमुदी–['इन्दुमती' सं० हि० टीका २–००

साहित्य—

रघुवंश, द्वितीय सर्ग–['सुधा' सं० हि० टीका ०–७५

पञ्चतन्त्र–अपरीक्षितकारक (अश्लीलांश छोड़कर)–['सुबोधनी' सं० हि० टीका ०–७५

छन्दोविंशतिका–पं० रामचन्द्रझा ०–२५

अलङ्कारसारमंजरी–नारायण शास्त्री खिस्ते ०–५०

पूर्वमध्यमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः २–५०

भर्तृहरिनीतिशतकम्–['ललिता' वाला सं० हि० टीका १–००

संस्कृत व्याकरण कौमुदी भाग १–२ ४–००

मध्यकौमुदी–['सुधा' सं० हि० टीका ५–००

व्युत्पत्तिप्रदर्शन गूढाशुद्धिप्रदर्शन ०–५०

संस्कृत रचना प्रकाश १–९५

हिन्दी गद्यपद्य संग्रह (बिहार टेक्स्ट बुक कमेटी) १–२५

मानक हिन्दी व्याकरण–रामचन्द्र वर्मा २–००

सप्त सरोज (हिन्दी) १–००

रामायण शिक्षा (मैथिली) १–५०

मुनिक मतिभ्रम–(मैथिली)

भारतवर्ष का नवीन इतिहास–ईश्वरीप्रसाद ६–०५

भारतवर्ष का भूगोल–रामनारायण मिश्र ३–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्वद्विभूति १–२५

हाईस्कूल नागरिक शास्त्र–के० एल० वर्मा २–००

मैट्रिकुलेशन सिविक्स (हिन्दी)–गोरखनाथ चौबे २–००

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सिद्धान्तकौमुदी, पूर्वार्द्ध–['बाल-मनोरमा' व्याख्या ७–००

साहित्य—

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका–['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका १–२५

प्रतिमानाटक–['प्रकाश' सं० हि० टीका २–५०

छन्दोमञ्जरी–['प्रभा' सं० हि० टीका २–००

अलंकारसारमंजरी–नारायण शास्त्री खिस्ते ०–५०

उत्तरमध्यमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

संस्कृत–गद्य-पद्य-संग्रहः २–५०

कुमारसम्भव, पंचम सर्ग–['पुंसवनी' सं० हि० टीका १–०।

भोजप्रबन्ध–['राज्यश्री' हि० टीका १–५।

संस्कृत व्याकरणकौमुदी भाग ३-४ ४–०।

मध्यकौमुदी–['सुधा' सं० हि० टीका ५–०।

हिन्दी गद्य-पद्य संग्रह (बिहार इन्टर मीडियेट परीक्षा स्वीकृत

विजेतानाटक–बेनीपुरी १–७।

पथचिह्न–शान्तिप्रिय द्विवेदी १–५।

जयद्रथवध–मैथिलीशरण गुप्त १–०।

गल्पाञ्जलि (मैथिली)–एलनगंज प्रयाग

झंकार (मैथिली) 'मधुप'

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सिद्धान्तकौमुदी, उत्तरार्ध–['बाल-मनोरमा' टीका ६–५।

साहित्य—

रघुवंश, सर्ग ३–४–['सुधा' सं० हि० टीका १–५।

किरात, सर्ग १–२ १–२५

दशकुमारचरित, उत्तर पीठिका, अपहारवर्मचरितान्त–['बाल-विबोधिनी' सं० हि० टीका ३–०।

संस्कृत-रचना-प्रकाश । ले० प्रो० श्री रमाकान्त द्विवेदी ।

बिहार की मध्यमा एवं हाईस्कूल तथा वाराणसी की मध्यमा परीक्षाओं मे पाठ्यस्वीकृत रचनानुवाद का यह ग्रन्थ आधुनिक वैज्ञानिक सरल पद्धति में बहुत सुन्दर प्रकाशित हुआ है। पाठों के अंत में दिए गए 'अभ्यास' इसी संस्करण की विशेषता हैं। १–६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षा की पाठ्य पुस्तकें-

प्रथमा परीक्षा

काव्यसंग्रह । भाग १	१-७५
काव्यसंग्रह । भाग २	२-५०
काव्यांग कल्पद्रुम	०-७५
अलंकार प्रकाश	०-५०
साहित्य प्रवेश	२-००
हिन्दीभाषासार	२-००
हिन्दी साहित्य परिचय	२-००
संक्षिप्त हिन्दी साहित्य	१-५०
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	०-३७
सम्मेलन निबन्धमाला । भाग २	१-५०
रचना तथा व्याकरण	१-७५
भारतवर्ष का इतिहास । अवध विहारी पाण्डेय	३-००
लघु इतिहास-प्रवेश	५-००
भारतवर्ष का भूगोल	३-००
सरल शरीर विज्ञान	१-५०
तीमारदारी	०-९०
परिचर्या और गृह प्रवन्ध	२-५०
सरस भोजन कैसे बनावें	३-७५
गार्हस्थ्य शास्त्र	२-००
मातृकला	१-२५
शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य	२-५०
आरोग्य विधान	८-००
स्वास्थ्य प्रदीपिका	१-५०
आदर्श भोजन	१-५०
स्वास्थ्य विज्ञान । डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर । परिवर्द्धित सचित्र संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द	७-५०
चित्रकला । अवध उपाध्याय	१-००
हितोपदेश मित्रलाभ । सान्वय-किरणावली टीका सहित	१-००
नीतिशतक । 'ललिता' 'बाला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित	१-००
प्रारम्भिक संस्कृत व्याकरण	१-००
व्याकरण नवनीतम्	१-२५
पाली प्रबोध	२-५०
वनस्पति विज्ञान	३-००
जीव विज्ञान की प्रारंभिक पुस्तक	२-५०
प्रारंभिक जीव विज्ञान	४-५०
रसायन प्रवेशिका	३-००
प्रारंभिक रसायन । फूलदेव सहाय वर्मा	४-५०
प्रारंभिक भौतिकी । निहालकरणसेठी	५-५०
श्रीमद्भागवत संग्रह	०-९४
धर्मशिक्षा	२-५०
मनुस्मृति । 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका विमर्श सहित १-४ अध्याय	२-५०
भारतीय संस्कृति । गोपालशास्त्री	१-५०
हिन्दुओं की पोथी	३-००
सदाचार और नीति	२-००
अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त	३-००
नागरिक शिक्षा	१-५०
हाईस्कूल नागरिक शास्त्र	२-००
ग्रामीण ज्ञानोदय	१-७५
प्रारंभिक कृषि विज्ञान । १-३ भाग	२-६९

मध्यमा परीक्षा

तुलसी संग्रह	१-२५
सूर संग्रह	०-५०
ब्रज-माधुरीसार	४-००
आधुनिक काव्यसंग्रह	१-५०
संक्षिप्त अलंकार-मंजरी	२-००
काव्यप्रदीप	३-७५
हिन्दी गद्य पारिजात	१-७५
विराटा की पद्मिनी	४-००
हिन्दी कहानी संग्रह	१-८७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिज्ञान शाकुन्तल। लक्ष्मण सिंह	१–५०
रक्षाबन्धन	१–२५
विकास	१–५०
साहित्य समालोचना	१–७५
हिन्दी साहित्य का इतिहास। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	६–००
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास	३–५०
हिन्दी साहित्य समीक्षा	२–५०
हिन्दी भाषा तथा साहित्य	५–००
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	२–२५
हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास	२–५०
हिन्दी भाषा और लिपि	१–२५
ग्रामीण हिन्दी	१–५०
नागरी अंक और अक्षर	०–३७
भट्ट निबन्धावली। भाग १	१–५०
प्रबन्ध प्रभाकर	५–८०
पथ के साथी	३–००
ठोस ज्यामिति	१–५०
ठोस ज्यामिति की कुंजी	१–५०
बीजगणित। झम्मनलाल शर्मा	३–५०
बीजगणित। 'सुबोधिनी' संस्कृत टीका तथा नूतन उपपत्ति-उदाहरण परिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित	८–००
गति विज्ञान। पी० डी० शुक्ल	३–५०
चलराशिकलन। हरिश्चन्द्र गुप्त	४–००
इतिहास प्रवेश	११–००
प्राचीन भारतका इतिहास। भगवतशरण उपाध्याय	१०–००
अशोक	७–५०
मौर्यकालीन भारत	२–५०
दिल्लीसल्तनत	१०–००
अकबर की राज्य व्यवस्था	२–५०
हमारा राजस्थान	६–००
विश्व इतिहास की झलक (बृहद्) १-२ भाग	२०–००
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य	९–००
आधुनिक यूरोप का इतिहास	७–००
यूरोप का आधुनिक इतिहास।	१५–००
एशिया का आधुनिक इतिहास।	१४–२५
सरल शरीर विज्ञान।	१–५०
शरीर परिचय	२–००
शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य	२–५०
आरोग्य विधान	८–००
स्वास्थ्य विज्ञान। डा० भास्कर-गोविन्द घाणेकर परिवर्द्धित सचित्र संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द	७–५०
हम सौ वर्ष कैसे जीएं	२–५०
नैसर्गिक आरोग्य	२–००
स्वास्थ्य और प्राणायाम	२–००
फल, उनके गुण तथा उपयोग।	२–२५
स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियाँ	२–००
परिभाषा प्रबन्ध। जगन्नाथप्रसाद	२–५०
पथ्यापथ्य निरूपण	०–७५
अंग्रेजी साहित्य का इतिहास	३–००
पशुओं का इलाज	०–७५
फल संरक्षण	२–५०
फल संरक्षण विज्ञान। डा० कविराज युगलकिशोर गुप्त	१–००
भारत में कृषि सुधार	२–५०
गाँवों की समस्या	१–००
ग्राम्य अर्थशास्त्र	२–२५
दर्शन का प्रयोजन	३–५०
दर्शन की रूपरेखा	१–००
पाश्चात्य तत्त्व विज्ञान परिचय	३–००
तत्त्वज्ञान	४–००
आत्मविद्या	४–००
श्रीशंकराचार्य का आचार-दर्शन	५–[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तर्क संग्रह। पदकृत्य-लक्षण टिप्पणी-
इन्दुमती हिन्दी टीका सहित ०-५०
तर्कसंग्रह। दीपिका संस्कृत व्याख्या
इन्दुमती हिन्दी टीका सहित ०-५०
भगवद्गीता। हिन्दी अनुवाद सहित ०-२०
भारतीय तर्कशास्त्र की रूपरेखा १-००
तर्कशास्त्र। ३-००
भारतीय-दर्शन १६-००
मनुस्मृति। मणिप्रभा हिन्दी टीका
विमर्श विस्तृत प्रस्तावना आदि
सहित ५-००
उपनिषदों की कहानियाँ १ भाग २-५०
" " २ भाग २-५०
वर्णाश्रमधर्म ३-५०
धर्म-शिक्षा २-५०
गीताऽमृत। २-५०
बाल मनोविकास ६-००
शिक्षा मनोविज्ञान। १-२ भाग ८-५०
सरल मनोविज्ञान ६-००
पाक विज्ञान ४-००
गृहविज्ञान एवं शिशु कल्याण ५-००
मातृकला १-००
कुमार संभव। पंचम सर्ग। पुंसवनी
संस्कृत हिन्दी व्याख्या नोट्स
आदि सहित १-००
शिशुपालवध। १-२ सर्ग। सान्वय
परीक्षोपयोगी सुधा व्याख्या
तात्पर्यार्थ हिन्दी भाषार्थ सहित २-००
हर्षचरितसार ०-७५
संस्कृत साहित्य का इतिहास १२-००
संस्कृत साहित्य की रूपरेखा ५-५०
संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका ५-५०
संस्कृत प्रकाश। कुबेरनाथ द्विवेदी २-५०
पंचतन्त्र। सरला हिन्दी टीका
सहित ४-००
नीतिशतक। 'ललिता'-'बाला'
संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १-००

खुद्दक पाठ ०-३७
सच्चसंगहो १-२५
धम्मपद १-७५
पालीप्रबोध २-५०
पालि महाव्याकरण १०-००
भौतिक विज्ञान प्रवेशिका ८-००
साधारण रसायन ११-००
सामान्य रसायन शास्त्र १४-००
कार्बनिक रसायन ४-५०
हिन्दू राज्यशास्त्र ५-००
कौटिल्य की शासन पद्धति २-००
राजनीतिक भारत ४-५०
आधुनिक भारतीय शासन ५-००
भारतीय संविधान तथा नागरिकता ४-५०
बीसवीं सदी की राजनैतिक
विचारधारायें २-००
विदेशी राज्यों की शासन विधि ८-५०
व्यक्ति और राज १-६२
भारतीय अर्थशास्त्र। भगवानदास
केला ५-००
भारतीय अर्थशास्त्र। जथार-बेरी १५-००
अर्थशास्त्र की रूपरेखा ६-००
अर्थशास्त्र। मुरलीधर जोशी १०-००
भारत में कृषि सुधार २-५०
गाँवों की समस्यायें २-५०
ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार २-५०
ग्रहलाघव। उदाहरण उपपत्ति
तथा माधुरी संस्कृत हिन्दी
टीका सहित ३-५०
सूर्यसिद्धान्त। तत्त्वामृत भाष्य
सहित ४-००
लघुपाराशरी। सोदाहरण सुबोधिनी
संस्कृत हिन्दी टीका सहित १-२५
षट्पंचाशिका। संस्कृत टीका तथा
विभा हिन्दी टीका सहित ०-४५
भारतीय ज्योतिष। नेमिचन्द्रशास्त्री ६-००
भारतीय कुण्डली विज्ञान ४-५०, ५-५०
भारतीय ज्योतिष। शंकर बालकृष्ण
दीक्षित ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मराठी साहित्य का इतिहास ३-००
तमिल और उसका साहित्य २-२५

वैद्य-विशारद परीक्षा

आरोग्य विधान ८-००
स्वास्थ्य विज्ञान। (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर परिवर्द्धित नवीन संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द ७-५०
रोगी सुश्रूषा २-५०
रोगी परिचर्या २-५०
नैसर्गिक आरोग्य २-००
रसादि परिज्ञान। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-५०
हरीतक्यादि निघण्टु। विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ९-००
भावप्रकाश निघण्टु। विद्योतिनी हिन्दी टीका ९-००
स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियाँ २-००
फलाहार चिकित्सा २-५०
प्राणिज औषधि ०-५०
रसरत्न समुच्चय-मूल संस्कृत ३-००, ३-७५
रसरत्नसमुच्चय। वैज्ञानिक सुरत्नोज्ज्वला हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित १०-००
परिभाषा प्रबन्ध। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-५०
शारीर प्रदीपिका ५-००
प्रत्यक्ष शारीर। हिन्दी अनुवाद। प्रथम-द्वितीयभाग ३०-००
शारीर परिचय २-००
शारीर क्रिया विज्ञान सचित्र। वैद्य प्रियव्रत शर्मा १०-००
काम विज्ञान २-००
धातुरोग और उसका इलाज २-००
पथ्यापथ्य निरूपण ०-७५
माधवनिदान। मधुकोश संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६-००
माधवनिदान। मधुकोष संस्कृत व्याख्या विद्योतिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित। १-२ भाग १४-००
मूत्र परीक्षा १-५०
नाड़ी परीक्षा ०-३५
भाव प्रकाश। चिकित्सा खंड। नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित १५-००
अपूर्व चिकित्सा विधान ६-००
आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड (आयुर्वेदप्रदीप) ले० राजकुमार द्विवेदी। सम्पादक आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय १२-००
पंचकर्म विधान १-००
रोगिमृत्युविज्ञानम् १-५०
ऊर्ध्वाङ्ग चिकित्सा। १-३ भाग ८-००
शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र) डा० रमानाथ द्विवेदी ९-००
आँख का अचूक इलाज २-२५
प्रसूति तन्त्र। रामदयाल कपूर ५-७५
प्रसूति विज्ञान। सचित्र। डा० रमानाथ द्विवेदी १०-००
कौमार भृत्य (नव्य बालरोग सहित) रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ८-००
बालरोगचिकित्सा ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री विज्ञान। अन्तूभाई १०-००
स्त्रीरोग विज्ञान। सचित्र रमानाथ द्विवेदी ३-५०
शल्यप्रदीपिका १२-५०
सौश्रुती। डा० रमानाथ द्विवेदी ८-५०
अष्टाङ्गहृदय। भागीरथी विस्तृत टिप्पणी सहित ४-००
अष्टाङ्गहृदय। विद्योतिनी हिन्दी-टीका वक्तव्य परिशिष्ट विस्तृत भूमिका सहित १५-००
व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र। डा० कविराज युगलकिशोर गुप्त, डा० रमानाथ द्विवेदी ५-००
विष और महाविष विज्ञान १०-००

मिथिला-ग्रन्थमाला

तथा मैथिलसाम्प्रदायिक-ग्रन्थाः

१ वाजसनेयिक तथा छन्दोगक—जुटिकाबन्धन-मातृकापूजापूर्वक आभ्युदयिकश्राद्धपद्धति। मैथिली टीका ०-४०
२ वाजसनेयिक विवाहपद्धति। (द्वितीय संस्करण) ,, १-२५
३ छन्दोगक विवाहपद्धति। (तृतीय संस्करण) स्थूलाक्षर ,, १-७५
४ वाजसनेयिक उपनयनपद्धति। ,, ,, ,, १-७५
५ छन्दोगक उपनयनपद्धति। ,, ,, ,, १-७५
६ वाजसनेयिक एकोद्दिष्टपद्धति। ,, ०-५०
७ छन्दोगक एकोद्दिष्टपद्धति। ,, ०-२५
८ वाजसनेयिक पार्वणपद्धति ,, ०-४०
९ छन्दोगक पार्वणपद्धति। ,, ०-४०
१० वाजसनेयिक सन्ध्यातर्पणपद्धति। ,, ०-१५
११ छन्दोगक सन्ध्यातर्पणपद्धति। वैतरणी सहित ,, ०-१५
१२ वाजसनेयिक संक्षिप्त आह्निकपद्धति। ,, ०-४०
१३ छन्दोगक संक्षिप्त आह्निकपद्धति। ,, ०-४०
१४ सत्यनारायणपूजापद्धति। 'इन्दुमती' नामक मैथिली टीका ०-७५
१५ सत्यनारायणपूजापद्धति। टिप्पणी सहित मूल समाप्त
१६ आह्निकपञ्चदेवपूजापद्धति। ०-०५
१७ एकादशीव्रतोद्यापनपद्धति। सपरिष्कृत ०-३५
१८ कार्तिक-तुलसी-आकाशदीपव्रतोद्यापनपद्धति। ०-३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९	कूपोत्सर्गपद्धति ।	०-१५
२०	गृहोत्सर्गपद्धति ।	०-२०
२१	दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धति । (परिष्कृत द्वितीय संस्करण)	०-७५
२२	वृहत्सामान्योत्सर्गपद्धति-दशगात्रपिण्डदानपद्धति	०-४०
२३	दशगात्रपिण्डदानपद्धति । मैथिली टीका सहित । पं० रामचन्द्र झा सम्पादित	यन्त्रस्थ
२४	संक्षिप्तदीक्षापद्धति-तुलादानसहित ।	०-२०
२५	अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजाकथा ।	०-२०
२६	जीमूतवाहनव्रतपूजाकथा ।	०-२०
२७	प्रतिहारषष्ठी (विवस्वत्षष्ठी) व्रतकथा ।	०-१५
२८	बहुलाचतुर्थीव्रतकथा ।	०-२०
२९	भाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्रपूजा । चतुर्थीचन्द्रव्रतकथा सहित	०-१५
३०	रामनवमीव्रतपूजापद्धतिः । जानकी नवमी व्रतपूजा सहित	०-४०
३१	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतपूजाकथा ।	०-३५
३२	सरस्वतीपूजापद्धतिः (मूर्ति पूजा विधान सहित)	०-२५
३३	सिद्धिविनायकचतुर्थीव्रतपूजाकथा ।	०-२०
३४	हरितालिकाव्रतपूजाकथा ।	०-१५
३५	आशौचनिर्णयः । म० म० वाचस्पति-रुद्रधरकृत युग्मसंस्करण	०-५०
३६	कृत्यसारसमुच्चयः । गङ्गाधरमिश्रकृत परिशिष्ट सहित	५-००
३७	पौरोहित्यकर्मसारः । तृतीय संस्करण १-२ भाग	१-६५
३८	वास्तुपूजापद्धति गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति, गृहप्रवेश-पद्धतित्रय संमिलित ।	०-७५
३९	सूर्यादिद्वादशस्तवी-अन्नपूर्णादि स्तोत्रसहित ।	०-२०
४०	रामार्चापद्धतिः (शिवपुराणोक्त)	०-४०
*४१	व्यवहारविज्ञान—एहिमें मिथिलाक प्रत्येक व्यवहारक समीक्षा कथाक रूपमें नाना स्मृति-पुराणक उद्धरणक संग कयल गेल अछि ।	३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४२ **पितृकर्मनिर्णयः**–(निबन्धसंग्रह) श्री त्रिलोकनाथ मिश्र ।

एहि ग्रन्थ में मुमूर्षु अवस्था सँ लके शवसंस्कार, अशौच, आद्यश्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध, नान्दी श्राद्ध, कृत्रिम पुत्रादि निर्णय, गयाश्राद्धादि निर्णय आदिक संग्रह अनेकानेक श्रुति-स्मृतिक पर्यवेक्षण सँ कयलगेल अछि। आब कोनो पितृकर्म सम्बन्धी विषयक निर्णय करबाक समय में विद्वानकेँ पुस्तकान्तरक आवश्यकता नहिं पड़तैन्ह ३-००

४३ **दुर्गासप्तशती**–पं० श्रीकनकलाल ठक्कुर सम्पादित ।

एहि संस्करण क प्रशंसा प्रायः समस्त मिथिलावासी करैत छथि। मध्य में कागत क अभाव सँ बहुत दिन तक प्रथम संस्करण उपलब्ध नहिं भेला सँ मिथिला क ग्राहक रोष प्रकट करैत छलाह। अत एव हम मिथिला ग्रन्थमालाक आवश्यक कार्य रोकि कें पूर्ववत् बड़का मोट-मोट अक्षर तथा कागत में एहि द्वितीय संस्करण के परिष्कृत रूप में प्रकाशित कयल अछि २-००

४४ **वर्षकृत्य–प्रथमभागः**–सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा ।

(बृहत् परिवर्धित संशोधित तृतीय संस्करण)

प्रथम संस्करणक अपेक्षा द्वितीय संस्करण जहिना द्विगुणित आकार-प्रकार में प्रकाशित भेल छल तहिना एहि वेर ई तृतीय संस्करणों संशोधित परिवर्धित भय बृहत्काय में प्रकाशित भेल अछि। स्थान-स्थान पर नवीन-नवीन व्रत-पूजा-कथा क सन्निवेश कयल गेल छैक। पद्यवद्ध जीमूतवाहनव्रत-कथा अद्यावधि प्रकाशित नहि छल। एहि संस्करण में एहि वेर सेहो भेटत। एहि संस्करण क परिशिष्टो अत्यधिक उपयोगी वनाओल गेल छैक। सर्वदेवपूजनोपयोगि षोडशोपचारपूजन, विवाहादिशुभकर्मोपयोगि गणेशपूजन, मण्डपस्थापन-पूजन, आभ्युदयिक श्राद्ध-समीक्षा, सर्वकर्मोपयोगि नान्दीश्राद्ध तथा स्त्रीककर्त्रीक एकोद्दिष्टादि अनेकानेक उपयोगी विषय परिवर्धित भेल छैक। ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४५ **वर्षकृत्य-द्वितीयभागः**—सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा।

द्वितीय संस्करणापेक्षया प्रस्तुत तृतीय संस्करण आओर विशालकाय प्रकाशित भेल अछि। उद्यापनादि क सङ्ग सङ्ग जातकर्म, अन्नप्राशन, नामकरण, सीतारामप्रतिष्ठा, तथा मूलशान्ति, स्वस्तिवाचनप्रयोग, उभयमुखी गोदान आदि व्यवहारोपयोगी अनेकानेक आवश्यक पद्धति परिष्कृत रूप में बढ़ाओल गेल छैक। एहि संस्करण क संपादन में मिथिलाक अनेक प्रतिष्ठित विद्वान् सहयोग प्रदान कयलैन्ह अछि। ६-००

४६ **श्राद्धपद्धतिः**। म० म० वाचस्पतिमिश्रकृत। (स्थूलाक्षर)

'इन्दुमती' मैथिली टीका-टिप्पणी तथा 'श्राद्ध-समीक्षा' नामक भूमिका सहित नवीन संस्करण।

पं० रामचन्द्र झा सम्पादित उपनयन, विवाहादि पद्धति जेकाँ एहिबेर झा जी द्वारा श्राद्धपद्धतियो मैथिली टीका-टिप्पणी सहित सम्पादित भेल अछि। टिप्पणी आओर परिशिष्ट में अधिक ज्ञातव्य विषय देल गेल छैक। एहि संस्करण में स्त्री तथा कौमार-कर्तृक श्राद्धपद्धति से हो छपल अछि। यन्त्रस्थ

४७ **कृतितत्त्वसंग्रहः**—दैवज्ञ श्रीतुफानी झा विरचितः

एहि निबन्ध में कालनिरूपण-प्रकरण, त्याज्यप्रकरण, षोडशसंस्कार-प्रकरण, शान्तिप्रकरण, बधूप्रवेशादिप्रकरण, द्विरागमनप्रकरण, वास्तु-प्रकरण, गृहप्रवेशप्रकरण, यात्राप्रकरण तथा मिश्रप्रकरण में व्यवहारोपयोगी समस्त विषयक धर्मशास्त्रीय समीक्षा ज्योतिष ग्रन्थ क आधार पर कयल गेल अछि। यन्त्रस्थ

*४८ **आत्ममर्यादा (एकांकी)** कृष्णकान्त मिश्र ०-५०

*४९ **कला (उपन्यास)** चतुरानन १-००

*५० **गप्पक फोड़न (गल्प-संग्रह)** हरिमोहन झा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, श्री गंगानन्द सिंह ०-२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*५१ चानो-दाइ (उपन्यास) सोमदेव १-००

*५२ निर्मला (उपन्यास) विद्याधर मिश्र ०-३७

*५३ प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन दरभंगा : परिचय-पात । १-५०

*५४ ,, ,, : रचना-संग्रह । प्रथम भाग ५-००

*५५ ,, ,, : विभागीय-सभापति सभक भाषण । २-००

*५६ मिथिलाक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास । राधाकृष्ण चौधरी १-५०

*५७ मिथिला का इतिहास । कृष्णकान्त मिश्र १-७५

*५८ मिथिलापञ्चाङ्ग : पुलकित-पञ्चाङ्ग । अग्रिम वर्षक अतिचार निर्णय सहित ०-७५

*५९ मैथिल संस्कृति और सभ्यता । श्री उमेश मिश्र । १-२ भाग २-००

*६० मैथिली-गीता । मैथिली पद्यानुवाद । अनुवादक-सुरेश झा । गीतासार तथा गीता समीक्षादि सहित १-२५

*६१ मैथिली साहित्यक इतिहास । कृष्णकान्त मिश्र ५-००

*६२ राली (उपन्यास) प्रेमशंकर खरे १-५०

*६३ विवेचना (आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह) सं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी १-००

*६४ शृंगार-तिलक । कालिदास कृत । सुन्दर झा शास्त्री कृत गद्यपद्यानुवाद सहित ०-२५

*६५ मिथिलाभाषामय इतिहास । म. म. पं. मुकुन्दझाबख्शी ४-००

*६६ श्रीमत्खण्डबलाकुलप्रशस्तिः । मैथिलसच्छ्रोत्रियाणां खण्डकाव्यम् १-५०

*६७ श्रीमत्करमहाकुलकीर्तिकौमुदी । खण्डकाव्यम् । ०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिकित्सा-ग्रन्थाः

[चिकित्सा-संबन्धी सभी स्थान की छपी पुस्तकों के लिए **'चिकित्सा साहित्य'** (प्राच्य-पाश्चात्य) नामक विशाल सूचीपत्र पृथक् छपा मंगवा कर अवलोकन करें ।]

१ **अगदतंत्र**—डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. ०-७५

२ **अञ्जननिदानम्**—सान्वय विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १-००

*३ **अनुभूतयोग चर्चा** । १-२ भाग । वंसरीलाल साहनी ६-००

४ **अभिनन्दन-ग्रन्थ : सत्यनारायण शास्त्री जी** । १५-००

५ **अभिनव बूटी दर्पण** (सचित्र)—श्री रूपलाल वैश्य यन्त्रस्थ

६ **अभिनव विकृति विज्ञान** (सचित्र)—आचार्य श्रीरघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए० एम० एस० २२-००

७ **अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान (सचित्र)** आ० प्रियव्रत शर्मा १०-००

*८ **अशोक** । श्रीरमेश वेदी १-००

९ **अष्टाङ्गसंग्रह**—आयुर्वेद बृहस्पति श्रीगोवर्द्धनशर्मा छांगाणी कृत 'अर्थप्रकाशिका' हिन्दी टीका वक्तव्य सहित । सूत्रस्थान ८-००

शेष स्थान शीघ्र प्रकाशित होंगे

१० **अष्टांगहृदय** (गुटका) भागीरथी वृहद् टिप्पणी सहित ४-००

११ **अष्टाङ्गहृदय**—विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श सहित। टीकाकार-श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार । सम्पादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय बी. ए., ए. एम. एस. संशोधित, परिवर्द्धित, सपरिशिष्ट अभिनव द्वितीय संस्करण १५-००

१२ **आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें** (आयुर्वेद वाङ्मय-शोध का एक विवरण) आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम० ए०, ए० एम० एस० १-००

१३ **आयुर्वेदप्रकाश** । आयुर्वेदाचार्य श्री गुलराज शर्मा कृत अर्थ-विद्योतिनी संस्कृत अर्थप्रकाशिनी हिन्दी व्याख्याद्वय सहित । परिष्कृत द्वितीय संस्करण संपूर्ण १२-५०

१४ **आयुर्वेद प्रदीप (आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड)** ले० श्री राजकुमार द्विवेदी । सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गङ्गासहाय पाण्डेय । द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ **आयुर्वेद विज्ञान**—विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्टसहित २–००

*१६ **आयुर्वेद शिक्षा पर विचार**। डॉ० घाणेकर। भाषा ०–४०

*१७ **आयुर्वेदीय दन्तव्याधि विज्ञान**। वै० कि० भा० गुप्ता २–७५

१८ **आयुर्वेदीय परिभाषा**—अभिनव प्रकाशिका हिन्दी टीका विस्तृत परिशिष्ट सहित। टीकाकार–आयुर्वेदाचार्य श्रीगिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. १–२५

१९ **आयुर्वेदीय यन्त्रशस्त्र परिचय**—सुरेन्द्र मोहन बी० ए० १–७५

*२० **आरोग्य व आहार रहस्य**। वै० कि० भा० गुप्ता २–५०

२१ **आसवारिष्ट-विज्ञान**। श्री पक्षधर झा। ग्रन्थगत दो खण्डों में विद्वान् लेखक के अध्यापन तथा प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के अनुभवों से संपुटित इतनी विशद, प्रामाणिक तथा उपयोगी सामग्री हिन्दी में आप प्रथम बार ही देखेंगे। छात्र-चिकित्सक तथा पठित व्यक्तिमात्र के लिये यह अमूल्य निधि है। ३–००

२२ **इंजेक्शन (सचित्र)** डा० शिवनाथ खन्ना ११–००

२३ **एलोपैथिक पाकेट प्रेस्क्राइबर (एलोपैथिक गाइड)** डा० शिवनाथ खन्ना ५–००

२४ **एलोपैथिक सिक्रेट्स**—डा० राजकुमार द्विवेदी नवीन संस्करण २–५०

*२५ **औपसर्गिक रोग**—डा० घाणेकर। १–२ भाग २२–००

*२६ **औषध गुण धर्म विवेचन**। अजिल्द ३–०० सजिल्द ४–५०

*27 **Comparative Survey of Ayurveda Nosology by Dr. Ghanekar.** 1–00

२८ **काकचण्डीश्वरकल्पतंत्रम्**—हिन्दी टीका सहित २–००

२९ **कामकुञ्जलता**—मूलमात्र यन्त्रस्थ

३० **कामसूत्रम्**। 'जयमंगला' टीका सहित विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित। व्याख्याकार, देवदत्त शास्त्री १६–००

३१ **कायचिकित्सा**। प्रथम भाग आयुर्वेदीय चिकित्सा के मूलभूत सिद्धान्त तथा उनका क्रियात्मक स्वरूप। कविराज रामरक्ष पाठक १२–५०

द्वितीय भाग ज्वर चिकित्सा। १२–५०

तृतीय भाग यन्त्रस्थ

३२ **काय-चिकित्सा**—आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय २५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३३ **काश्यपसंहिता**—श्री सत्यपाल आयुर्वेदालंकार कृत विद्योतनी हिन्दी टीका एवं राजगुरु हेमराजजी कृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत उपोद्घात सहित १६-००

३४ **कौमारभृत्य (नव्यबालरोग सहित)**—लेखक-श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस। नवीन संशोधित परिवर्द्धित संस्करण ८-००

३५ **क्वाथमणिमाला**—हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

३६ **क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान**। श्रीविश्वनाथ द्विवेदी सचित्र १२-००

३७ **क्लिनिकल पैथोलॉजी** (वृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा) [Clinical Pathology (including Laboratory Technique, Parasitology & Bacteriology.)] डॉ० शिवनाथ खन्ना। सचित्र १०-००

३८ **गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन**—डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ४-५०

३९ **गूलर गुण विकाशः**—वैद्यभूषण श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र १-००

*४० **गृहविज्ञान**। कालेड़ा ०-५०

४१ **चरकसंहिता**—मूल। भागीरथी टिप्पणीसहित समाप्त

४२ **चरकसंहिता**। सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्योपेता। व्याख्याकार :-पं० काशीनाथ शास्त्री, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी। सम्पादक :-पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय, डा० गंगासहाय पाण्डेय, पं० ब्रह्मशंकर मिश्र। संपूर्ण १-२ भाग ३६-००
(सूत्रस्थानादि इन्द्रियस्थानपर्यन्तः) प्रथम भाग १६-००
(चिकित्सादि ग्रन्थ समाप्ति पर्यन्तः) डा० बनारसीदास गुप्ता कृत वृहत् परिशिष्ट युक्त। द्वितीय भाग २०-००

४३ **चरकसंहिता का निर्माण-काल (काश्यपसंहिता निर्माण काल सहित)** वैद्य रघुवीरशरण शर्मा २-००

४४ **चक्रदत्त**—नवीन वैज्ञानिक भावार्थसन्दीपनी हिन्दीटीका एवं विविध परिशिष्ट सहित। टीकाकार-श्री जगदीश्वरप्रसाद त्रिपाठी ए. एम. एस. अजिल्द १०-००, कपड़े की पक्की जिल्द १२-००

*४५ **चिकित्सा तत्त्वप्रदीप**। प्रथम भाग अजिल्द ९-०० सजिल्द ११-००
द्वितीय भाग अजिल्द १०-०० सजिल्द १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*४६ चिकित्सादर्श—वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री । १-३ भाग १८-००

४७ चिकित्सा शब्दकोश । (चौखम्बा मेडिकल डिक्शनरी)
अवधविहारी अग्निहोत्री प्रेस में

*४८ जीवाणु विज्ञान—ले० डा० घाणेकर प्रेस में

*४९ ज्वर विज्ञान । अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०

*५० ज्वरविवेचन (ज्वर निदान चिकित्सा) लीलाधर शास्त्री १०-००

५१ तापमापन (थर्मामीटर)—ले० डा० राजकुमार द्विवेदी ०-२५

*५२ तुवरक और चालमोग्रा। श्री रमेश वेदी । ०-७५

*५३ तुलसी । श्री रमेश वेदी । २-००

५४ तुलसीविज्ञान—विविध रोगों पर तुलसी के २४२ सफल सुलभ
प्रयोगों का संग्रह ०-७५

*५५ त्रिफला । श्री रमेश वेदी । ३-२५

५६ त्रिदोषविज्ञानम् । कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास (चतुर्थ संस्करण) ४-००

*५७ दन्तचिकित्सा-विज्ञान । वै० कि० भा० गुप्ता ३-२५

*५८ दन्तस्वास्थ्य-विज्ञान । वै० कि० भा० गुप्ता २-००

*५९ देहात की दवाएँ । श्री रमेश वेदी । ०-७५

*६० देहाती इलाज । श्री रमेश वेदी । १-००

६१ दोष-कारणत्व-मीमांसा—हिन्दी टीका सहित । पं० प्रियव्रत
शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. १-००

६२ द्रव्य-गुण-मंजूषा । आचार्य शिवदत्त शुक्ल एम. ए.,
ए. एम. एस. । प्रथम भाग २-००

६३ द्रव्यगुण-विज्ञान (१-३ भाग)
आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. १८-००

६४ नलपाक—पाकदर्पणम्—नल विरचित । संस्कृत यन्त्रस्थ

६५ नव परिभाषा—कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित १-७५

६६ नव्यचिकित्सा विज्ञान । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । १-२ भाग १६-००

६७ नव्य रोग निदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्) ०-७५

६८ नाड़ी परीक्षा—श्रीब्रह्मशंकरमिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित ०-३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६९ **नाड़ीविज्ञान**—आयुर्वेदाचार्य प्रयागदत्त जोशी कृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित ०-३५
*७० **नित्योपयोगी क्काथसंग्रह।** १-२५
*७१ **नित्योपयोगी गुटिकासंग्रह।** २-००
*७२ **नित्योपयोगी चूर्णसंग्रह।** १-२५
*७३ **नीम : बकायन।** श्री रमेश वेदी। २-००
*७४ **नेत्र रोग विज्ञान**—(सचित्र) श्री विश्वनाथ द्विवेदी १०-००
*७५ **नेत्र सुधार।** सचित्र। डॉ० आर० एस० अग्रवाल ४-००
७६ **पंचभूतविज्ञानम्।** कविराज उपेन्द्रनाथ दास कृत हिन्दी टीका सहित ४-००
७७ **पञ्चविध कषायकल्पना विज्ञान**—डा० अवधविहारी अग्निहोत्री १-५०
*७८ **पदार्थविज्ञानम्**—आचार्य श्री सत्यनारायण शास्त्री। संस्कृत ३-००
७९ **पदार्थविज्ञानम्।** श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस. ८-००
८० **परिभाषाप्रबन्ध**—ले० आयुर्वेद बृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-५०
८१ **पेटेण्ट प्रेस्क्राइबर या पेटेण्ट मेडिसिन्स**—डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. ८-००
*८२ **पेठा-कद्दू।** श्री रमेश वेदी। ०-७५
*८३ **पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान** तथा **मूत्रपरीक्षा** १-२५
८४ **प्रत्यक्षशारीरम्।** गणनाथसेन कृत। हिन्दी। प्रथम भाग १५-००
द्वितीय भाग १५-०० १-२ भाग ३०-००
८५ **प्रसूति विज्ञान**—ले०-डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. १०-००
८६ **प्रारम्भिक उद्भिद् शास्त्र**—प्रो० बलवंत सिंह एम. एस-सी. ४-५०
८७ **प्रारम्भिक भौतिकी**—लेखक-श्री निहालकरण सेठी ५-५०
८८ **प्रारम्भिक रसायन**—प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा ४-५०
८९ **प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा**—लेखक-कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी ०-३५
९० **फलसंरक्षण विज्ञान (Fruit Preservation)**—डा० युगलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य १-००
*९१ **बरगद।** श्री रमेश वेदी। १-००
९२ **बस्तिशलाकाप्रवेश (एनीमा और कैथेटर)** ०-४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

९३ **बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ**—डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ८–००

*९४ **भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद।** ०–७५

९५ **भारतीय रसपद्धति**—कविराज अत्रिदेव गुप्त १-५०

९६ **भावप्रकाश।** मूल। पूर्वार्द्ध ३–८०

९७ **भावप्रकाश**—नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित
पूर्वार्द्ध भाग १२–०० मध्यमोत्तर खण्ड १५–०० संपूर्ण २६–००

९८ **भावप्रकाश-ज्वराधिकार**—नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ५–००

९९ **भावप्रकाशनिघण्टु**—संपादक-आयुर्वेदाचार्य गंगासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.। विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, वनौषधियों के सुविस्तृत परिचय, गुण-धर्म आदि से विभूषित आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों व आधुनिक चिकित्सकों के लिए नवीन मौलिक संस्करण। परिशिष्ट सहित। ९–००

१०० **भिषक्कर्मसिद्धि।** डा० रमानाथ द्विवेदी २०–००

*१०१ **भूलोक में अमृत-गाय का दूध।** ०–७५

१०२ **भेलसंहिता।** सटिप्पण शोधपूर्ण सम्पादित नवीन संस्करण १०–००

१०३ **भैषज्य कल्पना विज्ञान।** डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री ५–००

१०४ **भैषज्यरत्नावली**—विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श टिप्पणी परिशिष्ट सहित। टीकाकार–कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. १६–००

*१०५ **मदनपाल निघण्टु**—मूल टिप्पणी सहित १–००

१०६ **मर्म-विज्ञान-सचित्र**—ले० श्री रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य ३–५०

१०७ **माधवनिदानम्**—सुधालहरी संस्कृत टीका सहित यन्त्रस्थ

१०८ **माधवनिदानम्**—संपादक–वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय, बी० ए०, ए० एम० एस०। मधुकोष संस्कृत तथा विद्योतिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श परिशिष्ट सहित। टीकाकार–आयुर्वेदाचार्य श्रीसुदर्शन शास्त्री ए. एम. एस.। १–२ भाग १४–००

१०९ **माधवनिदानम्**—मधुकोष संस्कृत व्याख्या मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६–००

११० **माधव-निदानम्**—सर्वांगसुन्दरी हिन्दी टीका सहित ४–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

*१११ सिर्च। श्री रमेश वेदी १-००

*११२ मूत्र के रोग—ले० डा० घाणेकर। ६-००

११३ यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा—लेखक—वैद्य श्री सभाकान्त झा २-००

११४ योग-चिकित्सा—लेखक—अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार ३-५०

११५ योगरत्नाकर—मूल गुटका संस्करण ६-००

११६ योगरत्नाकर—विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १८-००

*११७ रक्त के रोग—ले० डा० घाणेकर। नवीन आवृत्ति १०-००

११८ रतिमञ्जरी। गद्य-पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद सहित ०-४०

११९ रसकौमुदी—ज्ञानचन्द्र शर्मा विरचित। हिन्दी टीका सहित १-५०

१२० रसचिकित्सा—लेखक-कविराज प्रभाकर चट्टोपाध्याय ६-००

*१२१ रसतत्त्वविवेचन। हिन्दी टीका सहित ३-५०

*१२२ रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह। प्रथम भाग अजिल्द ९-००
सजिल्द ११-००
द्वितीय भाग अजिल्द ६-०० सजिल्द ८-००

१२३ रसरत्नसमुच्चय—मूल टिप्पणी सहित। सुलभ संस्करण ३-००
उत्तम संस्करण ३-७५

१२४ रसरत्नसमुच्चय—नवीन सुरत्नोज्वला-विस्तृत हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित। टीकाकार—आचार्य श्री अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस १०-००

*१२५ रसशास्त्र प्रवेशिका। बद्रीनारायण शर्मा अनुवादित २-००

*१२६ रसहृदयतंत्र। संस्कृत-हिन्दी टीका। प्रथम भाग अजिल्द ५-००
सजिल्द ६-५०

१२७ रसादि परिज्ञान—ले०-आ० बृहस्पति पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल २-५०

१२८ रसाध्याय—संस्कृत टीका सहित १-००

१२९ रसायनखण्ड (रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड) ०-७५

१३० रसार्णवं नाम रसतंत्रम्—सविवरण भागीरथी टिप्पणी से युक्त ३-००

१३१ रसेन्द्रसारसंग्रह—बालबोधिनी-भागीरथी टिप्पणी सहित यन्त्रस्थ

१३२ रसेन्द्रसारसंग्रह—(सचित्र) गूढार्थसंदीपिका संस्कृत टीका सहित। टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१३३ **रसेन्द्रसारसंग्रह**—(सचित्र) नवीन वैज्ञानिक रसचन्द्रिका हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित। टीकाकार—श्री गिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. ६-००

*१३४ **रसेन्द्रसारसंग्रह**—वैद्य घनानन्द कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित ११-००

*१३५ **रसोपनिषद्**। हिन्दी टीका सहित। प्र. भाग अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०

१३६ **राजकीय ओषधियोग संग्रह**—ले० आयुर्वेदाचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस समाप्त

१३७ **राजमार्तण्डः**—भोजराज विरचित। विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित २-५०

१३८ **राष्ट्रिय चिकित्सा सिद्ध योग संग्रह**—लेखक-आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस. १-५०

१३९ **रोगनामावली कोष**—लेखक डा० दलजीतसिंह आयुर्वेदवृहस्पति ३-५०

*१४० **रोग निवारण**। डा० शिवनाथ खन्ना १४-००

१४१ **रोग परिचय** (Clinical Medicine) ले० डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस. १२-७५

१४२ **रोगिपरीक्षाविधि**—(सचित्र) ले० आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. ६-००

१४३ **रोगिरोग-विमर्श**। डा० रमानाथ द्विवेदी ए. एम. एस. २-००

१४४ **रोगीपरीक्षा**। डा० शिवनाथ खन्ना ६-००

*१४५ **लहसुन प्याज**। श्री रमेश वेदी। २-५०

१४६ **लोहसर्वस्वम्**—सुरेश्वर विरचित। हिन्दी टीका सहित २-००

१४७ **वनौषधिचन्द्रोदय**—विशाल निघण्टु ग्रन्थ। पृथक्-पृथक् प्रत्येक भाग का मूल्य ५-०० तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ १-१० भाग का ४०-००

*१४८ **वनौषधिदर्शिका**—वनस्पतिविशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह २-५०

१४९ **विषविज्ञान और अगदतंत्र**—लेखक—डा० युगलकिशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी १-७५

१५० **वैद्यजीवन**—अभिनव सुधा हिन्दी टीका टिप्पणी सहित। टीकाकार—श्री कालिकाचरणशास्त्री ए. एम. एस. १-२५

१५१ **वैद्यक परिभाषा प्रदीप**—प्रदीपिका हिन्दी टीका सहित। टीकाकार—श्री प्रयागदत्त जोषी आयुर्वेदाचार्य। द्वितीय संस्करण १-५०

१५२ **वैद्यकीय सुभाषित साहित्य**। डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५३ **वैद्यकीय सुभाषितावली**—लेखक-डा० प्राणजीवन माणेकचन्द मेहता। मूल संस्कृत, अंग्रेजी अनुवाद सहित २-००

*१५४ **वैद्य सहचर**—श्री विश्वनाथ द्विवेदी ३-००

*१५५ **वैद्योद्बोधन**। गिरजादत्त पाठक वैद्य ०-५०

१५६ **व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतंत्र**—लेखक—डा० युगल किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी ५-००

*१५७ **शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा**—ले० डा० पी० जे० देशपांडे ७-००

*१५८ **शल्यप्रदीपिका** (सचित्र) डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। परिवर्द्धित संस्करण १२-५०

*१५९ **शहतूत**। श्री रमेश वेदी ०-४०

*१६० **शहद**। श्री रमेश वेदी। ३-००

१६१ **शार्ङ्गधरसंहिता**—सुबोधिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श, लक्ष्मी नामक टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित ५-००

*१६२ **शारीरतत्त्वदर्शनम्**। हिर्लेकर शर्मा। संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद सहित ६-००

१६३ **शालाक्यतंत्र (निमितंत्र)**। डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.। द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण ९-००

१६४ **शिलाजीत विज्ञान**—डा० जाह्नवी प्रसाद जोशी ०-७५

*१६५ **संक्षिप्त औषध-परिचय**। कालेड़ा ०-६२

*१६६ **सन्निपातज्वरचिकित्सा**। कविराज चक्रपाणि शर्मा ६-००

*१६७ **सन्दिग्ध द्रव्यविज्ञान**। पं० राजितराम पाण्डेय १-५०

168 SURGICAL ETHICS IN AYURVEDA : By Dr. G. D. Singhal and Pt. Damodar Sharma Gaur. 5-00

१६९ **सामान्य रोगों की रोकथाम**। डा० प्रियकुमार चौबे ३-५०

*१७० **सिद्ध परीक्षा पद्धति**। प्रथम भाग ८-००

१७१ **सिद्धभैषज संग्रह**—लेखक-आयुर्वेदाचार्य श्री युगलकिशोर गुप्त। मूल्य सुलभ संस्करण ७-०० उत्तम संस्करण ८-०० राज संस्करण ९-००

१७२ **सिद्धान्तनिदानम्**। गणनाथसेन कृत। संस्कृत। १-२ भाग १४-००

१७३ **सुश्रुत संहिता**। सुदामा मिश्र शास्त्री कृत सुधा संस्कृत टीका सहित यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७४ **सुश्रुतसंहिता**—'आयुर्वेद तत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित। व्याख्याकार—डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री एम. ए., ए. एम. एस.। १-२ भाग। संपूर्ण २४-००
१ सूत्र-निदानस्थान ७-०० २ शारीरस्थान ३-५०
३ चिकित्सा-कल्पस्थान ६-०० ४ उत्तरतन्त्र १२-५०

175 SUSRUTA SAMHITA: With a full and Comprehensive Introduction, English Translation and Different Readings etc., with Plates by Kaviraja Kunjalal Bhishagratna M. R. A. S. 3 Vols. (Chow. Sans. Studies Vol. XXX) 60-00

१७६ **सुश्रुतसंहिता-शारीरस्थान**—नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'-'दर्पण' विस्तृत हिन्दी टीका सहित ३-५०

१७७ **सूचीवेध-विज्ञान (Injection Therapy)**—लेखक-डा० राजकुमार द्विवेदी-नवीन परिवर्द्धित संस्करण २-५०

१७८ **सौश्रुती**—लेखक-आयुर्वेद बृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी ८-५०

१७९ **स्टेथिस्कोप तथा नाड़ी परीक्षा**—डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी ०-७५

१८० **स्त्रीरोग विज्ञान** (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी ३-५०

*१८१ **स्वस्थवृत्त समुच्चय**—श्री राजेश्वरदत्तशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ७-००

१८२ **स्वास्थ्यविज्ञान** (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर ७-५०

१८३ **स्वास्थ्यशिक्षापाठावलि**। डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर ३-५०

१८४ **स्वास्थ्य संहिता**—हिन्दी टीका सहित। रचयिता-आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्य शास्त्री २-५०

*१८५ **हमारी आँखें**। सचित्र। डॉ० एम० एस० अग्रवाल ५-००

१८६ **हैजा (विसूचिका) चिकित्सा**—डा० जाह्नवी प्रसाद ०-७५

गणनाथ सेन की नवीन छपी पुस्तकें

१८७ **प्रत्यक्षशारीरम्**। हिन्दी प्रथम भाग १०-००
द्वितीय भाग १५-०० १-२ भाग २५-००

सिद्धान्तनिदानम्। संस्कृत प्रथम भाग ७-००
द्वितीय भाग ७-०० १-२ भाग १४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तकें मंगवाने के नियम—

१ डाकखाने से वी० पी० नियमानुसार ५ दिन के अन्दर छुड़ा लेनी चाहिये अन्यथा वापस हो जायगी। वी० पी० वापस आने से उसकी सारी क्षति तथा खर्च ग्राहकों को देना होगा।

२ जो ग्राहक पुस्तकें अधिक वजन की होने से रेल्वे पार्सल से मँगवाना चाहें उनको अपने समीप के रेल्वे स्टेशन तथा रेल्वे लाइन का नाम भी अवश्य लिखना चाहिये और कम से कम चौथाई मूल्य आर्डर के साथ पेशगी अवश्य भेजना चाहिये जो वी० पी० के मूल्य में कम कर दिया जाता है।

३ सब पुस्तकें ग्राहकों की जिम्मेदारी पर भेजी जाती हैं। हमारे यहाँ से पुस्तकें भेजने के बाद रास्ते की जोखिम का जिम्मेदार कार्यालय नहीं है।

४ प्रकाशकों के मूल्य-परिवर्तन के अनुसार पुस्तकों के मूल्य जो घटे-बढ़े होते हैं वे ग्राहकों को विना सूचना दिये ही माल भेजते समय चार्ज किये जाते हैं। पुस्तकें भेजने का कुल खर्च-पेकिङ्ग, डाकखर्च, रेलभाड़ा आदि ग्राहकों के जिम्मे होगा।

५ बीस रु० से अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहकों से चतुर्थांश मूल्य पेशगी मिलने पर ही पुस्तकें भेजी जायँगी।

६ नोट, टिकट, चेक, पोस्टल आर्डर आदि सब रजिस्ट्री से भेजना चाहिये।

७ वी० पी० भेजने में यदि किसी पुस्तक के भाव इत्यादि में अथवा और किसी प्रकार की भूल हुई हो तो भी कृपया वी० पी० छुड़ा लेवें और वीजक संख्या तथा दिनांक लिख कर भेजने की कृपा करें। भूल-सुधार कर दी जायगी। वी० पी० वापस न करें अन्यथा हानि होगी।

८ वैधानिक कार्यों के लिए वाराणसी का कोर्ट मान्य होगा।

ऋग्वेद संहिता : पद-पाठ सहित। डॉ० मैक्समूलर सम्पादित।
१–२ भाग लाइब्रेरी संस्करण ५०–०० साधारण संस्करण ४०–००
ऋग्वेद संहिता। सायणभाष्य सहित। डॉ० मैक्स मूलर सम्पादित।
१–४ भाग संपूर्ण १४०–००
RIGVEDA : Translated into English with a popular commentary by Ralph T. H. Griffith 2 Vols 40—00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

In The Press

In The Pr

Agni Puranam

A Prose English Translation

By

Manmatha Nath Dutt, M. A., M. R. A. S.

The Purāna which describes the occurrence of the Iṣāna Kalpa and was related by Agni to sage Vasishtha, is called Āgneya. It consists of sixteen thousand Stanzas distributed in three hundred and eightythvee chapters. Although, like others, this Purāna also dwells on all the five primary topics enumerated under the name of Panchalakshana, yet three-fourth of it has no connection however with the five principal topics. The subject matter of this Purāna is two fold : namely Para Vidya (Sacred Knowledge or Theology), and Apara Vidya (Profane Knowledge or the arts and sciences known to the people). Therefore Agni Purāna has a unique place among the eighteen Mahā Purānas.

The present edition, which is the only one ever published in English, always had been in great demand. We are now reprinting it so as to remove the difficulty of the desirous readers who needed it so much. However our present reprint also contains a detailed biography of Sri M. N. Dutt, and a comprehensive Index, both of which features were absent in the original edition. Thus our reprint will have an added value and will be useful even for those also who may already be in possession of its earlier edition. Size Demy 8 Vo. on good paper with sturdy binding. Shortly.

An Important Announcement

All other works of Sri Manmatha Nath Dutt would also be available very shortly. Enquiries in this connection are invited. Publishers

---

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

VARANASI-1

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu